॥ जैमिनिपुराण भाषा ॥

जिसमें

राजा युधिष्ठिर का गोत्रहत्या निवारणार्थ श्रीकृष्णोपदेश से अश्वमेध यज्ञ करने की कथा वर्णित है ॥

जिसको

सकलकलासम्पन्न मुंशी नवलकिशोरजी ने [illegible] ग्रामनिवासी पं० [illegible] जी से प्रतिश्लोक व प्रतिपद [illegible] भाषा में उल्था कराया ॥

तीसरीबार

लखनऊ

[illegible]

मुंशी नवलकिशोर (सी० आई० ई०) के छापेखाने में छपा

इस [illegible] जनवरी सन् १८९१ ई० [illegible] [illegible] ॥

जैमिनिपुराणभाषाका विज्ञापन ॥

जो कि धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिरने भारतान्त में गोत्र-हत्याका प्रायश्चित्त मान अपने सहायकों समेत अश्वमेध ठान घोड़ाछोड़ नीलध्वज, मीनध्वज, बभ्रुवाहन इत्यादि राजाओं को बलसे परास्तकर जगत् विजय पाय भलीभांति यज्ञ पूर्णकिया उस कथाको श्रीवेदव्यास जीने ग्रंथ बृहत्के हेतु उक्त महाभारतमें उसका विस्तार नहीं किया तथापि राजर्षि जैमिनिजी ने अपने जैमिनि पुराण में वैशम्पायन प्रति विस्तारपूर्वक रोचकता से वर्णनकीहै उस संस्कृतविद्या में मनोहर कथाको सम्पूर्ण प्रेमीजन अल्पविद्याके हेतु न समझसक्ते थे इसकारण सकलैश्वर्य्यभूषित श्रीमन् मुंशी नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसा द्रव्य समर्पणकर श्रीवाजपेयि पण्डित रामरत्नद्वारा गङ्गातटस्थ बेथरग्राम निवासि श्रीवाजपेयि लालमणि सूनु पण्डित शिवदुलारेजी से यथातथ्य भाषा में उल्था कराय प्रकाशित किया यदि इस कथाप्रबन्ध में कहीं उल्थककी अशुद्धी हों उसको विद्वज्जन क्षमापूर्वक शुद्ध करेंगे ॥

दो० । रसवेदाङ्क शशाङ्कशुभ सम्वत दिनकरवार ।
मास दमोदरशुक्लमहँ भयो ग्रन्थ अवतार ॥

मनेजर अवध अखबार

अथ जैमिनिपुराण भाषा का सूचीपत्र ॥

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
१६	सुधन्वा वध वर्णन	१७७	१८६
२०	सुरथ वध वर्णन	१८७	१६६
२१	स्त्री राज्य गमन	१६६	२०६
२२	मणिपुरागमन	२०६	२१६
२३	प्रद्युम्न युद्ध वर्णन	२१७	२२८
२४	बभ्रुवाहन युद्ध वर्णन	२२८	२३३
२५	कुशलवोपाख्याने अयोध्या प्रवेश	२३३	२३६
२६	कुशलवोपाख्याने रामवाक्य वर्णन	२३६	२४२
२७	कुशलवोपाख्याने लक्ष्मण प्रस्थान	२४२	२४८
२८	कुशलवोपाख्याने वाल्मीकि समागम	२४८	२५५
२६	कुशलवोपाख्याने तुरग ग्रहण	२५५	२६१
३०	लवमूर्च्छाप्राप्ति वर्णन	२६१	२६५
३१	कुश युद्ध वर्णन	२६५	२७०
३२	लक्ष्मणागमन	२७०	२७४
३३	लव युद्ध विजय वर्णन	२७४	२७८
३४	लक्ष्मण सेना पराजय	२७८	२८१
३५	हनुमद्वाक्य वर्णन	२८२	२८६
३६	रामाश्वमेधपरिसमाप्तौ फलस्तुतिवर्णन	२८६	२६७
३७	बभ्रुवाहनविजये वृषकेतु वध वर्णन	२६७	३०५
३८	बभ्रुवाहनविजय	३०५	३२५
३६	कृष्णागम वर्णन	३२६	३३५
४०	बभ्रुवाहनविजय	३३५	३४१
४१	कृष्णप्रति ताम्रध्वज सम्भाषण	३४१	३४५
४२	ताम्रध्वजविजय	३४५	३४६
४३	ताम्रध्वजयुद्धे श्रीकृष्ण कोप वर्णन	३४६	३५४
४४	ताम्रध्वज विजय वर्णन	३५४	३५८
४५	मयूरध्वज देहार्द्धदान निश्चय	३५६	३६३

इति ॥



जैमिनिपुराण भाषा ॥



श्लोक ॥

मगलंभगवान्विष्णुर्मंगलंगरुडध्वजः ॥
मंगलंपुण्डरीकाक्षो मगलायतनोहरिः १
नारायणंनमस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमम् ॥
देवींसरस्वतींव्यासं ततोजयमुदीरयेत् २

एकसमय राजा जनमेजयकी सभा में व्यासदेव के शिष्य जैमिनिजी आतेभये, तब तपोनिधि मुनिराज को आये देख राजा सादर उठ चरणो में शिरनाय दण्डवत्कर आगत स्वागत पूछि आसनस्थकर कहा हे त्रिकालज्ञ मुनिनाथ! हमारे पूर्व पितामह राजा युधिष्ठिर भ्राताओं समेत श्रेष्ठ अश्वमेध यज्ञ केहि प्रकार करते भये १ तब राजा के ऐसे वचन सुन जैमिनिजी बोले हे राजन्! अब मैं धर्म्मराज के कियेहुये चरित्र कहताहूं सुनो जब पितामह भीष्मजी स्वर्ग को गये तब धर्मपुत्र अतीव दुःखको प्राप्तहुये २। ३ उसीसमय

स्वेच्छाचारी ऋषिराज व्यासजी आते भये तिनसे राजा युधिष्ठिर सादर पूछते भये हे ब्रह्मन्! निश्चय करके जेहिप्रकार गोत्रहत्यानाशहो सो आप वर्णनकरैं भीष्मपितामह द्रोणाचार्य कर्णके विना यहराज्य प्रीतिप्रद अर्थात् राज्य सुखदायक नहीं लगती, देखो जिस दानी कर्णका रमणीय मन्दिर वेद पाठसे पूर्ण रहताथा ४। ६ सो हम करके दानसे वर्जित अर्थात् शून्य कर दिया गया जहां अर्थी नित्यही धनलाभ करते थे वह स्थान अब दानसे शून्यहै ७ अरु जहां नित्य हर्ष के आंसू छोड़ेजातेथे वहीं अब शोकज आसू गिरतेहैं यह राज्य भीष्म कर्ण के विना हमको धिक्है अरु तिनको नाशकरके मुझको शोकनहीं छोड़ताहै तेहिसे मैं राज्य को छोड़ अवश्य वन जाऊंगा राज्यको भीमसेन भोग करैंगे ८। १० अरु पृथ्वी में तीर्थ, दान तथा शुभयज्ञ क्रियाकरने परभी मैं पवित्र न होऊंगा न मेरा कल्याण होगा यहसुन व्यासजी बोले हे राजेन्द्र! भय न करो दोष न लगैगा जो उपाय हमकहैं सो तुमकरो उससे अवश्य ही पवित्रहोकर दोषसे दूरहोगे ११। १२ हे कुरुनन्दन! गोत्रहत्याके नाशनार्थ अर्थात् जो गोत्रहत्या दूरकिया चाहो तो अश्वमेध यज्ञकरो १३ देखो श्रीरामचन्द्रजीने तीनयज्ञकियेहैं उसीप्रकार हे मारिष! हे पुत्र! तुमभीयज्ञकरकेपातकनशाय राज्यपालनकरो १४ श्रीकृष्णकी आज्ञा से जिस राजधर्म्म में प्राप्तहुये उसी राज्यको त्यागकर क्यों वनजाने की इच्छाकरतेहो १५ हे पुत्र! जब तक

तुम्हारे वान्धवगण वशमें हैं तबतक इसलोकमें अचल यश को प्राप्तकर १६ दोषरहित शरीरका कल्याण करो पश्चात् पुण्यादिक क्रियाकर हे राजन्! स्वर्गप्राप्त करो १७ जैमिनिजी बोले हे राजन्! महातेजवाले व्यास जीके ये वचन सुन दीनवाणी से धर्म्मराज युधिष्ठिर बोलतेभये १८ हे मुने! धन तो कुछ विद्यमान नहीं है और बिना धनके यज्ञ कैसे होसक्ती है न प्रजा पीड़ा करनेके योग्यहै १९ अरु माता पिताके विहीन राजा मारबे योग्यनहीं है दुर्योधन करके धनके कारण से पृथ्वी पीड़ित करदीगई है २० तिसपृथ्वी को मैं धनकी इच्छा से कैसे पीड़ा देसक्ताहूं अरु इसके सिवाय कोई ऐसा सहायक यज्ञकरने का नहीं देखपड़ता जे सुहृज्जन रहें तेतो प्रथमही मारेगये २१ तेहिसे हमको राज्यछोड़ वन चलेजाने में रुचि है अब इसके सिवाय जो करने लायकहो सो आप वर्णनकरो २२ यहसुन व्यास जी बोले हे राजन्! पूर्वसमय में मरुत्राजाने यज्ञकर ब्राह्मणों को दानसे ऐसा सन्तुष्टकिया था कि वे द्विजोत्तम वहुत सुवर्ण छोड़गयेथे २३ सो वही सुवर्ण हिमाचल पर्वतमें प्राप्तहै उसको ले आवो राजाके दिये धनको ब्राह्मण लाने को समर्थ न हुये तब वहीं समर्पण कर दिया अरु मरुत्करके सेकड़ोंबार ब्राह्मण इसी प्रकार तृप्त कियेगये तव व्यासजी के ऐसे वचनसुन राजा युधिष्ठिर बोले हे तपोधन! राजा मरुत् धन्यहैं जिन्हों ने ऐसी यज्ञकिया है २४। २५ जेहि यज्ञविषे वहुतसा

सुवर्ण ब्राह्मण त्याग करगये उन माननीय ब्राह्मणोंका धन विशेषकरके हमको दुःखदायी है उसके ग्रहणकरने को हम कैसे समर्थ होसक्ते हैं जे राजा भविष्यमें होंगे ते सब मेरी निन्दा करेंगे २६ । २७ अरु जिसराजा की मति ब्राह्मणोंके धनमें दारुण होती है तो ग्रहणकरनेमें पर्वत शिलामें पात करदेती है २८ अरु ब्राह्मण हास्य करेंगे कि देखो राजा हमारा धन लेकर हमींको दान करताहै २९ हे तात ! ऐसा कुत्सित कर्म्म युधिष्ठिर न करेंगे अरु एकबड़ी लज्जा मुझे है कि संग्राममें हम ने सब सुहृद् सम्बन्धी भाई आदिकोंकावध कर डाला जिसके निवारण करनेको समर्थ नहीं हैं अरु द्वितीय यहयज्ञ धनही से सिद्धहोतीहै यह सुन वेदव्यासजी बोले हे नृपशार्दूल ! धन्यहौ तुमने बहुत अच्छे बचन कहे ३० । ३२ अरु जो तुम ब्राह्मणों के धनकी शंका करतेहौ सो व्यर्थ है क्योंकि जिससमय उन्होंने उस धनको छोड़ दिया उसी समय उससे उनका स्वामि- भाव छूटगया ३३ अरु देखो पूर्वकाल में रामचन्द्र जी ने सब पृथ्वी कश्यप को दान करदिया था सो राजा कहो इस पृथ्वी को कैसे ग्रहण करतेहैं ३४ देखो फिर तिनसे इस पृथ्वीको दैत्योंने जीतकरलिया फिर उन से भी क्षत्रियों ने लिया तब ब्राह्मणों का स्वामिभाव जातारहा तेहिसे इसमें कुछ दोष विद्यमान नहीं है ३५ यहिका तात्पर्य्य यहहै कि जेहि समय में जो धराधिप अर्थात् पृथ्वीको धारणकिया हे नृप ! उसीका सब धन

है इसमें कुछभी संशयनहींहै ३६ हे पाडव ! तुम राजपद में प्राप्तहो तुम्हारा धनहै उसीकोलेकर यज्ञकरो यहसुन युधिष्ठिर बोले हे ऋषिराज ! आप कथन करो कि यज्ञ में केहि प्रकार के ब्राह्मण तिनको कैसी दक्षिणा देनी चाहिये ३७ व केहि प्रकार का यज्ञाश्व होना चाहिये सोई सब व्याख्यान आप कहो तब व्यासजी बोले हे धर्मज्ञ ! यज्ञके आदि में बीस हज़ार ब्राह्मण कहे हैं ३८ ते सब ब्राह्मण कुलीनज्ञाता वेदशास्त्र के पारगामी अर्थात् उसके जाननेवाले हों अब उनमें से एक ब्राह्मण की दक्षिणा कहतेहैं ३९ एकगज एकरथ एक सकाचन अर्थात् सुवर्ण से भूषित घोड़ा व एक हजार गौ एक २ ब्राह्मण प्रति व सुवर्ण युक्त एक प्रस्थरत्न यहिप्रकार ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी कही है ४० जब प्रथम दिन यज्ञाश्व छोड़ा जावै तब एकभार सुवर्ण दक्षिणा देना चाहिये ४१ हे धर्मज ! यह यज्ञका दक्षिणा हुआ अब यज्ञाश्व वर्णन करते हैं, गोदुग्धके समान तो निर्मल व कुन्दके पुष्प समान देदीप्यमान हो ४२ पीली पूंछ काले कान सबगतिनमें उत्तम अर्थात् सबजगहमेंजाने की शक्तिहो यदि श्वेतकर्ण न हों तो श्यामकर्णवाला यज्ञाश्व होना चाहिये ४३ अरु चैत्रशुक्ल पूर्णमासीको यहिप्रकार का घोड़ा छोड़ै एक वर्ष पर्यन्त महाबली योधाओं से रक्षाकरना योग्यहै ४४ घोड़ा के रक्षणार्थ चाहे सुत भाई आदि प्रियवीर उसकी रक्षा में नियोजित अर्थात् तत्पर रहैं अरु यज्ञकर्त्ता जब तक घोड़ा

सारी पृथ्वी विजयकर न आवे तबतक असिपत्र व्रत अर्थात् दर्शन, स्पर्शन, क्रीड़ा, शृङ्गार, मिथ्या बोलना येसबछोड़ निर्विकार मनराखे ऐसा असिपत्र व्रत धारणकरे ४५ अरु हे राजेन्द्र! उसी में नियत चित्त राखै और कार्य न विचारे इसका तात्पर्य यह कि चित्त स्थिर करे और वर्षमात्र अपना इष्ट भोग न भोगे व स्त्री से वर्जित रहे अर्थात् स्त्री रमण न करे ४६ अरु हे नराधिप! सपत्नीक एक आसनविषे शयनकरे जबतक फिर घोड़ा लौट न आवै ४७ तबतक यज्ञकर्त्ता धैर्ययुक्त यत्नपूर्वक वासकरे, जहा २ घोड़ा मूत्रपुरीष त्यागे अर्थात् दस्त पेशाबकरे तहा २ सहस्र गोदानकर ब्राह्मणों से हवनकराना योग्य है अरु हवनकर्त्ता ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर पूजनकरना योग्यहै इसमें संशय नहीं ४८। ४९ घोड़ाके मस्तकमें सुवर्णपर बल प्रतापसे युक्त अपना नाम लिखकर बाधै ५० अरु यहभी कहना चाहिये कि यह उत्तम घोड़ा हमने छोड़ा है जो राजा हम से बली होय वह ग्रहणकरे ५१ जो ग्रहण करेगा तिसको हमारे बीर जीतकर घोड़ा लैलेवेंगे हे बीर! यहिप्रकार यह यज्ञहोतीहै ५२ असिपत्र व्रतकरने से बहुत पुण्य का फल प्राप्त होताहै इसी प्रकार पूर्वकाल में इन्द्रने सौ अश्वमेधयज्ञ कियेहैं ५३ उन्हींयज्ञोंके प्रतापसे देवेंद्र पदवी को प्राप्तहोकर स्वर्ग के सुखको भोगरहे हैं सो इन्द्रने व्रतरहित सौ यज्ञकियेहैं ५४ अरु जो व्रतयुक्त अश्वमेध महायज्ञ करतेहैं सो सर्वपापों को नाशकरके

पृथ्वीपापरहितकरदेते हैं ५५ अनंग जो कामदेव है तिस को भीष्मपितामहके बिना कोई जीतने वाला मनुष्य नहींहै तिसीभयसे व्रतयुक्त अश्वमेधयज्ञ नहींकरते ५६ हे भारत! यदि तुमको कामके जीतने की शक्तिहोय तो बिजयकर हे कुरुनन्दन! यज्ञका प्रारम्भकरो ५७ यह सुनकर युधिष्ठिर बोले हे मुनिसत्तम! अश्वमेधयज्ञ तो हमको सर्वथा शोचनीयहै कि न तो हमारे द्रव्य है न अश्वहै न कोई सहायकहै यज्ञ क्योंकर होसक्ताहै ५८ अरु भीमादिकसब हम करके महा संग्राम में क्लेशित कियेगयेहैं अरु कर्णकापुत्र उदार बुद्धिवाला वृषकेतु ५९ सो अभी सोलहवर्षका है अरु घटोत्कचका एकपुत्र मेघवर्ण इसको संग्रामकी आज्ञादेना मेरा धर्म्म नहीं है ६० देखो जिसमेघवर्णका पिता मेरे अर्थ रात्रिमेंसूर्य-पुत्र कर्णकरके मारागया अरु जेहिके प्रतापसे पाण्डव भारत बिजयकर पृथ्वीपति हुये ६१ सोई केशव मधु-सूदन दूर द्वारका में प्राप्तहैं तेहिसे हे भीम! कहो यज्ञ कैसे होयगी ६२ हे भीम! गोत्रहिंसा कैसे नाशहो सो बताओ यज्ञ में बिघ्नकर्त्ता बहुतहैं इससे हे पाण्डव! मैं शोच करताहूं ६३ यदि यज्ञ न पूर्ण हुई तो उपहास्य मिलैगी तब भीमसेन बोले हे तात! न हमारे देशमें घोड़ा है न तपोदित धनहै न समीप हृषीकेश भगवान् हैं सो वचन कैसेहोंगे यदि तुम्हारेसमीप श्रीकृष्णही विद्य-मानहोते तो सब सिद्धताहोती ६४। ६५ जहां जेहिके समीप श्रीकृष्ण वास करते हैं तहां सर्व सम्पदा सर्व

सिद्धी प्राप्तहैं अरु जिनके केवल नाम स्मरण ग्रहणसे सर्वपापोंसे मुक्ति होती है ६६ हे राजेन्द्र! समीपमें प्राप्त हैं तो क्या फलहुआ कि तुमको गोत्रहिंसा कृत पाप नहींहैं ६७ और माधवके बिना यज्ञका पवित्रकर्ता कोई नहीं है मेरी यहमतिहै हे राजन्! पूर्वमें युद्धकाल प्राप्त विषे श्रीकृष्णने अमित बुद्धिकहकर कहा कि युद्धकरो सो आपक्यों उसको विस्मरण किये देतेहो ६८ । ६९ अरु हे तात! राजसूय व अश्वमेध यज्ञके फलको यज्ञनायक श्रीकृष्णचन्द्रके बिना को समर्थ है ७० अरु हे राजन्! व्यासजीसे पूछो यज्ञकेयोग्य घोडा कहीं वर्त्तमानहोय तो ये महामुनि हमसे बर्णनकरैं ७१ जैमिनिजी बोले कि भीमसेन के ऐसे बचनसुन अमिततेजवाले व्यासजी फिर युधिष्ठिर प्रति बोलतेभये ७२ हे वीर! धन्यहो तुम्हाराकल्याणहो तुम्हाराकहना बहुतयथार्थ है घोडा तो यहा से दूर भद्रावतीपुरीमें विद्यमानहै ७३ अरु राजा यौवनाश्व वीर दशअक्षौहिणियों के युक्त हे धर्म्मनन्दन! नित्त निमित्त उसकी रक्षा करता है ७४ अरु हे तात! पवनकोभी उसघोड़ेकास्पर्श करतेहुये शंका होती है फिर और मनुष्यके ग्रहणकरने में क्या गिनती है ७५ जैसे कृपणमनुष्य धनकी रक्षाकरता है वैसेही वह घोडा तिसराजायौवनाश्वकरके नित्य रक्षित रहता है ७६ हे पाण्डव! धर्म्मराजके यज्ञसिद्धिके अर्थ घोडा लेआवो ७७॥

इत्याश्वमेधिकपर्वणिजैमिनीयेभाषायांव्यासस्ययज्ञोक्तिर्नामप्रथमोऽध्यायः १

दूसरा अध्याय ॥

जैमिनिजीबोले हे जनमेजय! व्यासजीके ऐसेवचन सुन भीमसेन प्रसन्नह्वैबोले हे ऋषिराज! हम अश्वको अवश्यही अपने बलसे लेआवेंगे १ एकाकी अर्थात् अकेले वहाजाय उस बलीराजाको सैन्यसहित जीतकर तुम्हारी महासन्देह दूरकरेंगे २ हे राजन्! जो मनुष्य वासुदेव का चिन्तवन अर्थात् स्मरणकर कर्मकार्य करते हैं तिनके सबकार्य सिद्धियों को प्राप्तहोते हैं हम सत्यकहते हैं ३ अरु जो नर वासुदेव भगवान् का अनादरकर कार्य कर्म यज्ञादिक करतेहैं सो सब निष्फल होजाते हैं जैसे भाग्यके चरित्रहैं ४ अरु जो मैं घोड़ा न आनौं तो मुझको घोरगति प्राप्तहो जो लोक माता पिताके मारने से होता है ५ सोई लोकको मैं जाऊ जो घोड़ा न लासकू और इसके सिवाय जहा एकग्राम विषे एकही कुवाहै उसमें जो ब्राह्मण वास करते हैं ६ और वेदाध्ययन अर्थात् अपनेकर्म्म वेदकोभी नहीं पढते तहाके निवासियोंकीगति मुझकोप्राप्तहो जो मैं घोड़ा न लाऊ ७ ये वचन कहकर भीमसेन शान्तहो स्थित होजातेभये तव युधिष्ठिर बोले हे महाबाहु भीमसेन! तुम घोड़ेको लेआवोगे ८ परन्तु तुमको अकेलेदेख मेरेहृदय में एक यह शंका आती है कि यौवनाश्व महाबली है व उसके सेनाध्यक्षभीवली हैं ९ तहातुम्हारे अकेले जानेमें मुझको वडीचिन्ताहै तव जैमिनिजी बोले हे राजन्!

धर्मराजके वचन सुनकर कर्णात्मज वृषकेतु बोले कि भीमसेनका दूसरा सहायक हमको जानो १० तब भीमसेन बोले हे पुत्र! तुम्हारा पिता हमकरके समरमें मारा गया इसकारण तुम्हारा मुखदेख हमको लज्जाआती है ११ भीमके येबचनसुन वृषकेतु बोला हे तात! तुमने यह उपकार कियाहै पिताके मारने में जो क्षात्रधर्म में प्राप्तहोकर कुत्सित करतेथे १२ पापात्मा धर्मविरोधी दुर्योधनकी अनुमतिमें तत्पर आज्ञाकारी अनन्तवर्ष पर्यन्त पृथ्वीतलमें धर्मकेविरोधी होनेयोग्यथे १३ जेहि कर्ण करके सभामें क्लेशित स्त्रियों में श्रेष्ठ द्रौपदी वायुसे व्यजनकी भांति कम्पायमान देखीगई १४ अरु मेरे पिताको आपने मोचित किया है चिन्तना न करो अत्यन्त मलविकारों करके युक्त मेरेपिताकर्ण सो पाण्डवों करके मारेगये अरु युद्धविषे दानदेकर शुद्ध किये गये १५। १६ जैसे किसी मनुष्यसे कौड़ी व सुवर्ण लेकर उसको चिन्तामणि दियाजावे तैसेही अर्जुनने किया है १७ और जैसे आगनमें प्राप्त फलविहीनवृक्ष उखारिके देवतरु कल्पवृक्ष लगायाजावे तैसेही अर्जुनने किया है १८ तेहिसे हे महाबाहु भीमसेन! तुम्हारा क्या अपराधहै तुम्हारेही प्रसादसे कर्ण भास्करपद अर्थात् अपने पिता सूर्य्यनारायणके पदको प्राप्तहुये १९ तेहिसे हे पाण्डव! कर्णका अयश अबहूं कुछ पृथ्वीतलमें छाय रह्यो है सो वहभी तुम्हारीयज्ञ में अब नाशकरैंगे २० अरु हे भीमसेन! राजा यौवनाश्वका पराक्रम समुद्र वत्

मथिकै घोड़ा अब शीघ्रतापूर्वक लाना चाहिये २१ जैमिनिजीबोले हेराजन्! कर्णात्मजके ये बचनसुन भीमसेन हृदय में लगाय अपने प्रपौत्र मेघवर्णको निकट बुलाय बोले २२ तुम्हारे पिता घटोत्कचने सब पाण्डवों को उद्धार किया अर्थात् अपनी पीठ में सबको चढाय गन्धमादनमें प्राप्तकियाथा २३ तैसेही हे बीर! तुमभी राजा युधिष्ठिरकी पीठकी रक्षाकरो हम और कर्णपुत्र घोड़ा लेनेजातेहैं २४ तुम सहितअर्जुन के यत्नपूर्वक रक्षाकरना जबतक हम शीघ्रघोड़ा लेकर न आजावें२५ यह सुन मेघवर्ण बोला हे पितामह! तुम्हारे गातसे उत्पन्न धैर्य्यमान् घटोत्कच तिन करके जो ऐसे उत्तम पवित्र कर्म्म कियेगये तो कुछ विस्मय नहींहै २६ देखो मार्गों अर्थात् नाली नालाओं का जल तबतक पवित्र नहींहोता जबतक गङ्गाजीमें प्राप्त नहींहोता प्राप्तहोने पर अलग नहींहोता फिर वही जल सर्वपापों को नाश करताहै २७ सो महात्माओं के संगसे क्या दु प्राप्त है जो मनुष्यों को नहीं प्राप्त होय है जैसे रामचन्द्र के चरणों की रजसे शिलारूपी अहल्या पवित्रहोगई २८ अरु हे महाबाहु! हमारे सहित तुमको भद्रावती पुरीको जाना योग्यहै वहासे हम घोड़ेको लावैंगे २९ तहा तुम और कर्णात्मज तो युद्ध में स्थितहोगे तब मैं अपनी पीठपर चढ़ाकर घोड़े को लेआऊंगा ३० हे तात! अब शीघ्र नराधिप युधिष्ठिरको नमस्कारकर चलो महायशकेसाथ निश्चय विजय प्राप्तहोगी ३१ जो मनुष्य

तुम्हारे हितकारी श्रीकृष्णको सदैव नमस्कार करते हैं तिनको पुत्र, मित्र, स्त्री, राज्य, स्वर्गसुख आदि कुछ दुर्लभनहीं हैं सब मिलसक्तेहैं ३२-अरु श्रीकृष्णचन्द्र सम्पूर्ण पातकों को विध्वंस करते व सब आधि व्याधियों को नाशकर धर्मको बढ़ाय सबमनोरथ पूर्णकरते हैं ३३ जेप्राणी हरिभगवान् को नमस्कार करतेहैं तिनको कुछभी-दुर्लभनहींहै-यहमेघवर्णके बचनसुन भीमसेन बोले कि हे पुत्र! धन्यहो कुशलरहो-सब हमारे परमहितकी कहतेहो, ३४-हे बीर! हमारी सहायके अर्थ तुम और वृषकेतु मेरे साथ चलो ३५ हम तीनों जन निश्शंक होकर पराये देशको संशय रहित चलैं इतनी कथासुनाय जैमिनिजी बोले हेराजन्, कुरुनन्दन, युधिष्ठिर! यहिप्रकार तीनों बीरों की शपथयुक्त बातें सुनकर ३६ अतीव आनन्दको प्राप्तहोकर वृकोदर भीमसेनसे बोले-कि हेतात! जो व्यासजीने कार्यबताया सो सब तुमने अंगीकार किया ३७ इसके उपरान्त व्यास जीने-जानेका-अनुमान किया तब सब भ्राताओं युक्त युधिष्ठिर व्यासजीका भाव हृदय में धारणकर व्यास जीकी विधिपूर्वक पूजनकर स्तुति पूर्वक बिदा किया वेदव्यासजी के जाने उपरांत फिर युधिष्ठिर चिन्तवन करतेभये कि केहिसुहृदसे कौनीप्रकार द्रव्योपार्जन अर्थात् द्रव्यकीप्राप्तिपूछें ३८।४० यहिप्रकार भाइयोंसमेत युधिष्ठिर रात्रिमें दुःखितहो बोलते भये हेभाई! कहीं यज्ञाश्व कैसे लावें, और यज्ञक्रिया कैसे करें ४१ देखो

सम्पूर्ण आपदाओं में सर्वदा हमसबके रक्षा करनेवाले देवकीनन्दन कृष्ण भगवान् हैं ते महाप्रभु इससमय दुर द्वारकापुरीमें प्राप्तहैं उनके विना को हमारी सहायताकरै ४२ हागोविन्द! अब मैं इस समुद्ररूपी गोत्रहिंसा में डूबा जाताहूं और नौकारूप तुम्हारी सहायता नहीं है तब मैं कैसे यत्नकर इसमहार्णवसे पारहोऊंगा ४३ हानाथ! जिहिप्रकार आपने लज्जार्णव अर्थात् लज्जारूपी समुद्रमें डूबतेहुये द्रौपदी को उद्धार किया तैसेही हे मधुसूदन! मुझको भी इस दु खार्णव से उद्धार करो ४४ हे दामोदर! ह कृष्ण! हे गोविन्द! हे दयार्णव करुणाकर! आवो २ तुम्हारे सिवाय मेरीरक्षा करनेवाला कोई नहीं है हे नाथ! यदि आप न आवोगे तौ यह सबविधि नष्टहोजायगी ४५ इतनी कथासुनाय जैमिनि जी बोले हे राजन् जनमेजय! यहिप्रकार श्रीकृष्णचन्द्र का ध्यानकर फिर कथाको कहनेलगे कथाके स्मरण करतेही यदि बहुतदूर द्वारकापुरीमेंथे तदपि भक्तोद्धारक अन्तर्यामी शीघ्र द्वारपरआकर प्राप्त होजातेभये ४६ सर्वव्यापी कृष्णभगवान् रमापति आपही आप द्वारेपर आय द्वारपाल से कहा कि मेरा आगमन राजा से सूचितकरो कि कृष्ण द्वारेपर प्राप्तहैं ४७ यहमहात्माओंका मतहै कि समयपाय राजाके दर्शन करना योग्यहै ये केशवके वचनसन द्वारपालबोला ४८ हे गोविन्द! तुम्हारासमय धर्मराजके यहा आनेको सदैव है मेरे आगे युधिष्ठिरजीने यहकहाहे कि दृष्टकूटी अर्थात्

परावा अपवाद करनेवाले पराई द्रव्य चोरानेवाले अरु जे परस्त्रीको कामातुरहो ग्रहणकरते हैं ऐसे स्थानों में तुम्हारा गतागत नहीं है अरु इनसबसे धर्मराज भिन्न हैं ४९।५० हे नाथ! ताते अबराजाको दर्शनदेकरमनोरथपूर्णकरो अर्जुन भीमसेनसे युक्त आज राजा अभी आपही का चिन्तवन करतेथे दर्शनदेकर मनोरथ पूर्ण करो जैमिनिजी बोले कि द्वारपालके ये वचनसुन फिर जनार्दन कृष्णजी बोले ५१।५२ अब शीघ्र हमारा आगम राजासे कहो कि हे धर्मराज! द्वारपर बासुदेव आये हैं ५३ यहसुन द्वारपाल धर्मराजके निकटजाय बिहँसिकै कहा हे स्वामिन्! श्रीकृष्णचन्द्र महाराज द्वारे में प्राप्तहैं द्वारपालके ये वचनसुन युधिष्ठिर शीघ्रता पूर्वक आसनसेउठ भीमसेनसे बोले हे वृकोदर! द्वारपाल कहताहै कि श्रीकृष्णचन्द्र द्वारेमेंप्राप्तहैं ५४।५५ देखो अर्द्धरात्रि में भक्तोद्धारक हमारीप्रसन्नताके हेतु अथवा यज्ञ पूर्णताके हेतु हमारेप्रिय प्राप्तहुये अब उनके निकट शीघ्रचलो ५६ यहकह भाइनसहित धर्मराज श्रीकृष्ण के निकटपहुँचे जब श्रीकृष्णने युधिष्ठिरको देख नमस्कारकिया ५७ तब युधिष्ठिरने दोनोंभुजों से उठाय छातीमेंलगाय मस्तकसूंघिकर स्थितहो नेत्रजलकरके शिराक्षालयकरतेभये ५८ श्रीकृष्णजीको युधिष्ठिर जब तक भुजोंसेमिले तबतक भीमार्जुन चरणोंमेंगिर दण्डवत् कर राजसभामें लेजाय ५९ अर्घ्यादिक से पूजाकरके सब पाण्डव विस्मयको प्राप्तहुये उसीसमय द्रौपदी

आयचरणोंमे शिरनाय हँसिकैबोलतीभई ६० हे वीरो! श्रीकृष्णचन्द्रके यहिसमयके आगमन में काहे से विस्मयकरतेहो देखो जब पूर्ववनवासविषे दुर्वासासे भयभीतहुये ये तबभी महाप्रभु अर्द्धरात्रिहीको आय सब दु:खनशाय दुर्वासाकी भयसे रक्षाकीथी अरु इन्हीं तुम्हारे सहायी सभाके मध्यमें हमारी लज्जा के रक्षणार्थ वस्त्ररूपी देखेगये ६१। ६२ ज्यहिसमयमें माता पिता भाई व पतिहू भयमें प्राप्त अर्थात् डरेहुये थे अरु पितामह गुरुद्रोण इत्यादि ६३ कोऊ हमारी रक्षा न करसके तब इन श्रीकृष्णकरके रक्षितभई अरु मुनिश्रेष्ठ दुर्वासा दुर्योधनकरके प्रेरित अर्थात् भेजेहुये ६४ दशहजार शिष्योंकोलिये वनमेंआय प्राप्तहुये तब मैंने दयासिन्धु जनार्द्दनको मानसी ध्यानकिया ६५ अपनी प्यारी रुक्मिणी सत्यभामाको छोंड़ वायु वेग से शीघ्र आय हेराजन्! बटुईकी अवँठका लगाहुआ सूखा शाक आप भोजनकर सम्पूर्ण मुनिगणोंको सन्तुष्ट करादिया ताते हे भारत! जबजब यहिप्रकार भक्तोंको कष्ट पड़ा है ६६। ६७ तब तब श्रीकृष्णचन्द्र रक्षाकरते आये हैं इतनीकथा सुनाय जैमिनिजीबोले हे राजन्! यहिप्रकार द्रौपदीके वाक्योंकरके हर्षसे सन्तुष्टहुये तब राजा युधिष्ठिर बोलते भये हे हरि! यहिसमय महाक्लेशित जो मैं हू तेहिकरके आप स्मरण कियेगयेहो ६८। ६९ हे जनार्द्दन! अब हमाराकार्य सफलहोगा अर्थात् मैंने जो अश्वमेधयज्ञका अनुमान कियाहै सो हे केशव! उसके

कल्याणकारी उपाय वर्णनकरो यदि मैं जो पृथ्वीतल में यज्ञकरवे को समर्थहोऊं तो कहो तब श्रीकृष्णजी बोले हेधर्मराज! यहिसमयमें तुमकरके पृथ्वीमें शीघ्रही यज्ञकरिवेयोग्यनहीं है इसकाकारण यह कि अभी सब वीर क्लेशित होरहेहैं ७० । ७१ अरु जो भीम के मंत्र से आप यज्ञकरना चाहतेहो सो ये भीमसेन राज्य मंत्रके योग्यनहींहैं केवल खानेहीमें निपुणहैं ७२ देखो इनका स्थूलवदन बैलका ऐसा उदर अर्थात् वृकोदर ये महामन्दहै इसमेंकुछ संशयनहीं है अरु इनके घरमें बिरूपाराक्षसी विद्यमान है इसीसे मन्द रहते हैं ७३ इसीराक्षसीने इनकीबुद्धि नष्टकरदी है कुछ सत् असत् का ज्ञाननहीं है ऐसे निर्बुद्धीकामंत्र क्यों लेतेहो ७४ तिनकी यज्ञसिद्ध न होनेमें क्यासन्देहहै जिनकीयज्ञकेमंत्री वृकोदर भीमसेनसे हैं व्यंग अगहीन बधिर शूद्रीरत ७५ कामी जड़ स्त्रीके वशीभूत इनकामंत्र कवियोंने व महात्माओं ने कहाहै कि सुखद नहीं होता ७६ अरु जे श्वशुरालय में रहकर जामाता अर्थात् दामादकहे जाते अथवा जामाताके कर्म करतेहैं तिनकेमंत्रसेकभी कार्य सिद्धिको प्राप्त नहींहोता ७७ हे भीमसेन! देखो जरासन्धहिडम्बकको हम जानते हैं इससमयके महापराक्रमी क्षत्री जीतने के योग्यनहीं हैं ७८ जे क्षत्री राजा भीमादिकोंकरके राजसूयमें नहीं देखेगये ते जितेन्द्रिय धर्मवान् महापराक्रमी हैं ७९ तिन पराक्रमियों को ये भीमसेन नहींजानतेहैं अर्जुन करके जयद्रथबधके

अर्थ हमसहित प्रतिज्ञाकीगई थी सो वह बड़ासहसा विनाजाने हुआथा सो यहिसमय में हे राजन्! भीमसेन के बलसे ८०। ८१ कैसे यज्ञके पारको प्राप्तहोवोगे हे नराधिप! इसयज्ञमें महासहसाहोयगो कौनवीर दशौं दिशामें अश्वराजकी रक्षाकरतेहुये विजयकरैगा ८२ अरु यज्ञका घोड़ा तो सर्वत्र भ्रमणकरैगा जो कोई देवता गन्धर्व मनुष्य उसको पकड़ैगा उससे विजयपत्र लेकर घोड़ा लेनाचाहिये ८३ प्रथम यज्ञकर्त्ता करके असिपत्रव्रत धारणकरना योग्यहै पूर्व श्रीरामचन्द्रजी ने जब यज्ञकियाथा तब बाजिराजके रक्षणार्थ महाबली ८४ हनुमान्जीको भेजाथा तेऊ शक्तिमतीपुरीमें राजा सुरथकरके घोड़ासमेत बाधलियेगयेथे ८५ तब वे महा पुरुष रामचन्द्रकरके छुड़ायेगये तेहिसे हे राजन्! बाजिराजकी तो रक्षा हमारेसखा अर्जुन करैंगे ८६ और अर्जुन के जानेपर यहां तुम्हारी पृष्ठरक्षा कौनकरैगा अरु केहू वीरकरके पकड़ाघोड़ा ताकी रक्षाकर्त्ता अर्जुन तिसकी पृष्ठरक्षा कौन करैगा हे धर्मनन्दन! यही मेरे एक सन्देह है ८७। ८८॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां श्रीकृष्णोक्तिश्रवणन्नामद्वितीयोऽध्याय २॥

तीसरा अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हे राजाजनमेजय! वासुदेव के ऐसे वचनसुन विहँसतेहुये भीमसेन मेघवत् गम्भीरवाणी

से बोलते भये १ कि हे वासुदेव ! यह समय वीरोंकरके पूज्यमानहै ताते महामनोहर यज्ञ अब युधिष्ठिरकरके करबे योग्य है २ हे जनार्द्दन ! अब हम तुम्हारे पूर्व कहे वाक्यों का विचारके साथ उत्तर देते हैं कि जो आपने कहा बड़ा पेट अर्थात् वृकोदर बैल का ऐसाउदर बुद्धि-हीन बहुतखानेवाला सो सत्य है किन्तु ये सब चिह्न हम तुम्हारीही देहमें देखतेहैं ३। ४ जैसे तुम्हारे उदरमें सम्पूर्णविश्व चर अचरोंकेसमेत शोभित है तो तुमसे बड़ा पेटवाला व बहुत खानेवाला कोई न होगा ५ ब्रह्मा-दिक देवता व सबनदी समुद्रोंसमेत सबदिशा व पृथ्वी तुम्हारे पेटमें क्यानहीं हैं ताते तुमसे अधिकभारी पेट वाला भूत भविष्यमें कोई न हुआ न होगा हे जनार्द्दन ! हमारे पेट व भोजनों को मिथ्या कहने से भी तुमको लज्जा नहीं आती अरु तुम्हारे सिवाय ऐमा गुणज्ञ कौन है जो भालुकन्या जाम्बवतीमें रमण करताहो ६। ७। ८ रुक्मिणी सी राजकन्या ऐसी गुणज्ञपाय फिर वराह मत्स्य कूर्म अर्थात् शूकर मछरी कछुआ आदि नीचयोनी तुम्हारे प्रियहैं ६ तुम्हीं वामन अवतार में नाग भयेहो ताते तुम उलटा कहतेहो अरु लज्जा से हीन जो कर्म है सोई तुम्हारा पुत्रहोकर घर में रहता है १० अरु स्त्रीवश तुमसे अधिक कोई न होगा देखो स्त्रीके निमित्त देवतरु कल्पवृक्ष यहां उखारिलायो ११ और क्षीरसिन्धु जो श्वशुरालयहै तिसमें नित्यही वास करतेहो ये तो प्रकटगुण हमने कहे हैं ऐसेही मनोहर

वहुत गुणहैं १२ अरु यज्ञका दूषण करके राजाको क्यों भयभीत करतेहो पूर्वमें जैसे जरासन्ध आदि क्षत्रियों को माराहै उसीप्रकार १३ तुमको आगेकरके सब शत्रु-गणोंको जीत अपनी भुजासे पृथ्वीसे उद्धार करके सम्पूर्ण पर्वतों को बिदीर्णकर राजा को अश्वमेध यज्ञ कराऊंगा राजाका जो विचार है सो मिथ्या न होने पावैगा और आप तो आयकर हमारा कल्याणही करेंगे १४ । १५ यहि प्रकार अब हमारा बिचार अन्यथा कैसे होगा और हे राजन्! तुम्हारे आश्रयभूत श्रीकृष्ण भगवान्हैं वे सर्वदा आके तुम्हारा मनोरथ पूर्णकरेंगे १६ जैसे पपीहा प्यासा होकर जलसे पीड्यमान मेघो के उदयमें स्वातीके जलको चींचउठाये जलकी अभि-लाषा करताहै १७ यदि जो पपीहा के गले में मेघजलके बदले प्रज्वलित अंगारोंकी वर्षा करें तो उस बिचारे दु खी पपीहाका क्या उपायहै १८।२० भीमके ऐसे वचन सुन अति आनन्द युक्त तेजके बढानेवाले श्रीकृष्णजी बोले २१ कि हे भीमसेन! तुम धन्यहो तुम्हारा कल्याण हो तुम्हारे इनवचनों से मैं बहुत संतुष्ट होकर प्रसन्न हुआ २२ अरु एकबात मैं राजासे पूछताहूं कि भयसे बिह्वलहोकर अश्वमेध क्यों करतेहो रणमें दुर्योधनादि २३ द्रोणाचार्य, भीष्म, कर्ण उनके सुहृद् भाई आदिकों के मारनेका जो अपनी देहमें पातक मानतेहो तो २४ वह सब पातक हमारेविषे अर्पण करदेवें अर्थात् हमारे ही ऊपर छोड़देवें हम उसको भी नाश करदेंगे आप

शुद्धहोकर राज्य में स्थिरहोवो २५ श्रीकृष्णचन्द्र के ऐसे वचनसुन भीमसेन बोले कि हे देवराज, देवकीनंदन! तुम्हारे अर्थ जो पदार्थ अर्पण कियाजाताहै वह चाहे स्वल्पभीहो किन्तु वही पर्वत के समान होजाताहै यह जानकर पातक आपके अर्पण नहीं करते २६ हे रमापते! जो यज्ञका प्राप्तफल सो आपके अर्पण करेंगे अरु हम जहा घोड़ा है तहां उसके लेनेके अर्थ जाते हैं, २७ जबतक हम लौट न आवें तबतक आप राजाकी रक्षा करनेके योग्यहो राजाहीकी रक्षा करने से सबकार्य सफल सिद्धहोते हैं २८ ताते हे देवेश! धर्महीसे ये सबहोतेहैं हम यहसत्य कहते हैं, बिना सुकृत के जीव कोई प्रकार से नहीं शोभितहोता २९ हे नाथ! सब सुकृत पुण्यका मूल हमारे हाथसों ग्रहणकरो हे देवकीसुत! हम व राजा धर्मपुत्र फलके अर्थी नहीं हैं ३० हमको तुम्हारे बिना वैकुण्ठादि के सुखभी सुखदायी नहीं हैं अरु जहां आपके दर्शन हैं तहा येसब सुखदायी लगतेहैं ३१ इतनी कथासुनाय जैमिनिजी बोले हे राजा जनमेजय! तदनन्तर राजा युधिष्ठिर प्रसन्नहोकर अन्त पुर में जाय सुखपूर्वक भोजनकर शयनागार में प्राप्तहुये ३२ फिर प्रात काल भीमसेन उठ कर्णात्मज व दीर्घबाहुवाले मेघवर्ण के समेत तीनोंजन आनन्दपूर्वक यात्राका विचारकर ३३ कुन्ती युधिष्ठिर श्रीकृष्णचन्द्र व और माननीय पुरुषोंको नमस्कार किया तब कुन्तीने भीमसेन को मोदक अर्थात् लड्डू खाने को देकर स्पर्शकिया इसका

तात्पर्य यहहै कि पुत्रकी यात्रामें माताको मुखयात्रा क-
रानी योग्यहै इसीसे कुन्तीने मोदक दियाथा ३४ सो
माताके दिये मोदकखाय भीमसेन अतीव सन्तुष्टहुये
जो भीमसेन अपरवस्तुसे तृप्त न होतेथे ३५ फिर
भीमसेनने दूसरा मोदकलेकर मेघवर्णके हाथमें देकर
आप अर्जुनको आलिंग्य अर्थात् छातीसे लगाय ३६
बोले हे पार्थ! तुम ब्राह्मणों की व राजा युधिष्ठिर की
अच्छेप्रकार सेवाकरना और हमको तो घोड़ालाये
प्राप्तहीजानो ३७ इस समय में श्रीकृष्णचन्द्रको देखो
प्रसन्नहैं इससे हमभी सन्तुष्टहैं और हमारे सहायक
भी हर्षित होरहे हैं ३८ देखो जिन श्रीकृष्णचन्द्रजीके
स्मरणमात्र से सब उपद्रव परायजाते अर्थात् नष्टहो-
जातेहैं तैसेही हे पार्थ! सब पातक व नानाप्रकारके विघ्न
नाशको प्राप्तहोते हैं ३९ इसका तात्पर्य्य यहहै कि मैं
श्रीकृष्णचन्द्रके प्रसादसे घोड़ा समेत यौवनाश्व को
लेकर शीघ्रही प्राप्तहोऊंगा इसमें कुछ सशय न जानो
४० इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि ये वचन
कह पूर्वदिशा प्रभावतीपुरी को बुद्धिमान् वृकोदर स-
हायकों समेत जातेभये ४१ जैमिनिजी कहते हैं कि हे
कुरूद्वह ! जनमेजय सो भीमसेन मार्ग में अनेक देशों
को मझातेहुये उसके तीसरे दिन यौवनाश्वकी पुरी मे
पहुँचे ४२ वह यौवनाश्वकी पालितपुरी कैसी है कि
नानाप्रकारके मनोहर पर्वतों व हजारों उपवनोंसे युक्त
वह मनोहर नगरी सारसादि पक्षियोंसे शोभायमान

यज्ञस्तम्भों से आच्छादित अरु यज्ञोंके धुवांसे वे रमणीय मार्गें न देखपड़ती थीं ४३। ४४ अरु नगरके कुछदूर पर्य्यन्त वेदध्वनि व धनुस्वन अर्थात् धनुके शब्द सुनपड़तेथे अरु नगरमें सुन्दर रमणीय मंडपों में तोरणादि शोभायमानथे अरु इन सुधर्मों से सब देवता सन्तुष्ट होतेथे इसके सिवाय वृक्षोंसे युक्त वनों को भीमसेन देखतेभये ४५। ४६ जहा कदली अर्थात् केलाके वन अनेक पुष्पफलोंसे शोभित कैसे नम्र होरहे हैं जैसे सज्जन मनुष्य अच्छे गुणोंको पाय नम्र होजातेहैं ४७ और साखू नारियलके वृक्ष बड़े व सीधे शाखाओंसे शोभित कैसे रमणीय होरहेहैं जैसे सत्यवान् धर्म्मात्मा पुरुषसे कुलहोताहै ४८ और सुपारियों के वृक्ष अपने फलोंसे नित्यही मनुष्यों के वाक्यों को सत्य करतेहुये सर्बकार्य सिद्धकरते हैं ४९ व कांटों के सहित कटीले कटहरके वृक्ष नित्यही अवतक मनुष्यों को त्रसकरते हैं हे भारत। ऐसे वनराजको भीमसेन देखतेभये ५० वहीं हजारोंवृक्ष खजूरियोंके नानाप्रकार के गुच्छों व फलों सहित मनुष्योंकी तापको दूर करते हैं ५१ अरु किंचित् बिकसे विद्रुम अर्थात् अनार के फल शुकोंकरके युक्त व बिजौराके वृक्ष अपने फूलोंसे मनुष्योंका हित करते हैं ५२ अरु आबके वृक्षोंपर कोकिला सारङ्ग मोर आदि पक्षी बैठे हुये शोभित होकर बोलते हैं जैसे वैष्णव राधा माधवके गुणगान किया करतेहैं ५३ ते मनोहर आम्रवृक्ष मनुष्यों करके नाना

प्रकारसे रक्षित किये जाते हैं तैसेही रुचिके फलको देते हैं जैसे ईश्वरके नाम स्मरणके फल उत्तम गतिदायक होते हैं ५४ ते रक्षित मनुष्य नदी सागरोंका जल बेड़ियों से बहाय सब वृक्षों को सिंचन करते हैं जैसे सज्जन गृहस्थ अतिथि की सेवाकरते हैं ५५ अरु वनराज में बिजौरा, नारगी, जँबीरी, निम्बू, आवँला, जमुनी, नीम कदम्ब, बेरी, बदाम ५६ अमिली, शाल, पुष्पोंसे युक्त चम्पा, नागकेसर, पुन्नाग, बकुला, पाटला शोभायमान होतेथे ५७ अरु भ्रमर शुक अर्थात् सुवा मोरआदि पक्षियोंके नाद शब्दोसे युक्त सुवर्णके समान फूलवाली केतकी, जूही, मोगरादि वृक्ष शतपत्री सुन्दरपत्तों से युक्त व कलीफूलों से प्रकाशित ऐसे वनको देख भीमसेन सन्तुष्ट हो जाते भये ५८। ५९ अरु महावीर कर्णात्मज वृषकेतुको रमणीय उपवन नगर और घोड़े के जल पीनेवाला तड़ाग देखातेभये ६० वह मनोहर तड़ाग रत्नों से जटित व रूपे की शिलाओं करके घाट बँधाहुआ निकट सुवर्ण की बारहदरियों करके शोभित व शीतलजलसों युक्त नानाप्रकारके जीवोंकरके शोभायमान ऐसा उत्तम तड़ाग देखके भीमसेन कर्णपुत्रसे कहनेलगे कि अब क्याकरना चाहिये दोपहर में जब घोड़ा यहा जलपीने आवैगा तब समागम होगा ६१।६२ तिस घोड़े की महावीर सग्राम में कुशल यौवनाश्वके वीर अहर्निश रक्षाकरते हैं जैसे कृपण मनुष्य धनको प्राणवत् प्रियरखते हैं ६२ यहिसे हम तीनोंवीर तब तक

जो यह पर्वत लता वृक्षोंसे गह्वर है इसमें बैठरहैं जब तक समागम नहीं होता ६४ यदि वह बाजिराज इन वीरों से रक्षित भी है तथापि हम प्रथम जाकर ग्रहण कर हरणकरेंगे इसमें संशय नहींहै ६५ सो तुम दोनों वीर हमारी पृष्ठ रक्षा करना यही भविष्य मन्त्र अब सुखदायी होगा ६६ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां भीमसेनेन यौवनाश्वमवेगोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हे जनमेजय! भीमसेनके ऐसेवचन सुन कर्णपुत्र वृषकेतु बोला हे तात! इस राजा यौवनाश्व के दश अक्षौहिणी सेना सुनी जाती है १ तिसमें कुछ अश्वराजकी रक्षाकेलिये आवैगी सो भी तुम्हारी भुजों के बलसे आश्रित होकर युद्ध करनेमें समर्थ न होंगे २ जैसे गंगाजी के समीप जाने से मनुष्यों के पाप समूह नाशको प्राप्त होतेहैं तैसेही तुम्हारे जानेसे वे सब विनाश होजायँगे ३ अरु कालकूट विष तबहींतक दारुण होता है जबतक शिवजी के समीप नहीं जाता ४ अरु इस असार संसारविषे प्राणियों को काम तबहींतक बाधन करताहै, अर्थात् सताता है जबतक उनको सत् असत्का ज्ञाननहीं होजाता ५ अरु मनुष्यों को गमनागमन अर्थात् जन्म मरण तबहींतक होताहै जब तक श्रीवासुदेव का रंचकस्मरण नहीं करते ६ अरु

पितृ नरकमें तबहींतक बँधेरहतेहैं जबतक सुपुत्र स्व-
कुलोत्पन्न गयाजी में पिण्डदान नहीं करता ७ तेहि से
हे महाबाहो ! श्रीकृष्णचन्द्रकी प्रसन्नतासे राजा युधि-
ष्ठिरके अर्थ इससमय घोड़ा ग्रहणकरनेमें सिद्धिही देख
पड़तीहै ८ अरु कज्जलवाले पर्वतों के समान जिनजिन
हाथियों के स्थलोंसे मद बहताहुआ भ्रमर गुजारते ह-
थिनियोंके युक्त ९ काई फेना चहलआदि से रहित नि-
र्मलजल नहीं पीते किन्तु महावतों से ताड़ितभी किये
जाते हैं यदिप्रेम में उन्मत्त क्रीड़ामें उद्यत तड़ागमें डूबते
उछलते आनन्दित होरहे हैं १० जैसे कामीपुरुष स्त्रियो
के प्रेमरूपी जल से प्रसन्न होते हैं तैसेही रागी पुरुष
तेहि जलसे जीवकोगी क्लेशदेते हैं यदि त्याग नहीं करते
तैसेही वे ताड़ित हाथीभी जलक्रीडा नहीं त्यागते ११
महा भयकर हाथियों के कपोलों से सिन्दूर बहरहा है
अरु जे मद से रहितहैं तिनको भ्रमर व भ्रमरी त्याग
करके वनको चलेजातेहैं उन हाथियों से और भ्रमरों से
मिलाप नहीं रहता तो उन भ्रमरों को कमल कमलिनी
प्रीतिसे ग्रहण करते हैं अरु भ्रमरोंको मधुपान करातेहैं
सगतामें प्राप्त महात्मा प्राणिनमें समता करते हैं अरु
देखो जलमें मछरीआदि जलचर कैसे उछलते हैं जैसे
अधम मूढ धनपाकर उछलते अर्थात् उपद्रवही करते
हैं १२। १४ हे महाबल, भीमसेन ! देखो इस निर्मल त-
ड़ागविषे प्रेमसे पूरित चकई चकवा सगत अर्थात् स-
मिलित देखपडतेहैं १५ अरु हे पाण्डव ! महापराक्रमी

वीरों करके रक्षित हिम व दूध के समान निर्मल रंगवाले घोडे अब यहां शीघ्रही आते हैं १६ काहे से कि देखो घोड़ों करके उठी वहुतसी रेणुसे आकाश पूरित है अरु नगारोंका शब्दभी होरहाहै व लालरंग के पताका भी फहरा रहे हैं १७ हे महावाहो! पताका वायुकरके कम्पायमान कालकी जिह्वा के समान शोभित होते हैं ताते यहि समय में निश्चयकरके यौवनाश्व का आगमन होगा १८ अरु देखो रणधीर महापराक्रमी हजारों वीरों के समूह आते हैं तिनके पताकाओं में गृध्र उडारहे हैं सो नहीं जानते क्या सूचित करते हैं १९ अरु पताकाओं में वैठे शुक अर्थात् सुवा शोभित होतेहैं वेई नगारों के शब्द से मानो रोरहेहैं अरु रणमें विशारद वडे-२ वीर आते हैं २० यहिप्रकार जहा वीरोंके समूह विद्यमानथे वहां को देखतेभये इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी वोले हेजनमेजय! यहिप्रकार महावली वृषकेतु के कहते हुये अनेक वीरोंकरके रक्षित वह अश्वराज मध्याह्नविषे जलपीने को उसी तडागमें आताभया २१।२२ अरुते शीघ्रगामी घोडे दश२घोडोंकी तीनपङ्क्तियों करके शोभित विचित्र गतियोंमें निपुण तीतर मोरन की चालन में तत्पर होते हैं २३ तव वहुतसे घोडे आतेजाते देख हे भारत! भीमसेन कर्णपुत्र वृषकेतुसे उत्तम वचनोंकरके वोलतेभये २४।२७ हे पुत्र! यहां देखो वहुतसे घोडे प्राप्तहैं परन्तु जिसके वास्ते हम तुम तीनोंजन यहां प्राप्तभये हैं सो नहीं देख पडता २८ क्या वह यहां राजाके घरही में वँधाहुआ

जलपान पाताहै चाहे जो कुछहो मैं बिना घोड़ालिये धर्मराजके मन्दिर निकट न जाऊँगा २९ हे तात हमको यहा आयेहुये तुम्हारे सिवाय और कोई नहींजानता है और यहासे बिना घोड़ालिये जाना सुखदनहीं है जैसे अपुत्री मनुष्यको स्वर्गादि सुखद नहीं होता ३० तैसेही कृपण मनुष्यों को भी स्वर्गका सुख सुखद नहीं होता अरु जैसे ब्रह्मचर्यके धारण करनेवालोंको काम सुखद नहीं लगता अरु स्त्रीजित् मनुष्यों को जैसे स्त्रीका संगम सुखद नहीं होता ३१ जैसे मंत्रीहीन राजाकी राज्य सुस्थिर होकर बहुत कालतक नहीं रहती न पुण्यहीन मनुष्योंको यश न पराये अवगुण देखनेवालों को सुख कभी होता ३२ अरु जैसे अमित तेजवाले विष्णु-भक्तिसे विहीन मनुष्यों को मोक्ष दुर्लभ होता व जैसे विना शंकरकी आराधना के ऐश्वर्य दुर्लभ होताहै ३३ तैसेही इन्हीं सबके समान विना घोड़ालिये हस्तिनापुर जाना हमको भी दुर्लभहै भीमके ऐसे बचनसुन कर्णात्मज वृषकेतु जैसेही उत्तर देनेलगे ३४ तैसेही सो घोड़ा महारथिनकरके युक्त मदसे प्रमादित रथी पदाती आदि चतुरङ्गिणी सेनासे रक्षित आकर प्राप्तहुआ ३५ अरु सबल वीरोंकरके बँधीहुई चमरैं तिनकरके वीज्यमान अर्थात् डोलाईजाती हैं व श्वेत छत्रसे गोप्य अर्थात् आच्छादितहै व कन्धनी बाधीहै केशरयुक्त चन्दन सब अङ्गोंमें लेपित है युवावस्थाके चिह्न सब अङ्गों में धारणकियेहैं ३६।३७विचित्रअङ्गोंमें मालाओंको पहिरे

है तिन मालाओंकरके शोभित दो वीर पकड़ेहुये मांगलिक जयशब्दसे युक्त होरहाहै ३८ अरु श्याम अगरकी धूपसे धूपित अतिप्यारी पृथ्वी को स्पर्श भी नहीं करता ३९ और देखो अनेक प्रकारके बाघों से शब्दायमान अरु बीरोंकी गर्जनिसे युक्त अन्य घोड़ोंकी हींसनि हाथियों की चिघारसे कैसा शोभायमान होरहाहै ४० सो संशयरहित होनहार जो श्रीकृष्ण के दर्शन हैं तेहि पुण्यसे अनेक प्रकारकी धूपदीप आदि मङ्गलोंकरके पूजाको प्राप्तहै ४१ उसी अवसरमें तिस वाजिराजको रक्षकों से युक्त देख भीमसेन का पौत्र अर्थात् नाती मेघवर्ण बालक उसके लेनेको उद्योग करता भया ४२ तब मेघवर्णको इसविचार में उद्यत देख बालकसे भीमसेन बोले हे तात! तुम यहि समयमें क्याकरिबेके बिचारमें प्राप्तहो सो हमारे आगे सत्य २ कहो ४३ तब भीमसेन के येबचन सुन मेघवर्ण राक्षस बोलताभया हे तात! तुम्हारी आज्ञामें प्राप्तहोकर घोड़े को हम पर्वतपर ४४ गोवत्स अर्थात् बछवाके समान ग्रहणकर स्थितहोवें हमारा यही बिचाराश है अरु हे महाबाहो! हमको वीरोंका भी कुछ सन्देह नहीं है सबके मध्यसे उन सबोंके देखते २ हम लेकर पर्वतपर टिकैंगे ४५ तदनन्तर अश्वराजको देख कर्णपुत्र वृषकेतु भीमसेन से बोलताभया कि हे तात! यदि आप मुझको आज्ञादें तो पुत्रों के सहित यौवनाश्वको ४६ बाधकर तुमको दिखाऊँ अथवा जो तुम्हारे पुत्र होंगे तो क्षात्र-

धर्म से युद्धमें उनशत्रुगणोंको पराजितकर घोड़ेको ले आवेंगे और हे मारिष! अपने सेवकके विद्यमानहोनेपर स्वामी कैसे युद्धकरेंगे ४७।४८ वृषकेतुके ये वचनसुन फिर मेघवर्णराक्षस बोला कि मैं अत्र घोड़ालेकर पर्वत मे प्राप्त करताहूं यह कह मेघवर्ण चलागया ४९ जातेही पर्वतसे उछलते कूदते आकाश में प्राप्तहोकर वह राक्षस राक्षसी माया निर्माण करनेलगा कि महाअन्धकार पृथ्वीपर मढदिया मानों महाप्रलयके मेघ उदय होआये ५० तिनमेघों के उदयमें विद्युत्लताकी छटा अर्थात् बिजली वारम्बार दीप्यमान होतीभई उसी के मध्यमें मेघवर्ण राक्षस सिंहनाद से गर्जताभया ५१ उस समयमें सम्पूर्ण अन्धकार होजानेपर सब दिशा व्याकुलहुईं व सब देवता दैत्य मनुष्य ये सब महाभय को प्राप्तभये ५२ अरु तेहिको मेघके समान गर्ज्जने तर्ज्जने से आकाशमण्डल व्याप्तहोगया और सब विमान जहा तहा भ्रमने लगे ५३ उसीसमयमें कोई कोई देवता भयसे व्याकुलहो शीघ्र इन्द्रकी सभा में जाय बोलते भये ५४ भो स्वामिन्! हम शुभाशुभ तो नहीं जानते किन्तु कोई असुर आय आसुरीमाया चलाय लोकभरको दुःखितकर रहाहै हमनहीं जानते वह कौन है ५५ वह लोकके नाशकरबेको अत्यन्तही माया कर रहाहै सो हेमहाबाहो! आपजाय उसको नाशकरो क्योंकि लोकनाथ लोकके तुम रक्षकहो ५६ यहसुन सुरेन्द्र क्रोधयुक्त ओष्ठ फरफराते हुये अर्थात् महाक्रोधितहो

है तिन मालाओंकरके शोभित दो वीर पकड़ेहुये मा-
गलिक जयशब्दसे युक्त होरहाहै ३८ अरु श्याम अ-
गरकी धूपसे धूपित अतिप्यारी पृथ्वी को स्पर्श भी
नहीं करता ३९ और देखो अनेक प्रकारके बाद्यों से श-
ब्दायमान अरु वीरोंकी गर्जनिसे युक्त अन्य घोड़ोंकी
हींसनि हाथियों की चिघारसे कैसा शोभायमान हो-
रहाहै ४० सो संशयरहित होनहार जो श्रीकृष्ण के
दर्शन हैं तेहि पुण्यमे अनेक प्रकारकी धूपदीप आदि
मङ्गलोंकरके पूजाको प्राप्तहै ४१ उसी अवसरमें तिस
वाजिराजको रक्षकों से युक्त देख भीमसेन का पौत्र
अर्थात् नाती मेघवर्ण बालक उसके लेनेको उद्योग
करता भया ४२ तब मेघवर्णको इसविचार में उद्यत
देख बालकसे भीमसेन बोले हे तात! तुम यहि समयमें
क्याकरिबेके बिचारमें प्राप्तहो सो हमारे आगे सत्य २
कहो ४३ तब भीमसेन के येबचन सुन मेघवर्ण राक्षस
बोलताभया हे तात! तुम्हारी आज्ञामें प्राप्तहोकर घोड़े
को हम पर्वतपर ४४ गोवत्स अर्थात् बछवाके समान
ग्रहणकर स्थितहोवें हमारा यही बिचारांश है अरु हे
महाबाहो! हमको वीरोंका भी कुछ सन्देह नहीं है सबके
मध्यसे उन सबोंके देखते २ हम लेकर पर्वतपर टिकेंगे
४५ तदनन्तर अश्वराजको देख कर्णपुत्र वृषकेतु भीम-
सेन से बोलताभया कि हे तात! यदि आप मुझको
आज्ञादें तो पुत्रों के सहित यौवनाश्वको ४६ बाधकर
तुमको दिखाऊँ अथवा जो तुम्हारे पुत्र होंगे तो क्षात्र-

धर्म से युद्धमें उनशत्रुगणोंको पराजितकर घोड़ेको ले आवैंगे और हे मारिष! अपने सेवकके विद्यमानहोनेपर स्वामी कैसे युद्धकरेंगे ४७। ४८ वृषकेतुके ये वचनसुन फिर मेघवर्णराक्षस बोला कि मैं अब घोड़ालेकर पर्वत मे प्राप्त करताहूं यह कह मेघवर्ण चलागया ४९ जातेही पर्वतसे उछलते कूदते आकाश मे प्राप्तहोकर वह राक्षस राक्षसी माया निर्माण करनेलगा कि महाअन्धकार पृथ्वीपर मढदिया मानों महाप्रलयके मेघ उदय होआये ५० तिनमेघों के उदयमें विद्युत्लताकी छटा अर्थात् बिजली वारम्बार दीप्यमान होतीभई उसी के मध्यमें मेघवर्ण राक्षस सिंहनाद से गर्जताभया ५१ उस समयमें सम्पूर्ण अन्धकार होजानेपर सब दिशा व्याकुलहुई व सब देवता दैत्य मनुष्य ये सब महाभय को प्राप्तभये ५२ अरु तेहिको मेघके समान गर्ज्जने तर्ज्जने से आकाशमण्डल व्याप्तहोगया और सब विमान जहा तहा भ्रमने लगे ५३ उसीसमय में कोई कोई देवता भयसे व्याकुलहो शीघ्र इन्द्रकी सभा में जाय बोलते भये ५४ भो स्वामिन्! हम शुभाशुभ तो नहीं जानते किन्तु कोई असुर आय आसुरीमाया चलाय लोकभरको दुःखितकर रहाहै हमनहीं जानते वह कौन है ५५ वह लोकके नाशकरबेको अत्यन्तही माया कर रहाहै सो हेमहाबाहो! आप जाय उसको नाशकरो क्योंकि लोकनाथ लोकके तुम रक्षकहो ५६ यहसुन सुरेन्द्र क्रोधयुक्त ओष्ठ फरफराते हुये अर्थात् महाक्रोधितहो

देवताओं से बोले हे सबदेवतो! तुमकोई जानतेहो कि यह कौन आयाहै ५७ अथवा यहाका रहनेवाला कोई देवता-जाकर देखै या किसी दूतको भेजो कि जाकर उससे पूछै तुम कौनहो तुम्हारा क्या प्रयोजन है ५८ सुरेन्द्रकी आज्ञापाय देवदूत जाय मेघवर्णसे पूछनेलगा हे वीर! तुमकौनहो यहां किसकारण से आयेहो ५९ हे वीर! तुमको देख सब देवताओंको भय उत्पन्नहुआहै तिससे उन्होंने हमको दूतभेजाहै सो तुमकहो तुम्हारा यहां क्या कार्यहै अथवा क्या प्रयोजनहै जो सबलोक को दुःखित कररहेहो ६० यहसुन मेघवर्ण बोला हे देवदूत! हम देवताओंके भय करिवे योग्य नहीं हैं हम हिडम्बी से उत्पन्न भीमसेन के पौत्र मेघवर्ण हमारा नाम है धर्मराजके यज्ञकी सहायता करने के अर्थ ६१ यौवनाश्वका घोड़ा लेनेको आये हैं किन्तु धर्मराजही के कार्यकी सिद्धिके अर्थ यह सम्भ्रम अर्थात् माया हमने उत्पन्न किया है ६२ देवदूतने इसप्रकार मेघवर्ण की वाणीसुन आनन्दितहो इन्द्र से सम्पूर्ण वृत्तान्त धर्मराजके उद्यमवाला जाय कहा ६३ तब उसी समय में इन्द्रादिक देवता आनन्दितहो संग्राम विषे मेघवर्ण के कौतुक देखने जातेभये ६४ तब मेघवर्ण घोड़ा को देख जहां वह विद्यमानथा उनके हरलेनेमें उद्यत तहां जाताभया ६५ तिसके निकटजाय सब सैन्यको अपने बलसे मोहित करके वायुप्रचण्डसे धूलि उड़ाताहुआ व भयसे सबको व्याकुल किया ६६ अरु वायुसे पर्वतों

की वर्षा करनेलगा इसप्रकार मेघवर्णकी माया से सब घोड़ेके रक्षकवीर व्याकुल होकर कोई शस्त्रलिये कोई शस्त्ररहित इधर उधर घोड़ेको छोड दौड़ने फिरने लगे ६७ तब मेघवर्ण सिंहनाद करतेहुये हर्षितहो घोड़े को लेकर आकाशमें प्राप्तहोनाभया तेहिको आकाश में नीलपर्वतके समान ६८ कुण्डल कानोमें पहिरे भुजों में वजुल्ला बाधे माथेमे मुकुट धारणकिये ऐसे मेघवर्ण को यौवनाश्वके सब वीर आकाशमें प्राप्त देखके कहने लगे इसको मारो मारो काटो काटो अङ्गभङ्ग करो जानेन पावै ६९ ते वीर आकाशमें घोड़ालिये मेघवर्णको देख ऐसे जल्पते अर्थात् कहतेभये और सम्पूर्ण देवतागण धर्मराजका कार्य सिद्धदेख फूलोंकी वर्षा करनेलगे ७० और यह कहनेलगे हे वीर! हे हैडिम्ब! धर्मराजके अनुज भीमसेन तुम्हारेपिता तुमकरके सब कृत्यकृत्य कियेगये काहेसे कि तुम ऐसापुत्र पाया जो तुमने धर्म्मराज की सहायताके अर्थ इतना पराक्रम किया ७१ इसप्रकार प्रशंसनीय वाक्यों को कहतेहुये देवतागण तो अपने आश्रमको जातेभये तब मेघवर्ण आनन्दपूर्वक घोड़ा लिये अपने पितामह भीमसेनके निकट जाताभया ७२ तब भीमसेन व वृषकेतु घोड़ासमेत मेघवर्णको आकाश में प्राप्तदेख अत्यन्त हर्षितहोकर वारम्बार सिंहनाद से गर्जतेभये ७३ तदनन्तर मेघवर्णके घोड़ालेने के पश्चात् यौवनाश्वके सैन्यमें बड़ा हाहाकार शब्द होता भया व सबवीर मारे अन्धकारके व्याकुल आपसही

में शस्त्रघात करनेलगे ७४ तव एकचर चतुर संग्राम की यहगति देख यौवनाश्वके निकटजाय आद्योपान्त सव वृत्तान्त कहसुनाया सो सुनकर यौवनाश्व सहसा-युक्त पुत्रसमेत शीघ्रतापूर्व्वक चलताभया ७५ वहां जाय अपना अश्वहरण देख रोष क्रोधसे परिपूरित बोला कि यमपुरी जानेकी इच्छाकरके कौनवीर मेरा घोड़ा लेगयाहै ७६ वह चाहे देवताहो व मनुष्य उसको शीघ्रही यमपुर प्रेरित करताहूं यहकह साहसी यौवनाश्व क्रोध से विह्वल होगया ७७ तव कालान्तकनाम सेनाध्यक्ष दिव्यरथ मँगाय राजाके निकट प्राप्तकर नम्रतापूर्व्वक बोला हे स्वामिन्! आप रथारूढ़ हूजिये ७८ और मुझ को आज्ञा दीजिये कि मैं अभी तिसदुष्टको निष्प्राण करदेऊं तव राजा बोला हे वीरो! अभी घोड़ा लेनेवाले को पकड़लावो देर न करो ७९ यहसुन चारहजार वीर शीघ्रतापूर्व्वक दौड़ २ कर वेगसे बाणोंको निकाल प्रत्यंचामें चढ़ाय छोड़नेलगे ८० तव मेघवर्ण तिनवीरों से गर्जताहुआ हँसिके बोला हे वीरो! तुम शीघ्रही संशयरहित यमपुर जाना चाहतेहो ८१ यह कह वह राक्षस तिनसवको लात घूसोंसे मार पाषाण पर्वत उखाड़ उखाड़ सबको मारता भया इसप्रकार तिस राक्षस ने बड़ा घोर युद्धकिया ८२ ते मेघवर्णकरके मारेहुये घोर-कर्मी वीर शरीरको छोड़ जन्मसे मुक्तहोकर स्वर्ग के देवालयों में प्राप्तहोतेभये ८३ अरु मेघवर्ण सव सेना मथन करके जहां विषे वृषकेतु भीमसेन प्राप्त थे वहां

जानेका बिचार करताभया सब सैन्यको रण विहाय करके भागतेहुये ८४ सैन्यकावध तथा घोड़ा हरणदेख यौवनाश्व और सेनाध्यक्ष बिजयकी इच्छासे भेजता भया तेमहाबाहु आतेही महाहाहाकार शब्दकर कहने लगे कि कौन बीरने घोड़ा पकड़ाहै कौन कहाको हमारे आगेसे लिये जाता है ८५। ८६ देखो यह दुष्ट अपने नाशके अर्थ घोड़ा लियेजाता है यदि घोड़ा लेजाने में तो देवता भी समर्थ नहीं हे फिर मनुष्य बिचारेकी क्या गतिहै ८७ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! यहिप्रकार जल्पतेहुये सब बीर मेघवर्ण को आकाश में घोड़ालिये देख अत्यन्तही क्रोधाग्निसे पूरितहो ८८ अपने प्रत्यञ्चा चढ़ाय बाणछोड़ने लगे यहातक छोड़े कि दशोदिशा बाणोंकरके पूरितकरदीं व आकाशभी पूरित होगया तब मेघवर्णभी बाणाघातसे पतितहोकर तिनके निकट गिरताभया ८९ उसीसमय वृषकेतु हँसकर भीमसेनसे बोला हे तात! देखो मेघवर्ण पृथ्वीमें प्राप्तहुआ ९० यह राक्षस धन्य है इसने प्रशसनीय कर्मकिये हैं देखो घोड़ा लेकर यहाप्राप्त है यह कैसे शत्रुगणों के मारने योग्यहै ९१ अरु सग्राममें विशारद अर्थात् चतुरवीरोंको देखो सो हम सबको अंगीकार करके अर्थात् इसके सहायी जान मारेंगे इस में सशय नहीं है ९२ यह कह वृषकेतु अपना धनुष सम्हार भीमसेनके देखतेही देखते पैदल सग्राम में मेघवर्णकी सहायताकेलिये जाताभया ९३ जैमे पिनाकी

भगवान् सदाशिव धनुष लेकर दैत्योंपर नाशको आ-
रूढ होते हैं तैसेही वृषकेतु मेघवर्णके समीप प्राप्त हो-
कर बोला हे वीरो! इस समयमें हमारे सन्मुखहोओ९४
किन्तु हमारे सन्मुख आकर क्यों व्यर्थ प्राण त्याग क-
रोगे इससे लौटजावो यह सुन तेवीर नेत्रप्रस्फुरितकर
अर्थात् आंखें खोल देखनेलगे ९५ और बोले यहबीर
कौन किसका पुत्रहै और क्याकहताहै और हमारेसन्मुख
आय कालके समान गर्जताहुआ स्थितहोरहाहै ९६
यह कहतेहुये ते यौवनाश्वके वीर प्रत्यचामें बाणचढ़ाय
वृषकेतुपर मेघकेसमान वृष्टिकरनेलगे तेहिसमय उभ-
यत्रसे तुमुलयुद्ध होताभया ९७ तब दीर्घबाहु सिंहके स-
मान कन्धवाला वृषकेतु सबके बाणोंको काट अपनेबाणों
करके सबवीरोंको विह्वलकरदेताभया ९८ अरु उसी
कर्णात्मजने अपनेही बाणोंकरके हाथियोंको काटकूट
अतिरथी महारथीआदि बलवानोंको बाणोंसे आच्छा-
दित करदिया ९९ इसीप्रकार संग्राममें अनेकों सवार
पैदल कट २ पृथ्वीपर पतितहुये तब उसीसमय महा-
युद्धकरके कर्णात्मज वीरोंको मारके संग्राममें शोभायमान
हुआ १०० जैसे भक्तजन राधा माधव के स्मरण से
सब पातकोंको नाशकर शोभायुत मुदित होते हैं वैसेही
वृषकेतु सब वीरोंको नाशकर प्रसन्नभया उसीसमय
एकचर चतुरने सैन्यकानाश देखकर राजासे जा कहा
१०१ हे स्वामिन्! शत्रुने दशहजारसैन्य जो महायुद्धमें
विशारद अर्थात् महायुद्ध में निपुण रणमें धीर ऐसे

आपके वीरोंको नाशकर घोड़ेको लेलिया १०२ इतनीकथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! महापराक्रमी दीर्घबाहुवाला राजा यौवनाश्व अपने दूतों के वाक्यों को सुनकर महाविस्मित क्रोधाग्नि से प्रज्वलित हो १०३ रणभूमिमें आय अपने वीरोंसे पूँछतामया कि मेराशत्रु कितने वीरोंकरके युक्त आयाहै १०४ तव दूतों ने कहा हे राजन्! हमने तो आपके शत्रुगण तीनही देखे चौथा नहीं देखा उसमें एकतो आपका घोड़ालिये अन्तरिक्षमें प्राप्तहै १०५ और दो वीरोंने अपनेबलसे तुम्हारी सब सेना नाश करदी जैसे वैष्णवपुत्र पवित्र हो अपनेकुलके सब पातकोंको नाशकरदेताहै १०६ तव यौवनाश्व बोला कि हमको यहसूचितहोताहै कि इन तीन देवताओंने तीनोंवीरोंकेरूप धारणकर घोड़ाहरण किया है क्योंकि कोई मनुष्य तो हमारे यहा आने को समर्थ नहीं होसक्ता, जो इससमय अश्व के ग्रहीता अर्थात् घोड़ा हरनेवाले चाहे मनुष्यहों व देवता उनको संग्रामरूपी यज्ञमें इससमय में संशयसे रहित सबको सन्तुष्ट करूँगा १०७।१०८ जैमिनिजी बोले हेराजन्! वह राजशार्दूल यौवनाश्व यह कहिके अपनी चतुरङ्गिणी सेनासमेत संग्राम में प्राप्तहुआ और पहले वह भीमसेनही को देखतामया १०९ फिर युद्धमें स्थित वृषकेतुको देख दयावदाय यह बोला कि देखो यह बालक धन्य है जो हमको आतेदेख समर में अकेलाही प्राप्त है ११० भय किंचित्मात्र भी नहीं करता सिंहके

भगवान् सदाशिव धनुष लेकर दैत्योंपर नाशको आरूढ होते हैं तैसेही वृषकेतु मेघवर्णके समीप प्राप्त होकर बोला हे वीरो! इस समयमें हमारे सन्मुखहोओ९४ किन्तु हमारे सन्मुख आकर क्यों व्यर्थ प्राण त्याग करोगे इससे लौटजावो यह सुन तेवीर नेत्रप्रस्फुरितकर अर्थात् आखें खोल देखनेलगे ९५ और बोले यहवीर कौन किसका पुत्रहै और क्याकहताहै और हमारेसन्मुख आय कालके समान गर्जताहुआ स्थितहोरहाहै ९६ यह कहतेहुये ते यौवनाश्वके वीर प्रत्यचामें बाणचढ़ाय वृषकेतुपर मेघकेसमान वृष्टिकरनेलगे तेहिसमय उभयत्रसे तुमुलयुद्ध होताभया ९७ तब दीर्घबाहु सिंहके समान कन्धवाला वृषकेतु सबके बाणोंको काट अपनेबाणों करके सबवीरोंको विह्वलकरदेताभया ९८ अरु उसी कर्णात्मजने अपनेही बाणोंकरके हाथियोंको काटकूट अतिरथी महारथीआदि बलवानोंको बाणोंसे आच्छादित करदिया ९९ इसीप्रकार संग्राममें अनेकों सवार पैदल कट २ पृथ्वीपर पतितहुये तब उसीसमय महायुद्धकरके कर्णात्मज वीरोंको मारके संग्राममें शोभायमान हुआ १०० जैसे भक्तजन राधा माधव के स्मरण से सब पातकोंको नाशकर शोभायुत मुदित होते हैं वैसेही वृषकेतु सब वीरोंको नाशकर प्रसन्नभया उसीसमय एकचर चतुरने सैन्यकानाश देखकर राजासे जा कहा १०१ हे स्वामिन्! शत्रुने दशहजारसैन्य जो महायुद्धमें विशारद अर्थात् महायुद्ध में निपुण रणमें धीर ऐसे

आपके बीरोंको नाशकर घोड़ेको लेलिया १०२ इत-
नीकथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! महापराक्रमी
दीर्घबाहुवाला राजा यौवनाश्व अपने दूतों के वाक्यों
को सुनकर महाविस्मित क्रोधाग्नि से प्रज्वलित हो
१०३ रणभूमिमें आय अपने बीरोंसे पूँछताभया कि
मेरा शत्रु कितने बीरोंकरके युक्त आयाहै १०४ तब दूतों
ने कहा हे राजन्! हमने तो आपके शत्रुगण तीनही
देखे चौथा नहीं देखा उसमें एकतो आपका घोड़ालिये
अन्तरिक्षमें प्राप्तहै १०५ और दो बीरोंने अपनेबलसे
तुम्हारी सब सेना नाश करदी जैसे वैष्णवपुत्र पवित्र
हो अपनेकुलके सब पातकोंको नाशकरदेताहै १०६
तब यौवनाश्व बोला कि हमको यहसूचितहोताहै कि इन
तीन देवताओंने तीनोंबीरोंकेरूप धारणकर घोड़ाहरण
किया है क्योंकि कोई मनुष्य तो हमारे यहां आने को
समर्थ नहीं होसक्ता, जो इससमय अश्व के ग्रहीता
अर्थात् घोड़ा हरनेवाले चाहे मनुष्यहों व देवता उनको
संग्रामरूपी यज्ञमें इससमय में संशयसे रहित सबको
सन्तुष्ट करूँगा १०७।१०८ जैमिनिजी बोले हे राजन्!
वह राजशार्दूल यौवनाश्व यह कहिके अपनी चतु-
रङ्गिणी सेनासमेत संग्राम में प्राप्तहुआ और पहले
वह भीमसेनही को देखताभया १०९ फिर युद्धमें स्थित
वृषकेतुको देख दयावदाय यह बोला कि देखो यह बा-
लक धन्य है जो हमको आतेदेख समर मे अकेलाही
प्राप्त है ११० भय किंचित्मात्र भी नहीं करता सिंहके

समान निडर देख पड़ता है और जैसे योगीजन मृत्यु मे भय नहीं करते तैसेही यह बालक भी निर्भय देख पड़ताहै १११ ताते हे बीरो। तुमसब खड़े होकर हमारा और इस बालक का युद्धदेखो जैमिनिजी बोले कि सैन्य सहित प्राप्त व ऐसे बचनकहते यौवनाश्व को भीमसेन ने देख अपनेपुत्र बृषकेतुको युद्धसे शान्तकर आप गदा लेकर सैन्यके नाश करने में उद्यतहो बेगयुक्त चलते भये ११२। ११३ तब बृषकेतु आनन्दपूर्वक भीमसेनसे बोला हे कुन्तिनन्दन। जो संग्राममें तीनोंलोक के बीर आकर प्राप्तहोवें तो तुमको युद्धकरना योग्य है अरु यह थोड़ी सैन्य तो हमारेही बालकोंके लायक है और हे तात। यहसैन्य पहले मैं जो तुम्हारा पुत्रहूं तिस करके युक्तभई ताते आपको ग्रहण करना योग्यही नहीं ११४। ११५ अरु हे तात। मेरी ग्रहणी सैन्य तुमको वर्जित है मैं इस सब सैन्यको मथिकै इसका साराश यश निकालकर आपके हाथ में देऊगा ११६ सो उत्पन्नहुआ यश मैंही आपके करकमल में देताहूं तो फिर आप इस सैन्यके रमण करनेको योग्यही नहीं हो अरु देखो न यह देह न चचल युवावस्था स्थिररह सक्तीहै ११७ तैसेही किसीके घरमें लक्ष्मी सदा नहीं स्थिर होती किन्तु यशही सदैव पृथ्वीपर स्थिररहता है ताते यशही करना उचितहै ११८ अरु कवियों करके पृथ्वीतलमें धर्म विपरीत कहेगये हैं कि प्रौढावस्थामें प्राप्त स्त्रीरूप परसेनाका मुख अनेकों करके देखा

तथा ग्रहण कियाजाताहै ११९ जे मनुष्य ऐसी सैन्यको मथन करते हैं वे स्थिर यशको पाते हैं अरु यह सैन्य तो हमको स्त्रीरूपसे देखती है इसभावसे तुम्हारी पुत्र भार्या अर्थात् पतोहूहोतीहै १२० हे पाण्डव! शस्त्ररूपी नखों से स्त्रीरूपी सैन्यकी छातीमें गम्भीर घाव करूंगा और स्त्री के चुम्बनके समान मुखमें मुख लगाये इस सैन्यको देखो १२१ और हे तात! तिसके श्वशुर जो तुमहो तिनको देख लज्जित होकर पताकारूप घूंघुटसे मुखफेरलेगी दिखावैगी नहीं हे तात! जवतक इस सेना का व हमारा रणरूपी शय्यापर मिलापहोवै अर्थात् युद्धहोवै तव तक तुम यहाहीं स्थिर रहवे योग्य हो १२२। १२३ यह सुनकर भीमसेन बोले कि हे वीर! विलास करनेवाली इससेनामें पहले तो तुम जाओ तत्पश्चात् संग्राम में स्त्रीरूप सेनाकरके जीते तुमको देखेंगे तब हम दण्डारूपी गदा से अपनी वधूरूपी सैन्य को शिक्षादेंगे क्योंकि शिक्षादीहुई वधू पुत्रको सफल होतीहै अर्थात् आज्ञानुवर्त्तन करती है १२४। १२५ अरु पृथ्वीमें जिनकी पुत्र वधू श्वशुर करके ताड़ना नहीं की जाती उन स्त्रियोंकी दुष्टतासे उनके पुरुष निश्चय करके दुःखपाते हैं १२६ ताते हे कर्णज! वृषकेतु यह विचार करके सैन्यविषे तुम जानेके योग्यहो और तुम पदाती अर्थात् पैदलहो अरु ये सब रथारूढहैं १२७ यह विचार एकाएकी अर्थात् अकेले तुमको जानेकी कैसे आज्ञादेवें जैमिनिजी बोले हे राजशिरोमणि! उसी

में उदारबुद्धी बृषकेतु भीमसेनकी परिक्रमाकर हर्षितहै सेनाके सन्मुख प्राप्तहुआ, जैसे कामीपुरुष पिकवैनी अर्थात् मधुर स्वरवाली, सजल नेत्रोंवाली, सूक्ष्म अंगवाली स्त्रीके निकटजावे १२८ । १२९ अरु वह कैसी सेनाहै कि जिसके गजरूपी तो कुचहैं व गजों का मद क्या है केशरयुक्त चन्दन तिसीकरके सुगंधित होरही है तिसके मध्य में प्रवेशकर ताको भेदन किया १३० तदनन्तर भीमके देखते २ महाबाहु बृषकेतु क्रोध से तीक्ष्णबाणों करके तिनबीरों को क्षणमात्र में पृथ्वीपर पतित करताभया किन्तु उनबीरोंको क्रोधशान्त न भया १३१ यह दशादेख बृषकेतु यह बिचार करताभया कि हमारे बाणोंकरके खण्डित भये सबवीर गिरेपड़े हैं यदि शत्रुभावको तौ भी नहींछोड़ते तो हमको क्या कर्त्तव्यहै १३२ ऐसा विचार करते बृषकेतु फिर शत्रुओं को मारताभया सो चंदन अगर कस्तूरी करके युक्त राजाओं के शिर कमल के समान काटकर फिर हँसके यह कहताभया कि कटेशिर कमलवत् जलविहीन कुम्हिलाते नहीं हैं किन्तु हमारे आगे प्रफुल्लित हो रहे हैं १३३ । १३४ तब हे राजन्! फिर रणमें बाणोंसे कटे कुम्भस्थल तिन मस्तकों से निकले हुये मोती अर्थात् गजमुक्तोंकी मालाओं को वीरोंके कंठमें डारदेतेभये तदनन्तर अपनी सैन्यका नाशदेख अर्थात् काटते छाटते वृषकेतुको देख अश्वारूढ यौवनाश्व समरमें यह बोला कि हे वीर! हमारे दियेहुये रथमें सवारहोकर युद्ध

में स्थिरहो १३५।१३७ क्योंकि रथीपदातीको समता युद्ध नहीं होसक्ता और ऐसा युद्ध शूरोकरके प्रशसनीय नहीं है किंतु तुम परदेशमें अकेले थकेहुये अर्थात् श्रमयुक्त बालक आयेहो १३८ और तुम वहुतसेवीरोंकेयुद्ध से श्रमित विरथ ऐसे बीरसे कैसे युद्धकरूँ अरु तुम्हारा नाम गोत्र व तुम्हारे पिताका नामभी नहीं जानते १३९ अथवा विष्णुकीनाई जगत्में तुम्हाराकुल विख्यातभी नहीं है तिससे हम क्योंकर जानसक्तेहैं सो तुम अपना वृत्तात हमसे कहो तव संग्राममें हम तुमसे युद्धकरेंगे १४० हे वीर! तुम धन्यहो तुमसेधन्य मेरीमति में दूसरा और नहीं है ऐसे यौवनाश्वके वचनसुन वृषकेतु बोला कि हे राजन्! कश्यपसे उत्पन्न सूर्य्यके समान प्रकाशमान तो हमारा कुलहै और पृथ्वीमें हमारे पिता से अधिक दानी कोई नहीं हुआ उन्होंने सभा के मध्य में क्लेशित द्रौपदी देखी और अधर्मी दुर्योधन का पक्ष करिकै धर्मको नहीं विचारा यहिप्रकार सो कर्ण जव अधर्म में रतभये तव रणविषे अर्जुनकरके मारेगये हे वीर! ताके वृषकेतुनाम पुत्र हमको जानो १४१।१४३ सो हमारा पिता कर्ण संग्राममें कुन्तीनन्दन पार्थकरके अविनाशी पद अर्थात् परमपद को प्राप्त कियागया किन्तु संग्रामही में सन्मुख प्राणोंको त्यागकरके मुक्त होगया ताकोपुत्र वृषकेतु में संग्राममें स्थिरहूँ १४४अरु युधिष्ठिरकी यज्ञके अर्थ हमने घोड़ा हरणकियाहै अरु तुम्हारे दिये रथको संग्राममें नहीं ग्रहणकरसक्ते हे नरा॰

धिप ! यदि हम रथ ग्रहणकरलेवें तो,फिर समतायुद्ध कैसे होसक्ता है १४५ । १४६ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां वृषकेतुयौवनाश्वसमागमस्य वृषकेतुप्रश्नोत्तरवर्णनन्नामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजा जनमेजय ! वृषकेतुके ये बचनसुन यौवनाश्व बोला कि हे कर्णज ! तुम धन्य हो प्रथम प्रहारकरो तुमको बालकजान हम पहले न मारेंगे १ यहसुन वृषकेतु बोला कि हे राजन् ! तुम बहुतपुत्रों करके युक्तहो वृद्ध माननीय हो अरु श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शनोंसे हीनहो इसकारण बलमें हमारे समान नहीं हो २ और हे महाराज ! तुम्हारेशरीरमें कुछभी बलनहींहै हम युवावस्थाको प्राप्त हैं तुम हमारे वृद्धपुरुष हो ३ जैमिनिजीबोले हे राजन् ! सो यौवनाश्व वृषकेतुके बचन सुन विहँसिके दशबाणोंसे वृषकेतुका हृदय वेधितकिया ४ तब वृषकेतुने वेगयुक्त राजाकेचलाये बाणोंके तीनखंड कर एक तीव्रबाण प्रहारकर राजाकोभी वेधित किया ५ सो बाण राजानेभी काटके पृथ्वी में गिराया, गिरतेही प्रवेशकरगया जैसे परनिन्दक प्राणियों के पूर्वज अर्थात् पितृ अधोगति पाते हैं ६ फिर,वृषकेतु अर्द्धचन्द्र बाणोंकरके राजाका रोदासहित धनुष और छत्र, चामर, व्यजन, सब काटडारताभया ७ जैसे चक्रवाककी प्रीति से उत्पन्नगुण काटते हैं तैसेही वहबालक एक

वाणोंसे सब काटताभया ८ इसप्रकार जो २ धनुष राजा लेतेगये सो सब धनुषादि उससमय में वृषकेतुने पतित करदिये तब महाबली यौवनाश्व यहदशा देख और धनुषधार टंकोरकरके कर्णज के साठिबाण बंधताभया ते बिषमबाण शरीरमें प्रवेशकर रुधिर पीनेलगे ९।१० जैसे सूर्यनारायणकी किरणें बेगसे जलको पान करलेती हैं तैसेही बहुतबाण हृदयमें प्रवेशकर रुधिर पीजाते भये ११ तब बाणोंसे बेधित वृषकेतुने तुमुलयुद्ध करके राजाको महापीड़ितकिया और चार बाणोंसे चारोघोड़ों को मारा १२ और सारथी का शिरकाटि पृथ्वीपर गिराय फिर सबके देखते २ राजाको विरथकर अदृश्यकरदिया १३ तब राजाको अदृश्य देख उससमय यह शब्द सब करतेभये कि राजा मारागया यह कह उसी समय सबवीर कर्णात्मज पर लीलामात्र से बाणोंका अन्धकार करदेतेभये १४ अपने पितामह भीमके देखते २ शत्रुके व्याकुल करने को लज्जितहो महाघोर अग्न्यस्त्र संसारके दग्ध करनेवाला छोड़ा १५ तिस पावकास्त्र से बाणों का अन्धकार शान्त होकर चारो ओर प्रकाश हुआ, तब अग्नि के शान्त करनेको राजा यौवनाश्व ने वारुणास्त्र अर्थात् जलबाण छोड़ा १६ तब कर्णपुत्र ने पवनका बाण छोड़ उस जलबाणको शान्तकर अर्थात् वायु वेगसे जलको सुखाय राजाके रथादिकोंको काट रणभूमिमें सिंहनाद करनेलगा १७ तब यौवनाश्वने बालकके मानुषीपौरुषकोदेख महाक्रोधितहो अपररथ

के यूथपों समेत धर्मराजके नगरको चलें और मेघों के
समान घोरशब्द करनेवाले नगारा हाथियोंपर धरा
जावें और सुवर्णसे भूषित बैलोंसे छकड़ा गाड़िया स
जाई जावें २१। २४ और बहुत कहने से क्या है जि
हमाराधन समस्त खज़ाना आदिहै सो सब श्रीकृष्ण
के निकट ले चलो २५ अरु प्रभावती अपनी हज़ार
स्त्रियोंके समेत जहां भागीरथी गंगाजी के समीप श्री
कृष्णचन्द्र प्राप्तहैं वहां चलें २६ और सयोग को पाय
उत्तम पुरुषोंके समागमसे किसका चित्त नहीं संतुष्टहोता
यह कह फिर राजाने सुदेवको बुलाय आज्ञादिया २७
कि तुम सब धन लेकर और सब नगरके धनीलोगों के
और सज्जन मनुष्यों के समेत श्रीमान् धर्मराजके नगर
को प्रस्थानकरो २८ इतनी कथासुनाय जैमिनिजी बोले
हे राजन्! इसप्रकार राजाकी आज्ञासुन नगरके रह-
नेवालेमनुष्योंने कहा हेनाथ जहां श्रीकृष्णचन्द्र पांडवों
के समेतहैं तहां हमसबको जाना जरूरही उचितहै २९
जेहिसे राजा युधिष्ठिर की अश्वमेध यज्ञ सुशोभित
होवे ऐसे वचन पुरवासी कहकर आनन्दपूर्वक सब
चलतेभये ३० तब सुदेवनेभी माताके निकटजाय कहा
कि तुमको राजाकी इच्छाहै कि जहां राजा युधिष्ठिर
श्रीकृष्ण प्राप्तहैं तहां लेचलें ३१ मातापुत्रके ऐसे अ-
प्रियवचनसुन बोली हे पुत्र! मैं कभी नहीं जासक्ती ३२
और हे पुत्र! हमारे जीतेहुये यह द्रव्यभी नहीं ऐसे कामों
में खर्च होसक्ती किन्तु द्रव्यकेहीन तो मैं जी भी नहीं

सक्ती ३३ यहसुन सुदेवबोला हेमाता! जहा भागीरथी गङ्गाजी के निकट अनेकन महात्मा लोगों का समागम और श्रीकृष्णचन्द्र अपने जेठेभाई बलदेवजीके समेत बैठेहुयेहैं उसी युधिष्ठिरकी यज्ञमें और ऋषियोंके भी समागमहैं हे माता! तहांको उठौ चलकर श्रीकृष्ण बलदेवजीको देखो ३४। ३५ तब वह वृद्धाबोली कि हे सुदेव! मैं तेहिपुरको न जाऊंगी और मैंने पहले देवता धर्म कुछनहीं सुने हैं ३६ अरु हमारे भाई और पिताने कुछधर्म नहीं किया सो तुम पुत्र किसके उपदेशसे धर्म में प्रवृत्तहोकर धनका नाशकरोगे ३७ और मैं जानती हू कि दान यज्ञ आदिक क्रिया ये सबतो वेदने लोकबचक ब्राह्मणोंके अर्थ के लिये कहीहैं ३८ यह प्राणोंके समान जोड़ाहुआ धन कौन नाश करैगा और हमारे कुलमें धर्म किसीको सुखदायकभी नहीं हुआ ३९ और मैं तो अब वृद्धभई मुझमें धर्म क्यो कहतेहो मैंने कभी जो धर्म नहीं कियाहै सो मुझमे नहीं होसक्ता यह सत्य वचन मैं कहतीहू ४० इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! वृद्धाके यह बचनसुनकर सुदेव राजायौवनाश्वके समीपजाय राजाके प्रसन्न करने को हास्यरसके मनोहर बचन बोला ४१ हे राजन्! हमारे साथ माता युधिष्ठिरकी महायज्ञको नहीं जाती है वह घरको छोड़ धर्मराजको नहीं देखना चाहतीहै ४२ तब राजाने वहांजाय तिसके वचनोंको सुनकर उसीके हितदेनेवाले मनोहर बचनकहे ४३ देखो सब लोग अर्थात् सम्पूर्ण

नगरवाले मनुष्य वहां जाते हैं जहां श्रीकृष्णके समेत युधिष्ठिर प्राप्तहैं तहां तुमभी हमारे समेत हस्तिनापुर में चलकर पुण्यकरो ४४ जहां श्रीकृष्णचन्द्र अपनी वधुओं और रुक्मिणी के समेत प्राप्तहैं अरु और भी अनेकजन मङ्गलामुखी हैं हे माता! तिन सबका वहां समागम है तहां चलो ४५ जिनके दर्शनमात्र से देहके सब किये हुये पातक नाश होते हैं इसमें कुछ और बिचार न करना चाहिये ४६ यह सुन फिर वृद्धाबोली हे राजेन्द्र! में नहीं जाऊंगी मेरा सब द्रव्य खर्च होजायगा और मेरी बंधुगण सब दुष्ट हैं मेरेघर को नाश करदेंगी ४७ और मेरखेतों में इससमय गेहूं पकेहुये विद्यमान हैं सो नौकरलोग नष्ट करदेंगे और मेरा नवनीत जो माखन है तिसको गोपालका सब खाडालेंगे ४८ अरु हे राजन्! मेरे जाने से मेरेघरके सब दासदासी स्वतन्त्र होकर मेराघर नाश करदेंगे और मेराघर यथातथ्य मेरेही से विद्यमान है इसमें संशय नहीं ४९ तातें मुझसे व धर्मराज श्रीकृष्ण से क्या प्रयोजन है जैसे वे अपने कर्मकी अव्यग्रता से कृष्ण धर्म्मराज धर्म में प्राप्तहैं ५० तैसेही हे राजन्! मैंभी अपने घरके कार्योंमें अतिनिपुण होरही हूं हे पुत्र! तुम व्यर्थ अपना नगरत्याग हस्तिनापुरको जातेहो ५१ और तुम अभी बालकहो तुम्हारा सबद्रव्य नाश होजायगा और राजाके प्राणजाना उचित हैं किंतु धनहीन जीना उचितनहीं ५२ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले इसप्रकार तिस वृद्धाके वचन सुन

राजा यौवनाश्व ने उसके निकट जाय बांधलिया और रोदन करतीहुई तिसको नरयान अर्थात् सुखपाल मे डालकर लेजाताभया ५३ और राजा महाबिस्मय को प्राप्त मनुष्योंकी आशाको स्मरण करतेहुये बार२ फिर चित्तके भ्रमानेवाले तिस वृद्धाके चरित्र भीमसेन से कहतेभये ५४ अरु फिर तेहि वृद्धाकी वाणीका स्मरण करके भीमसेन से कहा कि देखो मनुष्यों का आशारूप बन्धन महादुस्तरहै ऐसे २ वचन कहतेहुये हस्तिनापुर चलनेका अनुमान करते भये और फिर बोले हे तात! देखो जो यह वृद्धा मेरी माताहै सो मुक्तहोना नहीं चाहती है किन्तु केश, दन्त, नेत्र कर्ण आदि इन्द्रियां तो अत्यन्तही जीर्ण होगई हैं और दु खदायी तृष्णा नहीं जीर्ण होती जिसके त्यागने से महासुख होता है ५५। ५७ यहिप्रकार के वचन कहतेहुये राजा यौवनाश्व भीम को सन्तुष्टकर तहा पाचरात्रि वासकरने के उपरान्त वीरों के समेत और बहुतबली सैन्यके युक्त धर्मराजके हस्तिनापुरको जातेभये जो वहा से बीसयोजनपर विद्यमान था ५८। ५९ तब भीमसेन ने राजा से पूंछा हे तात! आगे जाय तुम्हारा आगमन राजासे वर्णन करें और कर्णात्मज वृषकेतु हमारे जानेके उपरान्त तुम्हारी सेवा में पास रहेगा ऐसा कह राजा की आज्ञा लेकर भीमसेन युधिष्ठिर के निकट जातेभये ६०। ६१ वहां जाय भाइयों से सेवित युधिष्ठिरको देख बुद्धिमान् भीमसेन ने राजा युधिष्ठिर को नमस्कार किया ६२ और

सब भाइयोंको मिलिके बोले हे राजन् ! तुम्हारे प्रसाद से कुशलपूर्वक घोड़ाके समेत और कर्णज के संग्राम में सन्तुष्ट कियेहुये राजा महाबली यौवनाश्व अपनी स्त्री और सुहृदों के समेत आते हैं ६३ । ६४ और उन की भार्या प्रभावती बड़े ऐश्वर्य से भूषित परमबिला-सिनी हजार स्त्रियों के समेत बड़े ठाटबाट से द्रौपदी के देखने को आती है हे राजन् ! जैसे शान्ति क्षान्ति के युक्त विष्णुकी भक्ति होती है ६५ । ६६ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां ससैन्यदम्पतियौवनाश्वयुक्त भीमहस्तिनापुरप्रवेशोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले हे कौरवेन्द्र जनमेजय ! जब राजा युधिष्ठिर ने यौवनाश्व का आगमन सुना तब तो महा प्रसन्न होकर भीमसेन से बोले १ हे तात ! तुम द्रौपदीके पास जायकहो कि वैसेही प्रभावती के दर्शनों को वेभी शृंगारोंसे भूषित होवें २ जैमिनिजी बोले हे राजन् ! यह सुन भीमसेन जहां पार्षतात्मजा द्रौपदी विद्यमान थी वहांगये तब भीमको आते देख आनन्द से द्रौपदी पू-रित होकर ३ सो चन्द्रवदनी भीमको आसनस्थ कर कुशलपूँछी और नानाप्रकार के अस्त्रोंसे गात छिन्नभिन्न देख फिर देवीद्रौपदी ने अपना आसन देकर फिर सती ने मेघवर्ण वृषकेतु की कुशल पूँछी तब भीमसेन बोले हे सती ! भार्यासहित पुत्रों समेत और सैन्य वाहनों के

युक्त राजा यौवनाश्व आनन्दपूर्वक ४।६ और तिसकी भार्या विशालाक्षी हजार स्त्रियों के सहित हे सुन्दरि! तुम्हारे देखनेको आतीहै ७ ताते तुमभी अपनी स्त्रियों के युक्त सुन्दर शृंगारकरो और शुभ शृंगारितहोकर राजा के निकट चलो ८ अरु हे देवि! इस समय में श्रीकृष्णचन्द्र कहांगये देखो तिनके बिना तुम्हारा शृंगार अरु स्वरूप सुशोभित नहीं होता किन्तु देखने के भी योग्य तुम्हारा रूप नहीं है यह हमको विस्मय है ९ अरु हे देवि! यदि जो श्रीकृष्णचन्द्र राजाको छोड़ द्वारावती को गये तो तुम्हारी शोभा प्रभावतीके आगे फिर क्या होगी १० और इस राजाकी स्त्री बहुत से धनसे भूषित है यह सुन द्रौपदी बोली हे पाडव! इस समय में श्रीकृष्णचन्द्र अन्तःपुर अर्थात् रनिवास में प्राप्तहैं ताते हे वृकोदर! मेरे सबशृंगार गयेनहीं अर्थात् मेरेहीमें विद्यमानहैं ११ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे कौरवेन्द्र! तिसके उपरान्त श्रीकृष्ण के सहित राजा युधिष्ठिर यौवनाश्व के लेनेको जातेभये १२ जहां चम्पाका वन फूलोंसे शोभित विद्यमान होरहाथा तहां घोड़ाके समेत वृषकेतु को आगेकर यौवनाश्व प्राप्तहुआ १३ और अपने सम्मुख युधिष्ठिरका आगमन नाना प्रकारके बाजोंगाजों से पृथ्वी कँपातेहुये देखा १४ अरु तेहिसमयमें धर्मपुत्र निकटजाय राजाको ससैन्य घोड़ा के युक्त कर्णात्मजको देखा १५ और देखतेही सवारीसे उतर राजा यौवनाश्वको हृदयसे लगाया तब बुद्धिमान्

यौवनाश्वने भी धर्मपुत्रको प्रणामकिया १६ तो धर्मात्मा युधिष्ठिर बोले हे राजेन्द्र ! तुम मेरे भीमादिकों के समान प्रियहो इसमें कोई दूसरा विचार न करो १७ और हे महामते ! हमारे सहायकर्त्ता श्रीकृष्णचन्द्रको देखो और प्रभावती द्रौपदी कुन्ती आदिकों के शीघ्र दर्शनकरें १८ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन् ! तब धर्मराजके ये वचन सुनकर आनन्दसे पूरितहो राजा यौवनाश्व अच्युत अर्थात् अनन्त जिनका च्युतनाम अन्तही नहीं है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको प्रणामकर बोला १९ हे राजन् ! मैं धन्यहौं और यह घोड़ाभी धन्यहै जिसके कारण से ये तीनों भीमादिकवीर मेरी पुरीको प्राप्त हुये २० अरु ये वृषकेतु तो बहुतही धन्यहैं जिन महात्माने अपने कोमल हृदयसे करुणा उत्पन्नकरके जातेहुये मेरे प्राणोंकी संग्राम में रक्षाकी २१ अरु हे श्रीकृष्णचन्द्र ! वैष्णवों में प्रथम गणनीय अर्थात् भक्तोंके शिरमौर तुम्हारे सखा अर्जुन कहां हैं जिनकरके ये सर्व पातकोंके नाशक आपके दर्शन सबको प्राप्तहुये २२ और जिन्होंने तुम्हारे साथ कुरुक्षेत्रमें बड़े २ संग्राम जीतलिये जैमिनिजी बोले हे राजन् ! यह प्रश्नोत्तर होतेही होते महाभाग्यवती प्रभावतीने भी कुन्ती द्रौपदी को देख नम्रता पूर्वक प्रणामकिया तब उन्होंने नमित देख बड़े प्रेमसे हृदय में लगायलिया तैसेही अर्जुनआय राजा यौवनाश्वको प्रणाम करतेहुये मनोहर वचन बोले २३। २४ हे नराधिप ! तुम युधिष्ठिर के समान हमको माननीय

वृद्धहो अब दैवयोग से आपके दर्शन प्राप्तभये हैं २५ तब राजपुत्र सुवेगने भी श्रीकृष्णादिकों को यथायोग्य प्रणामकर मतिमान् धर्मराज से बोला २६ हे राजन्! महात्मा वृषकेतुकी प्रशंसा मैं कैसे वर्णनकरूँ किन्तु महिमाभी कुछ नहीं कहसक्ता जिनकी कृपासे हम सबको श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन प्राप्तहुये २७ और श्रीकृष्ण के हीन जो राज्य, धन, शरीर मनुष्यों करके धारण किया जाताहै हे राजन्! सो सम्पूर्ण प्रेतवत् अर्थात् प्रेतके समान भासितहोताहै २८ हे हृषीकेश! मैं तुम्हारे कमलस्वरूपी चरणों को नहीं त्यागकरूंगा अब आप यज्ञके अर्थ धर्मराजके अश्वको छोड़ो २९ जैमिनिजी बोले हे भारत जनमेजय! श्रीकृष्णजी सुवेगके वचनसुन संतुष्ट होकर सुवेगके समेत वहां स्थितहो कर्णपुत्र वृषकेतुको हृदयसे लगाया ३० इसके उपरान्त श्रीकृष्णचन्द्र धर्मराज के समेत हस्तिनापुर में प्रवेश किया वहां जाय धर्मराजको सिंहासनमें सुशोभित कराय एकमास व्यतीतकर श्रीकृष्ण धर्म पुत्रसे बोलते भये ३१ हेराजन्! अब देखो चैत्रमासकी पौर्णमासी तो व्यतीतहुई और यज्ञका अवसर अभी दूरहै अर्थात् एकवर्षके लगभग है ३२ जबतक मैं यादवोंकी आश्रय अपनीपुरी द्वारका को चलाजाऊँ हे पाण्डव! जिस द्वारकापुरीका रक्षक कोई दुसरा मेरे सिवाय नहीं है ३३ तेहिते हमको शीघ्रही जाना योग्यहै केवल तुम्हारी आज्ञा चाहिये सो दीजिये अरु मेरे जाने से सब यदुवंशी आनन्द से निर्भय हो

जाते हैं ३४ तबतक यौवनाश्वके समेत बाजिराज की रक्षाकरिये फिर मैं तुम्हारे निमंत्रित यदुबंशियों समेत यज्ञके अवसरमें आऊंगा ३५ जैमिनिजी बोले कि युधिष्ठिर वासुदेवके बचनसुन और उनकी मनसा जान कर जाने की आज्ञादेतेभये ३६ श्रीकृष्णके जाने उपरान्त राजाने व्यासजीके युक्त और अपने भाइयों तथा बलवान् यौवनाश्वके समेत घोड़ेकी रक्षा करनेलगे ३७ और सभाको राजाने मण्डपाकार बनवाया और द्वैपायन व्यासजी से राजामरुतके चरित्र पूंछतेभये ३८ तब व्यासजी राजामरुत की महायज्ञ का वृत्तान्त कहनेलगे कि हेराजन्! उस धर्मात्मा मरुतने प्रथम यज्ञार्थ सुरगुरु बृहस्पतिको बुलाया ३९ तब बृहस्पतिको आतेहुये इन्द्र ने कहा कि मनुष्योंको यज्ञ कराने न जाओ तब इन्द्र करके वर्जित बृहस्पति को लौटतेहुये नारदकरके राजा मरुतने सुना ४० तो राजाने यज्ञके अर्थ इन्द्र व अग्नि की स्तुतिकर प्रसन्न किया तब सुरगुरु आप अच्छे प्रकार उत्तमयज्ञ ४१ कराय जैसे आये तैसेही स्वर्गको गये और राजाभी यज्ञान्त के स्नानकर स्वर्ग को जाता भया इसप्रकार युधिष्ठिर अनेकन सुन्दर पवित्रकारी धर्म वारम्बार पूंछतेभये और वेदव्यासजी सम्पूर्ण धर्मोंको अपनी मति के अनुसार कहतेगये ४२॥

इत्यश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांव्यासस्यमरुत्तयज्ञ माहात्म्यकथनोनाम सप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले हे जनमेजय! वेदव्यासजीके मुखसे सम्पूर्ण धर्मादि युधिष्ठिर सुनकर फिर लोक के हितकारी और धर्म पूँछनेलगे कि १ हे भगवन्! मनुष्योंको संसाररूपी पातक से भयभीत होनेपर क्या कर्म करना उचित है जिससे इस लोक में कीर्ति और परलोक में सुखप्राप्तहोवे २ और वासुदेव भगवान् कैसे सन्तुष्टहोवें सो आप यथातथ्य वर्णन कीजिये यह सुन व्यासजी बोले हे धर्मज! सुनो ब्राह्मणोंको अच्छेप्रकार धर्मशास्त्र जानना व उसी मार्ग में चलना और कुत्सित कर्मों को त्यागना उचितहै ३ अरु पराये अपवादसे भयकरतेरहैं और पराई द्रव्य और परस्त्री की इच्छा न करें किन्तु ग्रहणकरनेकी आकांक्षाभी न राखे न परदारा के वाक्य को श्रवण करें ऐसे शुभकर्मकरैं तो इस लोक मे कीर्ति और परलोक में सुख पावेंगे और क्षत्रिय धर्मज्ञ दाता शूर युद्ध परायण अर्थात युद्ध में निपुणहोवें ४।५ और ऐसे आत्मज्ञाता क्षत्रियों ने यदि समर में सन्मुख प्राण त्याग किये तो इस उस दोनों लोक मे उनकी अचल कीर्ति होती है ६ और वैश्योंको यह उचितहै कि धनकी वृद्धिकरैं और सत्य बोलैं अतिथिकी सेवाकरैं और गो ब्राह्मणका पहले हितकरके पश्चात् सब प्राणियो का हितचाहैं ७ तब इसलोकमें निर्मल यशपाय अन्त में श्री कृष्णसम्बन्धी मुक्तिपावेंगे और शूद्रोंको चाहिये कि श्रद्धा

युक्त माननीय ब्राह्मणों की और अन्य वर्णोंकी सेवा के करतेहुये विष्णुभगवान्‌का ध्यानकरतेरहें तो महायशको प्राप्तहोतेहैं और जे विधवास्त्रियां काममें आसक्तहोकर सुखभोगना चाहती हैं और वे दुष्टा गुरु के अपवाद में भी रतहोकर पराये पति को पाय अतिप्रसन्न होती हैं और धनकेसमेत रागादिकोंमें भी रत रहती हैं सो पचों के युक्त मानों सर्पिणी ही हैं ८। १० हे राजन्! वे स्त्रियां तिस कामभोगी पति के समेत पतितहोती हैं और जे पुरुषाधम मन्दमति तिन स्त्रियोंकी इच्छाकरते हैं वे दोनों नरकी अर्थात् महादुःखदायी नरकीययोनि को पाते हैं अरु वेही विधवादेह के बेचने से पति के समेत महादुर्गति को पाती हैं ११। १२ और जे अपने पतिकेसाथ विहार करनेवाली स्त्रियां शुद्धस्नानकर चन्दनसे चर्चित हो ताम्बूल उत्तम आसन इच्छाभोजन शय्या आदि इनसे अपने पतिकी सेवायुक्त विहारकरती हैं १३ और नित्यही धर्मपरायण सासु श्वशुरकी बन्दनाकर अपने घरके काम करती हैं और देवर ज्येष्ठ आदि की आज्ञा धर्म से मानती हैं वेही सुखविहारिणी स्त्रिया इसलोक में परमयश पाय परलोक में अचल सुखको प्राप्तहोती हैं १४। १५ और जे ऊपर कहीहुई दुष्टास्त्रिया हैं वे पूर्वजन्मके कर्मों से उत्पन्न होनेपर नीचेलिखेहुये चिह्न धारणकरती हैं उनकी काली २ तो उच्छिष्ट अगुलियाहोती हैं और उन्हींसे तालू जिह्वा और पृथ्वीको छूती हैं १६ ऐसे लक्षणों में प्राप्त होकर वे दुष्टा अपने पति को नाश

करनेवाली फिर अपने कियेहुये कर्मों के अनुसार वैध-व्यता अर्थात् विधवापने को पाय नानाप्रकार के दुःख भोगती हैं १७ ऐसी स्त्रियोंको पिताके ही घरमें रहना योग्यहै किन्तु पराये घरको जानाही न चाहिये जो बालोंकी जटा देहमें चहला कीचड़ लगाये अपने खानेही में मनलगाने वाली और अनाचारों में रत ऐसी स्त्रिया हैं वे सुखको कभी नहीं पातीं और जिन स्त्रियों की रक्षा बाल्यावस्थामें उनके पिताने और युवामें पतिने १८। १९ और वृद्धामें पुत्रने की सो कभी स्वतन्त्र नहीं रहतीं वे धन्यहैं और जे स्त्रियां स्वाधीन रहती हैं उनका कभी कल्याण नहीं होता २० और जे स्त्रिया विधवा होनेपर कष्ट से अतिही दुःखकोपाय अपने तन को सुखादेती हैं वे इसलोकमें यशपाय परलोक में महा सुखको पाती हैं २१ और जे विधवास्त्रिया तीर्थयात्राको नहींजातीं और न व्रतादिक करती हैं वे निश्चय करके नरकको जाती हैं २२ हे राजन्! विधवा नारीको शरीर सुखाकर नित्यही उपवासादि शमदम करके तुष्ट रहना चाहिये २३ हे नराधिप कौरवेन्द्र! स्त्रीमें शील न होनेसे बहुतदोष लगते हैं और स्त्रीका कभी विश्वास न करना चाहिये २४ और जे पुरुष औरही स्त्रीमें लीन होरहे हैं अर्थात् दूसरी में जिनका चित्त रम्यो है तिन को विश्वास सुखद नहीं होता और तिन्हींको हास्ययुक्त हो चुम्बन करते हैं २५ अरु जे स्त्रियां पराये पुरुषको देख शीघ्रही उठतीं बैठतीं चलने लगतीं और सुन्दर

स्वरसे हर्षपूर्वक गानेलगतीं कान और कटि अर्थात् करिहाव को खुजलातीं २६ और वृथाही अपने माथे को सिकोरतीं और व्यर्थही हँसने लगतीं ऐसी नारियों को उत्तमपुरुष पुंश्चली अर्थात् पराये पुरुष में रमण करने वाली समझें २७ अरु जे स्त्रिया विना कार्य पराये घरजातीं और परपुरुषको देखि प्रसन्नहोतीं और दूतियों को माताहीं के समान जानतीं, किन्तु उनके संगकी अतीव लालसाही किये रहतीं २८ वे भी पुंश्चली कही जातीं हैं व्यासजीने कहा हे राजन्! अब हम दूतिनी कहते हैं सुनो मालिन, दरजिन, नटी, पटइन, फणिव्रत पत्रों के बेचनेवाली, दासी, सैरिंध्री, पति के हीन अर्थात् विधवा स्त्री, अपुत्रिणी, अर्थात् पुत्र के हीन, कपालिनी इनके समागम से जिन स्त्रियोंका मन सन्तुष्ट होता है २९। ३० हे धर्मनन्दन! ऐसी स्त्रियोंको पुंश्चलियों में सार अर्थात् शिरोमणि जानना चाहिये और स्त्रियों को सदैव दुष्टसंग से विशेष रोकना चाहिये और उनकी रक्षाभी विशेष करनी चाहिये ३१ और ईर्षा करनेवाले कुटिल नास्तिक और धूर्त्त ऐसे पुरुष जिस राजाके निकट रहते हैं उसकी प्रजाको सुखहोना बहुतही दुर्लभहै ३२ हे राजन्! प्रजाओंकापालनकरो इस में तुम्हारा कल्याणहोगा और जिन को अपने धर्म से विमुखदेखो अर्थात् ब्राह्मणादि अपने आचरणोंको नहीं करते ३३ और न देवोंके देव देवकीनन्दन श्रीकृष्णका ध्यान करते ऐसेप्रजा सब धर्माचरणों से हीन नास्तिक

हैं उनको सुमार्गमें तत्परकरो और आचरणोंसे हीन ३४ मनुष्योंके साथ स्पर्श, भोजन, शयन आदि संगति से कहा स्वप्न में भी न करना चाहिये और जो प्राणियों के मुक्ति देनेवाले ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र का ध्यान करते हैं तेचाहे चाण्डालभीहों किंतु श्रीकृष्णचन्द्रको वे देवताओं के समान प्यारे होते हैं ३५॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषाया व्यासस्यचतुर्वर्णानाधर्मपुनः अधमाऽधम स्त्रीलक्षणवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय॥

जैमिनिजीबोले हे जनमेजय! व्यासजीसे इतनीकथा सुन फिर युधिष्ठिर बोले हे मुनीन्द्र! जीवधारी प्राणियों के घरमें लक्ष्मीनारायणके समेत कैसे स्थिरहोकर वास करतीहै सो कहो १ यहसुन व्यासजीने कहा हे वत्स! जैसे लक्ष्मी स्थिररहतीहै सो कहते हैं सुनो सत्यबोलनेसे शौच अर्थात् पवित्ररहनेसे विशेष प्राणियोंको शिवजीके पूजन ध्यानकरनेसे २ लक्ष्मी स्थिररहतीहै और वहीं नारायण भगवान्भी वासकरते हैं जहामातापिता पुत्रज्येष्ठ भाई ३ तथा और बाधवगणोंका मानहोताहै तहा लक्ष्मी स्थिररहती है जहा पतिमें परायण अर्थात् पतिव्रता स्त्री और क्रोधरहित पति होताहै वहाभी नारायण के समेत लक्ष्मी विद्यमानही रहतीहै ४ और जो प्राणी कियेहुये को नहीं मानते और किसीको कूट अर्थात् दुर्वचन नहीं कहते और पितृके श्राद्धमे वित्तशाठ्यता

अर्थात् कृपणता नहीं करते ५ और श्रद्धापूर्वक कर्मकरते और दानदेकर फिर कहते नहीं और समर में की हुई शूरताको प्रकट नहीं करते ६ हे राजन्! परस्त्रीको माता के तुल्य बन्दना करते और आरामकारी वापी कूप शिवालय ७ और तड़ाग बनवाते यज्ञकरते और ब्राह्मणों के मन्दिर बनवाते कन्यादान करते तीर्थयात्रा में आरूढ़ रहते ८ और जे नरोत्तम धर्म में सदैव रत रहते और पापोंसे भयकरते हैं हे पृथापुत्र! पार्थ ऐसेप्राणियों के घरमें लक्ष्मीनारायण वास करते हैं ६ और नीचे कहेहुये दुष्टात्माओं को लक्ष्मी अवश्यही त्याग देतीहै अर्थात् कुटिल शूद्रापति और जुवाँ खेलनेवाले जिनके जुवाही प्रियहोताहै १० हे राजन्! जैसे प्रथम तुम सबभाइयों और सब राजाओं करके वर्जित दुर्योधनके संग कौड़ियों से जुवा खेलतेभये ११ तब चतुर शकुनी ने कपट पासा बनाय सब प्रकार से जीति लिया तो इसमें कुछ शोभा नहीं हुई १२ हे भारत! हमने तभी जान लियाथा कि इन कौरवों का निश्चय करके क्षयहोगा और सत्य करके इनको जुवा केही खेलने के पापोंसे लक्ष्मी छोड़देवेगी अर्थात् राज्यपदसे भ्रष्टहोजावेंगे १३ हे राजन्! ऊपरकहे मनुष्योंके लक्षणों से लक्ष्मी अवश्यही त्यागदेतीहै जे पराये अन्नमें लम्पट रहते मदिरा पानकरते और शिकारमें जीव वध करते १४ और जे अधम महात्माओंकी निन्दा करते और लगेहुये बागको काटने और सुवर्णको चु-

राते किन्तु किसी भी धातुको चुराते १५ हे नराधिप जो रसों की और धान्यों की और पुस्तकों की तृण काष्ठकी फलादिकों की और यावत् वस्तुओ की चोरी करते हैं उनको अवश्यकरके लक्ष्मी छोड़ देतीहै और हे राजन्! अमावास्या, रविवार, संक्रान्ति, व्यतीपात, वैधृति, पितृके दिन और तीर्थादिकों में मैथुनको त्याग देना चाहिये हे राजन्! ये सबधर्म तुमसे कहे अब इसके उपरांत रात्रिहुई रात्रि के अनन्तर प्रात काल श्रीकृष्ण- चन्द्रको बुलाओ जिसमे तुम्हारी यज्ञका प्रारम्भहोवे और विनावासुदेवके तुमको वास करना अर्थात् रहना सुखदायक नहींहै इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! तेजस्वीमुनि व्यासजीके ऐसेवचन सुन युधि- ष्ठिर आज्ञामे तत्पर भीमसेनसे बोलतेभये १६। २० हे महाबाहु! भीमसेन तुम मेरी आज्ञासे शीघ्र द्वारका में श्रीकृष्णचन्द्रके समीपजाय उनको पुत्र पौत्रों समेत २१ और देवी यशोदा, देवकी, रुक्मिणी, सत्यभामा इनसब के सहित महाप्रभुको लेआओ बुद्धिमान् धर्मराजके ऐसे वचन सुनकर २२ भीमसेन नमस्कारकर द्वारकापुरीको जातेभये मार्ग में अनेकप्रकार के देशों को शीघ्रही उल्लघन करगये २३ और नानाप्रकार के रमणीय अनेकतरह के वृक्षों से युक्त वनोंको पवनात्मज भीमसेन लांघगये २४ और अनुपम रमणीय शिखरोंसे शोभाय- मान पर्वतों को लांघ अतीववेगसे वहनेवाली अनेकन नदियों को उतरगये २५ तब दूर से सुवर्णके कलशों से

संयुक्त अनेकप्रकारके बन्दनवारो से शोभित श्रीकृष्ण पुरी द्वारकाको देखतेभये २६ और चन्दन युक्त जलसे सिंची हुई राजमार्ग उग्रसेन करके पालित जिन में हृष्टपुष्ट जन इधर उधर चलेजाते थे २७ और नाना प्रकारके वृक्षोयुक्त अरु लताओं से शोभायमान क्रीड़ा करनेवाले वनों के युक्त और अनेकन महलों और खाओं के युक्त २८ ऐसी द्वारकापुरीमें अक्रूर उद्धवभक्त जन गरुड़ध्वज श्रीकृष्णकी सेवाकरते और रुक्मिणी सत्यभामाआदि स्त्रिया श्रीप्रभुकी सेवाकरतीं २९ और श्रीहरिभी तिन भक्तजनोंकी सेवा में रत हैं यहि प्रकार की शोभायमान द्वारकापुरी को महाबली भीमसेन देखते भये ३० और नगरकी यह शोभादेख अतीव आनन्द को प्राप्तहोकर नगर के निकट शोभायमान तड़ागों में स्नानादि प्राप्त कृत्यकर नगर में प्रवेशकर पुरकेद्वारमें प्राप्तहोकर द्वारपालसे वृकोदर भीमसेन बोले ३१। ३२ कि श्रीकृष्णचंद्रके मन्दिरको जातेहैं जैसेही भीमसेनगये तैसेही श्रीनारायणजी भोजनोंको आरम्भ करनेलगेथे ३३ कोहिप्रकारसे कि देवकी के दियेहुये उत्तमोत्तम सुवर्णके थारमें व्यंजनोंके चौंसठोंकचोलों अर्थात् दुनौओं के समेत श्रीकृष्णचन्द्रने ग्रहण किया ३४ जिसमें चन्द्रमाके सदृश उज्ज्वल सफेद शक्कर के युक्त खीर विद्यमान और कुमुद के समान दीप्तिमान् मूगलीदालिके समेत ३५ और नानाप्रकार के व्यजनों के साथ तीन पक्तियों करके निम्बूके रससे मिश्रित

अचार फलमूलोंकेयुक्त ३६ और अनेकन शोभायमान मिर्च पीपरि इनकी चटनी और केलाफल शक्कर के समेत ३७ औटाहुआ दूध मिश्री के युक्त प्राप्त और यशोदा प्यारवत् दियाहुआ माखन मिसरी प्राप्तहै ३८ और सुन्दरीपूरीखानेमें अतीव सुखदेनेवाली कचौड़ियोंके समेत और दाख शिशपाफल आम फलादिके मर्दै रसोसेयुक्त और मिर्च पीपरि अदरख इलायची आदि चटपटी वस्तुओंसे युक्त चटनी प्राप्तहै और व्यंजन कहे गये किन्तु जो नहीं कहे गये सो सब श्रीकृष्णचन्द्र के थारमें प्राप्त हैं ३९। ४० अरु सुन्दर वृत्तों में आनन्दकारी फूलेहुये पुष्पोंके समान अचार रसके युक्त सुन्दर सकोरन में धरेगये हैं ४१ और सुन्दर मनोहर कुदरू के समान लाल वर्णवाली कुसिली मधु शक्कर खोवा आदि से बनी सुन्दर पात्रों में धरी हैं ४२ किन्तु सुवर्ण की कराहीमें पकीहुई सोनेही के सदृश दीप्तिवाली घृत के सुगंध से पूरित देवीयशोदा प्रीति के समेत परोसती भई ४३ तहां गोधूमचूर्ण दीप्ति में चन्द्रमा के लजावन हारा जिस में घृत तो देखही नहीं पड़ता किन्तु सुवर्ण की दीप्तिसा प्रकाशितहै ४४ और घी दूध के युक्त सौ लोहिका अर्थात् करछुलिसे एकरस किया हुआ गोधूम चूर्ण और धोई से भरी अनभरी सुन्दरी पूरी व सुन्दर छिद्रों करके युक्त पुवा पकाये हुये धरेहैं ४५ और खाने में सूत्रयुक्त मणी बनाई और पापर मालती आदिकों के पुष्पोंसे बनायेहुये और कुम्हड़ा आदिके अचारभी ४६

[illegible] आदि मसालोंसे युक्त [illegible] तिनको महाप्रभु भोजन [illegible] लवण और शुद्धतेलसे पुरित [illegible] व्यंजन खरिका आम आदिकदूध [illegible] कोई अचार दाख से बनेहैं और [illegible] आदिकों से बनाई गई हैं ४९ निदान [illegible] और चार व नवरसोंसे अनेकप्रकार [illegible] तय्यार भोजनोंमें धरेहैं ५० और [illegible] के लड्डु चिरौंजी गिरी लवंग आदि [illegible] और मिश्री से कराह में बनाये हुये [illegible] और दूधशकर से युक्त सफेद फेनी धरी हैं [illegible] और दूसरे प्रकारकेलड्डु अनेकों मिष्ठान्नकी समग्रता से [illegible] और पेड़ा जलेवी कुछ गर्मीखाने

लवंग, श्रीफल, दाख, आम, कदम्ब, कटहर, अँवरा, केला, पीपरि, मिर्च ये सब लवण और करुये तेलसेयुक्त अचार बनायेहुये तीनवर्ष पर्यन्त सुन्दर पात्रमें स्थापित कियेहुये अतीव स्वादिष्ठ धरे हैं ५८। ६२ और देवकी के वाक्यों से प्रसन्नित श्रीकृष्णचन्द्र तिन ऊपर कहेहुये भोजनों को करते हैं और समीपही सुन्दर नेत्रोंवाली बिछुवा करधनी कङ्कण आदि भूषण पहिरे रुक्मिणी, लक्ष्मणा, सत्यभामा, जाम्बवती आदि हाथोंमें मनोहर जड़ाऊ व्यजन अर्थात् पखालिये वायु करती हैं और कोई २ निकट बैठीं ६३।६४ नाना प्रकार के आभूषण पहिरे वायुकरतेहुये कटाक्षकेसाथ हास्यकरतीं ६५ और कोई २ पारिजातके पुष्प धारण किये अतीव शोभा को प्राप्त जगत् प्रभुको टेढ़ीकटाक्षसे देखतीहैं ६६ किन्तु उसी समयमें सत्यभामा कटाक्ष करती और मुसकराती हुई श्रीकृष्णचन्द्रसे बोली हे स्वामिन्! अब आप अपना पूर्व भोजन अर्थात् गोपालनमें माठापीना क्याभूलगये कुछ नम्रहोके पक्का दुग्ध पानकरके वनमें यमुना किनारे बैठ कर तहां गोपालोंकी रोटीलेकर खाजातेथे सो दशा क्या आपको विस्मरण होगई ६७।६९ और हे स्वामिन्! इसी समय तुमने अपने मनुष्य धर्मको सफल जानाहै यह सब राजा युधिष्ठिर की सत्संगति से आपको ज्ञातहुआ है ७० और हे रुक्मिणि! इस समयका विभव देखो कि दिव्य चामरोंसे वीज्यमान इसी विभवके आश्रयसे मेरे कर्मोंका नाश सम्भव होताहै ७१ और हे कल्याण-

सुन्दर हींग, जीरा, मिर्च, अदरख आदि मसालोंसे युक्त श्रीकृष्ण के समीप विद्यमान तिनको महाप्रभु भोजन करतेहैं और अचार सुन्दर लवण और शुद्धतैलसे पूरित हैं ४७।४८ और कोई व्यंजन खरिका आम आदिकवृ से भिगोये गयेहैं और कोई अचार दाख से बनेहैं और कोई २ चटनी कैथादिकों से बनाई गई हैं ४९ निदा षट्रस व्यंजनबनेहैं और चार व नवरसोंसे अनेकप्रका के बनाये हुये बराभी तय्यार भोजनोंमें धरेहैं ५० और सफ़ेद व लालवर्ण के लड्डू चिरौंजी गिरी लवंग आदि मेवाओं के युक्त घी और मिश्री से कराह में बनाये हुये भोजनार्थ धरेहैं और दुधशक्कर से युक्त सफेद फेनी धरे हैं ५१।५२ और दूसरे प्रकारकेलड्डू अनेकों मिष्टान्नक समग्रता से बनायेहुये और पेड़ा जलेबी कुछ गर्मीखाने में अतीव स्वादिष्ठ हैं ५३ उनमें कोई तो शक्कर दुग्ध चावलोंसे बनीहुई गिरी चिरौंजी आदि मेवाओंके सयुक्त घीसे मिश्रित श्रीहरिके भोजनार्थ धरी हैं ५४ और को लड्डू चना और तेलसे बनेहुये जलाव से बाधे गये हैं ऐसे मनमोदक अर्थात् मन के सुखद लड्डू भोजनार्थ श्रीकृष्णके थारमें प्राप्तहैं ५५ और अनेक प्रकारकेमास सस्कारकिये अर्थात् मृगा, वाराह, चौगड़ा, मेढ़ा इनके सिवाय और अनेक प्रकारके मत्स्यादिकों के मांस अनेक रसों से युक्त बनेहुये खानेमें रुचिर सो सब देवकीनन्दन भोजन करतेहैं ५६।५७ और बड़हर, लसोहर निम्बू, नारगी आदि वनके पैदा होनेवाले फल अर्थात्

लवंग, श्रीफल, दाख, आम, कदम्ब, कटहर, आँवरा, केला, पीपरि, मिर्च ये सब लवण और करुये तेलसेयुक्त अचार बनायेहुये तीनवर्ष पर्यन्त सुन्दर पात्रमें स्थापित कियेहुये अतीव स्वादिष्ठ धरे हैं ५८। ६२ और देवकी के वाक्यों से प्रसन्नित श्रीकृष्णचन्द्र तिन ऊपर कहेहुये भोजनों को करते हैं और समीपही सुन्दर नेत्रोंवाली बिछुवा करधनी कङ्कण आदि भूषण पहिरे रुक्मिणी, लक्ष्मणा, सत्यभामा, जाम्बवती आदि हाथोंमें मनोहर जड़ाऊ व्यजन अर्थात् पखालिये वायु करती हैं और कोई २ निकट बैठी ६३।६४ नाना प्रकार के आभूषण पहिरे वायुकरतेहुये कटाक्षकेसाथ हास्यकरतीं ६५ और कोई २ पारिजातके पुष्प धारण किये अतीव शोभा को प्राप्त जगत् प्रभुको टेढ़ीकटाक्षसे देखतीहैं ६६ किन्तु उसी समयमें सत्यभामा कटाक्ष करती और मुसकराती हुई श्रीकृष्णचन्द्रसे बोली हे स्वामिन्! अब आप अपना पूर्व भोजन अर्थात् गोपालनमें माठापीना क्याभूलगये कुछ नम्रहोके पक्कादुग्ध पानकरके वनमें यमुना किनारे बैठ कर तहां गोपालोंकी रोटीलेकर खाजातेथे सो दशा क्या आपको विस्मरण होगई ६७।६९ और हे स्वामिन्! इसी समय तुमने अपने मनुष्य धर्मको सफल जानाहै यह सब राजा युधिष्ठिर की सत्संगति से आपको ज्ञातहुआ है ७० और हे रुक्मिणि! इस समयका विभव देखो कि दिव्य चामरोंसे वीज्यमान इसी विभवके आश्रयसे मेरे कर्मोंका नाश सम्भव होताहै ७१ और हे कल्याण-

कारिणि रुक्मिणि ! अन्यपटरानियोंमें प्रमत्तहोरहेहैं इस से हमको नहीं देखते और अस्मासे सम्भव कर्मफलको भोगरहे हैं ७२ और देखो मैं सामनेहीसे वारंवारआती जातीहूं तिसपरभी नहीं देखते और मैं तो वेदकी वाक्य सुनके श्रीकृष्ण में अपना मन रमित करके इसीसे सर्व दा इनकी सेवा करतीहूं ऐसे वचनसुन देयकी बोली हे सत्यभामे ! श्रीप्रभुको ऐसेवाक्यकहते तू लज्जितमीनहीं होती ७३ । ७४ और मैं श्रीकृष्णकी माता और व· सुदेव पिता तिन दोनों करके श्रीकृष्णके प्रसन्नतार्थ उत्तम कर्म किये गयेहैं ७५ और पूर्व में अपने चरित्र करनेको ये सबकर्म केशवने धारण कियेथे वे इस समय हमारे कर्मानुसार लघुताको प्राप्तहुये अर्थात् अब और कर्मधारण कियेहैं तिनको ऐसे वचनकहते तू लज्जित नहीं होती ७६ देखो जिससमय हमारे उदरमें आयेथे उस समय हम तो बन्धनमेथीं, उस समयमें वीर वसुदेव के कर्मोंको स्मरण करो ७७ और ये अलक्ष्य लक्षणों से युक्त शत्रुओं के नाशकर्त्ता इन के माता पिता भाई स्त्री कोई सुखदेने योग्य नहीं हैं ७८ और हे शुभानने भद्रे ! सब प्राणी अपने कर्म से जीवतेहैं अरु जे श्रीकृष्णका भजन करतेहैं ते सब सुखही पातेहैं ७९ यहसुन सत्य- भामा बोली हेदेवि ! श्रीकृष्णके समीप तुमने सत्य कहा ये सम्पूर्ण ब्राह्मण जनार्दनकी ऐसीही प्रशंसा करतेहैं सो कैसे ८० इनको तुम्हारापुत्र कहते हैं सो हमको इसमें बड़ाविस्मयहै कि ये देवकीके पुत्र बड़ेकठिनकर्मोंको नाश

करते हैं ८१ और इसी देहमें इनकरके महाकष्ट किया गया है सो सबको विदित है और तुम करके हृदय में धारणकिये देखे क्यों नहीं गये ८२ तब देवकी ने कहा हे भद्रे! हमकरके धारण कियेगये और देखे भी जाते हैं ताते हे शुभे! तुम्हारे कर्मों का नाश इन्हीं करके किया गया है ८३ सत्यभामाके ये वचन सुन श्रीकृष्णचन्द्र प्रसन्न होकर जब उत्तर देनेको आरूढ़हुये तब तक उसी समय भीमसेन प्राप्तहुये ८४ तब भीमसेन को आये देख श्रीकृष्ण दासी से बोले कि सत्यभामा को निवारणकरो कि न बोलें भीमसेन यहां आगये ८५ वे भीम देखकर क्या कहेंगे ऐसा बुद्धि से विचार कर हास्य के वचन भीमके सुना चाहते और परिहास की इच्छा करके कौतुकनिधि हरिने ऐसा विचार किया ८६॥

इत्याश्वमेधिके पर्वणि जैमिनीये भाषायां श्रीकृष्णभोजनान्तर्गतषड्रस
व्यंजनवर्णनपुनःभीमागमननामनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि हे कौरवेन्द्र जनमेजय! श्रीकृष्ण-चन्द्र को निवारण करते देख भीमसेन प्रसन्नतापूर्वक मेघवत् गम्भीर वचन बोलतेभये कि १ अब श्रीकृष्ण हमको आयेजान भोजनकरतेहुये दासीद्वारा क्याकरना चाहते हैं २ क्या देवी देवकी मृतकहोगई और सत्य-भामा भी मृतकहुई क्या देश मे अवर्षण होगया मेघ

जल नहींवर्षते जिससे कुछ धान्यभी नहीं उत्पन्नहुई ३ या पुत्र पौत्रों को बली राक्षस ने भक्षण करलिया कि जो श्रीकृष्णही स्त्रियोंके साथ भोजन करतेहैं ४ जैमिनि जीबोले हेराजन्! भीमसेनको ऐसेवचन कहते श्रीकृष्ण चन्द्र हास्य में प्राप्त फेनिन को खाते हुये बड़ा शब्द किया ५ और पापरों का बड़ाशब्द करतेभये और पीने वाले पदार्थों को छोटे पात्रमें लेकर पीतेहुये भी शब्द किया ६ और ओष्ठबाधकर भीमसेन के क्रोधार्थ मुसकरातेभये सो सब कौतुक सुनकर भीमसेन हँसिके बोले ७ कि हे कृष्ण! तुम पहले के माठा पीनेवाले अचारादिकों के स्वाद को क्या जानो और तुम्हारे कण्ठ की बढ़ानेवाली सूतीको तो हम नहींजानतेहैं ८ कि उसने तुम्हारा कण्ठ कैसाबड़ा करदियाहै कि सब पदार्थ भोजन करतेही चलेजातेहो भीमसेनके ऐसेवचनकहने परभी श्रीकृष्णचन्द्रने कुछ न सुना तब फिर भीमसेन बोले कियदि कण्ठमें बरा बोलनेमें अरुभताहो तो हम गदासे निकालदेवें ९। १० किन्तु इस हमारी तर्कहीको धिक्कार है कि देखो जिनके कण्ठमें पर्वतादि और प्रलय में सम्पूर्ण विश्व देखपड़ता है ११ तो उसमें बराआदि की क्यागिनतीहै हेगोविन्द! कहीं तिनके अभ्याससे हम को तथा अपने कुटुम्बको न खाजाइयो १२ और दूरसे आये हुये हमारे खाने का विचार न करना अथवा जो हमको खावोगे तो भी तुमको सुख न प्राप्त होगा १३ और हमारागमन नीचेनहीं होगा किन्तु तुम्हारे शिरके

स्मरण से ऊर्ध्वगतिको जावेंगे हमकरके सचर अचर प्रवेश देखे जाते हैं १४ हे गोविन्द! हमारे भक्षण करने से सबलोग तुम्हारी निन्दाकरेंगे कि आशायुक्त अर्थात् आशासे आयाहुआ पाण्डव तिसको भक्षणकरगये १५ और राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा से आयाहुआ अकेला भीम तुमकरके भक्षितहुआ तब भीमकेरहित कुन्ती रसातलमें क्या करेगी १६ तिससे पुत्रोंके समेत कुन्ती को भक्षणकर सुखीहोओ जिससे धर्मराजकरके पालित तुमकरके नाश होवें १७ सो सुनकर तुम्हारी बहिन सुभद्रा तुमको राक्षस के समान जानैगी सो वाला पुत्र के वियोगसे दुःखित किससे कुछ कहैगी १८ तुम तो सबके सहार करनेवाले हो तुम्हारा दोष कोई न देवेगा पहले सबको उत्पन्न करके फिर नाश करतेहो इस से भीमसेनहूका नाशकरो १९ इतनीकथा सुनाय जैमिनि जी बोले हे राजन्! भीमसेनके ऐसे वचनसुन विस्मित हो देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र वृकोदर के विहँसने के अर्थ बोले २० हे भीमसेन! कुशलपूर्वक आयो और राजा युधिष्ठिर तो कुशलसे हैं २१ और हे वीर! आवो हम और तुम दोनो जन आनन्दपूर्वक भोजनकरैं यह सुन भीमसेन ने कहा पहले आप जब तृप्त होचुके हो तब हमको सहित आदर के पूँछते हो २२ और हे जगन्नाथ! तुम्हारे तृप्त होने से हमभी सन्तुष्ट होगये तब श्रीकृष्णचन्द्र ने कहा हे महाबल भीमसेन! हमारे दिये हुये भोजनों को करो २३ और हे वीर! स्त्री, पुत्र, भाई,

थीं अर्थात् वधिक और कुटनियों के युक्त नानाप्रकारके हाव भावके जाननेवाली वेश्या ४९ और सबराजाओं के प्रसन्नकर्ता मल्लयुद्धमें निपुण योधा और सब वर्णों में जीविका करनेवाले मागध ५० और इन्द्रजाल के करनेवाले और पाठकगण लड़कों के पढ़ानेवाले अर्थात् कायस्थ और गड़रिया और चौर कर्म की जीविकावाले नाऊ ५१ और मृगों के पकड़नेवाले व्याधा अर्थात् बहेलिया हाथों में पिंजरा लिये और जल भरनेवाले कहार और तृण बेचनेवाले और घड़ा बनानेवाले ५२ और दास्यकर्म में निरत दासी और बालकोकी औषधी करनेवाली सूती और मछरी पकड़नेवाले गोड़िया ५३ इनके सिवाय और अनेक जातिवाले द्वारकावासी श्रीकृष्णजी की आज्ञा से चले और उसी समय यदुवंशियों की चतुरंगिणी सेना भी चलतीभई ५४ तिसके चलतेहुये उठी धूलिसे आकाश आच्छादित होगया और सूर्यनारायण अदृश्य होगये और महान्धकारमें बड़ा शब्द होताभया ५५ तिन जातेहुये बनियों के छकड़ों से और हाथियों के हलकों से और चिड़ीमारादिकों के चलने से राह नहीं मिलती थी ५६ उसी समयमें एक वृद्धासम्मली बैलपर चढ़ी-मुसक्राती हुई सखियों से, बोली हे सखियो! वृथा श्रम क्यों करतीहो ५७ क्योंकि ये अविवेकी श्रीकृष्ण-चन्द्र जिसपर संतुष्ट होतेहैं उसका धन हरलेतेहैं किंतु इनके सदृश विचार करनेवाला और कोई नहीं है ५८

तदनन्तर उसी समय में एक कोई और भी बैलपर स-वार चला आता था तो लीलामात्र से जातेहुये मार्ग में व्याघ्र को देखकर बैलभागे तो सम्भली भी गिरपड़ी तब सम्भली को पृथ्वी पर गिरते देख सब सैन्यवाले और पुरजन हँसने लगे ५९। ६० और कहने लगे कि देखो इस दुष्टाने श्रीकृष्णकी निन्दा की इसीसे अपने कर्मोंके लिये फलको पाय बैलसे पृथ्वीपर गिरपड़ी ६१ निश्चय करके पापी मनुष्य अपने कर्मों से अधोगति को पाते हैं यह सुनके सम्भली फिर शीघ्रतापूर्वक उठ खड़ीभई ६२ हे भारत। फिर वह सम्भली सैन्यवालों से मनोहर वचन बोली कि श्रीकृष्ण को देखके फिर मैं बैल पर सवार होतीहूं ६३ मूढ़जन केशव के स्मरणको नहीं जानते कि कृष्ण मुरारिके सिवाय पापियोंके उद्धारकरने वाला कोई दूसरा नहीं देखपड़ता ६४ इतनी कथा सु-नाय जैमिनिजी बोले हे कौरवेन्द्र जनमेजय। श्रीकृष्ण-चन्द्र श्वेतघोड़ों के मनोहर रथमें आरूढहोकर मध्याह्न समय में सबसे आगे यात्राकी और सब पुरवासी भी प्रसन्नतापूर्वक चलते भये ६५ सब द्वारकावासी और भीमसेन व अपनी सब स्त्रियों के समेत श्रीकृष्णचन्द्र धर्मपुत्र युधिष्ठिर के दर्शनोंकी और यज्ञकी ये दोनों आ-कांक्षाओं से शीघ्रतापूर्वक जाते और बिना धर्मपुत्र के दर्शनों के नहीं तिष्ठते अर्थात् कहीं टिकतेही नहीं ६६। ६७ और सब मार्ग में नाना प्रकारके कौतुक करतेहुये स्वेच्छाचारी चलेजाते थे उसी समय में मालाकारी

श्रीहरि को देख बोला कि ६८ हे स्वामिन्! इस मध्याह्न वेलामें हम सब अपने जीविकावाली वस्तुओं के समेत कैसे चलसक्तेहैं और मेरे सिवाय फूलोंके जीविका करने-वाले माली जिन्होंने आपके निमित्त माला और उत्तम पुष्पोंका संग्रह किया है वे सूखे जाते हैं अर्थात् कुम्हि-लाये जाते हैं उनके माला ग्रहणकीजिये और उनको मुक्तादिक दीजिये ६९। ७१ और हे जनार्दन! नहीं तो वे सब माला कुम्हिला जावेंगी इससे हम सब आपके साथ नहीं चलसक्ते आप गुणोंसे युक्त माला ग्रहणकरो ७२ तिसके ऐसे वचनसुन श्रीकृष्णचन्द्र मुसुकरातेहुये बोले हे भद्रे! तुम्हारे वाञ्छित मुक्तादिक धन देंगे ७३ और धर्मराज के आश्रम में चलकर ऐसे वचन कहो जिससे हमारा मनप्रसन्न रहे जैमिनिजी बोले हे राजन्! जब तक उसने ऐसे बचन कहे तब तक तेलके समेत दूसरी तेलिन प्राप्त भई ७४ और कहा कि हे विभो! मेरे वचन सुनो मेरा तेलसे भराहुआ पुराना जीर्ण घट धूपसे बहाजाता है ७५ हे स्वामिन्! तुम मेरी व्यथाको नहीं जानते हो मैं अभी कोल्हू से निकाले लाती हूँ और हे नाथ! तेल लिये हुये मुझको शकटादिकोंसे राह भी नहीं मिलती इससे मैं चल नहीं सक्ती याको आप नीतिके साथ बताइये ७६। ७७॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांहस्तिनापुरगमनोनाम दशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हेराजन्! भीमसेन यह सुनके बोले हेकृष्ण! हेकृष्ण! हेमहाबुद्धे! इन तुम्हारी प्रियाओं का दोपहर के धूप से बदन कुम्हिलाया जाताहै इससे इन के सुखके लिये विश्रामकरो १ तब श्रीकृष्णजी ने द्वारका से कुछ दूर चलकर विश्राम किया तब भीमसेन आय वासुदेव से विनोदकारी वचन बोले २ हेकृष्ण! हेकृष्ण! हेमहाबाहो! मेरे मनमें यह भासित है कि इन सब स्त्रियोंके पति तुम्हींहो ३ अर्थात् मालिनी,नायिनी, तेलिनी, शम्मली ये सब अपने हृदयसे तुम्हींको पति जानती हैं अपने पति को नहीं मानतीं ४ यह सुन श्री कृष्णचन्द्र बोले हे भीम! तुममें जो पुरुषत्व प्राप्त होवे तो इसको ग्रहणकरो और हे शोभने! तुम वृकोदर भेड़ियेकासा उदर ऐसे भीमको पति बनाओ ५ और हे शम्भालि! तुम इन्हींसेहीन भीमके पासजाओ तब भीमसेन ने कहा मेरे घरमें प्रिया राक्षसी मेरी स्त्री है ६ सो निवारण करो कि न जावे इसको जातेही जाते वह भक्षण कर जावेगी इससे सब दांतों से हीन श्रीकृष्ण के पास जावें ७ और श्रीकृष्ण में आसक्त जिनका मन ही है तिनको सर्वत्रही सुख है और जिससे भार्या रुक्मिणी आदि स्त्री ईर्षा नहीं करती हैं इससे श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं और आपसमें सौतियोंका वैर नहीं देखते ८। ९ जहां जाम्बवती स्त्री ईर्षा से रहित वर्ताव

करती है हे कृष्ण! तुममें आश्रित जिनका मन है तिन मनुष्यों को सर्वत्रही सुखहै १० वे उत्तम गतिको छोड़ कैसे पृथ्वीमें आते किन्तु वे आतेही नहीं यह सुन श्री कृष्ण बोले हे पवनात्मज! स्थान भ्रष्टजनों के कर्त्ता तुम्हीं हो ११ ताते तिनको हमारे निकट लाकर उनकी रक्षाकरो यह कहकर जबतक श्रीकृष्णचन्द्र जानेलगे १२ तबतक सूतिका स्त्री हाथी में सवार आकर बोली हे देवकीनन्दन! मैं जो सूतिकाहूँ तिसकी रक्षाकरो १३ और हे अनघ! वसुदेवादिक यदुवंशी प्राप्त हैं तिनके आगे में जो सूतिकाहूँ सोतुम्हारी मातृवत् लगतीहूँ १४ और देवकी ने तुमको उत्पन्न कियाहै और तुम क्रिया करिके आहूत नहींहो अपने को अपनेसे उत्पन्न करते हो किन्तु सब यादव भी तुम्हींसे हैं १५ हे माधव! तैसे ही जे मनुष्य अपनेको नहीं सृजते अर्थात् नहीं रचते तिनहीं करके मैं जीती हूँ ऐसे सूतिका के वचनसुन श्री कृष्णचन्द्र भीमसेन से बोले कि १६ हे भीम! इसको यहांसे उठाय वसुदेवको देखो, तब भीमसेन सूतिकाको उठाय वसुदेव के निकटजाय १७ श्रीकृष्ण के समेत नमस्कार कर दोनों हाथजोड़ सन्मुख खड़ेहोकर सुन्दर वचन बोले कि १८ हे परन्तप! हम दोनों धर्मराजके यहां जानेको तुम्हारी आज्ञा चाहतेहैं तब वसुदेवने तिनको तहां प्राप्त होतसन्ते आज्ञादेतेहुये बोले १९ हे हृषीकेश! हस्तिनापुरी को शीघ्रजावो जावो हमारी आज्ञा है मेरे वचन मान फिर शीघ्रतापूर्वक द्वारका को आवो २०

और वेदनिरत शास्त्रके पढनेवाले सदाचार करनेवाले ब्राह्मणोंको दान दीजियो २१ और जो पराई निन्दासे विमुख और अपने ज्ञाति वर्गके व्यवहार में रत और नीति के ज्ञाताहोवें तथा लोह और सुवर्ण जो बराबर मानतेहों उनको दान दीजिये २२ और मलिन वस्त्र धारण करनेवाले सदाचारसे वर्जित ब्राह्मणों को नहीं दानदेना चाहिये किन्तु राजाकरके सत्पात्रही पूजनीय है २३ और दान धर्ममें परायण क्षात्रधर्ममें रत युद्धमें कुशल ऐसे शूर क्षत्रीभी नीतिके योग्यहैं २४ और व्यर्थ अभिमान करनेवाले स्त्रियोंकरकेजीते अर्थात् स्त्रीरत दुष्ट-संगी मिथ्यावादी अपनीही प्रशंसा करनेवाले ऐसे क्षत्री त्यागने योग्यहैं २५ और परसन्तापी सदैव काममें रत श्वशुरालयकी वृत्तिवाले ऐसे मनुष्य त्यागकरने योग्य हैं २६ और जे नराधम दमादकी वृत्ती से जीविका करतेहैं और निर्वंशी व मृतकका धन छलसे लेलेतेहैं २७ और जे द्यूतरत अर्थात् नित्यही जुवा खेला करते और गर्भिणी स्त्री में रमण करते इसीप्रकार पर्वों मे भी स्त्री गमन करते २८ और स्त्रीको ऋतुकाल मे भोग न देते मोहमें परायण और स्त्रियों के साथ भोजन करते २९ और जे पापकर्मी पापबुद्धि से कुयोनि में वीर्यको त्याग करते और पराई स्त्रियोंको सन्ताप करते हैं ३० तैसेही और पातकी सज्जनों की निन्दा करनेवाले और जे महापापी गुरुजनों को दोष लगानेवाले ३१ और जे पापी मास पर्यंत उपवास करनेवाली पतिव्रता को कामदृष्टि

से देखनेवाले और जे धनीहोकर अर्थी को विमुख करने वाले ३२ और दरिद्री तपस्या से भय करनेवाले मिथ्या कहनेवाले और तैसेही जे पापिनी स्त्री पतिके ठगने में तत्पर ३३ और गृहस्थी के काम करने में मलीन सत्य शौचसे हीन हे मधुसूदन। ऐसे स्त्री पुरुष नीतिके योग्य नहीं हैं ३४ऐसे बचन कहतेहुये श्रीकृष्णने वसुदेवजीको नमस्कार और प्रदक्षिणा कर फिर दोनों हाथजोड़ कहा ३५ कि हे तात। तुम्हारे परमहितकारक संपूर्ण बचनोंको हमकरेंगे और महापापियों को छोड़कर युधिष्ठिर के यहां जातेहैं ३६ यह सुन भीमसेन बोले हे कृष्ण। जो बचन तुम्हारे अर्थ वृद्ध बसुदेवजी ने कहे सो वे सब पृथ्वी में त्याग करनेयोग्य हैं सो वह हमको साहससा जान परे है ३७ क्योंकि जहा साधुगण रहतेहैं तहाही तुम्हारा बास रहता है हे गोविन्द। क्या ऐसे दुष्टोंका त्याग करना चित्रहै ३८ और उपकारियों के विषे साधुता है तिनकी साधुताही क्या है उनके तो येई गुणहैं जो अपकारियों में साधहै वहसाधु कहाजाताहै ३९ हे केशव। तुम सब प्राणियों में समदर्शीहो तब वसुदेवादिक भीमसेन के वषन सुन ४० सब साधु २ कह के प्रशंसा करतेभये और वलराम के समेत द्वारकापुरी को महात्मा वसुदेव जानेकी इच्छा करके ४१ गोविन्द के स्नेह की लालसामें विह्वल होकर बोले हे हृषीकेश। तुम्हारे वियोग से जीकर क्या करेंगे ४२ अर्थात् ऐसे दुःख को धारण करने के समर्थ नहीं हैं यदि पूर्व राजा दशरथ

की भांति जोमैंसव त्यागकरदेउँ तो सव भविष्यत्नष्टहोजायगा ४३ देखो राजा दशरथ ने प्रियपुत्र श्रीरामचन्द्र जीके वियोगके शोकसे परमप्रिय प्राणों को इस पृथ्वी से छोड़दिया ४४ ऐसे बचन कहकर प्रियपुत्रको हृदय लगाय परिवारके समेत यात्राकेअर्थ विदाकरतेभये ४५ इतनी कथासुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! ऐसा कहके फिर पुत्रको हृदय लगाय वसुदेव तो महाकष्ट से द्वारकापुरीको लौटगये और भीमसेन व सव स्त्रियों के समेत श्रीकृष्ण हस्तिनापुरको जातेभये ४६ जब मार्ग में चलतेहुये हंसों और चकई चकवाओंसे युक्त विकसे कमल कमलिनियोंसे शोभित ऐसे निर्मल तड़ाग देख श्रीकृष्ण भगवान् भीष्मकात्मजा रुक्मिणीसे बोले ४७।४८ हे सुभगे! इन गजों करके ग्रहण कीहुई और मुक्ताओं के चुगनेवाले हंसों करके विदीर्ण रविकीभार्या अर्थात् निर्मल कमलिनियों को देखो ४९ और दो पुरुषोंके मध्यमें अर्थात् सूर्य और भ्रमरों में चंचलचित्त वाली स्त्रिया अर्थात् कमलिनी जो अपने पतिको ठगिके दूसरे में रमती हैं ५० और रात्रि में दूसरे पति कहे चन्द्रमाको देख मलिन होजातीं ऐसी कमलिनियों को हृदय से कातरी जान भ्रमरगण उनमे शयन करते हैं ५१ और अपने स्वामी अर्थात् सूर्य के उदय होने पर आनन्द होती अर्थात् फूलती तैसेही कमलिनियों को और स्त्रियोंको वरावर देखना चाहिये ५२ और स्त्रियों का मन तो अतिही सभीत होता है जो चचलतायुक्त

रात दिन कम्पायमान हुआकरताहै किन्तु अपने प्राण प्यारे के भयसे सभीतही रहा करती हैं जेसे धनी मनुष्यों का मन धन की ओर से अहर्निश सभीत रहता है वासुदेव के ऐसे वचन सुन रुक्मिणी सुन्दर नेत्रोंसे कटाक्ष करतीहुई वचन बोली हे प्राणनाथ स्वामिन्! कमल लोचनोंवाली अर्थात् कमलनयनी पद्मिनी श्री हरिहीको अर्थात् अपने पतिहीको जानती हैं ५३।५५ और भ्रमरों को अपने पुत्रवत् मानिके उनका पोषण करती हैं और तिन कमलिनियों के भ्रमर सोई हैं पुत्र नाती तिनको स्तनपान कराती हैं तब वे पुष्ट होते हैं और प्राणप्यारेके समीप उनको पुत्रहीके समान देखती हैं ५६ । ५७ और हे गोविन्द रक्षक! यहां का क्या दोष इन्होंने कियाहै देखो अपने प्राणनाथको दूरदेखके अपना मन चञ्चल करती हैं किन्तु दूसरेमें रमण नहीं करतीं न अपने पतिहीको ठगती हैं हे नाथ! यह पद्मिनियों के चरित्र महात्माओंकेही मतके अनुसार हैं ५८। ५९ ताते हे स्वामिन्! दूसरे पतिको देखके कैसे लज्जित न होके रात्रिमें अपने पुत्र भ्रमरों को लेकर नित्यही शयन करती हैं सो यह सनातन धर्म है सो पद्मिनी के विरहाग्नि से प्रज्वलित भ्रमर मरगया है ६० । ६१ और हे विभो! यह प्रथम मराहुआ भ्रमर फिर जीआया सो याको कृष्णमुख है सो जे हृदय से कारे हैं ते कैसे टिकसक्ते हैं ६२ हे गोविन्द! पद्मिनी प्रियके व पति के उदय में प्रफुल्लित होवेंगी तब इनके कमल होंगे.व

कमल शंकरजीमें चढ़ेंगे ६३ फिर पद्मिनी नायिका के कमलवत् कुचादि फूलैंगे तव वे अपने पतिपर चढेंगी सो हे नायक! कैसे कमलिनियों को देखके आपको त्रिस्मय हुआ देखो पूर्वसमय में कठोर पृथ्वी श्रीहरिके चरणों करके खोदी रजभई ६४ सो हरिके चरणों का जल उसमें पतित भया तव वह रज जल से मिलित पंक कहे पहला सा कीचड़भया तिस पंक से ज कहे उत्पन्न ताको पंकजनामहै तिसे देखो भीमसेनके सुनते तुम्हारी वाक्य से जानती है जैसे सबोंमें प्राप्त तुमहो तैसेही हमको नहीं जानते हो और वहुतसी स्त्रियों में कोई कोई हमको जानती नहीं है व आपभी अन्य स्त्रियों के समान हमको नहीं जानते हो अरु आप को चिन्तवनकर आपसे अन्य चर अचर को हम नहीं देखती हैं और जो कुछ देखाजाताहै सो सव आप रूप देखाजाता है किन्तु आपही सबोंमें शोभित हो६५।६८ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी वोले हे राजन्! तव रुक्मिणी के ऐसे वचनसुन सन्तुष्टतापूर्वक प्रसन्न होकर श्रीकृष्णचन्द्र तिस घोड़ेसे उत्तर सैन्याधिप कृतवर्मा को वुलाय वोले कि शीघ्रमेरी आज्ञासे नगारानजवाओ तव केशव के ऐसे वचनसुन कृतवर्मा नगारा वजवाताभया ६९।७० तव सबोंने रात्रिका आगमन जान नगारे की चोवसे प्रभु की आज्ञामान परदेश मे विश्रामकिया फिर प्रातःकालउठ आह्निकके अनुसार प्रात कृत्य करके श्री हरि अपनी सैन्य से वोले ७१

कि हे तात! धीरे २ देखो धर्मराज से पालित हस्तिनापुर प्राप्तहुआ इसके उपरान्त मार्ग मे दीनानाथ कृष्णप्रभु को जातेदेख ब्रजवासी किसान व गोपाल आदिकोने देख दधिमछली आदि मांगलिक वस्तुभेंट लेकर आते भये और कोई २ सखा गुंजा भूषणों से भूषित अर्थात् घुंघचिलों के माला पहिरे ७२। ७३ अपने २ मनभावन बाजों को बारम्बार बजाते हुये आनन्द से पूरित कहनेलगे कि देखो हमारे श्रेष्ठ गोप नन्द के किशोर श्रीकृष्ण यही हैं इस प्रकार कहते हुये सब गोपगण प्रभुको लिपटा के मिलकर कुशल पूछने लगे और साट्टहास अर्थात् ऊंचे स्वरसे बारम्बार हँसते हुये ७४। ७५ दहीभात आगे रख चरणों मे गिरकर कहा हे नन्दलालजी! हमारी बीणा और मनोहरवंशी को देखो ७६ और ये तुम्हारी पालित गौवें अब हमसे रक्षित इधरउधर चलीजाती हैं अब इससमयमें तुमको यहां प्राप्तजान अतीव आनन्दसे तुमको देखरही हैं ७७ और लोभ मोहादि व्याघ्रों के भयसे त्रासपाती हैं सो हे मित्र! तुम अब इनको मुक्त कियेजावो अर्थात् छुड़ादो ७८ और इस समय घोड़ेपर सवार स्त्रियोंके समेतकहो कहा चले जाते हो और ये कौस्तुभमणि हाथी पयादे आदि कहां पाये और अब इनको लिये कहां जाते हो यहसुन दूसरा गोप बोला कि हे मूढ़! तैं केशव के प्रभाव को नहीं जानता कि जबसे श्रीवत्सचिह्न हृदयमें लगे अर्थात् ब्राह्मणलात भृगुलता विद्यमान हुई

तबसे सम्पूर्ण अङ्गोंके समेत सब लक्ष्मी इन्हीं को प्राप्त होगई ७९ । ८१ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! गोपालों के ऐसे वचन सुन श्री कृष्ण भगवान् ने महाआनन्दको प्राप्तहोकर सबका यथोचित सत्कार किया तब तो सब व्रजके वासी स्त्रियों के समेत श्रीकृष्ण के दर्शनों की लालसासे हाथों में आरती लिये शीघ्र अपने २ घरोंसे दौड़ते भये ८२। ८३ और कोई व्रजवाला घरमें दहीमथते छोड़ दौड़ी और कोई गोमयलिप्तागी अर्थात् गोबर उठातीहुई भरे अंगो से वैसेही दौड़ी और जे गोपी रजोवती अर्थात् रजोधर्म में प्राप्त रहैं तेभी श्रीकृष्ण के दर्शनों की लालसा से निकट दौड़गई और कोई हाथों में माला लिये सब कामोंको छोड़ जातीभई तब रजोव्रती गोपियों को जाते देख एक अन्य बोलती भई कि रजसे शुद्ध होकर अर्थात् रज धोकर जावो तुम सबको इस दशासे जाते हुये लज्जा नहीं लगती यह सुन एकने उत्तरदिया कि हे मूढे! रज कहीं धोनेसे शान्त होवेगा ८४।८७ और कर्मवश मलिनगात कहीं धोनेसे निर्मल होते हे किन्तु घरके रहने से तो और कातरता से सब पातक नहीं नाश होते अर्थात् स्थिरही रहते हैं इस तात्पर्य से मैं ऐसेही गोविन्दके निकट जाय दर्शन पाय सब पातको को धोऊगी और निर्मल तड़ागको मलिनही दशा से जाना चाहिये ८८।८९ वहा जाय शिला अर्थात् पाटा में वस्त्रोंको पटकिके उनका मल दूर करना चाहिये वे-

सेही मैं भी निर्मल तड़ागरूपी श्रीकृष्ण चन्द्र के निकट जाय शिलारूपी चरणों में सब मल धोकर सभाकेमध्य में लज्जा को छोड़ रजरहित देह करूंगी ९० यह कह श्रीहरि के निकट जाती भई तब श्रीकृष्णसे फिर एक और गोपीहँसकरके बोलतीभई ९१ हे कृष्णदेव! कर्मवश हम करकेलाया नूतन नवनीत अर्थात् ताजा मक्खन लीजिये जो पहले तुम्हारे मुखमें यशोदा खवातीथी ९२ और जगत्‌रूप अर्थात् त्रिभुवनके देखनेवाले जो तुमहो तिनको यशोदा ने और हम सबों ने जैसे पहले देखा था वैसेही अब भी देखती हैं ९३ और हे गोविन्द! यह सब जगत् तुम्हीं में वर्त्तमान अर्थात् तुमसे बाहर नहीं है इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले-हे राजन्! तद-नन्तर महाबुद्धिमान् देवकीनन्दन कंसनिकन्दन ६४ वहा यमुनाकिनारे महारमणीय वृन्दावन में प्राप्त हो-कर सैन्यवालों से तथा श्रेष्ठ मंत्रियों से और माता देवकी यशोदा और रुक्मिणी आदि से बोले ९५। ६६ कि तुम सबको नित्यनिमित्त वसुदेवकी भगिनी अर्जुन की माता कुन्तीकी दासीरूपसे सेवाकरना चाहिये ९७ और अन्य वृद्ध तपोमूर्त्ति सेवनीय अरुन्धती अनसूया आदि ऋषिपत्नी सेवा करने योग्य हैं ६८ और हे म-न्त्रिगणो व प्रद्युम्न आदिको! मेरेवचन सुनो धर्मराज के यज्ञोत्साहमें बहुतसे राजालोग और अनेकन वीरों के समागम होंगे तहां तुमसब अपने गुरु और श्रेष्ठ माननीय पुरुषों की सेवा और पूजनकरने के योग्य

हो९९। १०० और तुमसब तवहींतक गर्जतेहो जब तक वलवान् पार्थको नहीं देखते जैसे सर्व तीर्थ पातकों के नाशनेको तवहींतक गर्जते हैं १ जबतक सिंहके सूर्यमें गौतमी नदीके स्नान नहीं होते वैसेही ये प्रद्युम्नादिक वीर द्वारका में रहेहैं अभी युधिष्ठिर के हस्तिनापुर के रहने योग्य नहीं इसका तात्पर्य यह कि तुम सब कभी हस्तिनापुर को नहीं आये हो २। ३ और जहां महा बुद्धिमान् सर्वदा पवित्रतासे रहनेवाले भीमसेन विद्य-मानहैं और द्रौपदी तथा हमारी वहिन सुभद्राकी माता ते सब तुम्हारी माताओं करके पूजनीय हे अरु यज्ञ में दशोहजार स्त्रियां सत्यभामादिकों करके सेवनीयहैं किन्तु उनके निकट सर्वदा रहने योग्यहैं और यज्ञ के प्रारम्भ में आरतियों के समेत द्रौपदी पूजनीयहैं और हम पहले युधिष्ठिर के पास जाते हैं ४। ६ तुम सब अपने २ सुजनों के समेत तिनकी सेवा करने को पीछे से आवो इसप्रकार श्रीकृष्णचन्द्र सब को आज्ञा देकर वंशीवटमे भीमादिकोंको छोड़ आप अकेले घोड़े पर सवार होकर महा बुद्धिमान् भगवान् सब से रहित हस्तिनापुर को जाते भये ७। ८ तब वासुदेव भगवान् को हस्तिनापुरमें प्रवेश करते हुये पुरवासी लोग देख अतीव आनन्दसे निकट आने लगे ९ तदनन्तर यज्ञ-कर्त्ता ब्राह्मण निकट आय बोले कि हे स्वामिन्! हम सबों करके पृथ्वीमें स्वर्गकी इच्छासे कर्म किये जाते हैं १० और अग्निहोत्रादि यज्ञो करके जो स्वर्ग मि-

लताहै सो श्रीहरिकी कृपासे होताहै और यज्ञके कर्त्ता तथा भोक्ता और यज्ञके फलदाता भी आपही हैं और दोनों के अपूर्व फलदेनेवाले देवकीनन्दन सो धूमान्ध दृष्टिसे कैसे देखने योग्यहैं यज्ञनायक भगवान् ११।१२ जैसे अनन्यभक्त पार्थ करके देखे गये हैं तैसे तृप्त की हुई अग्नि से नहीं प्राप्त होसक्ते किन्तु अग्नि सप्त जिह्वा भी है और श्रीकृष्ण को जानते हैं पै प्राप्त नहीं होते जैसे सर्प को दूध पिलाने से केवल विषही बढ़ताहै १३। १४ इससे सप्तजिह्वा को धारण कर श्रीकृष्णकी मार्गको नहीं जानसक्ते तब यहसुन और ब्राह्मण बोला कि सो दोष अग्निका नहींहै १५ किन्तु वह हमाराही है कि जो कियेहुये कर्मोंको उनके अर्पण नहीं करते तदनन्तर फिर अन्य ब्राह्मण देवकीनन्दन भगवान् को देखतेहुये बोला १६ कि यज्ञके उत्पन्न फलको श्रीकृष्ण के अर्पण करने से क्या प्रयोजन है कि जिस फलसे स्वर्गमें प्राप्त होकर पुण्य क्षीणके पश्चात् फिर मृत्युलोक मिलताहै ऐसे स्वर्गसे क्या कामहै १७ यहि से इस समय श्रीकृष्ण के समेत निर्भय होकर विचरो इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! ते सब ब्राह्मण यदुनन्दन भगवान् को देखतेहुये आपसमें ऐसे बचन कहतेभये १८ फिर इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी ने सब ब्राह्मणोंकी वन्दनाकी तब वासुदेव करके बन्दित ब्राह्मण फिर बोले कि हे चराचरके स्वामी देवों के देव! आवागमन से रहित हे जगत्पते! १९ बिप्रोंके आ-

शिष से स्वस्तिकहे तुम्हारा कल्याणहो इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! फिर वृष्णिवंश के वीर शिरोमणि श्रीकृष्ण भगवान्को संन्यासियों ने देख चरणोंमें नमितहो नमो नारायणाय ऐसा कहकर बोले हे नारायण! अपने से आत्मा को नमस्कार करते हो और हमकरकेनारायण ऐसी वाक्य कहिबे योग्य नहीं क्योंकि जिन आपविषे वाणी निवर्त्त होजाती ऐसे आप के चरणों में हम सब नमित हैं २०। २२ और हम वेद वेदान्त में गानकियेहुये आपको प्रत्यक्ष उपासना से गान और भजन करते हैं और हे वासुदेव! तुम द्वैरूप करके वर्त्तमानहो २३ एक चलरूप तो संन्यासीहै और दूसरा अचलरूप प्रतिमा है सो हे स्वामिन्! प्रणव रूप आपके चरणों को प्रणव करके भजते हैं २४ इस प्रकार आपका अहर्निश चिन्तवन करते हैं तिस पर भी आपको नहीं जानते सन्यासियों के ऐसे वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि कर्मका जो फल सोई संन्यास कहाता है और पुण्य से विष्णुरूप है २५ और तुम करके ध्यानयुक्त होकर सर्वजगत् विश्वरूप देखा जाता है जैसे इस पृथ्वीतल में परमहंस आपलोग हैं तैसेही मैं कृष्णभी हों २६ सो आप ऐसे महात्माओं की सत्संगति सदैव धर्मराज के पुरमें होती रहै इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि तिनकी आज्ञा लेकर फिर श्रीकृष्ण भगवान् राजमार्ग को जातेगये २७ तब राज-मार्ग में गोविन्द को जाते देख चारुलोचनी वेश्या

गण देखिके बोलती भई कि देखो रतिदान में धूर्त व दानी और शुभ्रता के ग्रहणमे अकेले कमलदल के समान लोचन ऐसे गोबिन्द कैसे आतेहैं २८।२९ और कोमल नवल श्रीयुत नित्यही स्त्रियों के लोभी हैं यह सुन शुभ्भली बोली कि ऐसे पुराण पुरुषको ये स्त्रियां वृथाही स्पर्श की इच्छा करती हैं ३० सो धारण करने योग्य नहीं हैं कोई स्त्री उनको धारण नहीं करसक्ती है और हे बाले ! सो मुक्त श्रीकृष्ण कोई तरह से धारण करने योग्य नहीं हैं ३१ जिन्हों ने पृथ्वीपर सोलह हजार स्त्रियों को भोग किया है तब वे युवा थे अब तो बहुत पुत्र नातियों के युक्त वृद्ध हुये हैं अब इनके सङ्ग क्या सुखहै ३२ तिसपर भी केशव के बिहार और ग्रहण में एक कारण है कि कामातुरता में भी भक्ति करने से अर्थात् कामातुर होने से भी मुक्ति होवेगी श्रीवासुदेव के बिहार करने में हे स्त्रियो ! काम का मनोरथ छोंड मुक्ति के हेतु बिहार की वाञ्छा करो इस तात्पर्य से श्रीकृष्ण वृद्धा स्त्री करके भी त्यागने योग्य नहीं हैं और श्रीकृष्ण महात्मा किसी करके वृद्ध भी नहीं देखने योग्य हैं और जो श्रीहरि को देवकी के पुत्र कहते हैं वे महामन्दमति हैं इनके चरित्र जैसे मैं जानतीहूँ तैसे और नहीं जानता ३३। ३६ देखो इन्होंने कुरूपा कुब्जा को तथा वानरी जाम्बवती को सुन्दर कामिनी बनाय तथा और स्त्रियों के समूह से हास्यरस करते हैं ३७ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि ऐसे

कहते हुये शम्भली श्रीकृष्ण के आगे आप आनन्दरूप से नमस्कार कर श्रीहरि को सन्तुष्ट किया ३८ इसके उपरान्त श्रीहरिके अग्रभाग में वन्दीगण आय प्राप्त होकर तिनमे एक वृद्ध प्रसन्नतापूर्वक श्रीकृष्णकी स्तुति करनेलगा ३९ कि हे देवकीपुत्र कंसारि, श्रीकृष्ण! इस समय सब दीनो के भव कहे रोग और दरिद्रों के नाश करने को प्राप्त भये हो ४० और हम हमारा ऐसे मोहरूपी रोगोंमें जो मनुष्य भ्रमते हैं तिनको आप वैद्यरूप से अपने नामरूपी औषधी कृपाकरो ४१ और मैं यहभी सत्य कहताहूं कि सब लोग इस औषधी से नीरोग हो जायँगे किन्तु आपके नाम चिन्तवनसे कामादिक रोग नाशहोतेहैं ४२ और ब्रह्मायुशब्द श्रीहरिसे कैसे कह सक्तेहैं जिनके नाभिकमल से पितामह ब्रह्माजी उत्पन्न हुये हैं ४३ ताते इनके पिता पितामह कोई नहींहै किन्तु इनके नामके स्मरण अर्थात् ग्रहण से सब सिद्धकरते हैं ४४ और इनकी महिमा नहीं जानने योग्यहे सम्पूर्ण नामोंको जानते हैं और प्रतापयुक्त इनके असख्यो नाम हैं ४५ देखो वेदोंको शखासुरको लेजातेदेख मीनावतार धारण किया मनुष्यों के मध्यमें मीनावतारको कौन जानैहै ४६ और कोल कूर्मावतार धारणकिया जिनका पराक्रम सुननेयोग्यहे और नृसिंह अर्थात् अर्द्धकेसरीरूप और विप्र वामनरूप भये ४७ इस प्रकार इनके अनेकों जन्म महात्माओं करके वर्णन कियेगये हैं ते सम्पूर्ण सम्पत्ति और ऐश्वर्यों करके युक्तहैं इस मे

संशय नहीं ४८ और मेरे मुखसे या दूसरेमे निर्दोष श्रीकृष्ण को जो कुछ दोष होगा तो हरि मेरे ऊपर कोप करेंगे ४९ क्योंकि बन्दीजनों में तो मेराजन्म हुआ है वर्णनकरना कामहै निश्चय करके कुरूप मानके हमारी जिह्वाको क्याकरेंगे ५० करुणाकर गोविन्द हमारे मानसी शरीरके दोषोंको क्षमा करेंगे ताते रामनामका कीर्त्तन वारबार रामराम करेंगे ५१ देखो रामनामके स्मरणसे शंकरजी तुष्ट होते हैं क्या निजनामोंके भजते जनविषे श्रीगोपाल नहीं प्रसन्नहोहिंगे किन्तु प्रसन्नही होंगे ५२ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि इस प्रकार चिन्तवन करतेहुये तिनको देख श्रीकृष्ण भगवान्ने निवारण किया और अपने कंठकी पहरनेवाली मोतियोंकी माला उतार तिनको देतेभये ५३ ते सब इस प्रकार मुक्तादिकपाय धर्मराजके निकटजातेभये तब सबों करके युक्त धर्मराजके अधिकारियोंसे देखेगये १५४॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायाश्रीकृष्णहस्तिनापुरप्रवेशोनाम एकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय॥

इतनी कथासुन राजाजनमेजय जैमिनिजी से हाथ जोर शिरनाय विनयसुनाय बोले हे तपोधन! तत्पश्चात् क्याभया और गोविन्द से आदरपूर्वक स्मार्त्तलोग क्या बोले सो सब स्मरण करानेवाले हम से कहो १ यहसुन जैमिनिजी बोले हे राजेन्द्र! तेहि समय जो वचन धर्म-

राज के नगरवाले स्मार्त्त श्रीकृष्ण से महाआनन्दित होकर कहे तिनको सुनो २ तब स्मार्त्त जन बोले कि हे सच्चिदानन्द आनन्दकन्द! आचार करनेवाले, सत्-मार्ग वर्त्तनेवाले, तुमको हमने अवलोकन किया इससे सद्धर्म में प्रायश्चित्त नहीं है ३ और राजाकी आज्ञासे सब लोग धर्मकी राहपर वर्त्तमान हैं किन्तु धर्महीकी रक्षाके हेतु आपका जन्म पृथ्वीपर हुआहै ४ और जे महापातकों के करनेवाले अर्थात् ब्रह्मघाती, सुवर्ण चोरानेवाले, मदिरापीनेवाले, गुरुशय्यापर शयनकरने-वाले ये चार और पाचवें इनके संग रहनेवाले महा-पातकी ये सब केवल आपके नाम स्मरण से शुद्ध हो-जाते हैं ५। ६ हे महाराज! ये सब हमलोगों से प्राय-श्चित्त पूछते हैं सो कैसाहै सो कृपाकर हमसबोंके अर्थ दीजिये परन्तु तिनको हितकारक नाम से अधिक कुछ नहीं है सो पातकके सदृश प्रायश्चित्त देखाजाता है ये सब पातक स्वल्प कहे हरिके नाम से थोरेही हैं ७। ८ तेहि विषे वारहवर्ष मुख्यता मे सम होते हैं और वारह वर्ष मुख्यता से करिकै तिनको कलेवर स्थिर रहता है जे हरिका नाम स्मरण करते हैं तिनको कलेवर फिर नहीं रहताहै अरु पापभी नहीं रहसक्के किन्तु इसलोक में फिर उनका जन्मही नहीं होता ९। १० हे राजन्! पर हमारा एक संदेह किसी प्रकार से नहीं दूरहोता है किन्तु प्रायश्चित्त के दान से सदा हमारा मन स्थिर नहीं रहता और जे अज्ञानी मोह में फँसि कै

विष्णु के नामों को नहीं स्मरण करते ऐसे आत्मघातियों के अर्थ प्रायश्चित्तों को हम नहीं जानते हैं और हमने सम्पूर्ण धर्म्मशास्त्रों को बारम्बार देखा है और सब पापियों के प्रायश्चित्तों को भी देखा है तिसमें हे जनार्दन! तुम्हारे स्मरण के विहीन अर्थात् भजन के न करनेवाले अधम जनों के प्रायश्चित्तों को न देखा न सुना है ११। १४ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले हे राजन्! तिनके ऐसे वचनोंको सुनकर श्रीकृष्णचन्द्र महाप्रसन्न होकर तिनके समेत आगे चलकर नर्तकी अर्थात् नृत्यकरनेवाली वेश्या आदिको को देखते भये तिन सबोंने यदुकुलमणि को आते देख उनकी इच्छानुसार छः तालों के युक्त ऐसी नृत्य में उद्यतहुईं कि जिससे श्रीकृष्ण भगवान् प्रसन्न होगये किन्तु तृप्तही होगये १५। १६ फिर वे नर्तकी श्रीकृष्ण भगवान् को देखके मानों फूलों से युक्त शोभायमान नन्दन वन में विना करकी लतासी शोभितहुईं तिन लताओं में भ्रमर चाहिये सो तिन कामिनियोंके नेत्रही भ्रमर हैं तिन करके भ्रममाण तिस उपवनवंशरध्रोंको शब्द चाहिये सो मृदंगादिक जो बाजा हैं सोई मानों वंशरध्र से युक्त हैं १७। १८ इसके अनन्तर एक नर्त्तकी श्रीहरि से बोली कि आपके सामने नृत्य करतेहुये घूमते देख कोई हास्य करते हैं यदि वे मूढ यह नहीं जानते कि श्रीप्रभुहमारे नाचनेही से रीझते हैं क्योंकि देखो ध्यान व कठिन तपस्या, दान, उग्रव्रत से क्या होता है जिसके करने से

संसारमें नेत्रोंकरके श्रीकृष्ण न देखेगये १९। २०
किंतु सहज में योगियों को ध्यान में भी ऐसे नहीं देख
परते जैसे इस हमारेनृत्य मे प्राप्त हुये हैं अब सब
योगीजन भी देखें और हे जनार्दन ! आपके हाथमें एक
चक्र शोभित है और हमारे हाथ पैरों में देखो चारचक्र
शोभा देते हैं और आपके चरणों करके गङ्गा धारण
कीगई हैं और हमसे शिरकरके कपोलों में धारण की
गई हैं और हे हृषीकेश ! तुम अचल वली हो हम
अबला सदाही की चंचल हैं २१। २३ और हे कृष्ण !
आपकरके एकही ब्रह्मगोल चलायमान किया सुना
जाता है अरु हम तो आपके आगे इसी समयमे सात
गोलक चलायमान कियेहैं और आपकी दृष्टिमें छविरस
भाव कहे हैं हे केशव ! हम करके ते सब कियेजाते हैं
ते सबों को यहा एकही करके देखती हैं २४। २५
तिन वेश्याओं के ऐसे वचनसुन महाराज सत्यापति
जीने उत्तरदिया कि हे वरानने ! हमारे मधुरपदों अर्थात्
अनुवादों को गानकरती हुई सुखपूर्वक नृत्य करो
और हमारेही यहा रहो कहीं अन्यत्र न जाओ २६।
२७ जैमिनिजी कहते हैं श्रीकृष्णचन्द्र ने नर्तकी से स-
वाद करके धर्मराज के मन्दिरमें प्रवेशकिया तो महात्मा
धृतराष्ट्र विदुर २८ कृपाचार्य इनके समेत कुन्तीसुत
युधिष्ठिर ये सब उठकर नमस्कारकिया २९ और यथा-
तथ्य सब को मिलकर माद्रीपुत्रों को मिलतेहुये पाडु-
नन्दन युधिष्ठिर को आलिंगनकर ओर सब से मिले

तब अर्जुन ने जगत्प्रभु को नमस्कार किया और धर्म पुत्र ने मूर्धिनको सूंघ अंक लगाय सन्तुष्टहुये कुन्ती और सात्वती द्रौपदी देख अति आनन्दित हुई ३० । ३१ भाई और ऋषिजनों ने देखा तब युधिष्ठिर बोले हे देवकीनन्दन ! भगवान् वसुदेव आदि महाजन कुशल से तो हैं ३२ इससमय मेरी शुभयज्ञ के अर्थ भीमसेन देवकी यशोदा रोहिणी आदिकों के समेत लेने गये थे ३३ और हे मारिष ! सब माताजी नहीं प्राप्तहुईं न आर्यपुरुष वसुदेवजी आये तब श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि केवल वसुदेव और वलराम द्वारका की रक्षाको रह गयेहैं और सब नरनारी भीमसेन के समेत शुभस्थान गङ्गातट में सम्प्राप्त आतेहैं ३४ । ३५ और हम तुम्हारे दर्शनों की लालसा से शीघ्र चलेआये तब युधिष्ठिर अर्जुन से बोले हे पार्थ ! जैसे श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं वैसेही सम्पूर्ण यादवगण प्राप्तहुये हैं और इन्हीं स्वामी करके रक्षित हम सब पृथ्वी में धन्य हैं ३६ अब जहां वे सब सुहृद्स्थिरहैं तहा चलो और कुन्ती सुभद्रा द्रौपदी इस समयमें देवकी आदिकों के सन्मुख जाय सत्कार करें और मेरी आज्ञाहै कि सब हस्तिनापुरके महाजन भी चलें ३७ । ३८ जैमिनिजी कहते हैं कि धर्मात्मा युधिष्ठिर ऐसी सबको आज्ञादेकर श्रीकृष्ण और ससैन्य यौवनाश्व के समेत यदुवंशियों के मिलनेको चलतेभये ३९ तिनके समागम अर्थात् मिलाप में नानाप्रकार के बाजा बाजनेलगे तब द्रौपदी ने श्रीकृष्ण से युक्त आप

अत्यन्त शोभाके समेत गमनकिया ४० अनेकों चमरों के समेत तुरंगको आगेकिया तहां गायकजन रागयुक्त गानेलगे और नृत्यमें कुशल नट कलायुक्त नाचने लगे ४१ और बन्दीजनों से सूत मागध वीररस गर्जते हुये वर्णनेलगे तब शङ्ख दुन्दुभी के शब्दों से शब्दायमान सैन्य चलती भई ४२ और सम्पूर्ण मनुष्य हर्षपूर्वक नानाप्रकारकी चेष्टा करनेलगे और प्रभावती देवकी रुक्मिणी को देखने में उद्यत ४३ मणिमय रत्नभूषणों से भूषित भाइयों के समेत और नानाप्रकारके मणिमय अलंकारोंसे पूरित हजार स्त्रियों से युक्त चले ४४ और ये संपूर्ण स्त्रियों भाइयों और कृष्णकेसहित युधिष्ठिर जहां यदुवंशियोंकी सेनाथी तहांगये वे यदुवंशी सब सेना का व्यूहबनाय खड़ेहोगये ४५ और देवकी हैं मुख्य जिन में ऐसी जो स्त्रियां तिनकी पालकी सुवर्ण मणियोंसे जड़ी रेशमी वस्त्रों सहित शोभायमान ४६ और एक २ पालकी के साथ सैकड़ोंस्त्रिया घोड़ेपर सवार कोईचमर कोई वेना इत्यादिक सब अपने २ सामान लिये जाती हैं ४७ तब राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्णकी माता देवकी को देख प्रसन्न हुये और आगे खड़े होकर शिरनवाय दासकी भांति नमस्कार किया ४८ और भीमसेन राजा युधिष्ठिरको देख हाथीसे पृथ्वी में उतर राजाके चरणों परगिरे और प्रद्युम्नहैं मुखिया जिनमें ऐसे यदुवंशियों नेभी राजा युधिष्ठिर को नमस्कार किया और अर्जुनादिक पाण्डव देवकी के नमस्कार करतेभये ४९। ५० तब

तब अर्जुन ने जगत्प्रभु को नमस्कार किया और धर्म पुत्र ने मूर्धिनको सूंघ अंक लगाय सन्तुष्टहुये कुन्ती और सात्वती द्रौपदी देख अति आनन्दित हुईं ३० । ३१ भाई और ऋषिजनों ने देखा तब युधिष्ठिर बोले हे देवकीनन्दन ! भगवान् वसुदेव आदि महाजन कुशल से तो हैं ३२ इससमय मेरी शुभयज्ञ के अर्थ भीमसेन देवकी यशोदा रोहिणी आदिकों के समेत लेने गये थे ३३ और हे मारिष ! सब माताजी नहीं प्राप्तहुईं न आर्यपुरुष वसुदेवजी आये तब श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि केवल वसुदेव और बलराम द्वारका की रक्षाको रह गयेहैं और सब नरनारी भीमसेन के समेत शुभस्थान गङ्गातट में सम्प्राप्त आतेहैं ३४ । ३५ और हम तुम्हारे दर्शनों की लालसा से शीघ्र चलेआये तब युधिष्ठिर अर्जुन से बोले हे पार्थ ! जैसे श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं वैसेही सम्पूर्ण यादवगण प्राप्तहुये हैं और इन्हीं स्वामी करके रक्षित हम सब पृथ्वी में धन्य हैं ३६ अब जहां वे सब सुहृदस्थिरहैं तहा चलो और कुन्ती सुभद्रा द्रौपदी इस समयमें देवकी आदिकों के सन्मुख जाय सत्कार करैं और मेरी आज्ञाहै कि सब हस्तिनापुरके महाजन भी चलें ३७ । ३८ जैमिनिजी कहते हैं कि धर्मात्मा युधिष्ठिर ऐसी सबको आज्ञादेकर श्रीकृष्ण और ससैन्य यौवनाश्व के समेत यदुवंशियों के मिलनेको चलतेभये ३९ तिनके समागम अर्थात् मिलाप में नानाप्रकार के बाजा बाजनेलगे तब द्रौपदी ने श्रीकृष्ण से युक्त आप

अत्यन्त शोभाके समेत गमनकिया ४० अनेकों चमरों के समेत तुरगको आगेकिया तहां गायकजन रागयुक्त गानेलगे और नृत्यमें कुशल नट कलायुक्त नाचने लगे ४१ और वन्दीजनों से सूत मागध वीररस गर्जते हुये वर्णनेलगे तब शङ्ख दुन्दुभी के शब्दों से शब्दायमान सैन्य चलती भई ४२ और सम्पूर्ण मनुष्य हर्षपूर्वक नानाप्रकारकी चेष्टा करनेलगे और प्रभावती देवकी रुक्मिणी को देखने में उद्यत ४३ मणिमय रत्नभूषणों से भूषित भाइयों के समेत और नानाप्रकारके मणिमय अलकारोंसे पूरित हज़ार स्त्रियों से युक्त चले ४४ और ये संपूर्ण स्त्रियों भाइयों और कृष्णके सहित युधिष्ठिर जहां यदुवंशियोंकी सेनाथी तहांगये वे यदुवंशी सब सेना का व्यूहबनाय खड़ेहोगये ४५ और देवकी हैं मुख्य जिन में ऐसी जो स्त्रियां तिनकी पालकी सुवर्ण मणियोंसे जड़ी रेशमी वस्त्रों सहित शोभायमान ४६ और एक २ पालकी के साथ सैकड़ों स्त्रिया घोड़ेपर सवार कोई चमर कोई बेना इत्यादिक सब अपने २ सामान लिये जाती हैं ४७ तब राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्णकी माता देवकी को देख प्रसन्न हुये और आगे खड़े होकर शिरनवाय दासकी भांति नमस्कार किया ४८ और भीमसेन राजा युधिष्ठिरको देख हाथीसे पृथ्वी में उतर राजाके चरणों परगिरे और प्रद्युम्नहैं मुखिया जिनमें ऐसे यदुवंशियों नेभी राजा युधिष्ठिर को नमस्कार किया और अर्जुनादिक पाण्डव देवकी के नमस्कार करतेभये ४९।५० तब

देवकी यशोदाने सुन्दर२ वस्त्रले गान्धारी और कुन्तीके नमस्कारकर हाथमें भेंटदी ५१ और प्रभावती सहित द्रौपदी देवकीके नमस्कारकर रत्न वस्त्र देवकी को दिये ५२ और कृष्णचन्द्रकी रुक्मिणी आदिक सब स्त्रिया कुन्ती के आगे नमस्कार करके सबधन देती भई ५३ और प्रमुखी रुक्मिणी हैं जिनमें, ऐसी सब स्त्रिया द्रौपदी के देखने को जातीभई और चन्दन व रत्न नाना-प्रकारके वस्त्र सब स्त्रिया नमस्कारकर द्रौपदी को देती भई तब सत्यभामा भेंटदेकर हँसकरके द्रौपदीसे बोली कि ५४।५५ हे द्रौपदी! कैसे तुमने पाचोपतियों को वश करलिया हम सब एक पति श्रीकृष्णचन्द्र जगत्पतिके वश करनेको समर्थ नहीं हैं ५६ और हे द्रौपदी! तिन श्रीकृष्णचन्द्रको भी तुमने वशकर लिया है हे बहिन! कैसे श्रीकृष्णचन्द्र तुम्हारे हृदयमें प्राप्त हैं और तुमने उनका हृदय कैसे ग्रहण कर लियाहै एक क्षणभी तुमसे जुदे नहीं होते अर्थात् नहीं छोड़ते और तिन श्रीकृष्ण विना तुम नहीं जीतीहो फिर अपने पाचो पतियों के सामने एकांतमें भी नहीं ५७। ५८ हे द्रौपदी! तुमने कैसे श्रीकृष्णको वशमें किया है, सो उपाय हमको भी बतादो और ऐसा कर्म करते तुमको और जनों से लज्जा नहीं होती और हमसे भी तुमको भय नहीं है और तुम धर्मकर्त्ताओं से माननीय हो तब द्रौपदी ने कहा कि तुम्हारामन सत्य है तुम्हारामन श्रीकृष्णचन्द्र को छोड़ सपत्नीभाव कहे सौतियों में प्राप्तहै इससे कर्म

फल सोई श्रेष्ठ है तुम करके अपमानित कृष्ण तिनके पास में जाय प्राप्त होतीभई तब कृष्णने हृदयमें सम्पूर्ण जगत् दिखाया और मेरीलज्जा कृष्ण भगवान् ने राखली ५९। ६२ और दुर्योधनकी सभा मध्यमें मुझे अक्षय वस्त्र दिया जिसका कभी नाशही नहो और तुम को कपासका अर्थात् सूतका वस्त्रभी देनेकी सामर्थ्य नहीं है ६३ और मेरे भाई करके बहुतसे नानाप्रकारके वस्त्र सबके देखते२दियेगये तैसेही कृष्णभगवान् ने भाइयोंकी भांति तुमको छोड़ मुझको अक्षयवस्त्र दिया तुम करके अपनेपति श्रीकृष्ण नारदके अर्थ कल्पवृक्ष सहित दिये गये जो कल्पवृक्ष प्रथम देवताओं करके जीतके लायेथे ६४। ६५ सोईवृक्षके समेत कृष्णकोतुमने नारदको दानकर दिया देवता ब्राह्मण गुरु इनका दिया द्रव्य पण्डितलोग नहीं ग्रहण करते तुमने श्रीकृष्णको फिर ग्रहण किया तुमको लज्जा नहीं आती ६६ और मैं नारदकी भी निन्दा करतीहूँ कि जगत् के पति श्रीकृष्णको पायकरके फिर तुम्हारे हाथमें क्यों देदिया ६७ कृष्ण से अधिक तुम्हारे हाथसे नारदको क्या मिलेगा नारद बड़े बुद्धिमान् थे सो बुद्धिमानी जातीरही हे सत्यभामे! ब्राह्मणों की बुद्धि पीछे उत्पन्न होतीहै ६८ जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! ऐसे वचन द्रौपदीके कहतेहुये तबतक बाणासुर की कन्या ऊषा कुन्ती के नमस्कार करनेको प्राप्तभई और कुन्ती के नमस्कार कर वस्त्र मणि सुवर्णदिये और सखियों समेत बैठी ६९।७० तब सत्यभामाने कहा की

हम सबको देवकी आदिकों के समेत यज्ञाश्व देखनेकी वड़ी लालसा है ७१ यह सुन श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिर से बोले कि घोड़ा देखने की देवकी के इच्छाहै अर्थात् सब स्त्रियां देखा चाहती हैं ७२ तब युधिष्ठिर बोले कि सब शूरवीर अपने २ हाथियों घोड़ों रथोंपर सवारहों और पैदल सब अगले तैयारहों जिसमें सब स्त्रिया प्रसन्नतापूर्वक घोड़ाको देखें और धौम्यऋषि पूजन करावें जिसमें स्त्रिया प्रसन्न होवें ७३। ७४ जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार सब स्त्रिया पूजन करतीभई और सब वीर सजे तैयार खड़ेहैं फिर वे स्त्रिया अपनी २ पालकियों में सावर हो झरोखों से नाचतेहुये घोड़ा को देखती हैं ७५ घोड़ाको पृथ्वी में नृत्य करतेहुये देख हे राजा जनमेजय! उसी समय में महापरिवारके युक्त राजा अनुशाल्व शाल्व का स्मरण कर श्रीकृष्णचन्द्र को देख वहां प्राप्तहुआ ७६। ७७ हे भारत! जनार्दन को युधिष्ठिर के पुरमें देखकर बड़ा हर्षित हुआ और घोड़ाको नाचतेदेख बिहँसताहुआ वहांगया और पीछे खड़े होकर गृध्रव्यूह वनाय अपने निकट मन्त्री को बुलाय कहा ७८। ७९ हे मन्त्रिन्! मेरेभाई शाल्व नाम महाबाहु को सौभ इच्छाही से चलनेवाले विमान पर सवार श्रीकृष्ण ने उसको जलमें मारडाला सोई देव इहा देख पड़ते हैं ८० अर्थात् पुत्र पौत्रो तथा स्त्रियों के समेत यज्ञके अर्थ पाण्डवों के इहा निमन्त्रित वेई केशव आज यहां प्राप्तहुये हैं ८१ हे मारिष! जैसे गृध्रको

देख गरुड़ निर्भय समर में खड़ा रहता है तैसेही तुम मेरी सैन्यकी पालना करतेहुये सन्मुख स्थिरराखो ८२ वैसेही मैं रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन और श्रीकृष्ण तथा भीमादिक और प्रमुख प्रद्युम्न इनसब वीरोंको ८३ सब सैन्यके पालतेहुये और धर्मराज के देखते हुये पकड़ लेऊंगा और जो कोई समर में मेरी सैन्यवाला तिन भाई के मारनेवाले केशव को पृथ्वी पर किसी यत्न से छोड़देगा अर्थात् जिसके हाथसे रणविषे श्रीकृष्ण देखतेहुये चलेजावेंगे ८४ । ८५ तिसदुष्टको मैं पतित करूंगा जो श्रीकृष्ण के धारण करने योग्य होगा चाहे भाई, पुत्र, सुहृद, मित्र, सखा ८६ वासुदेव के विहीनहै सो वह मेरा भाई सखा इत्यादि नहीं है और गज, रथ, पदाती,घोड़ा इनकी क्या गिनती है ८७ किन्तु जो कोई संग्राममें श्रीकृष्ण भगवान्को देख न पकड़ेगा तिसके कुत्सित कहे कठोर राज्य और धनके नाश करनेवाले कर्म्म किये जावेंगे ८८ और यदि मेरे सबवीर श्रीकृष्ण के सन्मुख रणमें प्राप्त रहकर उनके धारण करने को समर्थ न होंगे तिनका अपराध नहीं ८९ और जे शत्रु से युद्ध करेंगे तिन सबको हम करके धन दिया जायगा इसमें कुछ हमारा अपराध नहीं राजाओं का दण्ड यही है ९० और जे नौकर कुलीन धर्म में कुशल वीर युद्धमें परायण श्रीकृष्णके विमुखहों वेही मेरा प्रिय करेंगे ९१ ऐसे कुशली वीरों को राजा सर्वस्व देकर समर में खड़े करे वे रणके आंगन में शत्रुओं से जय

प्राप्त करते हैं किन्तु बड़े यशस्वी राजाओं को जीत लेतेहैं ९२ और इन केशवके सिवाय मेरा सुखनाशीन शत्रु और कोई विद्यमान नहीं है तिस एक रमापति कृष्णको सब मिलिके धारण करो अर्थात् पकड़ लेओ ९३ और इसमें कुछ दोष नहीं होता यह एक सनातन धर्महै कि जो दाता कहिके याचनाकरै वह चाहे सम्मुख हो वा विमुख अथवा शस्त्र भी हाथ में लिये हो तथा रथमें सवारहो वा पैदल वह छेदनकरने अथवा भस्म करने किन्तु किसीप्रकार के क्लेश देने योग्य नहींहै ९४। ९५ कहो समर में अकेले श्रीकृष्ण के धारण करने को किस की सामर्थ्य है उन श्रीकृष्ण के पकड़ने की गति तो उत्तानपादात्मज ध्रुव जानतेहैं ९६ सो बालक यहासे दूरीही विद्यमान है और बलिहैं सो पातालमें बसते हैं तथापि कुछ बिभीषण भी जानते हैं सो भी यहा नहीं और सब प्रकार से तो प्रह्लाद जी जानते हैं सो भी दूर हैं और धारण करना तो नारद भी जानते हैं परन्तु औरों से कहा जाताहै कि मिथ्याहै कि सत्यभामाके अ-र्पित श्रीकृष्ण को पारिजात हाथमें दिया किन्तु तिससे धारण करने को नारद भी न समर्थ हुये जो वह फूल दिया और आज हम श्रीकृष्ण के सिवाय अन्यको स-गर में नहीं देखाचाहते ९७। ९९ किन्तु अपनेही परा-क्रम करके सैनिकोंके युक्त गोविन्द को पकड़ैंगे जैमिनि जी कहतेहैं कि इसप्रकार के वचन कहतेहुये सो महा-वीर राजा अनुशाल्व समरमें खड़ाहो गृध्रव्यूह में श्वेत

छत्रों से सुशोभित होताभया तब मतवारे हाथी चीघने लगे और घोड़ा हींसनेलगे १००। १०१ रथों का घिर घिरा शब्द होताभया और इसीप्रकार पदाती भी शब्द करनेलगे तब नानाप्रकार के आभरणों से मण्डित दिव्य वस्त्र धारणकिये प्रलय के सूर्यके समान प्रकाशित सैन्य के अपने वीरों को राजाने देखा और वे वीर अपनी इ-च्छा से यह बकनेलगे कि कहा गोविन्द और कहा पार्थ हैं तिस घोड़ाकी रक्षा करतेहुये श्रीकृष्ण की मार्ग देखनेलगे १०२। १०३॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांअनुशाल्वागमनोनाम द्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

जनमेजय जी बोले कि हे मुने! यज्ञाश्व पकड़नेपर क्याहुआ किसप्रकार कृष्णने छुड़ाया वहां युद्धार्थ कौन वीर भेजेगये सो हे तपस्विन्! हम से वर्णन करो १ जैमिनिजी बोले कि हे राजेन्द्र! तिससमय कृष्णचन्द्रने जो किया सो कहताहूँ सुनो पाण्डवों के हरेहुये घोड़ेको देख अत्यन्त लज्जितहो दारुकनाम सारथी करके नहे हुये अपने दिव्य रथमें सवार पांचजन्य नाम शङ्खको बजातेहुये धर्मराज से बोले कि इससमय यदुवीर तथा पाण्डव वीरोंके देखतेहुये वीर अनुशाल्वने तुम्हारे घोड़े का हरण किया और २। ४ यहां पर स्त्री भी देखती हैं इससे मुझे अतीवलज्जा प्राप्तभई तुम यहांपर समर

में रथपै बैठेहुये कौतुक देखो ५ और सात्यकी कृतवर्मा और प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध यौवनाश्व मेघवर्ण तिसी प्रकार नकुल सहदेव इनके सिवाय और भी तुम्हारे बहुत बीर मण्डलकी रक्षाकरैं और मैं भीमसेन अर्जुन प्रद्युम्न तथा सुजय ६ । ७ और यह बालक वृषकेतु तथा साम्ब और निसठ ये और इनके सिवाय अपर महाबली घोड़ेको छुड़ावेंगे ८ इनमेंसे कोईवीर मेरेहाथ में प्राप्त बीराको ग्रहणकरै जैमिनिजी बोले कि फिर भी श्रीकृष्णजी बोले कि हे बलीपुरुषो! सुनो ९ जो घोड़ाको लावे सो बीराउठावे ते सब बीर कृष्ण के कठोर वचन सुन बारम्बार चिन्तना करते संकल्पसे बिगत खड़ेरहे और मुहूर्त्तमात्र कृष्ण के हाथमें बीरा स्थितरहा इसके उपरान्त श्रीमान् कृष्णपुत्र प्रद्युम्न पिता के हाथ में स्थित तिमि बीराको ले ये वचन कहे १० । ११ कि मैं शाल्वकी सैन्य में प्राप्त घोड़ाको लाऊँगा यह कह प्रद्युम्न कवच बखतर लगाय अपने रथमें सवार होकर १२ अनुशाल्व को तृणके समान जानकर गया और मणिकाञ्चन से भूषित पारावत कहे कबूतरों के समान तीव्रघोड़ों के रथमें चलताभया तब पुत्र मकरध्वज का दिव्यरथ देखकर कृष्णचन्द्र ने फिर भी ऐसे वचन कहे १४ । १५ कि अन्यपुरुष जिसके पराक्रम विद्यमान हो सो यहां मेरे हाथसे बीराको लेकर प्रद्युम्नके साथ जावे १६ जैमिनिजी बोले कि हे विशांपते! वासुदेव के ये वचन सुन बीराको देख वृषकेतु यह कहता भया सो

सुनो १७ कि मैंही प्रद्युम्नकी सहायताके अर्थ संग्राममें जाताहूं यदि जो मैं वीर अनुशाल्वको पकड़कर कृष्ण के न निकट लाऊं तो हे गोविन्द! मेरी प्रतिज्ञा सुनो शूद्र ब्राह्मणी के गमन से जिस दारुण गतिको पाताहै तिस महानरकदायिनी गतिको मैं प्राप्त होऊं श्राद्धमें भोजन करके जो मन्दब्राह्मण मैथुन करताहै १८। २० सो हे देव! जो जिस गतिको जाताहै तिस गतिको मैं निश्चय से प्राप्त होऊ तिसी प्रकार जो मन्दबुद्धी ऋतुकालमे स्त्रीको छोड़ताहै जो न लाऊ तो उसी की गति को मैं प्राप्त होऊ और जो विष्णु वासुदेव को छोड़ अन्यदेवका भजन करताहै २१। २२ हे स्वामिन्! तिस को भी जो दुःखदायिनी गति है सो मुझको प्राप्त होवे आप मेरेअर्थ बीरादीजिये मेरे वचन मिथ्या न होंगे २३ तिस समय श्रीकृष्ण ने आनन्दित हो वृषकेतु को बीरादिया तब उदारबुद्धी वृषकेतु तिनको नमस्कार कर जाताभया २४ उसीकाल प्रद्युम्नके साथही पराक्रमसे अनुशाल्वसे पालित तिस घोर सैन्य में प्रवेशकर २५ अपने नामको सुनाय शंखको बजाया तदनन्तर संग्राम में अपनी सेना को गिराते खड़ाहो २ यहकहते वृषकेतुके समेत प्रद्युम्न को देख तिस महासमर में अनुशाल्व ये वचन बोला २६। २७ कि तुम कैसे इस समरमें अपनी रमणीयपुरी को छोड़ फिर मुझको अपना शत्रु मान मेरे निकट प्राप्त हुये २८ और मैंने सुना है कि तुम पूर्वही पुष्पबाण अर्थात् काम शिवनेत्र

ज्वालासे दग्ध कृष्णकुंडमें प्रविष्टहो २९ जहा तपस्वी पुरुष और पतिव्रता स्त्री विवेक रहित मनुष्यहैं तहाही तुम्हारा पराक्रम है ३० जैमिनिजी बोले कि तिस के ये वचन सुनकर बली प्रद्युम्नने रणमें साहसही से अनुशाल्व के भाई को पाचबाणों से बेधित किया ३१ अनुशाल्व ने तिनबाणों को बीचही में काटदिया और एक बाण से शीघ्रता पूर्वक प्रद्युम्न का हृदय भेदन किया ३२ सो विदीर्णहृदय प्रद्युम्न महाकष्टितहो स मरमें बाणसे भ्राम्यमान कृष्णचन्द्र के निकट जागिरे ३३ श्रीकृष्ण भी मूर्च्छित प्रद्युम्न को देख हृदय में ल ज्जित रथसे पृथ्वीमें उतर पुत्र को हाथ से पकड़ लात से मार यहवचन कहा हे भारत! महाक्रोध से युक्त उस समय तिसे धमकाते हुये कहा कि ३४ ॥ ३५ रे मूढ़! उठ उठ यह द्वारकापुरी नहीं है जहा तूने क्रीड़ा की है निश्चय से यह दारुण स्थानहै ३६ मैं सदैव यह वि चारतारहा कि प्रद्युम्न के प्रभाव से मुझे कहीं भय और लज्जा सग्राम में न प्राप्तहोगी ३७ सो यहा मुझे लज्जा और महाभयभी वीरोंके देखते तुझ दुष्टपुत्र ने प्राप्तकी ३८ और रे दुरात्मन्! जब तू मेरेघरसे पूर्व नि शागममें हरागया तब बालभावमें शम्बरासुरने तेरीरक्षा किसकारणकी अब तू पुरीको विहाय वनको जाय मुनि होकर फलों को भक्षणकर मनुष्यों के बीच में तुझको रहनायोग्य नहीं है ३९। ४० वहा वनमें कुशाग्रबुद्धी मुनीश्वर तुझ कामरूप अपने शत्रु को आया देख

भस्मकरदेंगे या तू कुण्डिनपुरको जा तहांपर जेमहाजन हैं ते तुझे भग्नसम्बन्धीकहे पिताकाकलहीमान तेरा पा-लन करेंगे और शिवपूजापरायण अपरलोग शिवअरि तुझको स्वामिवैर स्मरणकर मेरे मन में आता है कि तेरा नाश करादेंगे ४१ । ४३ तू गर्भही में क्यों न नष्ट हुआ और रुक्मिणीके उत्पन्नही क्योंहुआ रे मूढ! यहा पर जो प्रतिज्ञाथी सो न की कैसेजीताहै ४४ जहा महा-बली वीर मेरेहाथसे बीरा नहीं ग्रहणकरतेथे तहा तूने पहले कैसे ग्रहणकरलिया जैमिनिजीबोले कि हे मारिष! इसप्रकार कहते क्रोधातुर वसुदेवनन्दनको महाबलवान् मतिमान् भीमसेन ने पकड़लिया और क्रोधशमनीय वचनकहे ४५ । ४६ कि हे हृषीकेशमानी! प्रद्युम्नको इस प्रकार न कहो यह शत्रुकीभयसे नहीं आया बाणप्रहार से भिन्न आयाहै ४७ तुमने महाक्रोधसे पुत्रको लात से मारा और अपने हृदयमें पराक्रमको मान मिथ्याही अ-पना पददिया जरासन्धके भयसे तुमने क्यों अपना पुर छोड़ समुद्रकेकिनारे द्वारकापुरीबनाई ४८ । ४९ तुम सब के सुखदायीपरदु खको नहींजानते तुमसे अधिककोनहै परआपक्योंभागतेहैं ५० तब यहसुन कृष्णचन्द्रजीबोले कि हे भीम! महाबल अनुशाल्वके युद्ध को तुम समरमें जावो मैंने इसे क्षमाकी अब वृषकेतुका पराक्रमदेखो ५१ जैमिनिजीबोले कि तदनन्तर रणश्लाघी भीमसेन क्रोध मे मूर्च्छित प्रद्युम्न समेत गये और तिस अनुशाल्व की सेना को गदासे पातित किया ५२ हे राजेन्द्र! कृष्ण

के बचनों से प्रेरित पयादे भीमसेनने क्रोधसे युद्धमें हाथियोंके दोखण्ड तथा रथों को चूर्णकिया और घोड़ोंको मार बीरों के मर्दित अंग विदीर्ण करडाले हाथ से हाथी को पकड़ आकाशको फेंकदिया ५३ । ५४ और घोड़ों के समेत रथ सारथियों के समेत वीर भीमसेन ने पकड़ प्राणों के खींचतेहुये पटकदिया ५५ भीमसेन ने लीला मात्र से हाथ में हाथी रथ और घोड़ों को पकड़ पृथ्वी पर चलादिया फिर क्रोधित हो औरों को पैरों से पीस दिया ५६ बहुत वीर विदीर्णांग रुधिर वमन करते हैं पांचमुख के सर्पों के समान गिरीभुजा शोभित होरही हैं ५७ जैसे भूकम्पसे फूटते भाण्डोंका शब्द सुनपड़ता है वैसेही भीमसेन के चरण प्रहार से टूटते शिरों का शब्द होता भया और हे राजन् ! तिस महावीर क्षय संग्राम में उठीहुई वायु से ध्वजा कण कणाती हैं ५८। ५९ और यह भीमसेन हाथियों तथा घोड़ोंका और सवार तथा पैदलों का युद्ध में पैरों से मास एकही में मिलाताहुआ चलता भया ६० तबतक तिस वृषकेतु ने भीमसेन को देखा और हे भारत ! तिस भीमसेन को प्रसन्न करताहुआ बोला ६१ हे महाबुद्धे भीमसेन ! हे परन्तप ! जो मुझ बालककरके संग्रामनामकफल ग्रहण कियागया ६२ सो तुमसे अन्य कौन पिता चञ्चलता से बालक के हाथ से लेलेता इसके लिये से तुम्हारी तृप्ति न होगी हे मारिष ! इसप्रकार के जो तुम्हारे आगे हजारों प्राप्त हों तो मैं तिनको तुच्छ मानता हूँ फिर

सन्मुख एक कया ६३।६४ हे तात! पृथ्वीतल में तुम्हारा अयश होगा कि पुत्र के हाथ से भीमसेन ने एक फल लेलिया ६५ और यह मनुष्य कहेंगे तिससे तुम को इस समय में छोड़ना योग्य है फिर हे भीमसेन! सिंह थोड़ा मास नहीं पकड़ता क्षुधातुर सिंह हाथी को मारता है किन्तु सर्पके मुखमें स्थित मेढकको नहीं मारता है महात्माओंका पराक्रम लोकमें मनुष्यों का हितकारक होताहै ६६।६७ जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर भीमसेन महाबली वीर वृषकेतु से बोले कि फल को निचोड़कर पिता बालक के हाथ में देता है बालक ग्रहणकरै मैं राजा अनुशाल्व वीर के निकट जाता हू ये वचन कह भीमसेन पर्वतों को गिराते हुये ६८।६९ जातेभये अनुशाल्व ने तिस भीमसेन को आते देख वेगसे एकबाण वक्षस्स्थलमें मारा तिसबाण के लगने से भीमसेन मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़े ७० भीमसेनको मूर्च्छित देख कृष्णचन्द्र क्रोधितहो आपही युद्ध करनेको आरूढ़हुये सो अद्भुतहीसाहुआ ७१ तब कृष्ण का गरुड़ध्वज रथ दारुक नाम सारथी हाक्लाया तो महाबाहु अनुशाल्वने कृष्ण को देखकहा हे जनार्दन! खड़े हो २ तुमने हमारे भाई को मारा और सौरभ विमान बीच में तोड़ा ७२।७३ हे नन्दनन्दन! इस समय मैं तुम्हारे निकट खड़ाहूं हे गोविन्द! तुम्हारे देखते तुम्हारे पुत्र को मैंने गिराया ७४ और दूसरा भीमसेन तुम्हारे देखतेही देखते पतितकर यह चित्रसा दिखाया

और मैं तुम्हारे सन्मुख नहीं आऊंगा क्योंकि तुमने मेरे पूर्वज पुरुष गिराये हैं सो मैं जानताहूं ७५ और तुम्हारे दोनों वीर गिराये और सम्पूर्ण महात्माजन कहते हैं जे एकहू वार कृष्णके सन्मुख हुये हैं तिनका कभी भी पतन नहीं होता मैं युद्ध रणगत और तुम पुराण पुरुष युद्धमें कैसे खड़ेहोगे ७६ । ७७ यहा पर समता तो देखीही नहीं जाती हे केशव ! मेरे पांचही बाणों से भिन्न तुम कहा जावोगे ७८ भागेहुये कृष्ण का स्थान सत्पुरुषों का मन सोई तुम्हारा दुर्ग कहे किलाहै औरों के जीतने योग्य नहीं है ७९ और लो भादिक घोर यत्रों से और प्रपंचादिक पयादों से तथा असंगत से हृदयमें लीन अखिल तुमको देखातेहैं ८० हे गोविन्द ! सो महात्मा पुरुष गुप्त तुम्हारे प्रकाशकहैं यहां पृथ्वी में विमोहित तिनकी संगति जे नहीं करते ते राजा असन्देह से सन्मन्त्रसे वर्जित हैं जैमिनिजी बोले कि हे राजन् ! इतने बचनकह यौवनाश्वने चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको बेधितकिया ते घोड़े भिन्नदेह हो डरगये ८१।८२ हे राजन् ! तिसकाल युद्धसे सो कृष्ण दूर चलेगये केशवको न देखकर अनुशाल्व फिर बोला ८३ रणमें किसकारण से कृष्ण देख पड़ा फिर अदृश्य होगया इस समय यहापर अपना और अपरोंका पातक नहीं देखताहूं ८४ क्या मेरी राज्य में शूद्र ने ब्राह्मणी प्रसंगकिया या किसी मेरेदुष्ट पुरुषने मेरी राज्यमण्डल में कन्याका धन स्वीकारकर द्रव्यसे कन्या दान किया

अथवा अपने मन्दिर में किसी दुर्बुद्धी पिताने रजोधर्म से युक्त कन्या बैठारक्खी है और क्या मेरे खजाने में पुत्रहीन पापिष्ठ दुर्वृत्त मेरेसेवकोंने मृतकका धन ८५।८७ ला डाला अथवा दुर्जनों ने ब्राह्मणों की द्रव्य स्वीकार की तथा रजस्वला स्त्री की सङ्गति को क्या मूढ दिन में प्राप्तहुये या किसी से रात्रि मध्यमें ऋतुवती सुस्नाता कामिनी छोड़ीगई ८८।८९ पृथ्वीतल में सकामियों को छोड़ने से भ्रूणहत्या होती है तिनके षष्ठांश पातक से रणमें देखपड़े कृष्ण तिनको नहीं देखताहूँ संग्राम में हरिको किससे पूँछों तत्र से जोकुछ मेरीपुण्य विद्यमान है ९०।९१ सो पुण्य मैं तिसके अर्पण करूगा जो समरमें कृष्णचन्द्र को बतावै और पीछे से तिस पुण्य से पृथ्वी में क्या कार्यहै जिससे जगन्नाथ हरि सब पातकों के करणार्थ न देखेजावैं जैमिनिजी बोले कि हंसतीर्थ का जल पानकर जैसे सम्पूर्ण पातक क्षय हो जाते हैं और मनुष्य पवित्र होजाता है इसप्रकार वीर के कहते कृष्णचन्द्रने फिर आपही प्राप्तहोकर हँसतेही अनुशाल्व को तीन बाणों से मारा अनुशाल्व ने एकही बाण से कृष्ण के तीनों बाणों को बीचसे वेग से काट दिया ९२।९५ और बोला हे माधव! मेरे पराक्रमको देखो तीनों बाणों से आप रहित होगये ९६ मैंने शीघ्रगामी बाणसे सग्राम किया मेरे एक शीघ्रगामी बाणके गिराने को तुम समर्थ नहीं हो महासग्राम में स्थिर हो मेरे एक बाणको सहो यह कह तब एक नाराचनाम बाण

कृष्णके वक्षस्थल में मारा और तिस बाण के प्रहार से श्रीकृष्ण संतुष्टहो मूर्च्छितहुये, दारुकने देखा कि तिसके तेजसे गोविन्द संतुष्टहुये ९७। ९९ तब जहा राजा युधिष्ठिरथे तहाको समरसे रथको भगाया तिसीप्रकार श्रीकृष्णजीको देख सैन्यमें महा हाहाकार शब्द हुआ १०० और देखते२पाण्डवोंकी सब सेना भगी संग्राममें मारेहुये पुत्र और पिता तथा भाई मित्रसम्बन्धी बंधुन को १ छोड़ २ कर कोई जाते हैं और कोई परस्पर कहते हैं कि हेपुत्र! हम तुम्हारे पिताहैं सग्राममें पड़े हैं हमको लियेचलो २ तहा पुत्र पिताको उत्तरदेताहै वेगसे भाग यहां से निकल तुम्हारी गया श्राद्ध करूँगा ३ तबतक कहीं और पुरुष दैत्य अनुशाल्व के भयसे प्राप्त इसी प्रकार वार्त्ता करताहै तदनन्तर बुद्धिमान् दारुक सारथी कृष्णचन्द्रको बीणकमें लेगया ४ तिन कृष्णचन्द्र को मूर्च्छित देख प्रमुख रुक्मिणी आदिक कृष्ण की स्त्रिया हाहाकार कर दौड़ीं ५ सत्यभामा कृष्णको प्रबुद्ध अर्थात् मूर्च्छारहित जान बोली तुमने रणकोविद संग्राम से आयेहुये प्रद्युम्न पुत्र को बहुत दुर्वाद कहे हैं आप अनुशाल्वके भयसे पीड़ित संग्राम से कैसे आये ६।७ हे जगत्पते! सब वीर मरने के भयसे भागते हैं क्या मही संग्रामभूमि में चण्डी का रूप धारणकर ८ जिसके भयसे तुम भागकर आये तिस अनुशाल्व के मारने को जाऊँ तुमको शस्त्रछेदन नहीं करसक्ते और अग्नि नहीं जला सक्ती ९ हे देवकीनन्दन कृष्ण! तुम कैसे संग्राम से भगे

निदान हे केशव! जो भया सो भया अब शेष कार्य्यका विचाराश करिये ११० ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांसत्यभामाभाषणंनाम त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

इतनी कथा कह जैमिनिजी बोले हे राजन् जनमेजय! तिसकाल सत्यभामा के वचनसुन मनमें गुन फिर कृष्ण-जी अनुशाल्व के युद्धको रणमें प्राप्तहुये १ तिन कृष्ण-चन्द्र आनन्दकन्द को रणमें प्राप्त महाबल वृषकेतु देखकर अनुशाल्वको ललकार कर खड़ाहो २ ये वचन कह २ हँसतेही दैत्यराज अनुशाल्व को सात बाणों से मारा तब बाणविद्ध अनुशाल्व भी घोर तीक्ष्ण दश बाणों से वृषकेतु को विदार और चार बाणों से चारों घोड़ेमार पृथ्वीमें डार ३।४ सारथी का शिर शीघ्र धड़से भिन्नकर क्षिति में गिरा दिया वृषकेतु को विरथ देख सूर्य्य का सारथी ५ दूसरा दिव्यरथ जोतलाया वली कर्णपुत्र वृषकेतु तिसमें सवार हो ६ रणमें दैत्यराजको तीक्ष्ण बाणों से ताय दिया और सारथीको गिराय घोड़ों को भी गिराय ७ फिर दैत्यराज अनुशाल्वने रथस्थित कर्णनन्दन को क्रोधकर हाथसे पकड़ वेगसे पृथ्वी पर पटकदिया ८ तो वृषकेतुभी इस अनुशाल्वको रथसमेत पकड़ क्रोधकर भूतल में झटका और फिर पकड़ कर कृष्णचन्द्र के निकट लाया ९ और कृष्ण के हाथ में

देकर सुन्दर वचनों से वृषकेतु बोला हे हृषीकेश। घोड़ा पकड़ने में योग्य है इसको देखो १० तुम्हारे प्रसादसे मेरी प्रतिज्ञा सफल है यह सुन कृष्णजीने कहा अहो वृषकेतु तू धन्यहै तूने अपनी प्रतिज्ञा सत्यकी ११ तुझ-को छोड़ और कौन दूसरा अनुशाल्व को रणसे यहां प्राप्तकरता इसप्रकार गोविंदके कहते दैत्यराज मूर्च्छा से जागा १२ और घनवत् अर्थात् मेघश्याम जगत्पति माधव को आगे देखकर बाचाल अनुशाल्व महामति कर्णपुत्र से बोला १३ हे वीर! तुमने हमको जीता और कृष्णजीके चरणारविन्दों में डारा पिता और माता तथा गुरु और भाई और देवता ये कोईभी अनंतदेव कृष्ण चंद्रजीको नहीं दिखासके सो तू शत्रुने मुझे जीतकर कृष्ण के दर्शनकराये १४।१५ जिन कृष्णचन्द्रजीने मेरेभाइयों को परमपदको पठाया सोई कृष्णकी सङ्गतिपाय हे वृष केतो आज मुझको विस्मय और सुखदेनेहारा सन्तोष हुआ तेरे पराक्रम से जिसको वैर तिसको मित्रताभाव देखनेमें आया १६।१७ समर्थोंके प्रभावसे अयोग्यवस्तु योग्य होजाती है हे वीर! महादेवके कण्ठमें विषही सदा अमृत होरहा है १८ हे कर्णनन्दन! दानीपुरुष जगन्नाथ कृष्णचन्द्रके चरणारविन्द दिखादेते हैं परंच तेरेसमान कोई अन्य दाता नहींहै १९ तबतो वृषकेतुने कहा इससमय तुम कृष्णचन्द्रके चरणारविन्दोंको पाय बोलतेहो इस में मुझको संदेह है जहां कृष्णको देख योगीजन शेषादिक मूकत्वको प्राप्त होतेहैं अर्थात् चुपाय रहते हैं २० तहां

तुम्हारे वचन सुनिके मुझको अत्यन्तही विस्मय होता है २१ तब अनुशाल्व बोला हे वृषकेतो! श्रीकृष्णजीको देखकर मेरीवाणी प्रवृत्त अर्थात् कृष्ण स्तवनमें लगी जैसे कृष्णचन्द्रकी दीहुई वाणी ध्रुवकी ऐसेही मनुष्य कृष्णजीसे शुभ होजाते हैं २२ अब यहांपर तुम्हारे सामने कृष्णजी की स्तुति करताहू जे कृष्ण भगवान् मेरी मारुसे रणभूमि छोड़ युधिष्ठिर के आगे प्राप्तहुये जो भगवान् संसार के उत्पन्न कर्त्ता और शास्त्रधर्त्ता इन विष्णु को संसारमय शरीर क्या शस्त्र से पीड़ित होवे २३। २४ और जिन कृष्ण के स्मरणसे गरुड़पर सवार शंख चक्र गदाधर चतुर्भुज मनुष्य होजाते हैं २५ सो आप मत्स्य कच्छप तथा बाराह अर्थात् शूकर और नृसिंह होते हैं और जिनकी प्रसन्नतासे देवराट् इन्द्र विविध देवांगनाओं को प्राप्त होते हैं २६ सो आपने गोपालको वेषधर कुब्जाको पाया फिर जेकृष्ण भगवान् नानाप्रकारके रत्नसमूहोंसे ससारको पालनकरते हैं २७ सोई कृष्णचंद्रजी सायंकाल द्रौपदीका दिया शाकभोजन किया और थोड़े सुदामाके सत्तुखाय आनन्दको प्राप्त हुये २८ और जिनसे इन्द्रादिक नन्दनादि वनोंको पाते हैं और आप कृष्णजी तुलसीवन में विहारकरते हैं २९ जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार कहते राजा अनुशाल्वको मिलकर भगवान् खड़ेहुये और अपने हाथसे अनुशाल्व का दहिना हाथ पकड़ राजा युधिष्ठिरको दिखाया ३० तब राजा अनुशाल्व युधिष्ठिर को नमस्कार कर आगे

खड़ाहुआ तब युधिष्ठिर ने तिस अनुशाल्व से शांति पूर्वक यह वचन कहा ३१ इस समय भीमसेनादिक भाइयों के बीचमें तुम हमारे पंचम भाई हो और जिस प्रकार श्रीकृष्णजी यज्ञकी रक्षा करते हैं वैसेही तुम भी करो ३२ तदनन्तर अनुशाल्व भीमसेनादिक सब बीरोंका आलिंगन अर्थात् मिलापकर महामति धर्म्म राजसे बोला कि मैं राजायुधिष्ठिरके अर्थ इस समय से अपने भुजा और शिर रणमण्डलमें जहां तहा गिराय दूंगा ३३। ३४ यह कहकर अनुशाल्व चुपहोरहा तब तक वृषकेतु सबराजाओं को जीतकर ३५ जहा राजा युधिष्ठिर थे तहा यज्ञाश्व को लाया तब प्रसन्नहो राजा युधिष्ठिरने कहा हे कर्णनन्दन! तू धन्यहै ३६ हे बीर! तेरी प्रतिज्ञा मेरे आगे सफल हुई और अनुशाल्व भी कोई पुण्य से भाईसा हुआ महद्भाग्य हुई आज मेरा संपूर्ण कार्य सुखपूर्वक हुआ तुम दोनों प्रद्युम्न और वृषकेतु कुशलयुत आये मेरे दोनों प्रियहो ३७। ३८ इसप्रकार दोनों बीरों की प्रशंसा कर राजा युधिष्ठिर अश्व को आगे कर बीरों समेत हस्तिनापुर में प्रवेश कर ३९ कृष्णचन्द्र व ब्राह्मणों समेत सभा में बैठे तिस समय देवकी और यशोदा कुन्ती और रोहिणी ४० रुक्मिणी तथा सत्यभामा और भी अन्यस्त्रियां अरुन्धती और अनसूया तथा इनके सिवाय और शुभ स्त्रियां परस्पर आदर करती थीं और आयेहुये राजाओं को धर्मराज परस्पर विविधप्रकारके खानपान और चंदन

अगरुधूपोंसे ४१।४२ और कोमल वस्त्रोंसे और श्रेष्ठघोड़ा हाथियोंके दानसे सन्मान करते हैं फिर यज्ञारममें आये कृष्णजीको वीसदिन हुये जब चैत्री पौर्णमासी प्राप्तहुई तब राजायुधिष्ठिर दीक्षित हुये ४३ । ४४ और द्रौपदी समेत रौद्र अर्थात् कठिन असिपत्र व्रत किया और तहा वाजिराज को स्थापित करके यथाविधि पूजन कर ४५ वेद वेत्ता ब्राह्मणोंका राजाने बहुत द्रव्यसे यथाविधि पूजन किया और गान व वाद्य के शब्द से तथा वेदपाठ और सुन्दर मगलों के समेत ४६ धूपों से धूपित चन्दन और मालाओं से पूजित तथा कुकुम से चर्चित अर्थात् रँगा जिसके मस्तकमें पत्र बँधा और चमर बँधी तिस घोड़े को यज्ञार्थ धर्म्मराजने छोड़ा और इस घोड़े की रक्षाके लिये अर्जुन को पठाया ४७ तिससमय गांडीव धनुष हाथमें लिये किरीट माथे में दिये स्नानकिये शुभ्रवस्त्र पहिने और उत्साह समेत छत्रचमरसे शोभित अर्जुनके गलेमें दूर्वा और चमेली के फूलोंसे बनीमाला डालकर राजा युधिष्ठिरने कहा हे अर्जुन! यज्ञाश्व की रक्षा करो ४८। ५० और कृष्णकी प्रसन्नता से तुम्हाराविघ्न न हो और मार्ग मगलदायिनी हो हे भारत! समर में जीतिपावो ५१ कुशल पूर्वक सहायी और सामर्थी समेत लौटकर आवो अनाथ और दीनवदनों को तथा सद्वृत्तों अर्थात् सत्पुरुषोंको ५२ और जो हाथजोड़े हुये शरणागत में आवें तिनको तथा हम तुम्हारे हैं यह कहनेवालोंको तथा पितासे हीन बालकों को हे अर्जुन!

रणमें न मारना ५३ तदनन्तर अर्जुन जेठे भाई युधिष्ठिर के बचनसुन नमस्कार करिके कुन्ती और देवकीसे पूछने को गये ५४ वहां जाय कुन्ती और कृष्णचन्द्रकी माता देवकीको नमस्कार कर फिर अनसूया अरुन्धती रुक्मिणी गांधारी और धृतराष्ट्रसे आनन्दितहो कहाकि मैं भाईकी आज्ञासे घोड़ाकी रक्षार्थ जाताहूं ५५ । ५६ तदनन्तर अर्जुनको मिलकर कुन्ती ने कहा कि-हे अर्जुन! तू धर्मराजके निमित्त जाताहै ५७ हे परन्तप! तुझ को आज युधिष्ठिर ने कौन सहाय और किस २ प्रकार की सेनादी है ५८ तब अर्जुनने कहाकि कृष्णने अपने रुक्मिणीनन्दन पुत्र प्रद्युम्नको पठाय और अपनी सैन्य देकर कहा हे पुत्र! इस समय मेरी आज्ञासे अर्जुन की रक्षाके निमित जावो अर्जुन मेरा प्राणही है ५९ । ६० जावो घोड़ाकी अच्छे प्रकारसे मेरेसमान रक्षाकरो पिता अपना सर्वस्व पुत्रके हाथमें देताहै सद्वृत्त पुत्र तिसकी रक्षा करता है और असद्वृत्त नहीं पालनकरता तिसी प्रकार देवकीनन्दन भगवान् वृषकेतुसे बोले ६१ । ६२ कि हे भारत! मेरी आज्ञा से मेरा सर्वस्व पुत्र प्रद्युम्न तथा चतुरंगिणी सैन्य महासेनगत घोड़ा की रक्षाको ६३ इनके सिवाय अनुशाल्व और महावली पुत्रसमेत यौवनाश्वको मेरी सहायके अर्थ आज्ञादेकर फिर मुझ को पठायाहै ६४ हे माता! मेरेअर्थ तुमको चिन्तना करना योग्य नहींहै कृष्णचन्द्र प्रसन्नहैं यहसुन कुन्तीने कहाकि हे अर्जुन! सबयुद्धोंमें वृषकेतु तुमको पालनीय

है जो वृषकेतु को कहीं छोड़आवोगे तो सर्वथा तुम्हारी यज्ञ शोचनीय होगी जयको पाय घोड़ेकी रक्षाकर भली भांति आवो और फिर श्रीकृष्णही जीवको मारते और वही रक्षाकरतेहैं ६५। ६६ हे अर्जुन! तिस भगवान्‌को सब काल स्मरण करते हुये विजय पावोगे इस प्रकार कह सो कुन्ती ऊंची श्वास लेतीहुई ६७ तब अर्जुन कृष्णचन्द्र को देख बारम्बार नमस्कारकर दिव्यरथ में सवार सेना से युक्तकहे घिरा चलताभया ६८ और अनेक प्रकारके बाजोंके शब्दसे युक्त होमके धूमसे धूपित रथमे सवार कुमारियोंके हाथसे छूटेलाई और मालाओं से गुप्ताग पुरवासियोंके जय और आशीर्वादों से तथा सुन्दरी कटाक्षोंसे वीक्षित मध्याह्नसमय में कृष्णचन्द्र ने घोड़ेको छोड़ा ६९।७० सो घोड़ा दक्षिण दिशामें प्राप्त भया और कृष्णचन्द्रकी कटाक्षों से प्रेरित वृषकेतु तिसी समय वृद्धजनों को नमस्कारकर स्त्रीसे पूंछने को अपने घर जाताभया और स्त्रीको देखकर वृषकेतुने कहा हे सुभगे! अर्जुनके समेत पुरसे मैं इसीसमय जाताहूं ये कुंती आदिक स्त्रियों की तुमको यत्नपूर्वक सेवाकरनी योग्यहै और सासुओंकी तथा वृद्धों की सेवासे परमफलहै ७१। ७३ और सत्पुरुषों के पूजनेही से स्त्रियां परम फलको प्राप्त होती हैं और हे भामिनि! हमभी तुमसे यहांपर स्मरणीय हैं ७४ यह सुन भद्रावती बोली कि मेरा मन तो तुमको छोड़ कभी नहीं जाता यदि तुम्हारा मानस जो मुझको छोड़कर जाताहै तो जाय ७५ और हे

स्वामिन्! जिस प्रकार तुम कहते हो तिसी प्रकार करूंगी अन्यथा नहीं और शास्त्रोंका यह निर्णयहै कि स्त्रियोंका परम देवता पति है ७६ हे स्वामिन्! तुमको अर्जुनका घोड़ा सर्वथा यत्नसे रक्षा करना योग्य है और युद्ध भी सन्मुखही करना चाहिये कभीभी विमुखहोना योग्यनहीं ७७ इस मण्डलमें कृष्णचन्द्रकी स्त्रिया अतीव चतुरहैं सो कहीं भी सुन्दर रणसे आपको विमुख सुनकर तुम्हारी प्रिया मुझको देख मुसकरावेंगी ७८ किस स्त्रीमें यह सामर्थ्यहै कि स्त्रियोंके मुखसे तुम्हारे उपहास्यको सुने ७९ और इनका प्राणनाथ विमुखभी सन्मुखहै तुम इन सम्पूर्ण वार्तोंका विचारकर कार्यसिद्धि के अर्थ जावो ८० इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर वृषकेतु मुसकराता हुआ स्त्री से बोला कि यदि समर में मेरे सामने त्रैलोक्य भी प्राप्त हो तो हे भीरो! अर्जुन के निमित्त में सबका छेदन करूगा निदान जब कर्ण पुत्र वृषकेतु यह विमुखहोगा तो जो कृष्णचन्द्रका माहात्म्य सफल है सो तिसीकाल विफलहोजायगा और निश्चय से काशी में मरणसे मोक्ष और गयामें पिंडदान से मोक्ष तथा त्रिवेणी में स्नान से मोक्ष है प्रिये! जो मैं विमुखहोऊं तो ये सब निष्फल होजावें ८१।८४ यदि हुआ तो फिर विंबाधर तेरामुख न देखूंगा यह बचन कहकर बहुत वीरोंके समेत तथा ८५ ब्राह्मण और गौवों के यूथपों के समेत होमकी द्रव्य युक्त तिसी समय हे राजन्! महाबली वृषकेतु चलताभया ८६ तब सपूर्ण

श्रीकृष्णचन्द्र भीमसेन इत्यादिकोंने हस्तिनापुरमें प्रवेशकिया और हे राजन्! अर्जुनका घोड़ा स्त्री और पुरुषों के दिव्य वेषोंसे मनोहर नर्मदाका जलपानकरके लिंगाकार मुझको जानपड़ताहै कि हे भारत! शिवसे भीत मदन क्या उसीमें प्रवेशकर गया इसप्रकारकी नित्योत्सव और विलासवती और नानाप्रकार के देशवासियोंसे व्याप्त किलाओं से युक्त तथा नीलध्वज वीरकरके रक्षित माहिष्मती पुरीमें प्राप्त हुआ सो नीलध्वजका पुत्र भी वनमे विहारकरता हजार स्त्रियोंके सहित फूली लताओंमें प्रवीर चम्पक वृक्षके नीचे श्रेष्ठासनमें बैठा है ८७। ९१ और श्यामाकहे जिनको रजोधर्म्म नहीं हुआ तिन स्त्रियों से और गौरीकहे अप्रसूता अर्थात् जिनके पुत्र नहींहुआ अथवा एकवार हुआ भी तिनसे और वरवर्णिनी कहे जिनको रजोधर्म हुआ है इन सब स्त्रियोंसे सेवित विशाल नेत्रस्वामी प्रवीर चित्रविचित्र रत्नादिकोंसे भूषित मदनमंजरी नाम स्त्रीसे बोला ९२। ९३ कि सम्पूर्ण स्त्रिया लताओंसे फूलोंको तोड़ें तिसके ये वचन सुन सब स्त्रिया सुन्दरबाजते कंकणो से भूषित मुसुकराती हुई दयायुक्त फूलोंको तोड़तेहुये प्राणनाथ के सहित सुन्दर स्वरसे गान करने लगीं ९४। ९५ तदनन्तर प्रवीरकी मदनमजरी स्त्री वनके मध्यमें स्वेच्छाचारीरत्नमालाओंसे भूषित पत्रमे वद्धचर्चित और स्त्रियोंके कुकुम करोंसे शोभित अर्जुनके घोड़ेको स्थित देख मदनमजरी बोली हे स्वामिन्! कृष्णकर्ण कृष्णनेत्र

स्वामिन्! जिस प्रकार तुम कहते हो तिसी प्रकार करूंगी अन्यथा नहीं और शास्त्रोंका यह निर्णयहै कि स्त्रियोंका परम देवता पति है ७६ हे स्वामिन्! तुमको अर्जुनका घोड़ा सर्वथा यत्नमे रक्षा करना योग्य है और युद्ध भी सन्मुखही करना चाहिये कभीभी विमुखहोना योग्यनहीं ७७ इस मंडलमें कृष्णचन्द्रकी स्त्रिया अतीव चतुरहैं सो कहीं भी सुन्दर रणसे आपको बिमुख सुनकर तुम्हारी प्रिया मुझको देख मुसकरावेंगी ७८ किस स्त्रीमें यह सामर्थ्यहै कि स्त्रियोंके मुखसे तुम्हारे उपहास्यको सुने ७९ और इनका प्राणनाथ बिमुखभी सन्मुखहै तुम इन सम्पूर्ण बातोंका बिचारकर कार्यसिद्धि के अर्थ जावो ८० इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर वृषकेतु मुसकराता हुआ स्त्री से बोला कि यदि समर में मेरे सामने त्रैलोक्य भी प्राप्त हो तो हे भीरो! अर्जुन के निमित्त में सबका छेदन करूंगा निदान जब कर्ण पुत्र बृषकेतु यह विमुखहोगा तो जो कृष्णचन्द्रका माहात्म्य सफल है सो तिसीकाल बिफलहोजायगा और निश्चय से काशी में मरणसे मोक्ष और गयामें पिंडदान से मोक्ष तथा त्रिवेणी में स्नान से मोक्ष है प्रिये! जो मैं विमुखहोऊं तो ये सब निष्फल होजावें ८१।८४ यदि हुआ तो फिर बिंबाधर तेरामुख न देखूंगा यह वचन कहकर बहुत वीरोंके समेत तथा ८५ ब्राह्मण और गौवों के यूथपों के समेत होमकी द्रव्य युक्त तिसी समय हे राजन्! महाबली वृषकेतु चलताभया ८६ तब संपूर्ण

श्रीकृष्णचन्द्र भीमसेन इत्यादिकोंने हस्तिनापुरमें प्रवेशकिया और हे राजन्! अर्जुनका घोड़ा स्त्री और पुरुषों के दिव्य वेषोंसे मनोहर नर्मदाका जलपानकरके लिंगाकार मुझको जानपड़ताहै कि हे भारत! शिवसे भीत मदन क्या उसीमें प्रवेशकर गया इसप्रकारकी नित्योत्सव और विलासवती और नानाप्रकार के देशवासियोंसे व्याप्त किलाओं से युक्त तथा नीलध्वज वीरकरके रक्षित माहिष्मती पुरीमें प्राप्त हुआ सो नीलध्वजका पुत्र भी वनमे विहारकरता हजार स्त्रियोंके सहित फूली लताओंमें प्रवीर चम्पक वृक्षके नीचे श्रेष्ठासनमें बैठा है ८७। ९१ और श्यामाकहे जिनको रजोधर्म्म नहीं हुआ तिन स्त्रियों से और गौरीकहे अप्रसूता अर्थात् जिनके पुत्र नहींहुआ अथवा एकवार हुआ भी तिनसे और वरवर्णिनी कहे जिनको रजोधर्म हुआ है इन सब स्त्रियोंसे सेवित विशाल नेत्रस्वामी प्रवीर चित्रविचित्र रत्नादिकोंसे भूषित मदनमजरी नाम स्त्रीसे बोला ९२। ९३ कि सम्पूर्ण स्त्रिया लताओंसे फूलोंको तोड़ैं तिसके ये वचन सुन सब स्त्रिया सुन्दरबाजते कंकणों से भूपित मुसुकराती हुई दयायुक्त फूलोंको तोड़तेहुये प्राणनाथ के सहित सुन्दर स्वरसे गान करने लगीं ९४। ९५ तदनन्तर प्रवीरकी मदनमजरी स्त्री वनके मध्यमें स्वेच्छाचारी रत्नमालाओंसे भूपित पत्रसे बद्धचर्चित और स्त्रियोंके कुंकुम करोंसे शोभित अर्जुनके घोड़ेको स्थित देख मदनमंजरी बोली हे स्वामिन्! कृष्णकर्ण कृष्णनेत्र

स्वामिन्! जिस प्रकार तुम कहते हो तिसी प्रकार करूंगी अन्यथा नहीं और शास्त्रोंका यह निर्णयहै कि स्त्रियोंका परम देवता पति है ७६ हे स्वामिन्! तुमको अर्जुनका घोड़ा सर्वथा यत्नसे रक्षा करना योग्य है और युद्ध भी सन्मुखही करना चाहिये कभीभी विमुखहोना योग्यनहीं ७७ इस मंडलमें कृष्णचन्द्रकी स्त्रिया अतीव चतुरहैं सो कहीं भी सुन्दर रणसे आपको बिमुख सुनकर तुम्हारी प्रिया मुझको देख मुसकरावेंगी ७८ किस स्त्रीमें यह सामर्थ्यहै कि स्त्रियोंके मुखसे तुम्हारे उपहास्यको सुने ७९ और इनका प्राणनाथ बिमुखभी सन्मुखहै तुम इन सम्पूर्ण बातोंका बिचारकर कार्यसिद्धि के अर्थ जावो ८० इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर वृषकेतु मुसकराता हुआ स्त्री से बोला कि यदि समर में मेरे सामने त्रैलोक्य भी प्राप्त हो तो हे भीरो! अर्जुन के निमित्त मैं सबका छेदन करूंगा निदान जब कर्ण पुत्र वृषकेतु यह बिमुखहोगा तो जो कृष्णचन्द्रका माहात्म्य सफल है सो तिसीकाल बिफलहोजायगा और निश्चय से काशी में मरणसे मोक्ष और गयामें पिंडदान से मोक्ष तथा त्रिवेणी में स्नान से मोक्ष है प्रिये! जो मैं बिमुखहोऊं तो ये सब निष्फल होजावें ८१।८४ यदि हुआ तो फिर बिनाधर तेरामुख न देखूंगा यह वचन कहकर बहुत वीरोंके समेत तथा ८५ ब्राह्मण और गौवों के यूथपों के समेत होमकी द्रव्य युक्त तिसी समय हे राजन्! महाबली वृषकेतु चलताभया ८६ तब सपूर्ण

श्रीकृष्णचन्द्र भीमसेन इत्यादिकोने हस्तिनापुरमें प्रवेशकिया और हेराजन्! अर्जुनका घोड़ा स्त्री और पुरुषों के दिव्य वेषोंसे मनोहर नर्मदाका जलपानकरके खिगाकार मुझको जानपड़ताहै कि हे भारत! शिवसे भीत मदन क्या उसीमें प्रवेशकर गया इसप्रकारकी नित्योत्सव और विलासवती और नानाप्रकार के देशवासियोंसे व्याप्त किलाओं से युक्त तथा नीलध्वज वीरकरके रक्षित माहिष्मती पुरीमें प्राप्त हुआ सो नीलध्वजका पुत्र भी वनमे विहारकरता हजार स्त्रियोंके सहित फूली लताओंमे प्रवीर चम्पक वृक्षके नीचे श्रेष्ठासनमें बैठा है ८७।९१ और श्यामाकहे जिनको रजोधर्म्म नहीं हुआ तिन स्त्रियों से और गौरीकहे अप्रसूता अर्थात् जिनके पुत्र नहींहुआ अथवा एकबार हुआ भी तिनसे और वरवर्णिनी कहे जिनको रजोधर्म हुआ है इन सब स्त्रियोंसे सेवित विशाल नेत्रस्वामी प्रवीर चित्रविचित्र रत्नादिकोंसे भूषित मदनमंजरी नाम स्त्रीसे बोला ९२। ९३ कि सम्पूर्ण स्त्रिया लताओंसे फूलोंको तोड़ें तिसके ये वचन सुन सब स्त्रिया सुन्दरबाजते कंकणों से भूषित मुसुकराती हुई दयायुक्त फूलोंको तोड़तेहुये प्राणनाथ कि सहित सुन्दर स्वरसे गान करने लगीं ९४। ९५ तदनन्तर प्रवीरकी मदनमजरी स्त्री वनके [illegible] च्छाचारीरत्नमालाओंसे भूषित पत्रसे वक्ष्च[illegible] स्त्रियोंके कुकुम करोंसे शोभित अर्जुनके [illegible] देख मदनमजरी बोली हेस्वामिन्! कृष्णकर्ण [illegible]

स्वामिन्! जिस प्रकार तुम कहते हो तिसी प्रकार करूंगी अन्यथा नहीं और शास्त्रोंका यह निर्णयहै कि स्त्रियोंका परम देवता पति है ७६ हे स्वामिन्! तुमको अर्जुनका घोड़ा सर्वथा यत्नसे रक्षा करना योग्य है और युद्ध भी सन्मुखही करना चाहिये कभीभी विमुखहोना योग्यनहीं ७७ इस मंडलमें कृष्णचन्द्रकी स्त्रिया अतीव चतुरहैं सो कहीं भी सुन्दर रणसे आपको बिमुख सुनकर तुम्हारी प्रिया मुझको देख मुसकरावेंगी ७८ किस स्त्रीमें यह सामर्थ्यहै कि स्त्रियोंके मुखसे तुम्हारे उपहास्यको सुने ७९ और इनका प्राणनाथ बिमुखभी सन्मुखहै तुम इन सम्पूर्ण बातोंका बिचारकर कार्यसिद्धि के अर्थ जावो ८० इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर वृषकेतु मुसकराता हुआ स्त्री से बोला कि यदि समर में मेरे सामने त्रैलोक्य भी प्राप्त हो तो हे भीरो! अर्जुन के निमित्त मैं सबका छेदन करूंगा निदान जब कर्ण पुत्र वृषकेतु यह विमुखहोगा तो जो कृष्णचन्द्रका माहात्म्य सफल है सो तिसीकाल बिफलहोजायगा और निश्चय से काशी में मरणसे मोक्ष और गयामें पिंडदान से मोक्ष तथा त्रिवेणी में स्नान से मोक्ष है प्रिये! जो मैं विमुखहोऊं तो ये सब निष्फल होजावें ८१।८४ यदि हुआ तो फिर बिंबाधर तेरामुख न देखूंगा यह वचन कहकर बहुत वीरोंके समेत तथा ८५ ब्राह्मण और गौवों के यूथपों के समेत होमकी द्रव्य युक्त तिसी समय हे राजन्! महाबली वृषकेतु चलतभया ८६ तब संपूर्ण

लध्वज अग्निजीको जामाताकहे दामादकैसेपातेभये और वह कौनसी कन्या है जिसे महात्मा राजा अग्नि को देते भये हे जैमिनिजी! यहसबमेरेआगे कहो मेरेसुननेकी वड़ी इच्छाहै अर्जुनकी इसप्रकार मरीसैन्य सुन मेरे इस कथा सुननेकी वड़ी लालसाहुई २८। २९ जैमिनि जी वोले कि हे कौरवेन्द्र!राजा नीलध्वजकी ज्वालानाम स्त्री धर्म-तत्पर ने स्वाहानाम कन्या उत्पन्नकी वह कन्या सब ल-क्षणोंकरके सम्पन्न लोक में अतिसुन्दरी सब वन्धुओं से पूजित पिताके घरमें वढ़नेलगी ३०। ३१ अत्यन्त रूपवती त्रैलोक्य के मोहन करनेवाली ऐसी कन्याको कुछकालके अनन्तर राजाने देखा तव यहचिन्ता उत्पन्न भई कि यहकन्या किसेव्याहदूँ तव सुन्दरनेत्रवाली कन्यासे राजानीलध्वज पूँछतेभये कि किस पतिकेऊपर तेरीरुचिहै ३२। ३३ हे पुत्री! राजा राजपुत्र हजारों हैं वड़े२ शूरवीर सिंहासनमें बैठेहुये जिसमें तेरीरुचिहो सो कह तब स्वाहा नामकन्या पितासे लज्जित होकर वोली कि मनुष्य तो मोहसे घिरे और लोलुपकहे चपलहोते हैं इससे मैं मनुष्य पतिकी इच्छा नहीं करती ३४। ३५ और हे पिताजी! देवताओं में श्रेष्ठ मेरे योग्यहो सो पति विचार करो तब राजाने कहा हे शोभने! देवराज इन्द्रको पति करो और इन्द्र मानुषी स्त्री की कामना करते हैं लो-लुपहैं इसमे ऐरापतिके ऊपर सवारहोकर आवैंगे ३६। ३७ पिताके ये वचनसुन स्वाहा वोली कि हे पिता! इन्द्र में बहुत से दोष हैं इससे इन्द्रको भी पति करनेकी मेरे

किया तदनन्तर जिसप्रकार विष्णुनाम से गर्जित मनुष्य को देख यमदूत भगैं इसीप्रकार नीलध्वज मूर्च्छा को विहाय फिर खड़ाहोकर क्रोधसे १७।१८ पूरित अपने जामाता अग्नि को बाण में सन्धान किया तो राजाके हाथ से छूटे अग्नि बिशाल ज्वाला- ओंसे सैन्य को जलाने लगे तब जले मनुष्य भागने लगे १९ हे राजन्! घोड़ा रथी पैदल शस्त्र बर्जित होगये और हाथी तथा उनके बालक और बैल इत्यादि अग्निसे पीड़ित अपने २ भारको छोड़ बनमेंजाय प्राप्त हुये २० वामीगण और धन से पूरित गाड़ियां तथा ताम्र कवच जलनेलगीं और मेदा मांसके निकट प्राप्तहोने पर फिरभी अग्निजलतेहैं निदान महाप्रलयकी भांति अर्जुनकी सैन्यको चारोंओर से अग्नि भोजनकर रहे हैं २१।२२ तदनन्तर रणश्लाघी अर्जुनने बरुणबाणको चढ़ाय अग्नि शान्तकरने के लिये छोड़ा तथापि उससे भी पावक शान्त न हुये तब अर्जुन प्रज्वलित अग्निसे बोले २३। २४ कि हे अग्ने! तुम्हीं सम्पूर्ण देवताओं के मुखहो तुम्हारे नमस्कारहैं राजायुधिष्ठिर तुम्हारी ही प्रसन्नताके अर्थ अश्वमेध यज्ञ करतेहैं और तुम्हींने गा- ण्डीवधन्वा तथा दिव्यरथ हमको दियाहै और हे विभो! सर्वदा तुम हमारे साथ मित्रता करतेरहे क्याकरूँ इस समय सेनाभरी घोड़ा छीनगया तुमअत्यन्तही जलतेहो और प्रीतिछोड़ प्रवृत्तहुयेहो २५।२७ इतनीकथासुन जनमेजय जैमिनिजीसे पूँछतेहैं कि हे मुनिराज! राजानी-

और आतुरहैं ४७। ४८ सात जिह्वाहैं मलिनकहे धूम-
मुखहै हाकष्ट! बड़ेदु खकी बातहै कि जो तेरा मन ऐसे
पतिके ऊपरहुआ और स्त्रियों का चित्त तो कुत्सितरूप
मन्दजन तिसीमें जाताहै देखो त्रैलोक्य के पवित्र करने
वाली गंगाजी ऊचे से नीचे कहे आकाश से पृथ्वीपर
आई तब स्वाहा उन स्त्रियोंके बचन सुनिकै अतिशीघ्र
स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारणकर ब्राह्मणों के समेत अ-
ग्निको स्थापन करके उपवन में अग्निका ध्यान करने
लगी ४९। ५१ और अगुरुसारकी धूप चन्दन घी खीर
शक्कर इक्षुखण्ड कहे ऊख शहद दाख तिल कर्पूर पान
लौंग जायफल केलेकी फली इत्यादि यहसब सामग्री
ले अग्निमें हवन करने लगी और मोतियोंकी माला
लिये कंकण पहिने घुघुरू बांधे सखियो समेत स्वाहा
अग्निकी सेवा करती भई ५२। ५४ कुछकालके अन-
न्तर नारदजी ने अग्नि को समझाया तब अग्निजी
ब्राह्मण का रूप धारणकर राजा नीलध्वज के समीप
आये ५५ प्रथम राजा नीलध्वजने ब्राह्मणको अर्घ्य
दे आसनपर बैठाय पूजनकिया और फिर बड़े आदर
से राजा पूछनेलगा कि हे मुने! किसकारण कहासे आये
हो सो आज्ञादेउ मैं करूं तब ब्राह्मणबोला कि हे राजन्!
हमको कन्यार्थीजानो हम ब्राह्मण शाण्डिल्यगोत्र में उ-
त्पन्नहैं ५६। ५७ तुम्हारे घरमें कन्या है सो हमको दो
तब राजाने कहा कि मेरीकन्या मनुष्य पतिकी कामनाही
नहीं करती अग्निको उसके पतिकरनेकी इच्छाहै ५८

कामनानहीं एकतो ये पराई वृद्धि नहीं चाहते यदि किसी की दान तपसे वृद्धिहोती है तो उसमें विघ्न करदेते हैं और गौतमऋषिकी स्त्रीकी कामनाकी ३८ । ३९ और जिन इन्द्रने विष्णु भगवान्‌को अपना छोटाभाई वनाया ऐसी कौनसी स्त्रीहै जो ऐसे पतिकी कामना करे जगत् के स्वामी जिन विष्णु भगवान् की कृपासे इस इन्द्र पदको पाया तिनको ऐसे मोहित होकर छोटा बनाया इससे वेभी बड़े कृतघ्नी हैं और मैंने जो मनुष्योंको त्याग कियाहै उसका कारण सुनो ४०।४१ हे पिताजी! यह मैंने सुनाहै प्रथम स्त्रियों का शरीर मलयुक्त होता है एक पतिको पाय दूसरा करलेती हैं सो अपनेस्वभावके भङ्गसे महाघोर नरकको जाती हैं ४२ और जब उनके पति मृतक हुये तिसकी देहको जो पश्चात् स्पर्श करै है सो अग्निदेव मुखहैं सोई पति मुझको रुचै है और कोई देवता दैत्य किन्नर उरग अग्निके सिवाय दूसरा पति नहीं वरूँगी ४३ । ४४ सो अग्निदेव आयकरके आप मुझको मांगेंगे तब तुम पिताजी मुझे अग्नि के देनेको योग्यहो ४५ जैमिनिजी बोले कि ऐसे शुभवचन स्वाहा ने कहे सो सुनकर राजा नीलध्वज आनन्दयुक्त आश्चर्यित भया ४६ हे राजा जनमेजय! तब स्त्रिया हँसनेलगीं और कटुवचन कहनेलगीं कि हे बाले! तू ऐसे विपरीत वचन राजासे क्योंकहती है सबके दग्ध करनेवाले सर्वभक्षक ऐसे पति अग्निको पति कैसे कहती है कि पतिहो तैसेही अग्निजी के मेदा वाहन है

और आतुरहैं ४७। ४८ सात जिह्वाहैं मलिनकहे धूम-
मुखहै हाकष्ट! बड़ेदुःखकी बातहै कि जो तेरा मन ऐसे
पतिके ऊपरहुआ और स्त्रियों का चित्त तो कुत्सितरूप
मन्दजन तिसीमें जाताहै देखो त्रैलोक्य के पवित्र करने
वाली गंगाजी ऊंचे से नीचे कहे आकाश से पृथ्वीपर
आई तब स्वाहा उन स्त्रियोंके वचन सुनिकै अतिशीघ्र
स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारणकर ब्राह्मणों के समेत अ-
ग्निको स्थापन करके उपवन में अग्निका ध्यान करने
लगी ४९। ५१ और अगुरुसारकी धूप चन्दन घी खीर
शक्कर इक्षुखण्ड कहे ऊख शहद दाख तिल कर्पूर पान
लौंग जायफल केलेकी फली इत्यादि यहसब सामग्री
ले अग्निमें हवन करने लगी और मोतियोंकी माला
लिये कङ्कण पहिने घुघुरू बांधे सखियो समेत स्वाहा
अग्निकी सेवा करती भई ५२। ५४ कुछकालके अन-
न्तर नारदजी ने अग्नि को समझाया तब अग्निजी
ब्राह्मण का रूप धारणकर राजा नीलध्वज के समीप
आये ५५ प्रथम राजा नीलध्वजने ब्राह्मणको अर्घ्य
दे आसनपर बैठाय पूजनकिया और फिर बड़े आदर
से राजा पूछनेलगा कि हे मुने! किसकारण कहांसे आये
हो सो आज्ञादेउ मैं करू तब ब्राह्मणबोला कि हे राजन्!
हमको कन्यार्थीजानो हम ब्राह्मण शाण्डिल्यगोत्र में उ-
त्पन्नहैं ५६। ५७ तुम्हारे घरमें कन्या है सो हमको दो
तब राजाने कहाकि मेरीकन्या मनुष्य पतिकी कामनाही
नहीं करती अग्निको उसके पतिकरनेकी इच्छाहै ५८

और दूसरी कन्या जिसमें तुम्हारी रुचिहो सो देउँ तब ब्राह्मण ने कहा कि हे राजन्! मुझको ब्राह्मण रूप अग्निही जानो ५९ स्वाहा सप्तजिह्व हम करके सन्तुष्ट कामना करके पूरितहोगी जैमिनिजी बोले कि द्विजके यह बचन सुनकर किंचित् मुसकराय बिस्मितसे और जन राजासे बोले कि कन्या के निमित्त यह ब्राह्मण आया है यदि अग्निहीहों बिना अग्निके किसी दूसरे पतिको स्वाहाको न देना क्या मंत्री इस ब्राह्मणकी परीक्षालेना नहींजानते तब प्रधानने कहा कि तुम अग्नि स्थित हौ या नहीं हमसब नहींजानते इससे हे स्वामी! अतिरमणीय अपना अग्निरूप दिखाओ ६० । ६३ तब उस ब्राह्मणके मुखसे अग्निकी ज्वाला उत्पन्नभई और अग्निने क्रोधकरके उस प्रधान मंत्रीकी डाढी जलादी ६४ जब मत्री जलनेलगा तब सबलोग थरथराने लगे तिससमय राजाने अग्निसूत्रस्तोत्र पढके अग्नि को शान्तकिया तदनन्तर तिससमय मे राजाको बड़ा आनन्द प्राप्तहुआ तब स्वाहाकी मौसीकी कन्या राजासे वचनबोली ६५ । ६६ कि यहकन्या तुमको ब्राह्मणकेअर्थ किसीप्रकारसे देना योग्य नहींहै क्योंकि अग्नि जादि कोंकीभांति इसब्राह्मणने अग्नि दिखाई है तब राजाने हँसकर अपनी सालीसे कहा कि मेरे जामाताको अपने घरको लेजाओ ६७ । ६८ अग्निहै कि ब्राह्मण इसकी परीक्षाले तब वह ब्राह्मणको साथले अपने घरगई ६९ और ब्राह्मणसे कहा कि मुझको परीक्षादो तब अग्नि

क्रोधकर उसका चित्रविचित्र मन्दिर परीक्षा के अर्थ भस्म करनेलगे ७० और वस्त्रों से व रत्नोंसे भराहुआ गोपुर जला दिया और उससे कहा खड़ीहो खड़ीहो निदान यहांतक कि उसके पहरने के वस्त्र भी जलादिये तव वह कपड़े जलतेहुये छोड़ नग्नहोकर मन्दिरसे भगी तो शहर में बड़ा कोलाहल हुआ और अग्निके भय से वेभी सब भागनेलगे और वह नारी रोती हुई राजा के यहा गई और कहा कि मेरा मन्दिर अग्नि ने जला दिया इनको निवारण करो ७१ । ७४ तव राजाने कहा कि अतीव शीघ्र तुमने अग्निकी परीक्षा लेली एकक्षण भर और स्थिरहो जिसमें भलीभाति सूचित होजावे ७५ तव राजाकी साली ने कहा कि ये तुम्हारे जामाता कहे दामाद तुम्हारेही पासरहैं तव राजाने अग्निको बुलाय यह कहा कि तुम मेरे शहर से अन्यत्र न जावो अर्थात् मेरेही शहरमें रहो तो अपनी कन्या मैं तुमको देऊँ ७६ । ७७ और जे कोई मेरेशहरमें युद्धके अर्थ आवें तिनको तुम मेरी आज्ञा से नाशकरो अर्थात् भस्म करो ७८ तव प्रधान मन्त्री राजासे बोला कि हे राजा! यह क्या करतेहो अपने घरमें जामाताको सदैव रखने की इच्छा करतेहो ७९ इससे ये स्वाहाको लेकर जहा चाहें अपने स्थानको लेजावें तव प्रधान के वचन सुन राजा कहनेलगा कि ८० जवतक अग्नि जामाता मेरे घरमें न प्राप्त रहैंगे तवतक अग्निका तेज ऐमेही बना रहैगा अर्थात् जलानेसे शान्तही न होगा ८१ और जो

मेरे घरमें जामाता रहेंगे तो तेज क्षीण होजावेगा तिस पर भी शहरकी रक्षाके वास्ते अग्निको मैं स्थापित करताहूँ ८२ और मैं अपनी कन्या स्वाहा तुम्हारे सामने देताहूँ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि यह कहकरके राजाने सुन्दर लग्नमें अपनी कन्या अग्निको देदी ८३ जब पाणिग्रहण होगया तो अग्निजी सुखपूर्वक राजा के घरमें रहनेलगे तब राजा इससमय सग्राम के अर्थ अपने जामाता अग्निको भेजतेभये ८४ और हे राजन्! जो कारण तुमने पूँछा सो कहा और हे महाबुद्धे, जनमेजय! अब आगेकी कथासुनो ८५ ये अर्जुनकेवचन सुनिके अग्निजी फिर प्रज्वलित हो जलानेलगे तब अर्जुन ने नारायणास्त्रका चिंतन किया ८६ जब अर्जुन ने नारायण वाण चढाया तो अग्नि चढातेहुये बाणको देख शान्तहोकर अर्जुन के सामने खड़े होगये ८७ और अपना कारण कहा कि हे अर्जुन! इससमयमें मैंने तुम्हारे ऊपर दण्डदिया कि तुम अश्वमेधयज्ञ कराय राजाको पवित्र करना चाहतेहो और पास श्रीकृष्णचन्द्र बैठे हैं क्या वे उनके दर्शनोंसे नहीं पवित्रहुये इसका कारण यह है इससे मैंने दण्डदिया ८८। ८९ और यज्ञदेवता मंत्र ये सब बिना श्रीकृष्ण चन्द्रके कोई पवित्र करनेको समर्थ नहीं हैं इसमे मैं जानताहूँ कि श्रीकृष्णके विषे तुम्हारा विश्वास नहीं है ९० तिससे तुम क्षीरसागरको पाय फिर बकरी दुहनेकी इच्छाकरतेहो जैसे कोई उदित सूर्यको छोड़कर खद्योतके प्रकाशकी आकांक्षाकरै और हे वीर

अर्जुन! तुम मेरेसखाहो मित्रहो मैं कृतघ्नीनहींहों तुम्हारी सेनासमरमे मैंनेनाशकी अर्थात्भस्मकीहै ९१।९२ और जो तुम पहलेही नारायणअस्त्र धारणकरते तो तुम्हारी सेना मैं क्योंजलाता ९३ और जे कृष्णका स्मरणकरते हैं ते ससारी दु खसे रहित होजातेहैं तिससे हे अर्जुन! जितनी तुम्हारी सेना जलीहै ज्योंकीत्यों फिर होजावे ९४ और राजा मुझको आज्ञादें यहकह आप घरको चलेगये कि जिसमें बँधाहुआ घोड़ा लावें इसप्रकार अर्जुनसे क्षमाकराय राजानीलध्वजके पासजाय अग्नि स्थितहुये ९५।९६ राजाअग्निको आये देख मदसेभरे वचन बोला कि अर्जुनकी सैन्य तुमने जलाई और फिर समर में ज्योंकी त्यों करदी खैर अर्जुन मेरे भुजोंका वल नहीं जाने है क्या वलसे घोड़ा लेजायगा तुम मेरे पूजनीय दामाद तिनको जीत यह मन्दवुद्धि अर्जुन क्या चलाजायगा ९७।९८ जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! राजाके ऐसे वचनसुन हँसिकै अग्निजी वोले अर्थात वड़े हर्षसे राजाको रोकतेभये ९९ कि ऐसा कौनहै जो अर्जुनकी सेना मारडाले या जलादे सवपातकों के नाश करनेवाले कृष्णभगवान् अर्जुनके हृदयमें वसते हैं १०० इससे हे राजसिंह! उठो अर्जुनको शान्तकरो और घोड़ा अर्जुनको दो जिससे तुम्हारा कल्याणहो १ श्रीकृष्ण के मित्र धनुर्धारी अर्जुन तिनके आगे मेरी क्या सामर्थ्य है जिन अर्जुन ने अपने वाणों करके इन्द्रका खाण्डव वन पूरित करदिया अर्थात् मुझे भस्म करने को

दे दिया २ तिससे हे राजा! मैंने तुम्हारे घरमें जामाता होकर वासकिया इस से अर्जुन का वह उपकार और मैत्री भूलगया ३ जैमिनिजी बोले कि तब राजानील-ध्वजने अग्नि के ये वचन हितमानकर अपनी स्त्री से कहा कि अब अर्जुन का घोड़ा मैं दिये देताहूँ ४ तब ज्वाला बोली कि हे राजा! तुम्हारी बड़ीभयंकर सेना सो तो अभी बनीही है किसवास्ते घोड़ा दिये देतेहो पुत्र पौत्र सुहृद् सब विद्यमान हैं और तुमभी बड़े शूरवीर हो खजाने में धनभी परिपूरितहै फिर विशेष करके क्षत्री हो क्या सदैव मनुष्य जियाही करतेहैं चाहे आज मरें या सौवर्षके बाद मनुष्योंकी मृत्यु तो निश्चयसे है तिससे राजा पराक्रमसे युद्धकरो घोड़ा किसीप्रकारसे न दो स्त्री के ये वचन सुनकर नष्टबुद्धि राजानीलध्वज फिर समरमें जाताभया वहांजाय ५।७ सेना समेत राजा प्रसन्नहो अर्जुन के सम्मुख खड़ाभया तब अर्जुनने राजाको देख महाक्रोध करके आंसूछोड़ ८ अतितीक्ष्ण बाणों करके अनेक प्रकारसे सेनाको मार सैन्यको ढापदिया यह बड़ा अद्भुत चरित्र किया ९ और युद्ध में राजाके पुत्रोंकोमारा और भाइयोंको मारा रथकाट सारथीको निहत किया १० अर्जुनकरके कियाहुआ पूर्वका स्मरणकर मूर्च्छितहो रथके ऊपर राजा गिरपड़ता भया ११ तब सारथि राजाको दुःखित देख संग्राम से बाहर लेगया तब रात्रि होगई और राजा घरमें प्राप्तहुये १२ तब राजा क्रोध करके ज्वालाको डाटते हुये वचन बोले कि तूने बड़ी

दुष्टबुद्धि मुझकोदी जिस दुष्टबुद्धिकरके मेरे भाई पुत्रा-
दि मारेगये तू घरकेबाहर चलीजा या रह तू वड़ी दुष्टाहै
मैं जाकर अर्जुनको घोड़ा देताहूं यह कहकरके राजा
यज्ञकाघोड़ा १३। १४ और प्रधान मन्त्रीको साथ ले
और बहुतसे रत्नादिक और सेना तथा हजारस्त्रियोंको
और नाना प्रकार के वस्त्र लेकर जहा अर्जुन विद्य-
मान थे वहां राजा जाता भया १५ वहा जाय अर्जुन
के नमस्कार कर, खड़ा हो अर्जुन को शान्त किया
और यह कहा कि १६ हे पार्थ! हे पार्थ, महाबाहो! मैं
तुम्हारा हित क्या करूं तब अर्जुन ने कहा कि हे राजा!
तुम बड़े वीरहो वर्षदिन मेरेसाथ यज्ञाश्वकी पालना करो
१७ जैमिनिजी बोले कि तब अर्जुनका घोड़ा दक्षिण
दिशा को चलताभया और नीलध्वज के समेत अर्जुन
उसकेपीछे चलतेभये १८ और ज्वाला क्रोधकरके उल्मु-
ख नाम भाई तिसके नगरको जातीभई और भाईकेयहां
जाय तिसदेशमें रोतीहुई भाईके नमस्कार किये और
क्रोधसे ये वचनकहे कि अर्जुनने क्रोधकरके मेरा सबघर
जलादिया और मेरे पुत्र देवर सैन्य मार पतिको जीत
घोड़ाले उसकोभी साथलेगये सो हे वीर! हे भाई! मेरेअर्थ
तू अर्जुनको मार १९। २१ तब तू मेरामित्र और मेरा
भाई है यदि तू ऐसा न करेगा तो मेरेआसू न धोयेजावें-
गे जैमिनिजी कहते हैं कि उल्मुखने दूतके वचनोंकरके
ज्वाला का चरित्र जाना २२ और बहिनको शान्तकरता
हुआ बोला कि हे बहिन! इसदेशमें तू टिक तेरामनोरथ मैंने

जाना २३ थोड़ेही कालकरके हे बहिन! तेराहित करूंगा तब ज्वाला क्रोधकर बोली कि अभी क्यों नहीं जाते २४ तब उल्मुख ने क्रोधकर ज्वाला से कहा कि जैसे तुमने अपना घर नाश कियाहै वैसेही मेराभी नाश करने की इच्छा करती हो इससे मेरेघरसे इसीसमय में चलीजा यह भाईकेवचनसुन वहांसे निकलजाय गङ्गाके तटपहुँची २५। २६ और नावमें चढ़कर किनारे चलतीहुई वचन बोली कि मेरे बायेंपैरमें यह गङ्गाजीका जललगगया सो इसजलके लगनेसे मुझको इससमयमें बड़ापातक प्राप्त हुआ इसमें कुछ सन्देह नहींहै यह ज्वालाके वचनसुनि के निकटके मनुष्योंने क्रोधकर कहा कि हे दुष्टे! तू नावमें बैठकर ऐसे दारुण वचन क्योंकहतीहै सबपातकोंके नाश करनेवाला गङ्गाजल तिसको तू मोहित होकर नहींजानतीहै २७। २८ जिस गङ्गाजीके केवल स्नानही करके पापोंके समूहको छोड़ पापी वैकुण्ठको चलेजाते ३० किन्तु मनुष्य गङ्गामात्र के कहनेहीकरके नरक को नहींजाते हैं इसके उपरान्त गङ्गाजी उसी जल से सुन्दरस्वरूप धारणकरके प्रकटहुईं और ज्वाला से कहने लगीं कि तू ने यह क्या कहा तब ज्वाला बोली कि हे अपुत्रे! मेरे वचन सुनो तुमकरके पूर्व सातपुत्र जल में नाश किये गये तब शन्तनु करके काम के जीतनेवाला भीष्मपुत्र मांगागया सो पुत्र अर्जुनकरके शिखण्डी को आगेकर बाणोंसे मारागया ३१। ३३ इससेतुम पुत्रहीनहो इसी कारण तुम्हारा जलभी दूषित होगया तब ज्वाला के

वचन सुन गंगाजीने अर्जुन के ऊपर क्रोधकर शाप दिया ३४ कि आज के छठे महीने इसीप्रकार अर्जुन काभी शिर काटाजावे तब दुष्टात्वाला उसी समय अग्निमें प्रवेश कर जल गई और जलकर भयानक बाण होकरके बभ्रुवाहन की तरकस में अर्जुनकी मृत्यु के हेतु प्रवेश करगई १३५।१३६॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांफाल्गुनशापोनामपञ्चदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

इतनीकथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि जिस नीलध्वजके जामाता अग्निथे तिस राजा नीलध्वजके नगर से आगे घोड़ा चला श्रीकृष्णके चरणों का अवलम्बी घोड़ा और हरि जो हैं विष्णु भगवान् तिसको आनन्द से देखतेहुये और अनेकार्जुन के वृक्षके पत्तों की बाधायुक्त देव सहित पृथ्वीको धारणकिये सो घोड़ा ऐसे विन्ध्याचल नाम पर्वतमें पहुँचा और तिसके पीछे अर्जुन जाते भये १।२ और तिन अर्जुनके पीछे वृक्षों को चूर्णकरते सेन्यभी पहुँची और विषम मार्ग महासेन्यके जानेसे समकहे बराबरहोगई ३ तब वनके देवता और वनकी पङ्क्ति श्रीकृष्णके भक्त अर्जुन तिनको आये देखा तिसके उपरान्त वह घोड़ा योजन पर्यन्तकी एक शिलादेख आश्चर्यितहो उस शिलामें अपनी देह घिसने लगा ४।५ और फिर उस शिलाको स्त्रीवत् मानकर चरणसे वह मन्दमूर्ख घोड़ा यह विचारकर उस शिलाका

जाना २३ थोड़ेही कालकरके हे बहिन! तेराहित
तब ज्वाला क्रोधकर बोली कि अभी क्यों नहीं जाते २४
तब उल्मुख ने क्रोधकर ज्वाला से कहा कि जैसे तुमने
अपना घर नाश कियाहै वैसेही मेराभी नाश करने की
इच्छा करती हो इससे मेरेघरमे इसीसमय में चलीजा
यह भाईकेवचनसुनि वहासे निकलजाय गङ्गाके तटपहुँची
२५। २६ और नावमें चढ़कर किनारे चलतीहुई वचन
बोली कि मेरे बायेंपेरमें यह गङ्गाजीका जललगगया सो
इसजलके लगनेसे मुझको इससमयमें बह्मपातक प्राप्त
हुआ इसमें कुछ सन्देह नहींहै यह ज्वालाके वचनसुनि
के निकटके मनुष्योंने क्रोधकर कहा कि हे दुष्टे! तू नावमें
बैठकर ऐसे दारुण वचन क्योंकहतीहै सबपातकोंके नाश
करनेवाला गङ्गाजल तिसको तू मोहित होकर नहींजा
नतीहै २७। २९ जिस गङ्गाजीके केवल स्नानही करके
पापोके समूहको छोंड़ पापी बैकुण्ठको चलेजाते ३० कि
न्तु मनुष्य गङ्गामात्र के कहनेहीकरके नरक को नहींजाते
हैं इसके उपरान्त गङ्गाजी उसी जल से सुन्दरस्वरूप
धारणकरके प्रकटहुई और ज्वाला से कहने लगीं कि तू
ने यह क्या कहा तब ज्वाला बोली कि हे अपुत्रे! मेरे
वचन सुनो तुमकरके पूर्व सातपुत्र जल में नाश किये
गये तब शन्तनु करके काम के जीतनेवाला भीष्मपुत्र
मांगागया सो पुत्र अर्जुनकरके शिखण्डी को आगेकर
बाणोंसे मारागया ३१। ३३ इससे तुम पुत्रहीनहो इसी
कारण तुम्हारा जलभी दूषित होगया तब ज्वाला के

वचन सुन गंगाजीने अर्जुन के ऊपर क्रोधकर शाप दिया ३४ कि आज के छठे महीने इसीप्रकार अर्जुन काभी शिर काटाजावे तब दुष्टाज्वाला उसी समय अग्निमें प्रवेश कर जल गई और जलकर भयानक बाण होकरके बभ्रुवाहन की तरकस में अर्जुनकी मृत्यु के हेतु प्रवेश करगई १३५। १३६॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांफाल्गुनशापोनामपञ्चदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

इतनीकथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि जिस नीलध्वजके जामाता अग्निथे तिस राजा नीलध्वजके नगर से आगे घोड़ा चला श्रीकृष्णके चरणों का अवलम्बी घोड़ा और हरि जो हैं विष्णु भगवान् तिसको आनन्द से देखतेहुये और अनेकार्जुन के वृक्षके पत्तों की बाधायुक्त देव सहित पृथ्वीको धारणकिये सो घोड़ा ऐसे विन्ध्याचल नाम पर्वतमें पहुँचा और तिसके पीछे अर्जुन जाते भये १। २ और तिन अर्जुनके पीछे वृक्षों को चूर्णकरते सैन्यभी पहुँची और विषम मार्ग महासैन्यके जानेसे समकहे बराबरहोगई ३ तब वनके देवता और वनकी पंक्ति श्रीकृष्णके भक्त अर्जुन तिनको आये देखा तिसके उपरान्त वह घोड़ा योजन पर्यन्तकी एक शिलादेख आश्चर्यितहो उस शिलामें अपनी देह घिसने लगा ४। ५ और फिर उस शिलाको स्त्रीवत् मानकर चरणसे वह मन्दमूर्ख घोड़ा यह विचारकर उस शिलाका

स्पर्शक्रिया ६ तो वज्रवत् होगया अर्थात् चलने कहीं छूटनेतककीभीसामर्थ्य न रही जैसे कोई रामनामलेनेसे हरिपदको प्राप्तहोजातेहैं तैसेही वहघोड़ाभी स्पर्श करते ही शिलामय होगया ७ जैसे विष्णुकी आराधना बिना शरीरधारी मनुष्य जड़होजाते हैं तब जड़रूप उसघोड़े को देखकरके बाजिरक्षकवीर ८ कोई अट्टहास करनेलगे कोई गर्जनेलगे कोई हँसनेलगे और कोई कहने लगे कि घिसने से इसने सुखपाया इससे इसमें लीनहोगया ९ और कोई अर्जुनके पासजाय कहनेलगे कि घोड़ामर गया शिलामें उसने अपनी देह घिसी तो आपही अश्वमेधहोगया १० सेनावालों के ये वचनसुन अर्जुन कृष्णताको प्राप्तहोगये अर्थात् शोचकेमारे बदन कुम्हिलाय कृष्ण होगया तहां प्रद्युम्नके समेतजाय घोड़ाको देखा तो वैसाही लीनथा ११ तदनन्तर अर्जुन आश्चर्यित होकरके म्लान होगये और रात्रिके कमल की भांति मुख कुम्हिलागया तब भीमसेनके लघुभ्राताअर्जुन बोले कि घोड़ेको छुटावो २। १२ तब रक्षकवीर बड़ी २ मोटी चाबुकें ले दौड़कर मारनेलगे कोई मुष्टिकों से मारते और कोई मनुष्य अर्जुनके प्रेरित क्रोधसे लातोंसे मारनेलगे तौभी घोड़ा शिलासे अलग न हुआ जैसे कोई वैष्णव विष्णुकी सेवासे भिन्न नहीं होता तब महात्मा अर्जुनकरके प्रेरित दूत अतिशीघ्र मुनियोंके पास पूँछनेकोगये कि यह शिला क्या है आगे जाय दूतोंने अतिरमणीय वृक्षों सहित मुनियों के आश्रम देखे १३। १४ अर्थात् ताल

शाल तमाल कर्णिका रसाल वकुल नारियल और चित्र विचित्र अनेक तालावोंसे शोभायमान और जिस आश्रम में पशु व्याघ्र गौवोंके सहित वैररहित प्राप्तहैं १६। १७ और विलारके मुखमें चूहा अपनी देहखुजलाते निदान सब वैररहित वसतेहैं सर्पन्योरों सहितभी उनसे बैरनहीं करते १८ और बड़ेमच्छ छोटी मछलियोंको नहीं खाते और उलूकदिनको निर्भय कौवोंके साथ क्रीड़ा करते हैं १९ इनके सिवाय और जे क्रूर पशुहैं तेभी सौम्यजीवों के साथ वासकरतेहैं यह सब विनोद बड़े प्रतापी सौरभ मुनिके प्रतापसे होताथा २० और नेत्रोंसे सौरभमुनिका आश्रमदेखकर अर्जुनके आनन्दित दूत अर्जुनसे कहने लगे जैमिनिजी बोले कि अर्जुन यौवनाश्व वृषकेतु सात्यकी प्रद्युम्न ये पाचो सौरभमुनिके निकट जातेभये २१। २२ तपस्वी सौरभमुनि को देखा कि ऋग् साम यजुर्वेदशिष्योंको पढारहे हैं २३ और वेदान्तशास्त्रभी ऋषियोंको पढारहे हैं तब अर्जुनने सौरभमुनिको नमस्कार करकहा कि हे तपस्विन्! मैं युधिष्ठिरका भाई अश्वमेधका घोड़ा रक्षाकरताहुआ आयाहूं सो घोड़ा पत्थर की शिला में चिपटगया २४। २५ और हम सब भाइयोंकरके समर में कुरुवंशी शूरवीरभाई मारेगये हैं उस पातकके नाशनार्थ अश्वमेध यज्ञका प्रारम्भ कियाहै २६ जिससे हम सब पातकोंसे छूटें पत्थरसे घोड़ा छूटजावे हे सौरभजी! इसका उपाय कहो और इसका कारण कहो कि क्यों चिपटगया २७ सब शास्त्रोंके बनानेवाले सौरभमुनि अर्जुन

नन्तर उद्दालकमुनि अपने आश्रम में उस
लेआये और बालभाव में उसको गृहस्थी
आज्ञा न देतेभये४६ और अग्निहोत्र यज्ञको
लकमुनि आपही करलेते भये कुछ दि
जब उसकी युवावस्था देखी तब कहनेलगे
होत्रकी सेवाकर तेरा कल्याणहोगा और
बहुतश्रुत पुत्र तेरे होंगे ४७।४८ये०१९
सुन मारे क्रोधके लालनेत्र करके बोली।
सेवा मैं नहीं करूंगी और पुत्रों से मेरा क्या
४९तब उद्दालकजीने कहाकि भला मेरा
तो उसने दोनों हाथोंसे कमण्डलु उठाय
दिया ५० तब उद्दालकजीके बड़ाआश्चर्य
रात्रिको अकेले शय्यामें बैठ वचन बोले कि
इससे कुछनहीं कहूंगा मेरेपास न आ दूररह
घरसे निकल बाहर जा बैठी ५१।५२
में श्रेष्ठ उद्दालक तिस चण्डी स्त्री करके
प्राप्त होजातेभये और सन्ध्योपासन।
में भी करने को न समर्थहुये किसीदिन
जातेहुये शिष्योंके समेत कौण्डिन्य मुनिआये
तब उद्दालकजी ने कौण्डिन्यजी को अर्घ्यदे
तब कौंडिन्यजीने कहा कि हे विप्र! तुम किस
दुर्बल होरहेहो और चिन्ताकरके ग्रसित क्यों
और पुत्र कन्या तुम्हारे कितने हैं ७६
कि मेरेकोई कन्या पुत्र नहीं केवल स्त्रीही है

अर्थात् दुष्टाहै जो मैं कहताहूं सो नहीं करती ५६ और कहतीहै कि करोड़ कल्पपर्यन्त तुम्हारा कहा न करूंगी और परसों मेरेपिताका श्राद्धदिनहै सो मुझको आवश्यक करनाहै ५७ इसीसे मैं कृश दुर्बलहूं और चिंतितभी हूं स्त्री वशहूं अब आप मुझको शिक्षा दीजिये यह वचन सुनकर कौंडिन्यमुनि हँसकर कानमें धीरेसे कहदिया कि उससे उलटे वचन कहाकरो क्योंकि अग्निकी सेवा न कर मेराकमण्डलु नला उस दुष्टास्त्रीसे ऐसे इसप्रकारकरो और यहांसे दो योजनपर गौतमजीका तीर्थहै सो दर्शनकरके फिर हम तुम्हारे घर आवैंगे और श्राद्धकरनेका प्रारम्भ करो ये कौंडिन्यजीके अमृतरूपी वचनसुन उद्दालकजी चण्डीसे बोले कि ५८। ६१ प्रात काल कौण्डिन्यमुनि आवेंगे सो मैं घरसे निकालदूंगा और भोजन वस्त्र कुछ न दूंगा ६२ तब चण्डीने कहाकि मैं कौंडिन्यजीको पूजनकर भोजनकराय वस्त्र पहिराय फूलोंकी माला पहिराऊंगी चण्डीके ये वचनसुन उद्दालक प्रसन्न होगये और कहा कि इसी वक्रगति करके परसों श्राद्धभी करूंगा यह बुद्धिसे विचारकरके रात्रिको चण्डीसे बोले कि प्रात काल पिताका श्राद्धका दिनहै सो हे चण्डिके। मैं नहीं करूंगा तब चण्डीने कहा कि प्रात काल तुम्हारे पिताका श्राद्ध है सो मैं यथोचित करूंगी जिसमे श्वशुर तृप्तीपाय सुखीहो ६३। ६५ तब उद्दालकजीने कहा कि रात्रिमे ब्राह्मणों को निमन्त्रण देने नहीं जाऊंगा यदि जाऊंगा तो नेत्र-हीन कुब्जा काने दांतवाला मूर्ख चुगुल रुग्न मेदहीन

नन्तर उद्दालकमुनि अपने आश्रम मे उस चण्डी को लेआये और बालभाव में उसको गृहस्थी के कार्य्योंकी आज्ञा न देतेभये४६ और अग्निहोत्र यज्ञकी सेवा उद्दालकमुनि आपही करलेते भये कुछ दिनके अनन्तर जब उसकी युवावस्था देखी तब कहनेलगे कि तू अग्निहोत्रकी सेवाकर तेरा कल्याणहोगा और बड़े पराक्रमी बहुतश्रुत पुत्र तेरे होंगे ४७। ४८ ये उद्दालकमुनिके वचन सुन मारे क्रोधके लालनेत्र करके बोली कि अग्नि की सेवा में नहीं करूंगी और पुत्रों से मेरा क्या प्रयोजनहै ४९ तब उद्दालकजीने कहाकि भला मेरा कमण्डलुतो देदे तो उसने दोनों हाथोंसे कमण्डलु उठाय पृथ्वीपर पटक दिया ५० तब उद्दालकजीके बड़ाआश्चर्य हुआ और रात्रिको अकेले शय्यामें बैठ वचन बोले कि अब मैं तुझसे कुछनहीं कहूगा मेरेपास न आ दूररह तब चण्डी घरसे निकल बाहर जा बैठी ५१। ५२ तब ब्राह्मणों में श्रेष्ठ उद्दालक तिस चण्डी स्त्री करके विह्वलता को प्राप्त होजातेभये और सन्ध्योपासन तर्पणादि कर्म पर्वों में भी करने को न समर्थहुये किसीदिन तीर्थयात्रा को जातेहुये शिष्यों के समेत कौण्डिन्य मुनिआये ५३। ५४ तब उद्दालकजी ने कौण्डिन्यजी को अर्घ्यदे पूजन की तब कौंडिन्यजीने कहा कि हे विप्र ! तुम किस कारणसे ऐसे दुर्बल होरहेहो और चिन्ताकरके ग्रसित क्योंहो ५५ और पुत्र कन्या तुम्हारे कितने हैं तब उद्दालकजीने कहा कि मेरेकोई कन्या पुत्र नहीं केवल स्त्रीही है सोदुष्टभाषिणी

अर्थात् दुष्टाहै जो मैं कहताहूं सो नहीं करती ५६ और कहतीहै कि करोड़ कल्पपर्यन्त तुम्हारा कहा न करूंगी और परसों मेरेपिताका श्राद्धदिनहै सो मुझको आवश्यक करनाहै ५७ इसीसे मैं कृश दुर्बलहूं और चिंतितभी हूं स्त्री वशहूं अब आप मुझको शिक्षा दीजिये यह वचन सुनकर कौंडिन्यमुनि हँसकर कानमे धीरेसे कहदिया कि उससे उलटे वचन कहाकरो क्योंकि अग्निकी सेवा न कर मेराकमण्डलु नला उस दुष्टास्त्रीसे ऐसे इसप्रकारकरो और यहांसे दो योजनपर गोतमजीका तीर्थहै सो दर्शनकरके फिर हम तुम्हारे घर आवैंगे और श्राद्धकरनेका प्रारम्भ करो ये कौंडिन्यजीके अमृतरूपी वचनसुन उद्दालकजी चण्डीसे बोले कि ५८। ६१ प्रात काल कौण्डिन्यमुनि आवैंगे सो मैं घरसे निकालदूंगा और भोजन वस्त्र कुछ न दूंगा ६२ तब चण्डीने कहाकि मैं कौंडिन्यजीको पूजनकर भोजनकराय वस्त्र पहिराय फूलोंकी माला पहिराऊंगी चण्डीके ये वचनसुन उद्दालक प्रसन्न होगये और कहा कि इसी वक्रगति करके परसों श्राद्धभी करूंगा यह बुद्धिसे विचारकरके रात्रिको चण्डीसे बोले कि प्रात काल पिताकी श्राद्धका दिनहै सो हे चण्डिके! मैं नहीं करूंगा तब चण्डीने कहा कि प्रात काल तुम्हारे पिताका श्राद्ध है सो मैं यथोचित करूंगी जिसमे श्वशुर तृप्तीपाय सुखीहों ६३। ६५ तब उद्दालकजीने कहा कि रात्रिमे ब्राह्मणों को निमन्त्रण देने नहीं जाऊंगा यदि जाऊंगा तो नेत्र-हीन कुब्जा काने दांतवाला मूर्ख चुगुल रुग्न वेदहीन

विष्णुभक्तिसे रहित अंगभंग जुवारी नष्टरोगी दासीपति ऐसे ब्राह्मणोंको निमंत्रण दूगा तब चण्डीने कहा कि मैं उत्तम ब्राह्मणों को जे वेदशास्त्रके पढनेवाले सुन्दर कुल वाले पुत्र पौत्रों तथा स्त्रियों सहित हैं इसीसमय रात्रिही को निमन्त्रण दिये आतीहूँ और प्रातःकाल सबको बु लाय लाऊँगी परन्तु तुम्हारे वचन कभी सत्य न करूंगी तब उद्दालकने कहा कि हे चण्डिके! जो तू मेरे घरमें हठ से श्राद्ध करेगी तो मेरे सुखदायक न होगी ६६।७० और जे अन्नश्राद्ध के योग्य नहीं हैं उनको मैं लेआऊंगी और श्रद्धा के रहित श्राद्धकरूँगा हे चण्डिके! अन्यथा नहीं ऐसाही होगा अर्थात् मैं चना,कोदव,कविला,मसुरी, भटवास,कुलथी, अरहरि येई लेआऊँगा और ये अप वित्रहैं बरट, मठा,खजूर,चित्रपत्र, पत्ता, और ये निषिद्ध शाक लाऊँगा और भाटा, गाजर, तितली, कोशातकी कुम्हड़ा, कलींदा, पिल्ली, पिण्डारक, गोललौकी, भिंटी तण्डुली इनके पत्ता लाऊँगा ७१।७४ तब चण्डी ने कहा कि मैं गेहूँ, चावल, मूँग, उर्द, खीर, दूध, मठा, दही, लड्डू, फेनी, सुन्दरश्वेत भात, गौका घी, गौकादूध, सफेदशकर,केला,आम्रका रस,सुन्दरसिखरनि घरमें बना ऊँगी और अपराह्णकालमें वस्त्रदक्षिणा सहित पवित्रश्राद्ध गोदान सहित कराऊँगी७५।७८ यह चण्डीके वचनसुन उद्दालकजी बोले कि जो बलसे तू पितरोंकी श्राद्धकरावेगी तो मुझको हित न होगा और मैं नीले कपड़ोंसे घरछाय दूँगा और अपनी इच्छा करके दुष्टतैलके दिया बारूंगा

तब चण्डीबोली कि मैं सुन्दर रमणीय घरबनाय श्वेत वस्त्रोंसे घरछाय तिलके तैलसे दिया बारूँगी जैमिनिजी बोले कि हे जनमेजय! ब्राह्मण अन्त करण के भीतर प्रसन्न होगया बाहर से नहीं इस चण्डी की बुद्धिकरके उद्दालकजी श्राद्ध करतेभये ७९। ८२ जबतक ब्राह्मणों को भोजन कराया दक्षिणा दी वस्त्र पहिराये आप भोजन किये चण्डीने भोजन किये तबतक रात्रि हुई फिर उद्दालकजी बोले कि हे चण्डे! इन पिण्डोंकी पतली लेकर गङ्गाजल में छोड़दे यह सुन वह पिण्डोंकी पतली उठाय बड़े वेगसे गोबरादिक के कूड़ा में फेंकआई तब उद्दालकजी के बड़ा क्रोधहुआ ८३। ८५ और चण्डी को शापदिया कि हे दुष्टे! बहुत काल पर्य्यन्त तू मेरी आज्ञा से शिला होजा और बहुत कालके अनन्तर जब अर्जुनका घोड़ा स्पर्श करेगा तब शाप से छूट मुक्त होजावेगी और वह घोड़ा यज्ञ के अर्थ घूमताहुआ आवेगा हे अर्जुन! वही चण्डी यह शिला है और हे तात! तुम्हारा कल्याणहो हाथों से स्पर्श करके छुड़ा देवो अर्जुन ने जाय हाथ से स्पर्श करदिया तो वह घोड़ा छुटगया और घोड़ा के स्पर्श से चण्डी भी शापसे मुक्तहो उद्दालकमुनि के पास जाती भई और उद्दालकजी स्त्री समेत सुख भोग करनेलगे ८६। ८८ ॥

इतिपारनमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांशिलामोक्षोनामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

विष्णुभक्तिसे रहित अंगभंग जुवांरी नष्टरोगी दासीपति
ऐसे ब्राह्मणोंको निमंत्रण दूगा तब चण्डीने कहा कि मैं
उत्तम ब्राह्मणों को जे वेदशास्त्रके पढनेवाले सुन्दर कुल
वाले पुत्र पौत्रों तथा स्त्रियों सहित हैं इसीसमय रात्रिही
को निमन्त्रण दिये आतीहूँ और प्रातःकाल सबको बु
लाय लाऊँगी परन्तु तुम्हारे वचन कभी सत्य न करूंगी
तब उद्दालकने कहा कि हे चण्डिके ! जो तू मेरे घरमें हठ
से श्राद्ध करेगी तो मेरे सुखदायक न होगी ६६ । ६७
और जे अन्नश्राद्ध के योग्य नहीं हैं उनको मैं लेआऊं"
और श्रद्धा के रहित श्राद्धकरूँगा हे चण्डिके ! ...
नहीं ऐसाही होगा अर्थात् मैं चना, कोदव, कविला, मसुरी,
भटवास, कुलथी, अरहरि येई लेआऊँगा और ये अप
वित्रहैं बरट, मठा, खर्जूर, चित्रपत्र, पत्ता, और ये निषिद्ध
शाक लाऊँगा और भाटा, गाजर, तितली, कोशातकी
कुम्हड़ा, कलींदा, पिल्ली, पिण्डारक, गोलसोंकी, भिंडी
तण्डुली इनके पत्ता लाऊँगा ७१ । ७४ तब चण्डी ने
कहा कि मैं गेहूँ, चावल, मूँग, उर्द, खीर, दूध, मठा,
दही, लड्डू, फेनी, सुन्दर श्वेत भात, गौका घी, गौकादूध,
सफेदशाकर, केला, आमका रस, सुन्दरसिखरनि घरमेंबना
ऊँगी औरअपराह्नकालमें वस्त्रदक्षिणा सहित पवित्रश्राद्ध
गोदान सहित कराऊँगी७५।७८ यह चण्डीके वचनसुन
उद्दालकजी बोले कि जो बलसे तू पितरोंकी श्राद्धकरावेगी
तो मुझको हित न होगा और मैं नीले कपड़ोंसे घरछाय
दूँगा और अपनी इच्छा करके दुष्टतैलके दिया बारूंगा

और उसी सेनामें मतवारे एक हजार सत्तरहाथी और इतनेही नद्देहुये युद्धारूढ़ रथ और एकलक्ष शीघ्र चलनेवाले घोड़ों के सवार और इकहजार तिरानवे पदाती अर्थात् पैदल १० । ११ सब वीर वैष्णव सदैव दान में परायण एकपत्नीव्रतयुक्त सत्सङ्गी और प्रिय बोलनेवाले ऐसे पैदलों में काई एक राजाकी सेवाको आया तिस को दूरदेश से आया जान तिससे राजाने पूँछा १२।१३ कि हे अनघ! हे तात! यदि एकपत्नीव्रत विद्यमान हो तो तिसके धारण करनेको हमसे सत्य कहो और जिनके शूरता कुलीनता व किसीके पराक्रम नहीं है और जे अपनी स्त्री के रमण करनेवाले वीर विष्णुभक्तिके युक्त ये सब राज्य विषे घरमें वासकरैं १४। १५ इनके सिवाय और सैनिक अपना अनङ्ग वेग धाणकर महाबल को प्राप्त होवें १६ जैमिनिजी कहते हैं हे राजन्! अपने भृत्योंको हंसध्वजने यथोचित बहुत धनदेकर तिन सेनाध्यक्षोंको श्रद्धायुक्त सुमति और सुगति से सन्तुष्टकिया १७ और सब मन्त्रीजन तिस सेनाकी कैसे रक्षा करते थे जैसे राजा सब प्राणियों को रक्षताहै और राजाके भाई महाबलवान् धर्मवान् विदूरथ और चन्द्रकेतु और महाबली चन्द्रसेन इनके सिवाय और राजाके पाचपुत्र अर्थात् सुरथ, सबल, सुदर्शन, सम, पाचवा महाबली सुधन्वा आदिकों समेत इसप्रकार राजाकी सब सैन्य अर्जुनकी सैन्यके स्थितहुई १८ । २० तब राजा हंसध्वज हाथीपर हो वहा जाय अपनी सैन्यका व्यूहबनाय दुन्दुभी

सत्रहवां अध्याय॥

जैमिनिजी कहते हैं हे कौरवेन्द्र! तब वायुके समान बेगवाला घोड़ा शिलासे छूटकर शीघ्रतापूर्वक हंसध्वज वीर करके स्त्री के समान पालित चम्पकपुरी में जाता भया १ तिसके पीछे उसकी पृष्ठरक्षामें प्रद्युम्नादि रण धीर वीरों करके आच्छादित अर्थात् घिरेहुये कुन्ती पुत्र अर्जुन प्राप्तभये २ तब मुक्ता मालाओं करके युक्त शुभकरनेवाले दिव्य बस्त्रोंसे भूषित तुरंगको हंसध्वज ने दूतोंके मुखसे अपनी राज्यमें वीरोंकरके पालित वहां यज्ञाश्व प्राप्त सुनकर अपने भाई और पुत्रों के समेत मन्त्री से चिन्तनाकर कहा ३।४ कि क्या पार्थका तुरंग प्राप्तहुआहै इसको अपने बलसे रणके अर्थ पकड़करके अपने राज्यमें सेनाका व्यूहबनाय महाबलवानों करके इसकी रक्षाकरो ५ इसमें यह बड़ा लाभ दिखाई देता है कि जहां हरिकेभक्त अर्जुन तहां आपही श्रीभगवान् खड़े मिलेंगे इसमें संशय नहीं ६ और मैं वृद्धता को प्राप्तहुआ मैंने श्रीकृष्ण भगवान्को अपनी आंखों से नहीं देखा तिससे हे मेरे वीरो! युद्धके अर्थ समर में तुम सब चलो और मैं भी चलताहूं ७ जैमिनिजी कहते हैं हे नराधिप! तबराजा हंसध्वज सत्तर सेनाध्यक्षों को लेकर उनके आगे होकर चलता भया और नायका दो सेनाध्यक्षोंकरके यत्नपूर्वक रक्षित सुनकर राजा उन अध्यक्षोंको धन और मानसे सर्वदा भूषित किये रहता ८।९

और उसी सेनामें मतवारे एक हजार सत्तरहाथी और इतनेही नहेहुये युद्धारूढ रथ और एकलक्ष शीघ्र चलनेवाले घोड़ों के सवार और इकहजार तिरानवे पदाती अर्थात् पैदल १० । ११ सब वीर वैष्णव सदैव दान में परायण एकपत्नीव्रतयुक्त सत्सङ्गी और प्रिय बोलनेवाले ऐसे पैदलों में कोई एक राजाकी सेवाको आया तिस को दूरदेश से आया जान तिससे राजाने पूँछा १२।१३ कि हे अनघ! हे तात! यदि एकपत्नीव्रत विद्यमान हो तो तिसके धारण करनेको हमसे सत्यकहो और जिनके शूरता कुलीनता व किसीके पराक्रम नहीं हैं और जे अपनी स्त्री के रमण करनेवाले वीर विष्णुभक्तिके युक्त ये सब राज्य विषे घरमें वासकरैं १४।१५ इनके सिवाय और सैनिक अपना अनङ्ग वेग धाणकर महाबल को प्राप्त होवें १६ जैमिनिजी कहते हैं हे राजन्! अपने भृत्योंको हंसध्वजने यथोचित बहुत धनदेकर तिन सेनाध्यक्षोंको श्रद्धायुक्त सुमति और सुगति से सन्तुष्टकिया १७ और सब मन्त्रीजन तिस सेनाकी कैसे रक्षा करते थे जैसे राजा सब प्राणियों को रक्षताहै और राजाके भाई महाबलवान् धर्म्मवान् विदूरथ और चन्द्रकेतु और महाबली चन्द्रसेन इनके सिवाय और राजाके पांचपुत्र अर्थात सुरथ, सुबल, सुदर्शन, सम, पांचवां महाबली सुधन्वा आदिकों के समेत इसप्रकार राजाकी सब सैन्य अर्जुनकी सैन्यप्रति स्थितहुई १८ । २० तब राजा हंसध्वज हाथीपर सवारहो वहां जाय अपनी सैन्यका व्यूहबनाय दुन्दुभी

नजवाहिया २१ हे मारिष ! तिस हंसध्वजकी आज्ञाकरके पुरसे बाहर निकलकर कोई२वीर कवचोंकी पूजन तथा और शस्त्रास्त्रोंकी पूजनकर अग्नि मे होमकरनेलगे और इनके सिवाय अन्यवीर नगरसे निकले ते सब संहसांकर्म में बराबरही थे अर्थात् पराक्रम में समानही थे २२।२३ और तिन वीरोंने घृत के समेत सुन्दर खीरसे ब्राह्मणों को भोजनकराय रथों में सवारहो और हाथियों में आरूढहो और बाकेवीर घोड़ों के सवार समरमें प्राप्तहुये हे राजन् ! तहा महाभयकर युद्ध होताभया जिससे अनेकों चामर छत्र भङ्गह्वै पृथ्वीपर गिरगये निदान दोनों ओरके वीर सिंहनादकर गर्जते भये २४। २५ और तिन की सबप्रिया अपनी २ अटारिनमें चढ़ी समरभूमि के कौतुक देख आपस में एक सखी तिसकी प्रिया सुन्दरीप्रति ये वचनकहे कि हे सखि ! तुम्हारे पतिको बड़ा लाभहुआ कि जो केशवभगवान् और अर्जुन के समर में जातेहैं २६। २७ हे भद्रे ! तुम्हारे अधरमें यह कृष्ण व्रण अर्थात् घावसा देखपड़ताहै सो क्याहै उसको देख तुमको लज्जा नहीं आती २८ तब तिसके वचन सुन तहा वह स्त्री बोली क्या तुम्हारे अधर में माधव कहे कृष्ण ओष्ठ नहीं लगा और हे दुष्टे ! इससमय पतिको शुभशिक्षा युद्ध के अर्थ देनी योग्यहै और यह मेरा प्राप्त व्रण मुझको सुन्दर है तथापि ये तुम्हारे कचकहे बार खुलिके कैसे विकीर्णित अर्थात् शोभा रहित होगये हैं और पराया छिद्र देखने में तो उनकी दृष्टि जातीहै जिन

को अपनेका चेत नहीं रहता किन्तु वे अपना छिद्रही नहीं देखते २९। ३० और बुद्धिमान् सुकृती मनुष्यों की दृष्टि सदैव सुकृतही में रहती है और यहा तो अपर कार्य्य का करनाही विचार अयोग्य है और जे नर कष्ट करके महात्माओंका सत्संग करते हैं वेही श्रेष्ठ हैं ३१ और असत्में राज्य मिलै तो त्याज्य है और सत्के बिना राज्य मिलै तो उसको भी धिक्कारहै तब तिसके ये वचन सुन सो गजगामिनी ३२ हँसती हुई बोली कि हे मूढे! कृष्णको नहीं देखती अब हम और तुम दोनोंकरके श्रीकृष्ण समरमें प्राप्त देखने योग्य हैं ३३ और हे हंसगद्गदभाषिणी! मेरा ललाटकहे मस्तक व्रणयुक्त देखो और सब भाव लाभही के अर्थ किया जाता है किन्तु कुछभी भाव अर्थही के कारणसे होताहै तात्पर्य यह कि जो तुमने कृष्णव्रणको भावकरके देखा इससे श्रीकृष्ण के दर्शन करोगी ३४ और हे मूढे। तुम केवल स्त्री के शरीरको देखतीहो किंतु आत्मारूप ईश्वरको नहीं देखती और हे सुदन्ती! अर्थात् सुन्दर दन्तवाली यह मैं तुमसे पूछतीहूँ मुझको एक बड़ा आश्चर्यहै ३५ कि मेरे माला और चन्दनके समेत रुचिर वस्त्र सब म्लान होगयेहैं सो इसका क्या कारणहै ३६ तब वह सुन्दरी बोली कि हे भद्रे! जो यह तुम्हारे मस्तकमें व्रणहै सो शोभायमान है और इसको योगीजन श्रीकृष्णपद कहते हैं ३७ और अब ऐसे अशुभवचन न कहो किन्तु अब पाण्डव वीर अर्जुनका घोड़ालेने हंसध्वजके वीरसेनाध्यक्ष जाते

है ३८ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि हेराजन्!
तब दुंदुभी के शब्दसे राजाकी आज्ञाकरके सब क्षत्री
युद्धको चले उसीसमय राजाकी आज्ञानुसार एक कराह
तेलसे पूरित कियागया तब राजाने आज्ञादी कि जो
कोई समरको न जावेगा सो चाहे पुत्र नाती भाई सुहृद्
भी हो वह तेलसे पूर्ण महाघोर प्रज्वलित कराहमें डाल
दियाजावेगा ३९।४० और राजाकी आज्ञाभंग होनेसे
तथा ब्राह्मणका मान खण्डन अर्थात् अपमान होनेसे
और स्त्रीको शय्यासे अलग करनेसे इन सबका विना
अस्त्रहीके वध होजाताहै ४१ किन्तु नरेन्द्रकी यह आज्ञा
कोई भंग न करै यह तीव्रशासन अर्थात् राजाका जालिम
हुक्म नीतिशास्त्रके विशारद शंखनाम पुरोहित करके
प्रचलित कियागया तदनन्तर तिसमहात्मा हंसध्वजने
राज्यका फलले अपने भाईको देकर कहा कि अब मैं
जो तुम्हारा दूसरभुजारूपी भाईहूं तिसको क्षीणजानो
४२।४३ और तुम सत्कहे महात्माओं की आज्ञा
को सदैव चिन्तना करतेरहो और जो राजा पुरोहित के
मन्त्रानुसार सदैव पृथ्वीकी सबप्रकारसे पालना करता
है वह राजा सन्मुख खड़े अपने शत्रुसे विजय पाताही
है तदनन्तर इसप्रकार राजाकी आज्ञा और कराह को
देखकरके ४४।४५ राजाका प्रथम सुधन्वानाम पुत्र
राजाके निकट जानेके अर्थ चलकर अपना धनुष चढ़ाय
माताके निकट जाय प्रणामकर बोला हे माता! मैं अर्जुन
से युद्धकरनेको जाताहूं वहांजाय उनका रक्षित हरिनाम

तुरगलाय प्राप्त करूगा ४६। ४७ तब माताने कहा हे पुत्र! तुम श्रीहरिके युद्धकोजाओ और फिर तिनको जीतकर चतुष्पद् हरि अर्थात् घोड़ाको छोड़ मुक्तिके देनेवाले हरिको लेकर मेरे निकट आइयो ४८ और नारदमुनि करके तिन भगवान्‌के चरित्र बहुधा मैंने सुनेहैं और मेरे पतिकरके रणके बीचमें बहुतवीर जीतेगये हैं ४९ लेकिन ये कंसहन्ता श्रीकृष्ण उनकरके पृथ्वीपर आखोंसे नहीं देखेगये और मैं तो रात्रिदिन हरिहीके नामों को कहा करतीहूं और दर्शन करनाभी चाहतीहूं सोई तुम करो ५० बहुधा तुम ऐसे कर्म्म करना जिससे केशव भगवान् सन्तुष्ट रहैं वे अन्तर्य्यामी किसी के वश मे नहीं रहते दूरही दूर भगा करतेहैं ५१ हे महाबली! विषयमें लीन नेत्रोंसे अब अपनी भाग्यको देखो और हे भद्रे! तुम पहले अर्जुनको धारण करना अर्थात् वशकरना तब हरिभी तुम्हारे वश होजायँगे ५२ और मैंने यह सुनाहै कि अपने भक्तको वे किंचित् कालभी नहीं छोड़ते जैसे बनमें गौ अपने बछरा को किसी समय नहीं त्याग करती ५३ तैसेही श्रीकृष्ण भगवान् अपने भक्तजनों को नहीं त्यागते और तिनके आगे कुछ भयकाभी कामनहीं किन्तु भयभीत न होना क्योंकि श्रीकृष्णके भयभीतका जीवनाही कहाहै ५४ किन्तु जिससे ये सब लोकके सम्बन्धी मेरी हास्य न करैं कि हे भद्रे! तुम्हारा पुत्र श्रीकृष्णको देखकर उनके आगेसे विमुखहुआ ५५ हे पुत्र! तैसेही तुम करियो जिससे ऐसे सूचक वचन न कहेजावें और

मैं आज अतीव हर्षको प्राप्तहू चाहे तुम्हारा पतनभी होजावे ५६ यदि लोकके विरुद्ध पुत्र को वचन अर्थात् उसकी अकीर्त्ति लोककरके भाषित मेरे श्रवणमें न परे और सब माता अपने पुत्रो और पौत्रोंका पृथ्वी पर रोदन करती हैं कि हरिके प्रति न जावें सो सब मिथ्याहै ५७। ५८ तब माताके ऐसे वचनसुन सुधन्वाने कहा हेमाता! तुम्हारे कहे वचन सबकरूगा और हरिके लानेमें पुरुषार्थ करना मेराकाम है और जयदेना दैवके आधीनहै ५९ और तहासे जो मैं केशवप्रभुको देखकर उनके सम्मुखसे विमुख होआऊं तो तुम्हारे उदरसे प्राप्तनहीं और सद्गतिको भी न प्राप्तहोऊ ६० जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! इसप्रकारके वचन कहकर जबतक वह पराक्रमी सुधन्वा चला तबतक उसकी भगिनी कुबला सब प्रकार से आरतीकर बारम्बार सुगन्धित पुष्पों और लाईकी वर्षाकर कण्ठमें फूलोंकी माला पहिराय ये वचन बोली ६१। ६२ कि हे भाई! हे साधु! अर्जुनसे युद्धकरने जातेहो और मुझको श्वशुरघरका दारुणवास सर्वदाही करनाहै जिससे वे मेरे देवरज्येष्ठ मुझको न हँसें ऐसाकरियो कि जबमें वहांजाय निवासकरू तो वह सब कहैं कि हे कुबले! तुम्हारापिता मूर्ख देखपड़ता है क्योंकि वहभी काशीश्वर मिथ्या वासुदेव पौंड्रककी भांति श्रीकृष्णके जीतनेको कहताथा ६३। ६५ किन्तु जो वह पौंड्रक अकेला सैन्यके समेत रम्य द्वारकापुरीमें प्रवेश करनेको शक्तिमान् तो नहींथा और जीतने की इच्छामें

विद्यमान था ६६ तब भगिनी के ऐसे वचन सुन सुधन्वा बोला हे कुबले! पिताका वाक्य और तुम्हारे देवरादिकों के भाषित वचन सब सत्यकरूंगा और मैं सत्यही करने के अर्थ अस्त्रोंका धारण करताहूं ६७ और हरिके समरमें जानेको मैं अब तुम्हारे नमस्कार करताहू ऐसे वचन कहतेहुये उसकक्षा से आगे चले तब ६८ चारुकहे मनोहरनेत्रवाली तथा कोमल कुचोंवाली बालाने देखा तब अपने पतिको आये देख उस चन्द्रकान्तिवाली स्त्रीने चन्दनके समेत सुन्दर फूलोंकाहार ६९ और रुचिरभोजन तथा सुवर्णके थारमें कर्पूरसे पांचशिखाका दीपक जलाय और दूर्वा, अक्षत, रोली आदि माङ्गलिक वस्तुओंसे थारको पूरितकै तिस वीरके सम्मुख खड़ीहुई और उसबालाने सुन्दर नूपुरादिकोंके मनोहर शब्दकरके और कटिमें सुन्दर करधनी पहिर और सुन्दर रेशमी वस्त्रधारे तथा मनोहर कंचुकी और कण्ठमें मोतियोका हार पहिर मुखमें अरुणराग प्रकाशित पतिमें परायण अर्थात् पतिव्रता पूजन करने के अर्थ अपने पतिको टेढ़ी चितवनसे देखा ७० । ७३ तिसीप्रकार उस पात्र से अपने पतिकी आरती कर प्रभावती ये वचन बोली हे नाथ! तुम्हारा वदन श्रीकृष्ण के दर्शनोंकी लालसामें प्राप्त मैंने देखा तिससे क्या मुझको छोड़ इस क्षणमे तुम जातेहो ७४ । ७५ और इससमय तुम्हारा एक पत्नीव्रतभी नष्ट देखाजाता है और जहा जाओगे तहा सो मेरे समान न होवेगी ७६

सो सर्वगामिनी दुष्टा महात्माओं करके वर्णन करने योग्य नहीं है कहीं जिसमें पिता जाता है फिर उसीमें पुत्र गमन करताहै ७७ यदि यहमुक्ति तुम्हारे हृदय में सर्वदा प्राप्त रहती है तो तिसी के प्राप्तकरने को शीघ्र गोविन्द भगवान्के निटकजाओ ७८ और पुरुषको क्षण मात्र शूरनारी का सेवनकरना योग्यहै और तुमने तो अभी विवेकपुत्रभी नहीं उत्पन्नकिया तुम क्यों रणविषे जातेहो ७९ और फिर हे महाबाहो। श्रीकृष्णके आगेजाय उनकी चंचलता देख फिरमैं एकघरकी प्रियाप्रिय न रहूं गी ८० तिससे मेरा तुम संगमकरके विवेकपुत्र प्राप्त करो और जो देहजकेहै देहसे उत्पन्न विवेकहोता तो मैं जानेका कभी न निवारणकरती ८१ और जिस प्रकार पुरुष अपरस्त्री में गमनकरतेहैं तिसप्रकार स्त्री परपुरुष में नहींजाती और जब तुम निदान मुझको छोड़ चले जाओगे तब मैंभी परपुरुषमें जाऊंगी तिससे हे नाथ! विषेकपुत्र करके मुझको सम्पन्नकरो जिससे मुक्ति के युक्त मैं इस असार संसारमें कृतकृत्य होऊं ८२। ८२ और वही विवेकपुत्र मेरे देहकी नित्य रक्षाकरता रहैगा और तुम विवेकरहित अन्य स्त्री से जाय कष्ट से पुत्रोत्पन्न करोगे तो हे मारिष! उससे कुछ तुम्हारी मुक्ति न होवेगी और तुम्हारे जानेके उपरांत तुम्हारे समेत मैंभी मोक्षको प्राप्तहोऊंगी क्योंकि (वक्रेवक्र) अर्थात् टेढ़ेके साथमें टेढाई और धन्यमान् के साथमें सत्यता प्रकट करनी योग्यहै ८४।८६ इससे मैंभी तुम्हारे सुन्दर

मुखका चिन्तवनकरते चलूगी और हे महामते! मेरेभय करके मुक्ति तुमको हास्यकर कहतीहै कि देखो यह पुरुष अपनी स्त्रीको त्यागकर मेरी प्रार्थना करताहै और हे नाथ! मुक्तिका द्वार पृथ्वीमें पुत्रकरके आच्छादित अर्थात् बिना पुत्रोत्पादन के मुक्तिका द्वार तो खुलताही नहीं तो मुक्ति कैसे मिलसक्तीहै ८७। ८८ और हे नाथ! तुम्हारे भाव प्राप्तकरनेवाली श्रद्धाभी मैं नहीं देखती और कहा गयाहै कि मुक्ति भगवान्के पूजनही से होतीहै ८९ तिस मुक्तिके तो मैं पैर निश्चयकरके काटेही डारतीहूँ जिससे अपने घरसे तुम अन्यत्र न जाओ ९० और ये सब श्रेय-रूपी उसके औषध नानाप्रकारसे कहेगये हैं परन्तु बिना कृष्ण के आश्रयसे मुक्ति नहीं होती और तो ये सबकारण हैं निश्चयकरके मुक्तिका द्वार हरिके सम्मत्रसे विघ्निनाम बँधाहै इसकातात्पर्य्य यह कि बिनापुत्रवान् होकर हरि का नामलिये वहप्राणी मुक्तिपदका अधिकारी नहीं होता हे नाथ! इसका विचारकर जहा जाने को उद्यत हो तहा शीघ्र गमनकरो ९१। ९२ तब सुधन्वा भक्तिभाव संयुक्त प्रिया प्रभावती के ऐसे वचनसुन कहा हे भद्रे। अब मेरा सङ्गम तुमको प्राप्तहोगा इसमें सशय नहीं किन्तु तुम्हारे ऐसे कहे वचन सुनने से मेरापराक्रम हीनहोगया अर्थात् इन वचनोंको सुनकर जो काम मेरेमें विद्यमानथा वहभी चलागया तिससे हे शोभने! अब मैं युद्धमें श्रीकृष्णके नि-कटजाय मोक्षको प्राप्तकरूँगा ९३। ९४ और हे भामिनि! अब मैं चन्दन युक्त मनोहर वस्त्र रत्न काचन आदिका

सञ्चय त्याग करके केवल शरीरही को मान गमन करता हूँ ९५ यदि जो मैं पहले जानता कि मुक्ति की रसिम तुम मेरेघरहीमें विद्यमानहो तो विवेकरूप पुत्रके उत्पन्न करनेका यत्न तुममें न करता क्योंकि पुत्रोत्पादन तो केवल मुक्तिही के अर्थ है ९६ तब प्रभावती बोली कि हे नाथ! तुम तो महाबली अर्जुनके समरको जातेहो तो जो विवेकाख्य तनय मेरे हृदयमें प्राप्तहै ९७ तिसके मूर्तिवान् दर्शन कराने को मेरा यही प्रियकरो इससमय मैं ऋतुस्नाता मैं तुम्हारे जानेबाद कोई जलदान देनेवाला नहीं है इससे रतिदानदेकर पुत्रउत्पन्न कियेजाओ ९८ तब सुधन्वा ने उत्तर दिया कि हे प्रिया! मैं अर्जुन और श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करताथा पाचही बाणों से उन दोनों को जीत फिर मैं आऊँगा ९९ यह सुन प्रभावती बोली हे नाथ! जे श्रीकृष्णभगवान् के निकट प्राप्तहो दर्शन करते अथवा जिनकरके कभी भगवान् देखेगये ते किसीप्रकार फिर इसअसार संसारमें गमनही नहीं करते १०० तब प्रियाके ऐसे वचन सुन सुधन्वा बोला हे देवि! यदि तुम श्रीकृष्ण के दर्शन ऐसे मोक्षद समझती हो कि जिनसे फिर गमनही नहीं रहता अर्थात् मोक्ष होता तो फिर मोक्षपदवी में पुत्रकरके जलदानहीसे क्या प्रयोजनहै अर्थात् जलदान व्यर्थहै तब फिर प्रभावती ने कहा हे स्वामिन्! पुत्रवान् मनुष्य विष्णुपद मोक्षको प्राप्तहोताहै १।२ किन्तु विना पुत्र उत्पन्नकिये शुकदेव और नारदमुनि के सिवाय और कोई नहीं इस मोक्षपद

को प्राप्त हुआ और पृथ्वी पर विनापुत्रके मुखदीखे ऋणसे कोई नहीं उऋण होता ३ और जे महात्मा पराया अंश अर्थात् परकार्य सफल करते हैं तिनकेभी चिन्तित कार्य्य प्राप्तहोतेहैं इसमें संशय नहीं ४ और जे इस पृथ्वी में पराये कार्य निष्फल करके गमनकरते हैं तिनके चिन्तित कार्य किसीप्रकारसे सिद्धनहीं होते ५ तब सुधन्वाने कहा हे प्रिये! क्यातुमने राजाका तीव्र शासन अर्थात् जालिमहुक्म नहींसुना किराजाने दुंदुभी बजवाय सबको सभय कियाहै कि जो कोई मेरीसैन्य वाला रणमण्डलको आज्ञाके साथ न जावेगा वह तैलसे पूरित तप्तकराह मे शीघ्रही डाल दिया जावेगा ६ । ७ और हे देवि! रतिदान रात्रिको दिया हुआ पुत्रप्रद अर्थात् पुत्रके देनेवाला होताहै और किसी महात्मा करके दिनका स्त्रीरमण प्रशसनीय नहीं कहागया ८ और इससमय सब वीर पिताकी आज्ञासे अर्जुनके युद्धको जातेहैं मुझको भी शीघ्र जाना योग्यहै तब प्रभावती ने कहा कि इससमय तुमको सहित आभूपणों के पहले मुझको जीत फिर वहा जानेकी इच्छा करना योग्य है ९ और मैं कामदेवके बल से बलवान् और सब भूपणरूपी सैन्यके युक्तहूं कहो इसके जीतनेमें तो आप वीर कहे समर्थही नहीं हो फिर वहा श्रीकृष्णके आगे तो कालान्तक यमराजके समान कठिन वीर तहा हे नाथ! तुम्हारी क्या गतिहोवेगी किन्तु मेरी भी अपगति होजायगी तब सुधन्वाने कहा कि हे विशालाक्षि! मैं

तुमसे कहताहूं कि मैं अर्जुनके समरसे फिर आय तुम को न देखूंगा १०।१२ तब प्रभावती बोली हे नाथ! हे प्रभो! मेरा ऋतुस्नान में सोलहवा दिन प्राप्तहै और ऋतुके भंगका उत्पन्न पातक तिसको भी आप भली-भाँति जानते हो फिर तुम ऐसेवचन न कहो १३ और पिताको षोड़शी श्राद्ध ऋतुपुर्ण होनेसे स्त्रीका गमन तैसेही एकादशी व्रत ये तीनों बराबरहैं हे महाबुद्धे! इसमें संशय न करना चाहिये धर्म्मकी महासूक्ष्मगति है और अत्यन्त गम्भीरहै इसके भाव प्राप्त करने में किसीकी शक्ति नहीं है १४।१५ तब सुधन्वाने कहा हे देवि! संकटके वास्ते धर्म्मका महात्मा ऋषियोंने नि-र्णयकियाहै कि जो सोलहवें दिन न सधै तो सम्वत्सर के अन्तही में भक्तिपूर्वक श्राद्धकरै १६ और अर्द्धरात्रि के मध्य में अन्न सूँघकर उत्तमोत्तम व्रतकरै और प्रियाके ऋतुदानमें धैर्यता समेत रति देवै १७ और इसका पहले धर्म्मशास्त्र में धर्म्म के जाननेवाले अ-र्थात् कोविदोंने यह निर्णयकिया है कि सम्वत्सरमें पितृ श्राद्ध भक्तिपूर्व्वक और एकादशीका व्रत श्रीहरिकी भक्तिके समेत और अर्द्धरात्रि के ऊपर ऋतुदान करै और हे वरानने! गृहस्थके ये एक धर्म्म हमने सुने हैं तब सुधन्वाके ये वचन सुन फिर प्रभावती बोली १८। २० हे स्वामिन्! तुम्हारे पिता तो समर में प्राप्तही हैं और तुम्हारा आज कोई व्रतभी विद्यमान नहीं है ति-ससे हे नाथ! अवश्यही मुझको रतिदान देकर समर

में हरिके निकट जाओ २१ जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! इसप्रकार के वचन प्रभावतीने अपने प्राणनाथ से कहकर वह श्रेष्ठमुखवाली अपने दोनों कोमलहाथ पतिके गलेमें डाल अङ्ग से चिपटगई जैसे वनमें शाल कहे साखूके लता एक एकमें चिपट रहतेहैं तब वे प्रिया के पकड़े भुजों के छुड़ाने को राजकुवँर समर्थ न हुआ २२। २३ तब विह्वलहो हँसतेहुये कवच,वखतर, किरीट आदि समर के साज पृथ्वीपर डालदिये और तिस कोमलाङ्गी प्रिया के साथ दिनमें रत्नके जड़ाऊ पलँगपर शयन किया २४ हे भारत! उसीरतिदान से विशालाक्षी प्रभावती ने गर्भ धारण किया और जबतक सुधन्वा स्नानकर उस मन्दिर से रथमें सवारहोके चलै तबतक २५ समरविषे हंसध्वज सेनाध्यक्ष से बोला कि सबवीर तो दुन्दुभी शब्द सुनकर यहां प्राप्तभये २६ और सुधन्वा को मैं रणमें आयानहीं देखताहूँ क्या उसने मेरीआज्ञाको नहीं जाना या वह चढ़ाहुआ कराहको भूलगया२७ निदान दुंदुभीके शब्दसे यात्रासुन मेरेपुत्रने उसको उल्लघनकर स्त्री के यहां स्थिर होकर उसको सन्तुष्ट करनेलगा और मेरे घोड़ा मतवारे हाथी सैन्य सब हरि अर्जुन के निकट प्राप्तभये यह सुधन्वा पीछे रहगया इसने क्या कुत्सित कर्म कियाहै २८। २९ तिस दुष्टको अब बलवान् यवन मुद्गरोंके युक्त जाय तिसके बारपकड़ पृथ्वी मे घसीटते तिस कृष्णके विमुखको कराह के पास लेआवें तब राजा की आज्ञापाय शीघ्रगामी यवन ३०। ३१

तिस सुधन्वाके रमणीय रत्नों से चित्रित मन्दिरको जाय नृपात्मज को भुक्त भोगमें प्राप्तदेखा ३२ और वज्रपात के समान दारुण राजाका शासन अर्थात् हुक्म सुनाते भये कि हे मारिष! हे महाबाहो! तुम्हारे ग्रहण करने को हम आये हैं ३३ राजाकी आज्ञा तुमने क्यों उल्लंघनकी जिससे राजा क्रोधित है तुम उनके पीछे नहीं गये किन्तु तुमने सबको ठगलिया इसकारण तुम्हारे पिताने हम सबको तुम्हारे पकड़नेको भेजा है कि तुम उस मन्दात्माको पृथ्वीपर घसीटतेहुये समर में लेआओ ३४।३५ तिससे अब उठो पार्थकी सैन्य के निवारण करनेवाले राजा के निकट चलो जहा राजा पद्मव्यूह में आश्रित युद्ध के करनेवाले वीरोंसे घिरा विद्यमान है ३६ जैमिनिजी कहते हैं कि सुधन्वा ने तिनसे पिताके क्रोधित वचन सुन और जानके शीघ्रतापूर्वक आगे रथसे उतर तिन सैन्यवालों के साथ ३७ जाय समुद्रके समान तीन योजनमें फैली सैन्य के समेत अर्जुन के विजयमें उत्साहित अपने पिताको वीर सुधन्वा ने देखा ३८ तो पिता को महाक्रोधित देख सुधन्वा आगे खड़ाहो प्रणामकरने लगा तब तक राजा सुधन्वा से क्रोधकेयुक्त वचन बोला ३९ हे वीर! तुमने किसकारण मेरी आज्ञा उल्लंघन की सो कहो तब सुधन्वा ने कहा कि हे विभो! हे तात! घरमें तुम्हारी बधू मुझसे जलदेनेवाला पुत्र मागने में उद्यत हुई तिससे हे राजन्! मैं यात्रा से स्थिर होगया ४० तब हंसध्वज ने कहा तू निश्चयकरके महामूर्ख है कि इहा

संग्राम में सन्मुख श्रीकृष्णचन्द्रको साक्षात् नहीं देखा निदान तुमने सबकुल नष्टकरदिया और ठगलिया ४१ अपनी प्रियाको आप पूर्व पितरों के अर्थ जलदेनेवाला पुत्र देताहै सो उससे न तू न पूर्वज पितृ कोईतृप्ति से पूर्ण नहींहोसक्के और हम तुमको इहा कोई भी हरिके बिना जलदेने के समर्थ नहीं है किन्तु जलाधिप वरुण कोभी यहशक्तिनहींहै कि श्रीहरिके बिना उन पितृगणों की प्यास पूर्ण करसकें फिर औरकी क्यासामर्थ्यहै ४२। ४३ और वाजिराज के पालनार्थ सव्यसाची धनंजय प्राप्तहैं जिन अर्जुनको एक समरमें क्षणमात्रभी जगन्नाथ भगवान् नहीं छोड़ते ४४ अरे! तेरेबल विचार और कियेहुये सब धर्मको धिक्कारहै कि तूने श्रीकृष्णको पुरमें प्राप्तसुन फिर काम में मनलगाया ४५ अब मैं ऐसे श्रीकृष्णके विमुख म्लान कामरत कुपुत्रको सतप्त तेल का कराह जिसमें कंठपर्यन्त तिल तेल पूर्ण है तिसमें उसको पतित करूंगा ४६ हे दूतो! तुम मेरेपुरोहितशंख लिखित मुनिके निकटजाय तिनके आगे यह सबधर्म्म सकट सुनाय उनसे पूंछआवो जो वह कहैं सोई मुझको कर्त्तव्य है ४७ अथवा अपने जीवन और राज्यके वश रखनेके लिये उनके वचन हमकरके उल्लघन न किये जावेंगे अब अर्जुनसे नाध्यक्षके देखतेहुये मेरी आज्ञासे फिर तेलका कराह सतप्तकरो ४८ जैमिनिजी कहते हैं कि इसप्रकार राजाके प्रेरित दूत मुनीन्द्र शंखलिखित पुरोहितपै जाय पूंछनेलगे कि हे मुनिराज! राजा आपसे

पूछते हैं कि धर्म्मसंकटमें संशयहै कि सुधन्वाराजाकी आज्ञा भंगकर उनके पीछे नहींगया और पीछेरहकर निजस्त्रीको कामकरके पुत्रदेनेलगा पुरोहितकहो। तिसपापीसुधन्वाको हमकरके क्याकरना योग्य है ४९। ५२ और उस समर्थपुत्रको कराहके समीप राजाने बुलायमँगायाहै अब तुम्हारी आज्ञाहोय तो डालदेवें इसमें संशय नहींहै अवश्यही पुत्रस्नेहको त्याग राजा जलते तैलमें उसको छोड़देंगे तब लिखितने कहाकि हे दूतो। जाओ राजासे मेरेकहे वचनोंको कहो कि जो मन्दात्मा पृथ्वीमें अपने वचनको लोभ तथा भयसे सत्य नहीं करते ते प्राणी चिरकालपर्य्यन्त महादारुण नरकमे वास करते हैं ५३। ५५ देखो महामतिवाले हरिश्चन्द्रने अपना राज्य कौशिक विश्वामित्रको देकर अपनी सत्यपालना के अर्थ स्त्री पुत्र को वेंचडाला और फिर काशीजी में गंगाजीके निकट मृतकपुत्र के गातोंसे वस्त्रलेने वास्ते राजा अपनी प्रियाके मारने को उद्यत हुआ ५६। ५७ अर्थात् तब भी सत्यपालना की और पूर्व में राजा दशरथ ने कैकेयी को दो वरदान देकर अपने कहे वचन सत्य करके प्रियपुत्र श्रीरामचन्द्र को वनवास दिया ५८ यदि जो ये वचन पहले राजाने कहे हैं कि पुत्र पौत्र सहोदर जो कोई मेरी आज्ञा भगकरैगा वह हमकरके जलतेहुये तैलमें पतित किया जावेगा ५९ जो अब पुत्रको तैलमे न छोड़ैंगे तो पूर्वकहे वचन मिथ्या होजावेंगे तब विमुखहोने से उनको रथियों में

श्रेष्ठ अर्जुनके समेत केशव-भगवान्‌के दर्शनभी न होंगे ६० और सतकरके पालित अपने घर में स्थित उनके राज्य से हम दोनों भाई भी बाहर निकल जावेंगे ६१ और जो राजा सत्य न बोलै अर्थात् सत्यवादी न होवे उसके राज्यमें रहना योग्य नहीं है किंतु तिसके संसर्ग से गुणों से वास करने से और निकट रहनेवाले और उसके ससर्ग के वास करनेवाले प्राणियों को भी पातक होताहै अथवा निकट रहनेसे आसनमें शयनमें सवारी में निकट भोजनों में स्पर्श हो ही जाता है इसी से उनको भी पातक लगता है इसप्रकार के वचन शंखके सयुक्त लिखितने कहे तव मुनि के निकटसे सोदूत राजाके पास जाय ६२। ६४ मुनि के कहे सब वचन यथातथ्य कहे तव दुःखितहो महाबुद्धि राजा हंसध्वजने धर्मोपदेशक मुनिके ग्राम जाय उनके लानेका विचार किया जैमिनिजी कहते हैं तब हंसध्वजने पुत्र के पतित करने को मन्त्रियों की ओर देखकर कहा हे मन्त्रिन्! मेरी आज्ञा से प्रज्वलित तैल में दुष्ट सुधन्वा को पतित करो और हे धैर्यवान् सचिवो! पार्थको रणमें देखना मैं पुरोहित के निकट जाय महाबुद्धिवाले मुनिराज के नमस्कार कर फिर युद्ध में आता हूँ ६५। ६८ ये वचन कह राजा मुनिपै जाय पुरोहितजी को नमस्कार कर मुनिराज को वहां लातेभये जहां कराह प्रज्वलित होरहा था ६९ तहां सुमति नाम मन्त्री ने राजा के भाषित वचन सव किये और हे विशापते! तव सुमति महावीर सुधन्वा से

बोला कि हे सुधन्वन्! मैं क्याकरूँ तुमको देख मेरे हृदय में अत्यन्त करुणा आती है ७० । ७१ और राजा की आज्ञा उल्लघनकरने की शक्ति नहीं है और तुम्हारे अर्थ राजाका दारुण शासनही विद्यमानहै क्याकरूँ ७२ यह सुन सुधन्वाने कहा कि हेमंत्रिन्! तुमको राजाज्ञा कर्त्तव्य ही है किंतु तुम्हारा उसमें क्यावश है और देखो जम दग्निके पुत्र परशुरामजीने पूर्वमें पिताके वाक्यसे माता का शिर काटडाला और हे मंत्रिराज! मेरे यह प्रतीतहै कि जो मैंने पुण्य शुभक्रिया की है ७३ । ७४ तो हेमंत्रिराज! मुझको मरनेकाभी कुछ भय नहीं है तुम राजाज्ञासे तप्त तैलमें मुझे फेंकदो इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी कहते हैं कि मंत्रियोंने तैसेही उसप्राणीको स्नानकराय दिव्यवस्त्रों से भूषितकर और तुलसीके दलोंकी माला हृदयमें धारण कर मनसापूर्वक वासुदेव भगवान्का स्मरणकरते उसको ७५ । ७६ राजाकी आज्ञासे प्रज्वलित तैलके कराह में छोड़दिया तब सुधन्वाने प्रथम गिरतेही गोविन्दकेनाम स्मरणकर फिर उन्हीं नामों को जपनेलगा ७७ जैमिनिजी कहते हैं सो हम तर्कणाके युक्त कहते हैं उसज्वालाओं से खौलतेहुये तैलके कराहमें सैकरों बबूले उठनेलगे ७८ जैसे पराया उदय देख दुर्जन मनुष्य के हृदय में उठते हैं हे जनमेजय! इसीप्रकार तिसकराह में बबूले प्राप्तहोतेथे ७९ ऐसे सन्तप्त कराहमें प्रवेशकर सुधन्वाने कहा हे गोविन्द! हेमाधव! त्राहि२ अर्थात् रक्षाकरो रक्षाकरो ऐसे मेरे वचनसुन जो नहीं आये तो हे हरे! इसका कारण मैंने

जानलिया ८० कि आपने यहीजाना होगा कि कामचा-
रक सुधन्वाने मेरी आज्ञा पहले तो भगकरदी पीछे अब
संकट में पापिष्ठ पड़िके अब आज जगद्गुरु का स्मरण
करताहै ८१ और हे दयार्णव! गोविन्द प्राणी कष्टही में
पड़िके भयसे विह्वलहो तुम्हारा स्मरण करतेहैं सुखको
पाय नहीं करते और जो सदैव कियाकरे तो विपत्तिकाल
प्राप्तही नहो साधुओंकी भांति यह मैं सत्य कहताहूँ ८२
और इस मेरे कष्टरूप सुखको हरिके माने विना धिक्कार
है और करुणाकर केशव पूर्व में प्रह्लाद, गजराज, ध्रुव,
प्रपद, नन्दिनी, द्रौपदी और अन्य गोपादिक भक्तों ने
आपत्ति काल में तुम्हारा स्मरण किया जिनको तुमने
महाकष्टों से छुड़ाया ८३। ८४ और हे जनार्दन! जो
प्राणी तुम्हारे नामों को हृदयमें अन्तकाल विषे स्मरण
करते वे नर अवश्यही मुक्तिको प्राप्त होते हैं ८५ और
हे राधावर! मेरी मुक्तिमें तो सन्देह नहीं है किंतु इहलोक
विषे निन्दाहुई कि सुधन्वा वीरका कराहजदु खसे दुष्ट
मरणहुआ ८६ हा! आज मैं श्रीकृष्णार्जुनवीरको अपने
बलसे सन्तुष्ट न करने पाया और न गांडीवकरके छोड़े
बाणोंसे मेरेगात छिन्नभिन्नहुये ८७ और कहेंगे कि इस
समर्थ सुधन्वाकी चोरकीसी गतिहुई हे कृष्ण! यह सब
अपने हृदयमें धारण करेंगे अर्थात् कहेंगे और न मैंने
बहुत सैन्यहीका वधकियाहै ८८ इसप्रकार ऐसेही बहुत
वचन कहिके सबजन मुझको हँसेंगे तिसमे हे हरे! आज
अग्निके दाहसे मेरी तुम शीघ्र रक्षाकरो ८९ जैसे भीष्म

द्रोणादिकों के देखते २ सभा के मध्य मे द्रौपदी की लज्जाजाते वस्त्ररूप से तुमने धारण किया अर्थात लाज राखली ९० जैमिनिजी कहते है कि इस प्रकार सुधन्वा वीरको माधव का स्मरण करते हुये वह तप्त तैल शीतल होगया जैसे महात्मा का हृदय शीतल होता है ९१ तदनन्तर सब लोगों ने उसको तैल विषे जल में कमलके समान प्रस्फुरितहुआ देखा और फुल्लयुक्त उस सुन्दरनेत्रवाले सुधन्वा का दुःखितमुख विकसित देख सब नगरवाले चकित होगये ९२ तब आशुओंको छोड़ते पृथ्वीपर गिरते हाथसे छाती पीटते, हाहा करके चिल्लाते मुकुट इधर उधर फेंकते भुजों से पृथ्वी धुनतेहुये राजा बोला कि मैंने सुधन्वाको देवदेव यदुनन्दन और श्रीकृष्णके चरणों के रसिक अर्जुन के निकट जाने के लिये अग्निके मध्यमे छोड़ा ९३। ९४ जैमिनिजी बोले कि राजा हंसध्वज शङ्ख लिखित के समेत उस एक पुत्रको कराहमें श्री हरिके पुण्यवान् गोविन्द माधव दामोदर ये नामोंको स्मरण करते देख ९५ राजा से शङ्ख कहनेलगा कि क्या तैल तप्त न था या अग्नि नहीं जलाई गई कि श्रेष्ठ मन्त्र या कोई औषध तुम्हारा पुत्र जानता है कि कुछ तुम्हारीही कृत्यहै ९६ यदि जो जलता तैल था तो इसका मुख कमलके समान कैसा प्रफुल्लित देख पड़ता है निदान अब दूत नवीन नारियल लाय तिस तैल में छोड़ें तो तैलकी परीक्षा होवै ९७ तब मुनि के अतीव तीव्र वचनसुन दूतोंने मुनि के भय

से शीघ्रही शंख के देखतेहुये फललेकर तैलमें फेंकने भये १९८ तब वह फल कराहमें गिरकर उसके दोभाग अलगहो एक शंखके ललाटमें लगा और दूसरा लिखित के मस्तक मे लगकर फिर उसी में गिरपड़ा जिसके गिरने से प्रज्वलित तैलकी धारा उछलती भई १९९॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांसुधन्वन मस्वकथनो नामसप्तदशोध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

इतनीकथा सुन राजा जनमेजय पूछतेहैं कि हेमुनि· राज! कहो फिर तिसकराह से गात्रों के समेत महावीर सुधन्वा कैसे निकलकर अर्जुनपै गया और सो देख शखने तहां फिर क्या किया सो कौतुक हे जैमिनिजी! वर्णनकरो १ जैमिनिजी बोले हे कौरवेन्द्र! तब तैल के मध्यमें महामुनि शखने सुधन्वा को देख वहांके नौकरों से पूछा कि इसको डारने में इसवीर ने किसका स्मरण किया २ कि यह किसी औषधका मूल किसी गात्र में धारण कियेरहा है तब भृत्योंने कहा कि हे मुनीन्द्र! महात्मा सुधन्वा ने महामति श्रीकृष्णदेवकेसिवाय और किसी का स्मरण नहीं किया जिनके स्मरणमात्र से प्राणी पृथ्वीपर योनि के सकटों से छूटतेहैं तिन्हीं माधव का यह स्मरण करताहै हे शख! तुम देखो माधव के भाषण करने से अभी उसके ओंठ फरकरहेहैं ३।४ जे महाबली सुधन्वाके ओंठ प्रियाके समागमसे कुछ रंगहे

से देखपड़ते हैं तब दूतों के ऐसे वचनसुन शंख ने कहा जिसने विष्णुका स्मरण किया सो महात्मा हम करके पतित कियागया और निकटही वह वालक देखागया धिकारहै मेरे हृदयको यह वड़ाकठिन है अब मैं अपनी देहका प्रायश्चित्त मरणान्त में करूंगा ५। ६ यहि प्रकार के वचन कहि तैलके मध्यमें गिरकर सुधन्वा को अंकमें लगाय ये वचन बोला ७ हे साधु ! हेक्षत्रियवीर! तुम असाधुद्विज हमकरके चित्तकठोर से तैलमें पतित कियेगये ८ तिससे हे साधु ! तापों से युक्त वेई रहते हैं जे माधवका स्मरण नहींकरते तेई श्रीहत दरिद्री होकर वेई मूढ़ दुःखों के युक्त रहतेहैं ९ और जे सबकामों के देनेवाले विष्णुभगवान् का स्मरण करते हैं ते प्राणी तीनों तापों से भक्तिको पाय सर्वदा दुःखसे वर्जित रहते हैं अर्थात् आपत्तिकाल उनको कभी प्राप्तही नहीं होता १० हे परमवैष्णव ! कहो तुम्हारे भस्म करनेको अग्नि की शक्तिनहीं है और जिनको मुनिलोग नहीं देखते ऐसे सुरासुरों के गुरु श्रीकृष्ण भगवान् को तुमने प्राणान्त में वाणीकरके इससमय में स्मरणकिया जिन भगवान् ने प्रह्लादको अग्निसे जलतेहुये रक्षितकिया ११। १२ और तुम्हारे शरीर के निकटसे मेरा शरीर पवित्रता को प्राप्तहुआ हे नरशार्दूल ! अन्यउपाय पवित्र करनेके हेतु नहीं है हे सुव्रत ! राजा और राजपुत्र और सैन्य इन सब को पवित्रकरो हेभूपज ! हेवत्स ! तुम तैलसे मासको उ- द्धारकरो अर्थात् निकलाओ १३। १४ और जिन पाढव

के अर्थ श्रीकृष्ण आपही सारथी कर्म करतेहैं ऐसे अर्जुन
के आगे हे वीर! यथोचित संग्राम करके अपना यश
स्थितकरो तिसके पीछे तुमको मंगल प्राप्तहोगा जैमि-
निजी बोले हे राजन्! तब राजाने महाशीलवाले पुत्रको
तेलसे निकालकर रणमें प्राप्त किया तो सनातन पुत्रको
देख राजासे शङ्ख ये वचन बोलताभया कि इसने सद्विद्या
अपने मुखमें धारणकरके नृसिंहजी का मंत्रराज जपकर
के अपने शरीरकी रक्षाकी है और यशोमय जो तुमहो
तिनके पवित्रकरने को पवित्र जो मैंहूं सो स्थिरहूँ १५।१८
तदनन्तर हंसध्वजने पुत्रको आलिंगनकर ये वचनकहे
कि हे पुत्र! तुम हमकरके प्रज्वलित अग्निके तेलमें छोड़े
गये १९ सो तुमको अग्निने केशवके प्रभावसे भस्मनहीं
किया उन्हीं केशवके माहात्म्यसे इससमय मे तुम्हारे सब
पातक दूरहुये २० हे वत्स! सब हमको सूचितहोगया
इसमें संशयनहीं हे तात! अब हमको उठके परिरम्भण
देओ अर्थात् अङ्गले मिलो २१ हे पुत्र! उठो तुम्हारा
कल्याण होवे रथमें आरूढ़होकर संग्राममें मेरे अतिथि
अर्थात् आयेहुये अर्जुनके सारथी श्रीकृष्णको देखो २२
पिताके ये वचन सुन सुधन्वा हर्षित होकर राजाको और
भूसुर ब्राह्मणों की वन्दनाकरके रत्नोंसे विचित्रित अर्थात्
भूषित सुवर्ण से जिसका सुन्दर गुम्मट बँधाहुआ और
बड़ेऊंचे ध्वजाके युक्त चारुकहे मनोहर पहियाजगे और
बहुत क्षारोखोंकेसंयुक्त और चामरसे बँधेहुये हेमवर्णवाले
घोड़ोंसे युक्त शीघ्र चलनेवाला २३।२४ सुवर्णकी मालाओं

करके भूषित और वहुतसी बँधीहुई फूलों की मालाओं से चर्चित सूत्रकरके नियत्रित अर्थात् घंटी कैसा नाद करती हैं मानों नृत्यकरके ऐसे रथमें आरूढहुआ २५ जैमिनिजी बोले हे राजन्! यहिप्रकार तिस समयमें राजा हंसध्वजके समेत अर्जुनके बराबर कालचक्रके समान सैन्यखड़ी होती भई २६ तहा तिन खड़ेहुये वीरोंके मुख से पतित ताम्बूलसे पृथ्वी कैसी शोभित होतीहै जैसे सहित चन्द्रमा के अरुणता होवे हे राजन्! जैसे निशागम में सूर्य्य की किरणों करके आकाश अरुण देखा जाता है और वीरोंके गातोंसे मृगोद्भव अर्थात् केसरियुक्त चन्दन गिरताहै २७। २८ और हे जनमेजय! परस्पर सघनता के कारण घिसनेसे मोतियोंके माला टूटेहुये पृथ्वीमें देखे जातेहैं २९ और विचित्र कवच किरीटों की रणमें प्रभा दीप्तिवान् देख सारे ससार के नेत्र थकित होगये ३० और वायुकरके पतित चन्दन सब देवताओं के यहा प्राप्तहुआ इसीप्रकार वीरोंके शिखाले फूल जो सुगंध के अर्थ लगाये थे वे पृथ्वीसे ऊर्ध्वलोकमें जाय मनोहर कल्पवृक्षादिकों के मालाओं की सुगन्धको जीतलेते भये और जो सुगन्धहैं तिनको मनुष्यों के मुखवाले मसाले की सुगन्धोंने पराजित किया ३१। ३२ और हे राजन्! तैसेही मलयकी सुगन्ध वायुकरके भ्रमनेलगी और जो गजोंने पुष्करका जलपान कियाथा तिसके छोड़नेसे पृथ्वी कहीं २ ऊंचाखाली होगई ३३ और फिर वही घोड़ों की टापोंकी धूलकरके परिपूरित अर्थात् बराबर होगई

और रथों के घोर शब्दकरके मेघ के समान सागर गर्जनेलगे ३४ और सब सैन्यवाले मूक तो हैं किन्तु कहते हैं कि हम वाचाल और वहुश्रुत अर्थात् सब जानने के ज्ञाता हैं तात्पर्य यह कि मूक नहीं हैं ऐसेही तिन सब पदातियों के चलने से पृथ्वी कांपनेलगी ३५ इसकेअनन्तर हंसध्वज अपने वीरोंसे बोला कि शुभघोड़ाको पकड़लाओ ते सब ये वचनसुनके शीघ्र घोड़ा लेने के अर्थ समीप जातेभये जहां पूजित और चर्चित बहुत धूपोंसे धूपित वह हय विद्यमानथा और राजाहंसध्वज पद्मव्यूह से स्थिरहो पुत्र भाई आदिकोंके समेत भरत श्रेष्ठअर्जुन से युद्धमें उद्यत हुये सुधन्वा, सुरथ, सुमतिमन्त्री, तीव्र रथवाला वीरकेतु, महारथी शतधन्वा और सब राजपुत्र इनके सिवाय और राजाओं के युक्त हंसध्वज सुखपूर्वक युद्धकरने को अर्जुन के आगेगया तब दुन्दुभी, पटह मर्दल ३६। ४० तन्त्रकी, वेणु, शृङ्गी, तीव्रस्वर वाली मृदङ्ग, शृङ्ग भेदोंमें डिंडिम, पणव, आनक अर्थात् ढोल ढक्का, ढव भेरी, गोमुख, काहला, झर्झरा, जलजास्ताला, श्रेष्ठ मुरलिका आदि ये सब तिन वीरोंके समागम में बाजों के बजानेवालों में निपुण मनुष्य बजाते भये तिनके नाद करके पर्वत सागर सब चकितहुये अर्थात् विस्मितहो मारे नाद के उछलने लगे ४१। ४२ और कायर मनुष्यों के चित्तके हे भारत! दोखण्ड होजातेभये जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! तत्पश्चात् अर्जुन तहां श्रीकृष्ण के पुत्रसे ये वचन बोले हे कार्ष्णि! घोड़ाको ह-

सध्वज ने प्राप्त कर लियाहै तिसको छुड़ानेके अर्थ कौन बीर जावेगा सो कहो यह सुन प्रद्युम्न बोला कि आप और सहित पुत्र के महा मतिवाला बलवान् यौवनाश्व बीर अनुशाल्व, कृतवर्मा, सात्यकी, महातेज वाला वृषकेतु, पराक्रमी अनिरुद्ध, नीलध्वज जिसके जामाता अग्नि हैं जिसका बल जिसके देशमें देख आयेहो ४४। ४७ इनके सिवाय अन्य राजालोग और हम सब विशेष बलसे युक्त पराये देशमें प्राप्तहैं और तुम सबके नाथ हो इससमयमें सबके आगे हमको करो फिर प्रद्युम्न बोले हे महाभाग! मैं यह कहताहूँ कि क्या आप श्री कृष्णचन्द्र का कहाहुआ भूलगये कि सर्वस्व महात्मा पाण्डवों का आख्यानाम चरित मेरे हाथमें दिया है सो पिताका दियाहुआ रणचरित्र सबलमें क्या विनाशकरने को समर्थ नहीं हूँ किन्तु महात्मा भीमसेन और युधिष्ठिरके देखतेही दियाथा हे पार्थ! आज रणमें मेरे भुजोंका बलदेखो ४८। ५१ और हसध्वज,सुधन्वा,सुरथ, सुमति तैसेही और सबोंको तीक्ष्णबाणों से अपने बलकरके संतुष्ट करतेहुये पतितकरूँगा। ५२ और ये जो बरबीररण में विद्यमान हैं ते अपनी स्त्रियोंमे रसिक हैं जैमिनिजी कहते हैं कि प्रद्युम्नके ये बचनसुन उदारबुद्धी वृषकेतु तिन दोनोंको नमस्कारकर बोला कि तुम्हारे योग्य ये बचन नहीं हैं यह कितनी सैन्य है तुम दोनों तो प्रलय और उत्पत्तिके करनेमें समर्थ हो जो मुखके फूँकेसे रुई के समान उड़जावे तिसके अर्थ प्रज्वलित बड़वानल

कौनलावेगा ५३। ५५ जो नेत्रोंकी पलकों के प्रहार से मशकहना जाता है तो कौन महात्मा उसके मारने हेतु अन्य उपाय देखेगा ५६ और जो थोड़ेही जलके वर्षने से धूलशान्त होजाती है तो तिसके नाशकरने को क्रोध करके वरुण क्यों वर्षा करेंगे ५७ तैसेही जो मैं कहता हूँ इसमें मेरी मतिहै कि आप जो आज्ञादेंगे तोमें क्या घोड़ा न लेआऊगा ५८ जैसे संसारी जीव अनन्त भगवान् के चरण सेवक यमदूतों करके बांधे हुये तिन को हरिकिंकर उनसे छीनलेते हैं ५९ हे पार्थ ! देखो मैं एक संग्राममें जाताहूं जैमिनिजी कहतेहैं कि हे राजन् ! पाडवोंकरके निवारित कर्ण पुत्र जाता भया ६० आगे हंसध्वजकी सैन्य प्रतिजाय महातेज से युक्त शङ्खध्वनि करता भया और सुन्दर पताकाओं के युक्त विचित्ररथ और तीतरकी प्रभावाले तीव्र घोड़ो से जुताहुआ गर्जने लगा तदनन्तर धर्मात्मा वृषकेतु सारथी से बोला कि हे सूतदारुण ! पद्मव्यूहप्रति हमारा रथले चलो यह सुन सारथीने उसी क्षणमें वायुके समान वेगवाले रणमें चतुर घोड़े हांकदिये तब वृषकेतुको आते देख सुधन्वा ये वचन बोला ६१। ६३ कि हमारे पद्मव्यूहको नहीं देखता हुआ लीलापूर्वक जिसके ध्वजामें सुन्दरवृष देख पड़ता है सो अर्जुन नहीं है एक ओर कोई वीर बलकरके सहित आता है क्या हम अग्निकणके इमीकीर्ण करके राजा भस्मकिये जायँगे अर्थात् क्या यही पद्मव्यूह विदारण करेगा इस समयमें हम सबको प्राप्त देखभी इन सबकी निन्दा करने

सध्वज ने प्राप्त कर लियाहै तिसको छुड़ानेके अर्थ कौन वीर जावेगा सो कहो यह सुन प्रद्युम्न बोला कि आप और सहित पुत्र के महा मतिवाला बलवान् यौवनाश्व वीर अनुशाल्व, कृतवर्मा, सात्यकी, महातेज वाला वृषकेतु, पराक्रमी अनिरुद्ध, नीलध्वज जिसके जामाता अग्नि हैं जिसका बल जिसके देशमें देख आयेहो ४४। ४७ इनके सिवाय अन्य राजालोग और हम सब विशेष बलसे युक्त पराये देशमें प्राप्तहैं और तुम सबके नाथ हो इससमयमें सबके आगे हमको करो फिर प्रद्युम्न बोले हे महाभाग! मैं यह कहताहूँ कि क्या आप श्रीकृष्णचन्द्र का कहाहुआ भूलगये कि सर्वस्व महात्मा पाण्डवों का आख्यानाम चरित मेरे हाथमें दिया है सो पिताका दियाहुआ रणचरित्र सबलमें क्या विनाशकरने को समर्थ नहीं हूँ किन्तु महात्मा भीमसेन और युधिष्ठिरके देखतेही दियाथा हे पार्थ! आज रणमें मेरे भुजोका बलदेखो ४८।५१ और हंसध्वज,सुधन्वा,सुरथ, सुमति तैसेही और सबोंको तीक्ष्णबाणों से अपने बलकरके संतुष्ट करतेहुये पतितकरूँगा ५२ और ये जो बरवीररण में विद्यमान हैं ते अपनी स्त्रियोंमे रसिक हैं जैमिनिजी कहते हैं कि प्रद्युम्नके ये वचनसुन उदारबुद्धी वृषकेतु तिन दोनोंको नमस्कारकर बोला कि तुम्हारे योग्य ये वचन नहीं हैं यह कितनी सैन्य है तुम दोनों तो प्रलय और उत्पत्तिके करनेमें समर्थ हो जो मुखके फूँकेसे रुई के समान उड़जावे तिसके अर्थ प्रज्वलित बड़वानल

कौनत्वावेगा ५३।५५ जो नेत्रोंकी पलकों के प्रहार से मशकहना जाता है तो कौन महात्मा उसके मारने हेतु अन्य उपाय देखेगा ५६ और जो थोड़ेही जलके वर्षने से धूलशान्त होजाती है तो तिसके नाशकरने को क्रोध करके वरुण क्यो वर्षा करेंगे ५७ तैसेही जो मैं कहता हूँ इसमें मेरी मतिहै कि आप जो आज्ञादेगे तोमें क्या घोड़ा न लेआऊगा ५८ जैसे ससारी जीव अनन्त भगवान् के चरण सेवक यमदूतों करके बाधे हुये तिन को हरिकिंकर उनसे छीनलेते हैं ५९ हे पार्थ! देखो मै एक सग्राममें जाताहू जैमिनिजी कहतेहैं कि हे राजन्! पाडवोंकरके निवारित कर्ण पुत्र जाता भया ६० आगे हसध्वजकी सैन्य प्रतिजाय महातेज से युक्त शङ्खध्वनि करता भया और सुन्दर पताकाओं के युक्त विचित्ररथ और तीतरकी प्रभावाले तीव्र घोड़ो से जुताहुआ गर्जने लगा तदनन्तर धर्मात्मा वृषकेतु सारथी से बोला कि हे सूतदारुण! पद्मव्यूहप्रति हमारा रथले चलो यह सुन सारथीने उसी क्षणमे वायु के समान वेगवाले रणमे चतुर घोड़े हाकदिये तब वृषकेतुको आते देख सुधन्वा ये वचन बोला ६१।६३ कि हमारे पद्मव्यूहको नहीं देखता हुआ लीलापूर्वक जिसके ध्वजामें सुन्दरवृष देख पड़ता है सो अर्जुन नहीं है एक और कोई वीर बलकरके सहित आता है क्या इस अग्निकणके इसीकीर्णकरके राजा भस्मकिये जायेंगे अर्थात् क्या यही पद्मव्यूह विदारण करेगा इस समयमें हम सबको प्राप्त देखभी इन सबकी निन्दा करने

हुये यह अकेला प्राप्तहुआ सो मैं अब इस रणविशारद बीरको देखताहू ६४। ६६ हे सूत! तुम्हारा कल्याण हो मेरा रथ इसबीरके सम्मुखले चलो सो सूत रथिनमें श्रेष्ठ सुधन्याका रथ सन्मुख प्राप्त करता भया तहा युद्धमें तीव्र पराक्रम वाले दोनों वीर स्थित हुये तब सुधन्वा बृष-केतुसे आनन्दपूर्वक हँसताहुआ पूंछनेलगा ६७।६८ कि हे सुकृत! तुम कौनहो किसके पुत्रहो तुम्हारा क्या नामहै यह सुन वृषकेतु बोला कि जिसके भेदन करने में अर्थात् मारने में तुम उद्यतहो सोतो मेरा पितामह है और पुत्रों में और पुत्र दानियोंका सुमेर अर्थात् शिरोमणि बीरता में नित्यही धीर कर्ण सोई मेरा पिता कश्यपके कुल में उत्पन्न है और वृषकेतु मेरा नाम है तब वृषकेतु के ये वचनसुन सुधन्वा बोला मैं हंसध्वजका पुत्रहूं और शु भकारी सुधन्वा मेरा नाम है और मेरे पूर्ववंश के करने वाले मधुछन्दा नाम ऋषि हैं अब मेरेपुरमें स्थिरहोकर मेरा तुम पराक्रम देखो जैसे पूर्वज सूर्यनारायण तिमिर अर्थात् अन्धकारको नाश करदेते हैं तैसेही मैं शत्रु के बलको युद्धमें निवारण करताहू ६९। ७२ और जो अपने कुलका वर्णन करते हैं वे पराक्रमसेहीन मन्दात्मा हैं यह सुन कर्णात्मज बोला इस समयमें शायकों करके अपना बल मैं तुमको देखाता हूं ये मेरे तीक्ष्ण अर्थात् पैनी धारवाले तेजस्वी बाण संग्राम विषे तुम्हारी सैन्य में सहसा युक्त गमन करेंगे और जो वचन हमने कहे हैं सो सब झूठ नहीं होंगे ७४। ७५

इतनीकथा सुनाय जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! यह कह वृषकेतु ने अरिसैन्य प्रति महावाणों की वर्षा कर सुधन्वा को आच्छादित करके अर्थात् वाणों से छायकै सिंहनाद की ७६ और महात्मा वृषकेतु के तीव्र वाणोंने हाथी घोड़े पदाती रथादिकोंके शरीरों को भेदनकर जीवमे हीन करदेते गये और रथों का यूथप सुधन्वा सब ओर से वाणोंकरके वेधित होजाता भया हे नराधिप! ऐसा वाणों से छायागया कि अपनी सेन्य को भी न देखनेलगा ७७। ७८ तब वृषकेतु ने हँसते हुये फिर पाच वाणों करके सुधन्वा के हय वेधितकर शीघ्रतापूर्वक सारथी और महाध्वजको भी युद्ध विषे छेदन करदिया फिर तिसके देखतेही देखते सब सैन्यको आच्छादित कर सर्पाकार महातीक्ष्ण वाणों से पृथ्वी में पतित किया ७६। ८० ऐसेही कर्णपुत्रने क्रोधितहोकर छत्रचामर नानाप्रकारके ध्वजा और वाजा वजाने वाले इत्यादि इन सबको युद्धमें छेदन किया ८१ जिन महावीरों के शुण्डादण्ड भूपणों करके युक्त अस्त्रों के समेत भुजा और मारे क्रोधके ओठोंको चवातेहुये शिर अपनी सेना के भिन्नदेख अर्थात् पृथ्वी में गिरेदेख सुधन्वा अपर रथमें सवारहोकर तिस कर्णात्मज को वड़ापराक्रमी अपने हृदयमें मानताभया ८२। ८३ तूलराशिके समान घोड़ा रथ सारथी महाध्वजा और पाँचवाणों से मारता भया ८४ और उसी वृषकेतुका सहित तूणीर के धनुष भी पाँचही वाणो से छेदनकिया तो कर्णात्मज केसवगात

उन बाणोंके लगनेसे बेधितहुये तब घूमके जहां वहसेन
थी तहा गिरताभया ८५ हे राजन्! कर्णपुत्रका समरमेंया
अद्भुतसा चरित्र होताभया तदनन्तर धर्म्मात्मा मूर्च्छा
त्याग जो अरिको देखा तो घोरसैन्य के मध्य अग्रभाग
स्थितहै और अपनेको सैन्यकेमध्यमें बहुतोंकरके घेरित
रथसे हीनदेखक्रोधकरके अपना दृढप्रत्यञ्चावाला धनु
लेकर हेमभूषित बाण छोड़नेलगा ८६ । ८८ औ
सर्वाङ्ग तो शायकों करके छेदित हैं तिनको छिन्न न मान
करके अर्थात् उनका कुछ विस्मय न करके धनुष चढ़ाय
तिस हंसध्वजकी सैन्यको जीवसे हीन करताभया तद
नन्तर अपरसैन्य ने कर्णनन्दन को घेरके अर्थात् आ
च्छादित करके शक्ति, तोमर, भाला, भिन्दिपाल ८९।
९० मुद्गर घोर असिनाम खड्ग इत्यादि संग्राम में चारों
ओरसे मारनेलगे और नाराचकरपत्र अर्थात् विशेषास्त्र
भुशुण्डी अर्थात् बन्दूक और लोहमुखवाले अस्त्र और
गदा परिघ पट्टिश त्रिशूल आदि नानाप्रकारके अस्त्रशस्त्र
अपने देहमें प्रहारदेख दुःखनाशन वासुदेव भगवान्
के सहस्रनामोंका जप करताभया तदनन्तर सूत महा
ध्वजावाला और रथ तैयारकरके ९१ । ९३ कर्णात्मज
के निकट रणमण्डल में ले जाताभया तिस रथमें वेगके
साथ फिर प्रभुकहे समर्थ वृषकेतु आरूढ होकर ९४
हँसते हुये तीक्ष्ण बाणों से सुधन्वा की सैन्य को चारों
ओरसे बाणवृष्टिकरके पीड़ित करताभया फिर सुधन्वा
ने पाचबाण कर्णपुत्रके हृदयमें मारे तो फिर महाबली

वृषकेतु मूर्च्छा को प्राप्तहोजाता भया ९५। ९६ तब महाबली वृषकेतुको सारथी मूर्च्छित देख शीघ्र रणमध्य से उठाय लेजाताभया तबतक कार्ष्णि प्रद्युम्न आकर प्राप्तहुये और कहा कि तिष्ठ तिष्ठेति खड़े हो खड़े हो यह कहतेहुये सुधन्वाको घोर पाचवाणों से संग्राम में पीड़ितकर ९७। ९८ सुधन्वा के सारथी को रोष पूर्वक यमसदन में प्राप्त किया अर्थात् वधकरडाला और सब घोड़ोंके क्रोधमे मूर्च्छित बीस २ खण्ड कर डाले और रथके चारो घोड़े तिनको तीक्ष्ण आठबाणों से दो खण्ड करदिये और तीनबाणों से धनुषकाटडाला ९९। १०० तथापि प्रद्युम्नने सुधन्वा को त्रिखण्ड कर चित्रकी भाति करदिया तब सुधन्वा ने भी जाना कि ये प्रद्युम्न रणमें निपुणहैं १ इनको लीलापूर्वक युद्ध में अपना पुरुषार्थ देखनाचाहिये तब अद्भुत सा महारोष करके आठबाणों से घोड़े और छ बाणों से रथको दो खण्ड करदिया और एकबाण से प्रद्युम्न के धनुष के पाचटुकड़े किये उसी से सारथी को भी छेदनकर तीन बाणों से प्रद्युम्नको वेधितकर सिंहनाद करता भया २। ४ वे दोनों महारण में विशारद कहे चतुर बीर कभी पृथ्वी पर कभी गगन में उर्ध्वगामी देवताओं के समान युद्ध करते हुये कभी मूर्च्छित कभी बाणों करके पतित और पीड़ित रुधिर बहता हुआ ऐसी दशा में सुधन्वा क्रोधित हो उठके दूसरे रथ में सवार हो अर्जुन के वीरोंको हजारों बाणों करके पीड़ित क-

रताभया और कृतबर्मा के निकट आय नौ बाण सुध
मारताभया ५।६ तब कृतबर्माने तिनबाणों को आतेदे
अपने बाणोंसे काटकर पीयमान पांच बाण सुधन्वा
वक्षस्स्थल में मारे तदनन्तर हे राजन्! उसी क्षणमें
बाणों करके कृतवर्मा को बिरथकर चारों घोड़ेमार स
रथी भी पतित किया, ७।८ तब बाणों से मर्दित वी
रणछोड़ भाग गया तब अनुशाल्व वीर सुधन्वा को मह
रणमें देख बुलावताभया और अपना सहित शरों
धनुष ग्रहण कर बोला हे सुधन्वन्! तुम करके बहुत वी
युद्ध में संतुष्ट कियेगये सो इस महा कौतुक में अपन
बल हमको भी दिखाओ अर्थात् सबके देखते २ मेर
एक बाण तो सहो १०। १२ यह कह बड़वानलके स
मान दीप्तिवाला महादारुण बाण अनुशाल्व के हाथ से
छूटते देख उसके शान्तकरनेको बाणछोड़ने को न समर्थ
हुआ तबतक वह बाण सुधन्वा के हृदय में प्रवेश कर
गया तब सुधन्वा तो मूर्च्छित होगया और अनुशाल्व
तीक्ष्ण बाणों से सेनामार फिर महाबाहु सुधन्वा के हृद
नौ बाण मारकरके १३। १५ शीघ्रता पूर्वक बिरथकर
पृथ्वी में गिराय दैत्यराज वेगयुक्त गर्जताभया १६ तत्प
श्चात् मूर्च्छात्याग रथियों में श्रेष्ठ सुधन्वा शीघ्र उठकर
एक महादारुण बाण संग्राम में शाल्वानुज अनुशाल्व
के मारताभया १७ तिस बाण से विदीर्णित अर्थात् पी
ड़ित अनुशाल्व पृथ्वी में पतितहुये तब सुधन्वा ने पार्थ
की सेनाको नानाप्रकार के बाणों से भेदन किया और

हाथी सैन्य सबों को छेदनकर पृथ्वी में डालदिया और हे राजन्! मास के चहलायुक्त रुधिर की नदी बहनेलगी १८। १९ और उसी महासंग्राम में भिन्न गजाननों में कहीं घोड़ों के शिर सैकड़ों हजारों देख पड़ते हैं २० और हाथी घोड़े पदातियो के सहित बाणों से छिन्नभिन्न सुधन्वा करके पतित आगेको नहीं चलते २१ हाथी घोड़े मनुष्य आदिकों का रुधिर मिल जाता भया जिस संग्राम में छिन्न भुजोंकरके वीर रुधिर करके डूबेहुये नेहि क्षणमें बूड़ते उछलते किसी के हाथ गगनको जाते थे इसप्रकार हे राजन्! पाण्डवों का बल उस समय खण्डित अर्थात् विमुख होगया १२२। १२३॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांसुधन्वनोयुद्धवर्णनो नामाष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी कहते हैं कि हे नराधिप! तब सुधन्वा ने युद्धमें समर्थ सात्यकी को देख तिससमय सत्तरबाणोंसे भेदित किया १ तब सात्यकी ने पचहत्तरबाण छोड़ रथ, घोड़े, सारथी, ध्वजा, छत्र, त्रिवेणु, रथकी शय्या ये सब सुधन्वा के फरसाको धारण करके छेदन किया २ तब सुधन्वाने क्रोधित होकर हँसतेहुये सात्यकी को विरथ करदिया फिर दोनों वीर रथों में आरूढ़ होकर सहस्रों बाण छोड़ आपस को छाय देनेभये ३। ४ और दोनों वीर बाणोंकरके विदीर्णित रुधिर बहताहुआ हे राजन्! बसन्तऋतुमें पुष्पित किंशुक के समान शोभित होते थे

फिर सात्यकी के पीड़ित करनेवाली शक्ति क्रोध करके सुधन्वा ने छोड़ी जिससे सात्यकी मोहितहो गिरतामया तो सेनाध्यक्षों ने देख महा हाहाकार किया तब सब सैन्य को भययुक्त और व्याकुलदेख ५।७ तत्पश्चात् महाबाहु अर्जुन सुधन्वा के समीप जाय कहा तिष्ठ तिष्ठ खड़ाहो खड़ाहो कहां जाताहै ८ हे महाबली! तूने मेरे बहुत बीरोंको युद्धमें जीताहै हे वीर! तुझमें क्या महात्मा शक्रके समान अधिक बलहै ९ हमकरके औरभी बहुत संग्राम द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, महात्माकर्ण इनकेसाथ कियेगये हैं १० और कालरूपी दैत्यों से तथा शिवजीके सहित इन सबसे मैंने युद्ध कियाहै ऐसा विस्मय मुझको कभी नहींहुआ जैसा तुम्हारे देखनेसे प्राप्तहुआ ११ तब सुधन्वा बोला कि हे पार्थ! जिन सग्रामों को तुमने जीता है तहां तुम्हारे हितकरनेवाले श्रीकृष्णजी सारथी विद्यमान थे १२ इस समर में तुम श्रीकृष्ण करके विहीन हो इसीसे तुमको विस्मय हुआ है यदि तुमने समर में श्रीकृष्ण को त्यागदिया या हरिने तुमको छोड़ा है १३ हे महाबुद्धे! युद्ध में तुमने श्रीकृष्ण को छोड़दिया तो अब मेरेसमान हे पार्थ! तुम कैसे युद्ध करनेको समर्थ होगे १४ और तुम्हारी यज्ञका तुरङ्ग बांध करके नृप श्रेष्ठ हंसध्वज यथोचित अश्वमेध यज्ञ करेंगे १५ और हे अर्जुन! आज सग्राम में मेरा पराक्रम देखो जो सहित कृष्ण के होते तौभी समर में विजयकरता अब क्या १६ जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! तदनन्तर

अर्जुन ने क्रोधसे पूरित होकर सौ बाण प्रहारकिये तिनको सुधन्वा ने हँसतेहुये अपने शरों से खण्डन कर कुन्तीसुतको दशबाणों से ताड़ित किया और फिर बि-हँसतेहुये दशसे सौ सौसे हजार२ से लाख लाखसे किरोड़ यहिप्रकार बाणों से रणमें छाय देतामया तब धनं-जय ने क्रोधकरके तिन बाणों को काटकर तिलवत् कर दिया १७। १९ और ओष्ठप्रान्तों को चबाते हुये मारे क्रोधके आग्नेय अस्त्र छोड़ा हे मारिप ! तब सुधन्वा से क्रोधितहोकर बाणों की २० और वृष्टि की जिससे देवता लोग आकाशको न जाते पार्थके बाणों से वेधित बाणा-न्धकार में मानो तीनोलोक पतित हुआ चाहते हैं २१ तब अपने बलसे दग्धकरते पावकास्त्र से अपनी सैन्य को ज्वालाओं से व्याकुल देख सुधन्वा अग्निनिवारण के हेतु वारुणास्त्र छोड़ताभया उस बाणको धनुप से छूटतेही महावृष्टि होतीभई २२।२३ निदान जलसे सब पृथ्वी व्याप्तहोगई और आकाश में बिजुली स्थित होजातीभई इसप्रकार पाण्डवोंकी सेन्यको जलडुबातेहुये ऊपर से शिलाओं की वृष्टि करतामया २४ और उस समय पृथ्वीमें चर्मोंके मढेहुये सबबाजा नष्ट होगये और वीरोंके मृदुल सुवर्ण चम्पक के समान दीप्तिवाले नाना-प्रकारके वस्त्र अङ्गमें नष्ट देखेगये और चमर चामर छत्र गजमुक्ता आदि ये सब जलकी वृष्टिकरके तिस समरमें शोभासे हीनहोजातेभये और सबबाण पक्षोंके विहीन हो-गये निदान रणमें औरको भेदन नहीं करते किन्तु चलाने

के लायकही किसीप्रकार से मारेजलके न रहे २५।२८ इस महावृष्टि में अपना पराया जन नहीं देखपड़ताथा तदनन्तर महाबाहु अर्जुन ने वायुका अस्त्र छोड़ा तब तो वायुवेग करके सब जल क्षीण होगया और ध्वजा पताका सब मारेवायुवेगसे गिरनेलगे औरहाथी, घोड़ा, पदाती, खच्चर ये सब उड़नेलगे २९।३० तदनन्तर महावीर सुधन्वा ने अर्जुनका धनुष अर्द्धचन्द्र बाणकरके प्रत्यञ्चा से छेदनकर तीन बाणोंसे सारथीको गिरादिया तब शरहीन रथहीन पाण्डववीर अर्जुन अत्यन्त क्रोध करतेभये तब सुधन्वा बोला आपके सारथी विद्यमान नहीं हैं ३१।३२इतने ही बाणोंके छेदनमे हे पार्थ! तुम्हारा पराक्रम कहां चलागया और सर्वगम्य सारथीको छोड़ प्राकृत अर्थात् नया बनाहुआ सारथी तुमने किया ३३ इसी से मेरे आगे पतित हुये अब उन्हीं श्रीकृष्ण के चरित्रोंका स्मरणकरो जैमिनिजी कहतेहैं कि तब अर्जुन ने महासंग्राम में घोड़ों की बाग अपने दहिने हाथ से पकड़ली और बायेंहाथसे धनुष चढाय फिर युद्धकरनेको आरूढ़ हो स्मरणकिया उसी समय रथपर श्रीकृष्ण चन्द्र देखपड़े ३४।३५ और कहा कि हे अर्जुन! घोड़ों की बाग छोड़ो ये वचन हरिभगवान् ने कहे तब अर्जुन ने साक्षात् भगवानको आगे देख

हे गोविन्द! तुमको मैंने पाण्डवों के अर्थ आये हुये देखा ३८ और हे केशव! तुम्हारा सर्वगमन भी हमको ज्ञातहै और अब हे अर्जुन! तुम्हारे सारथी श्रीहरि प्राप्तहैं मेरी जयके अर्थ प्रतिज्ञा करो ३९ और मैं अपने पराक्रम करके संग्राम में सारे जगत् को सतुष्ट करताहूँ तब अर्जुन ने प्रतिज्ञाकी कि तीन बाणों करके तुम्हारा रमणीय मस्तक गिराऊँगा ४० यदि जो न पतित करू तो मेरे पूर्वज अर्थात पुरिखाजन पुण्यहीन होकर नरक को प्राप्तहोवें सत्य सत्य यह मै मिथ्या नहीं कहता ४१ हे विभो! अब अपनी आत्मा का पालन करते हुये अपनी प्रतिज्ञा इस समय मे बताओ तब सुधन्वा बोला कि तुम्हारे आगे तीनो बाणों को तहा श्रीकृष्ण के निकट खण्डन करूँगा ४२ जो तीनखण्ड न करूँ तो घोर गतिको प्राप्तहोऊं यहिप्रकार ऐसे वचन कहतेहुये सौ बाणों से मधुसूदन श्रीकृष्ण का हृदय समर में बली सुधन्वा हर्षपूर्वक भेदन करताभया और हे मारिष! सहित कृष्णके अर्जुनका रथ बाणोंमे पाट दिया ४३।४४ तबतो सहित घोड़ों के अर्जुन शीघ्रतापूर्वक कुम्हार के चक्रकी नाई घूमने लगे और अर्जुन के भी दशबाण प्रहारकरके ४५ अर्जुन का रथ पृथ्वीपर चारसौ धनुष प्रमाण उसी क्षणमें पश्चिमभाग को हंसध्वज के पुत्र ने हटादिया ४६ तब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन! सुधन्वा वीर का पराक्रम देखो तुमने इसको तीन बाणों करके मारनेको व्यर्थही प्रतिज्ञाकी है ४७ ऐसा साहस बिना

हमारे मन्त्रलिये तुमने फिर करडाला जयद्रथ के वध में जो कियागयाथा वे वचन तुमको क्या भूलगये तुम हित अहित नहीं देखते हो रोषयुक्त रथसे उतर मुझ को अस्त्र फिर धारणकरना योग्य न था तौ भी भीष्मजी के आगे अस्त्र ग्रहणकिया ४८।४९ देखो आज सुधन्वाने अपने बाणोंकरके पृथ्वीपर चारसौ धनषमात्र रथ हटा दिया सो सुधन्वा एकपत्नीव्रतयुक्त तीव्र देखाजाता है वह व्रत करनेको तुम और मैं कोई शक्तिमान् नहीं हूँ इसयुद्ध में हमको महाकष्ट इस समयमें प्राप्तहुआहै ५०।५१ यह सुन अर्जुन बोले हे गोविन्द ! इसमे कुछ संशय नहीं मैं इन्हीं तीनों बाणोंकरके पतितकरूँगा और यदि तुम्हारा आगमन न होता तब तो महाकष्टहोता तदनन्तर अर्जुन ने विषम बाणोंकरके दशोंदिशा पूरितकरदीं ५२।५३ तब महाक्रोधसे ताम्रवर्ण के समान देदीप्यमान सुधन्वा अपने धनुषमें बाण चढाताहुआ केशवभगवान् से बोला हे हरे ! जैसे तुमने गिरिगोवर्द्धन को गौवोंके अर्थ धारण करके सबकीरक्षाकी तैसेही अब इनपाण्डवकी भी पालना करो ५४ तदनन्तर महाबाहु महारोष करके युक्त अर्जुन ने काल अग्निके समान दीप्तिवाला प्रतापीबाण धनुष में लगाया सो देख श्रीकृष्णने अपनीपुण्य बाण की फोकमें जोड़दी जो पुण्य पूर्व में गोवर्द्धनधार गौवोंको उद्धार प्राप्तकी थी ५५।५६ उसीकरके तेहिक्षणमें वह बाण सन्नद्ध किया और आकाशमें युद्ध देखनेकी आकांक्षा करके देवताजन प्राप्त होतेभये ५७ और दिव्य वर्षा

करके भूषित विमानों में आरूढ अप्सराभी कौतुकदेखने के अर्थ प्राप्तहुई ५८ तब सुधन्वा ने संग्राममें पाण्डवो के हितकरनेवाले श्रीकृष्ण से कहा हे बलवान् ! मैंने तुम को जाना तुम्हारे इसबाणको पतितकरताहूँ यदि जो बहुत पुण्योंके युक्त तुम्हारा बाणपतन न करूँ तो मेरासुकृत वृथा होजावे अर्थात् उसको राक्षस चोर भोगकरें ५९। ६० और हे गोविन्द ! मै तुमको जानताहूँ अब मेरी की हुई पुण्यको देखो अर्जुन के बाणको अर्द्धचन्द्र बाणछोड़ शीघ्रतापूर्वक खण्डनकर तिसबाणको गिरादिया तब सब देवता विस्मित हुये और त्रैलोक्य भी विस्मयको प्राप्त हुआ ६१। ६२ तब सुधन्वाके देखते २ दूसराबाण अर्जुनने शीघ्र सन्धानकर फिर जब धनुषमें लगाया तब श्रीकृष्ण तिस बाणमे बहुत पुण्य पृथ्वीदान करने की पाण्डवों के रक्षणार्थ उसमें सन्नद्ध करतेभये ६३। ६४ तब सुधन्वा बोला हे गोविन्द ! यदि तुमने अपनापुण्य अर्जुनार्थ अर्पणकिया तो इस अर्जुनके बाणको तुम्हारे देखतेहुये पतन करताहूँ हे महाबल धनञ्जय ! आजमेरी प्रतिज्ञा सुनो जो बाणके दो खण्ड न करूँ तो अरुन्धती के समेत वशिष्ठके मारनेका मुझको पातकलगै और तुम अपने पराक्रम करके बाणकी रक्षाकरो हे वीरपार्थ ! तुम धन्य हौ जिसके निमित्त श्रीकृष्ण ने मेरे मारने को अपना महापुण्य दिया है तदनन्तर सूर्यमण्डल के समान दीप्तिवाला सो बाण अर्जुन करके कृपण मनुष्य के धनकी भांति रक्षित क्रोधपूर्वक छोड़ागया तब

देवता आकाश में और मनुष्य पृथ्वीमें ६५।६६ कहने लगे कि क्याहोगा इनदोनों बीरों में कौन जीतकर क्या करे फिर इतने मे वाणछूटकर अग्निकी ज्वाला भरता हुआ आकाश को प्राप्तहोगया क्या यह अर्जुनके हाथसे छूटाहुआ वाण प्रलय करदेगा तदनन्तर महावल बीर बड़े पराक्रमी सुधन्वाने ७०।७१ तिस दूसरे वाणको भी शीघ्रतापूर्वक बीच से काटदिया और अपनी सैन्य और पिताके आनन्दित करने को अपना शङ्ख बजाया ७२ हे विशापते! तिस वाणके क्षीणहोतेही वसुधा देवी कापनेलगी तब अर्जुन से श्रीकृष्णने कहा कि अब वाण प्रहार न करो और तुम अपना देवदत्तनाम शङ्खबजाओ मैं भी पाञ्चजन्य धारणकरता हूं हे बीर! तुमने हमारे सहित इस बीरका पराक्रम देखा ७३।७४ ऐसे कीर्त्तियुक्त मनुष्यों का जीवन धन्यहै जे अपने मुखसे कहेहुये प्रण को सत्य करके स्वर्ग की आकांक्षा करते हैं ७५ देखो मैंने अपनी पुरातनपुण्य जिसके नाशको तुमको दी तिसपर भी तिस धर्मात्माका पतन न हुआ ७६ ये वचन कह श्रीकृष्णजीने अपना पाचजन्य नाम शङ्ख और महा-बल अर्जुन ने देवदत्तनाम शङ्खबजाय पूर्णकर दिया फिर कमललोचन श्रीकृष्ण बोले हे पार्थ! अब मेरी आज्ञासे हाथमें शीघ्र वाणधारणकरो ७७।७८ जैमिनिजी कहतेहैं कि हे राजन्! यह सुन महात्मा अर्जुन ने हाथमें वाणधारण किया तिसबाणको वासुदेव भगवान् ने देवताओं को सयुक्त करके दृढकिया ७९ अर्थात् तिसवाण के पश्चिम

भाग में ब्रह्माजीको स्थापित कर मध्य में कालको और वाण के फोंकमें आपही जनार्दनजी प्रवेश करतेभये ८० और इसके सिवाय तिसीवाण विषे जो रामावतार की की हुई पुण्य सोभी अर्पणकी जब ऐसे गरुये वाण को अर्जुन ने छोड़ा तो सब हाहाकार करते भये ८१ हे राजन्। तिसवाण को देख सुधन्वा वचन बोला हे गोविन्द। मैंने तुम्हारा किया हुआ जाना कि अर्जुन के अर्थ मेरे वधकरने को सहसा युक्त विश्वरूप तुम वाण में स्थित हुये अब अर्जुनकी प्रतिज्ञा का स्मरण करो ८२ यह सुन अर्जुन ने कहा हे वीर। जो इस वाण करके तुम्हारा मुकुट समेत मस्तक मैं आज न पतित करू तो विष्णु और शिवजी के भेद करनेवाले मनुष्यों का समस्त पातक मुझको प्राप्तहोवे ८३ यह सुन सुधन्वा बोला हे महावहु। सुनो काशी में जाय सदाशिवजी की रात्रि की पूजा चरणों करके हरण करनेवालों का पातक और मणिकर्णिका तीर्थ स्नान करनेवालों के मारने का पातक जो मैं वाण भेदन न करू तो वही मुझको प्राप्त होवे ८४ तदनन्तर अर्जुन करके दीप्तिवान् अग्नि की ज्वाला झरते हुये वाण छोड़ागया और तिसके शब्द करके आकाश में अप्सरागण व देवता व मनुष्य सब भयभीत हुये ८५ और सब प्रकार के वाजा उस वाण के घोर शब्द से नष्ट होगये और वह वाण पृथ्वी पर घूमनेलगा तिसको देख सुधन्वा विमोहित होगया और क्रोधयुक्त अर्जुन से बोला तुम्हारे निमित्त महासंग्राम

में शिवादि सब देवता इस बाण की रक्षा करते हैं ८६ ८७ हे धनंजय ! इसको भी खण्डन करताहू इसमें सन्देह नहीं यदि न करूंगा तो राजा हंसध्वज और मेरी माताको लज्जा प्राप्तहोगी और मेरी बिशालाक्षी भार्या प्रभावती क्या कहेगी हे पार्थ के सारथी नृसिंह ! तुमदेखो और हे जनार्दन ! इससमय इनको छोड़ चले न जाना हे गोविन्द ! तुम युद्धमें खड़ेहो हे पार्थ ! तुम अपना पराक्रम करो ८८। ९० ये वचन कह श्रीकृष्णचन्द्र का ध्यान करते हुये तिसबाणको भी सुधन्वा बीचसे आधा काटि डालता भया तब महाघोर बाण को नाश अर्थात् खण्डित देख सब हाहाकार करने लगे और रण मध्य में सुधन्वा अपने भुजों को ताड़ित करता भया अर्थात् ताल बजाने लगा और तिस बाणके नाश होनेसे चन्द्रमण्डल कम्पित होगया अर्थात् पहले चन्द्रमा सजल था अब तिसके तेजकरके निर्जल होगया ९१। ९३ हे राजन् ! बाणनाशको प्राप्तहोनेपर तब यह अद्भुतसाहुआ कि कटेहुये आधेबाण से दीप्तिवान् रम्यकुण्डलों करके युक्त तिसवीर सुधन्वा का शीश पराक्रमको निधनकरके खण्डन करता भया ९४॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांसुधन्ववधोनाम एकोनविंशोऽध्यायः १९॥

वीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! तिस महाबाहु सुधन्वा का शिर केशव राम नृसिंह आदि भगवान्को हर्षपूर्वक जपते हुये शीघ्र श्रीकृष्ण के चरण कमलों में प्राप्तहुआ १ और फिर समरके बीचमे तिसका कबन्ध महावेग से घूमने लगा तिसके घूमते हुये हाथी घोड़ा रथ जो हाथमे पड़जावे तिसको वेगसे पकड दलिमलि डालने लगा २ यहिप्रकार सुधन्वाके कबन्धने अर्जुनकी बहुत सैन्यमारी तबतो चरणोंमेंप्राप्त सुधन्वा का रम्य शिर तिसको भगवान् उठालेते भये ३ और वह कबन्ध दोनों हाथोंसे अपना भिन्न मुख देखने अर्थात् ढूँढ़ने लगा तब सुधन्वा के मुखसे तेज निकलकर केशव भगवान् के मुखमें प्रवेश करगया ४ तब सुधन्वा का सत्त्व श्रीकृष्णजी ने जाना कि और मनुष्य इसके समान नहीं है यह कहतेहुये भगवान् ने अपने हाथ से तिसके शिरको पकड़ रथ में डालदिया ५ रमणीय दीप्तिमान् कुण्डलों करके युक्त अपने पुत्र सुधन्वाका शिर हंसध्वज पतितदेख वहाजाय शिरको सन्मुख उठाय देखतेहुये ये वचन बोला हे तात! हे सुधन्वन्! क्याकिया क्यों नहीं बोलते ६।७ और हे सुव्रत! हे वत्स! मैं तुम्हारा पिता तिससे क्यारुक्षहोगये हापुत्र! मैंनेतुमको जलते हुये तेलके कराहमें डाला था इसीसे पुत्रस्नेहको तुमने त्यागदिया या दण्ड करके पीड़ितहो और तुमने तो

युद्धमें अपनी प्रतिज्ञा सफलकरके श्रीकृष्णको सन्तुष्ट किया और हे धैर्यवान्! तुमने प्रभावती के मनसिज कामदेव को निवारण किया अर्थात् धैर्यता पूर्वक चलतेहुये भी रतिदानदियो इतनी कथासुनाय जैमिनि जी कहते हैं कि हे राजन्! ऐसेवचन कहतेहुये हंसध्वज मोहसे विहँसताहुआ पुत्रकामुख चुम्बनकर मस्तक से मस्तक जोड़ रथमें स्थितहो फिर पुत्र शोक से पीड़ित राजा बोलताभया ८। ११ हे पुत्र! उठो और अपनेबल करके अर्जुनका घोड़ा पकड़ प्रमुख अर्थात् अग्रगामी प्रद्युम्नसे समतायुद्ध करो १२ और अपनी माता का कहाहुआ तुमने सत्यकिया और सुरथ आदिक तुम्हारे भाइयों ने तुम्हारे प्रतापको सुना और मैं जो तुम्हारा अर्थीहूँ तिससे क्यों नहीं बोलते या सत्यही चलेगये, पिताके ऐसे कहतेहुये सुनिकै सुरथ पुत्र ये वचन बोलता भया १३। १४ हे तात! पुत्रका समरमें मृतक शिर हाथमेंलेकर तुम युद्धविषे क्यों ऐसा रोदन करतेहो १५ पुत्रके ये वचन सुन हंसध्वज बोला कि रोदनका कारण एक प्राप्तहुआ कि पुत्रका शिर क्षीणहो श्रीकृष्णके चरण कमलोंमें प्राप्तहोकर श्रीकृष्ण करके सो शिर तिन चरणों से त्याग दियागया सो बड़े सुकृत से तो श्रीप्रभु के निकट प्राप्तहुआ और यह नहीं जानते कि किस घोर दुष्कृतसे उसका वियोगहुआ और तिसमहाघोरपातक से मेरे निकट आया १६। १८ और कमलस्वरूपी श्री कृष्णचन्द्रके चरणों मे भ्रमररूपी शिर क्षणमात्रभी न

स्थितरहा मेरे रोदन का कारण यहीहै १९ फिर श्रीकृष्ण जीने मेरे रथके ऊपर छोड़दिया अब जाज्वल्यकुण्डलों से युक्त अपने भाई का आया शिर देखो इस प्रकार महापुत्र का शिर श्रीकृष्णने रथमें छोड़दिया जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! तिसशीशको हंसध्वजने फिर श्रीकृष्ण के रथमें छोड़दिया २०। २१ तो श्रीकृष्ण ने तिसको लेकर आकाश के बीच में फेंकदिया तदनन्तर अपने पिताके दुःखनिवारणार्थ सुरथबोला २२ हे तात! आज श्रीकृष्ण का मेरेसहित युद्ध देखो और सेनाध्यक्षों के आगे सबके देखतेहुये मेरेमहाबल भाईको श्रीकृष्णजी ने जीतलिया है तिससे जो देवकीनदन मेरेआगे आज खड़े रहे तो रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके समेत तिनकोभी भेदन करूंगा ऐसे वचन कहतेहुये शीघ्रता पूर्वक रथमें आरूढ हो २३।२४ महासैन्यके युक्त अर्जुनसे युद्धकरने को समरमें जाय अपना शंखबजाय सिंहनाद करताभया २६ जैमिनिजी कहतेहैं कि हे जनमेजय! जिससुरथकी सिंहनादसे मानों रसातल फटगया तब सुरथ धनुषहाथ में सम्हार पार्थसे बोला हे पार्थ! हे महाबल! आज मेरे सहित समरमें खड़ेहो श्रीकृष्णचन्द्र भी सब प्रकारसे रक्षा करो २७। २८ मेरे भाई सुधन्वाको तुमने अपने पुण्य करके समरमें माराहै हे देवोंके देव! तुम बालकोंकी भांति कार्य्य करतेहो तुमको अपनी हानि भी नहीं देख पड़ती २९ हे कृष्ण! जैसे कोई मुक्ता देकर बेरलेवे तैसेही तुमने अपनी पुण्य अर्पण करके बेर के समान सुधन्वा

के प्राणलिये देखो तुमनें अपना मुक्ताफल देदिया ऐसे ही तुम किससे नहीं छलेगये किन्तु सभी से छलेगये हो ३०। ३१ मैं जानताहूं इसमें सन्देह नहीं तुम गोपालहो हा सुधन्वा कहा गया मेरा भाई देख भी नहीं पड़ता और आज पांडव परमहर्ष को प्राप्तहैं तदनन्तर तैसेही तिसको समरारूढ़ देखकर श्रीकृष्णचन्द्र पार्थसे ३२। ३३ बोले हे महाबल! अर्जुन तुम समर में इस के सन्मुख जाने योग्य नहीं हो यह सुकृती भाई के दुःख में सन्तप्त होरहा है और वीर इसके सन्मुख जाय इस सुरथमें युद्धकरें जो तुम जाओगे तो आज महा अनर्थ हो जायगा ३४। ३५ यह सुन अर्जुन बोले हे प्रभु! सहस्रों अशुभ अनर्थ तुम करके नष्ट किये जाते हैं इस सुरथके अल्प अनर्थ क्याकर सकेंगे ३६ तब अर्जुन के ये वचनसुन फिर श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे पार्थ! इसको समर में स्थिर देख पितामह ब्रह्माजी अत्यन्त चिन्ता करके द्वितीय सृष्टि रचने का प्रारम्भ करतेहैं हे अर्जुन! इसके बहुत बल है और तुम्हारे मेरे आगे थोड़ा है तुमको मेरे सम्मतसे कार्य करना योग्यहै ३७। ३८ और हे पांडवार्षभ महासंग्राममें उसके पतन करने को प्रद्युम्न आदि वीर विद्यमान हैं किन्तु उसके नाशकरने को भी समर्थ हैं ३६ और तुम्हारे अर्थ मैंने अपना सब सुकृत दिया तौ भी महाकष्टसे सुधन्वा पतित हुआथा हे पार्थ! इसके दुष्कृत तो थोड़ाही है और सब सुकृतसे भराहै४०इसीकी विजय पूर्वक सिद्धिहोगी इसमें सशयनहीं केवल सुकृत

ही इसके शरीर में विद्यमान है ४१ जेहि क्षणमें विद्यमान सुकृतमें पातक प्राप्तहोता है तभी व्याघ्र, चोर, और राजा, सर्प, अग्नि इनकी भय होती है ४२ और सुकृत करनेवालों को कहीं कुछ सन्देह नहींहै जैमिनिजी कहतेहैं कि हे राजन्! यह कह वासुदेव भगवान् रुक्मिणी सुत प्रद्युम्नको बुलाय बोले ४३ हे तात! बहुत वीरों से युक्त तुम रणमध्य में सुरथके पतित करने योग्य हो मैं अर्जुन को लिये जाताहूं ४४ श्रीकृष्णके ऐसे वचनसुन सबवीर समरमें युद्ध करने को आरूढ़ भये तब श्रीकृष्णजी ने अर्जुन का रथ संग्राम से प्रेरितकर तीन योजन पृथ्वी पर्य्यंत शीघ्रता पूर्वक खड़ा किया तत्पश्चात् औरोंसे युद्धहोनेलगा ४५। ४६ तहां भ्रातहन्ता सुरथ क्रोधकरके समरमें जाय तिन श्रीकृष्ण अर्जुनको न देखा ४७ तो प्रतापी सुरथ तिनसे रणमें बोला कि इस रण के आगन में सुधन्वा के मारने वाले नहीं देखपड़ते ४८ और इन बालकों के सन्मुख युद्ध करना मुझ को शोचनीयहै मेरे अपराधी तो वे दोनों श्रीकृष्ण अर्जुनही हैं इसमें संशय नहीं ४९ खैर पहिले इनको यहां निवारण करके पश्चात् उन महाबलों को भी पतित करूंगा वे मेरे आगे से पाताल या अन्तरिक्ष कहां चले गये ५० यह सब चिन्तना करते हुये सुरथ सेनाध्यक्षों से बोला कि सेन के मध्य में श्रीकृष्ण अर्जुन नहीं देख पड़ते कहां चले गये ५१ यह सुन सैनिक बोले हे वीर! प्राकृत कायर मनुष्य की भांति क्या बक रहे हो जो

तुम्हारे सन्मुख विद्यमान हैं तिन से संग्राम करो पीछे तुम्हारे वैरी कृष्णार्जुन भी देख पड़ेंगे यह कहते हुये सब वीर सुरथ को घेर लेते भये ५२। ५३ तब सुरथने भी सब वीरों को तीक्ष्ण शरों से वेधन किया तब कोई तो पतित होकर पृथ्वी पर गिरपड़े और कोई बीच से फट गये ५४ और बहुतसे वीर शीश और भुजा गदा करके छेदित होने से मृतक पड़े हैं निदान तेहि समय तिस वीर करके सब सैन्य ने हाहाकार किया ५५ हे राजेन्द्र! तीन योजन की सैन्य व्यूहमध्यमें स्थित तिस करके जब मारी गई तो तहां हरि अर्जुन प्राप्त होजाते भये ५६ रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन और वासुदेव भगवान् को देख सुरथ ने वासुदेव को अमोघ बाणों से आच्छादितकर हे राजेन्द्र! अर्जुनको भी तीक्ष्ण विदीर्णीय बाणों से वेधित किया तब धनंजयने तिससे समरमध्य खड़ा हो खड़ाहो यह कहतेहुये ५७।५८ हजारवाण छोड़ सारथी घोड़ों के समेत शत्रु के तप करने वाले राजासुरथ को महावेगसे ताड़ित किया ५९ फिर गुणके सहित धनुष ध्वजा पताका छेदनकर तिस सुरथका रथकाट तिलके समान करडाला ६० अपर घोड़ों को मार करके फिर सौवाण सैन्यमें वेधनकिये तब सुरथनेभी पाडुवीर अर्जुनको बाणों करके पूरित करदिया ६१ अर्थात् नाना प्रकारके शस्त्रास्त्रों से युद्धकिया हे राजन्! तब संग्राममें केशव भगवान् अर्जुनसे बोले ६२ कि हे वीर! इसका पराक्रम देखो और धैर्यता पूर्वक युद्ध करो यह सुरथ

सुधन्वाके वियोगसे मेरीसैन्य को वध किये देता है ६३ और मैं तो इसको त्याग चलागया था किंतु हे अर्जुन ! यह मुझको नहीं छोड़ता अब हमारे आगे हम तुम करके वही योधा देखपड़ताहै ६४ और इसके जगत्को व्याप्त करनेवाले वाणों को देखो इससे पराक्रमी दूसरा नहीं देखपड़ता श्रीकृष्णके ऐसे वचनसुन क्रोधितहो अर्जुन बोले ६५ हे देव! इसमहावीरको मैं तुम्हारे आगेही मारता हूं और हे केशव! तुम्हारे प्रसादसे कुछ मैं असाध्यताको विद्यमान नहींहूं ६६ जैमिनिजी कहतेहैं तब यह कह अर्जुन ने सौबाण सुरथकेमारे तो सुरथ रथसमेत उसीक्षण आकाशमेजाय हरि अर्जुन को चित्रित तीक्ष्ण वाणों से ताड़ित कर विहँसते हुये श्वेतवाहन वाले अर्जुन से बोला ६७ । ६८ अब मैं अमोघ वाणों से तुम्हारे रथको भेदन करताहूं अपने रथकी रक्षाकरो यह कह ऐसे वाण छोड़े कि रथ पृथ्वी में घूमने लगा ६९ तब महारण में श्रीकृष्ण के सहित अर्जुन और हनुमान्जी प्यादे उतर अतीवपीड़ितहुये तब वासुदेव भगवान् क्रोधितहोकर पृथ्वीमें प्रवेशकर रथ तिसको उसकेआगे उठालेतेभये निदान फिरभी वहां रथ स्थित न रहसका तो श्रीकृष्णचन्द्र अत्यन्त विस्मयको प्राप्तहुये फिर सुरथने गीधपत्रवाले तीक्ष्ण वाणोंसे कृष्णार्जुन दोनों को छेदितकिया तब हरि अर्जुन ने अपना २ शंख बजाया और श्रीकृष्ण तमोगुणयुक्त मारेरोष के पूरित वचन अर्जुन से बोले हमने रथको पृथ्वीपर धरा फिरभी सुरथ करके स्थिर नहीं

रहने पाता इसका वलदेख यहा अपने वलसे सुरथ कं
विरथकरो ७०। ७३ तव अर्जुन ने समर मे क्रोधि
होकर अपने वाणों से तिसका दिव्य महारथ ध्वज अश
सारथी के सहित सौखण्ड करडाले अर्थात् चूर्णक
दिया ७४ हे राजन्! अर्जुन करके सुरथ विरथ कियागय
तवतक हनुमान्जी ने अपनी पूंछ से पार्थका रथ पृथ्वि
के वीच में उसी क्षण विषे बांधदिया तव श्रीकृष्ण र
सुधार फिर वहीं स्थिर हुये यहदेख सुरथ बोला हे पार्थ
देखताहू कि केशवके भारसे तुम्हारा रथ बाधागया है
तिसको तुम दोनों वीर पकड़ो मैं फिर उठाताहू ७५
७७ यहकह राजपुत्र अपने वल से रथ को पकड़
उठाय हर्षित होकर बोला हे अर्जुन! कहो युद्ध से तु
म्हारा रथ कहां फेकों सागर में या पर्वत में या तैसेही
हस्तिनापुरको फेकों तव रथस्थायी अर्जुन ने रथ से
पाचवाण मार सुरथको मूर्च्छितकिया हे राजन्! उसस
मय तिसके हाथसे रथ छूटजाता भया ७८।८० तद
नन्तर मूर्च्छाविहाय सुरथ दूसरे रथमें सवार हुआ और
दोनों क्रूरनेत्रवाले फिर युद्धमें तत्परहुये ८१ और अ
र्द्धचन्द्र वत्सदन्त शिलीमुख वराह कर्णनाली अर्थात्
वराह के कानों की नाली कैसे शीघ्रगामी कंटक मुख
वाले वाण छोड़ते भये ८२ तदनन्तर सुरथ बोला कि
हे वीर अर्जुन! आज कोई सत्यप्रतिज्ञा करो और मैंने
पहले से यह सुनाहै कि तुम्हारी प्रतिज्ञा मिथ्याभी नहीं
होती ८३ तव अर्जुनने कहा हे वीर! हमारी प्रतिज्ञा यही

है कि तुम्हारे पिताके देखतेही देखते हम तुमको वध करेंगे अब तुम अपनी भी प्रतिज्ञा यथोचित कहो ८४ यह सुन सुरथ ने कहा हे अर्जुन! मेरी यह प्रतिज्ञा है कि तुमको रथसे पृथ्वी में पतित करूंगा और जो यह वचन सत्य न करूं तो मेरासुकृत अर्थात् पुण्य नाशहोजावे ८५ जैमिनिजी कहतेहैं कि हे राजेन्द्र! इसके अनन्तर सुरथ वीरने अर्जुन पै बाणोंकी वृष्टिकर अर्जुन को छाय दिया फिर तैसेही अर्जुनने भी किया ८६ अर्थात् एकसौ आठ बाणसे तो पार्थने सुरथका रथ छेदनकिया और तैसेही रोषपूर्वक बहुत सेनापर भी प्रहार किये ८७ तब महात्मा सुरथ ने अर्द्धचन्द्र बाण करके तिनको छेदन-कर धनुष प्रत्यंचा और बाणों के समेत अर्जुन को वेधित किया ८८ फिर अर्जुनने अपना धनुष प्रत्यचा से युक्त करके शस्त्रास्त्रों समेत राजपुत्र सुरथको विरथकिया ८९ और अर्द्धचन्द्र बाण अर्जुन ने बाहुमूल में छेदन कर नानाप्रकारके भूषणों से भूषित सुरथ का दहिना हाथ भेदन किया ९० तो वह पृथ्वी पर अर्जुन के सन्मुख गिरपड़ा तब सुरथने बायें हाथसे महतीनाम गदालेकर क्रोधितहो अर्जुनके तुरंग और सारथी जनार्दनको मार और सहस्र हाथियों को पृथ्वीपर गिरादिया ९१। ९२ और दोहजार रथ और दशहजार घोड़ों को पतितकर रथियोंमें श्रेष्ठ सुरथ इधर उधर धावता भया और कहा हे पार्थ! हे हरे! तिष्ठ २ अर्थात् खड़ेहो खड़ेहो इन के सिवाय और जो सब बलवान् राजा हैं खड़े होवें यह

कहतेहुये शीघ्रतापूर्वक बलवान् दशहजार पदातियों को मारता भया ९३। ९४ तब अर्जुन ने वह वापा हाथ भी सहित गदा के गिरा दिया तब दोनों हाथों से हीन सुरथ पार्थ से ये वचन बोला हे पार्थ! अब आज अपनी आत्माकी रक्षाकरो और हे हरि! तुम रथकी रक्षा करते हुये अपने सखा अर्जुन की रक्षाकरो मैं तुम्हारा शत्रु प्राप्तहूं ९५। ९६ जैमिनिजी कहतेहैं कि यह कह क्षीणभुजावाला महारथी सुरथ अर्जुन पै धावता भया हे राजन्! तब अर्जुन ने आते देख नवबाण रोष पूर्वक उसके हृदय में मार दो शरों से पैर छेदडाले तब क्षीणपद होनेपर सुरथ जबतक रथमें जावै तबतक सर्व देव मयबाण करके कुण्डलों के समेत दीर्घ नेत्रवाला महाशिर पाण्डव वीर अर्जुन ने पतित कर दिया ९७। ९९ तब चरणों से हीन कबन्ध इधर उधर धावते हुये बहुत सैन्य को गिरा शिलाके समान अर्जुन के मस्तक में लगताभया तिसके लगने से अर्जुन मूर्च्छितहो पृथ्वी पर गिरपड़े तब वह शिर पृथ्वीपर पतितहो श्रीकृष्णके चरणों में गिरपड़ा १००। १०१॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणि जैमिनीयेभाषायांसुरथवधोनामविंशतितमोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी कहते हैं कि हे राजन्! श्रीकृष्णजीने तिस शिरको हाथमें ले अर्जुनको पकड़कर उठाय अपने रथ में बैठाय बोले १ हे पार्थ! महाबाहु सत्यवादी सुरथ

को देखो जिसने मेरे आगे प्रतिज्ञा पालन करके सत्य की २ तब अर्जुन ने कहा हे स्वामिन्! मैं उस करके तो पतित होगया किन्तु तुम्हारे प्रसादसे फिर उठ खड़ा हुआ और हेनाथ! सो कुछ कौतुक नहीं है अन्य मनुष्योंके सिवाय उसको धन्यहै ३ अब तिसका महाशिर मेरे हाथ में दीजिये तो मैं उस की वन्दना करूं जिस शिरके स्पर्श करनेसे मुझको शूरता प्राप्तहो ४ यह कह अर्जुनने रणमें वह सुन्दर बाणों के समेत शिरले उसकी वन्दना की तत्पश्चात् श्रीकृष्णजी ने गरुड़ का स्मरण किया तो स्मरण मात्रसे प्राप्तहो गरुड़ने अपने स्वामी के आगे खड़े होकर नमस्कार किया तब श्रीकृष्ण जी ने कहा हे काश्यप! यह विशालाक्ष शिर लेकर तुम तीर्थराज ५। ६ प्रयागमें शीघ्र छोड़ आवो यही हमारी आज्ञाहै तब गरुड़ने कहा कि हे नाथ! तहां गंगा यमुना सरस्वती का केवल जलमात्र है तिस में छोड़ने से क्या कार्य्य होगा सर्वेश्वर आप तो यहीं प्राप्त हो मुझ को वहां लेजाने को क्यों आज्ञा देते हो ७। ८ और गंगाजल में जब तक प्राणी के हाड़ स्थिर रहते हैं तब तक वह प्राणी स्वर्गमें बैठ अमृत भोजन करता है ९ और तुम्हारे मुखमें तो सुधन्वाका महातेज प्रवेश करगयाहै तथापि हम तहां जावेंगे क्योंकि महात्माओं की आज्ञाही गम्भीर होती है १० हे गोविंद! मैं तुम्हारा दासहूं अब मेरे हाथमें वह शिर दीजिये तब श्री कृष्णजीने कहा हे खगराज! पावन प्रयागराजमें जाकर

मेरे कोश कहे खजाने में इस वीरका रत्नवत् शिरछोड़ आवो जैमिनिजी ने कहा कि तब सुरथराज का महा शिर वैनतेय गरुड़जी लेकर आकाशको जाते भये तब पार्वती के समेत स्वर्गमें वृषारूढ गणों करके आच्छादित कैलास नाथ भगवान् वरके देनेवाले और शूल के धारण करनेवाले ११। १२ चराचरों के गुरु सृष्टिके करनेवाले और लोक के पालनेवाले जिनकी ब्रह्मादि देव आराधना करते ऐसे शिवजीने हेमारिप। काश्यपेय गरुड़को सुरथका मस्तक गगनपंथ से प्रयागको लेजाते देख लोकेश्वर शिवजी भृङ्गी से बोले कितुम गरुड़ प्रतिजाय शिर लावो १४। १५ तब पार्वती जी ने कहा यह विरूपाक्ष शिर गरुड़ किसका लिये है इस में मुझको बड़ा कौतूहलहै १६ तब प्रियाके ऐसे वचन सुन शिवजीने कहा कि अर्जुनने इस सुरथवीरको मारा है और श्रीकृष्ण भगवान् की आज्ञा से गरुड़ तिसका शिर प्रयागराज में छोड़ने जाता है १७ हे भद्रे। सो कुण्डलों से जाज्वल्यमान महाशिर मुण्डमाल के अर्थ भृंगीको अपने निकट लानेको मैंने प्रेरित कियाहै १८ और हे कमललोचने। पहिले इसके भाई सुधन्वा का शिर हमलाये हैं और दूसरे इस सुरथका भी प्राप्तकर के सुन्दर भूषण बनावेंगे १९ किन्तु धर्मिष्ठ और सत्य बोलनेवाले ज्ञान करनेवाले शूरवीर कामके जीतनेवाले इनके शिरों से सदैव हमारे आभूषण किये जाते हैं २० और हे वाम! इनके सिवाय अन्य कोई

धारण नहीं किये जाते जैमिनिजी कहते हैं कि महादेव के ये वचनसुन भृगीगरुड़पै महावेगसे निकटजाय कहने लगे २१ कि हे महाभाग वैनतेय खगाधिप ! मेरे हाथ में यह शिर देदो नहीं तुमसे वलसे लिये लेताहूँ क्या तुम मुझको नहीं देखते २२ हे वैनतेय ! हम सर्प नहीं हैं जिससे तुमको डरैं छोड़ो छोड़ो क्या तुम हमारे दारुण तेजको नहीं जानते २३ तब गरुड़ ने भृङ्गी को पक्षहिलाय उसकी वायुकरके उड़ादिया और आप तीर्थराज को जातेभये और भृङ्गी शिवके निकट गये २४ तब पक्षों की घोर वायुकरके सूखे पत्ते के समान उड़े भृङ्गीको पार्वतीजी देख हँसतीहुई वचनबोलीं २५ कि हे शिवदूत भृङ्गी ! तुम विष्णुके वाहन गरुड़को नहीं जानते थे जिस के पक्षकी वायुसे तुम हमारे निकट प्राप्तहुये २६ हे शंकर! कहो यह सूखेगात वलहीन दूतको आपने पन्नगाशन वीर गरुड़ से आज्ञादी २७ और जिसके वूढा तो वैल वँधाहै प्रिया गङ्गाजी सागर में वहती हैं और प्रियवस्त्र गजचर्म है और शस्त्र खट्वाङ्ग विद्यमान है तब प्रियाके ऐसे वचनसुन शङ्करजीने ये वचन कहे कि हे वृषभ नन्दीश्वर ! मेरी आज्ञा से तुम वैनतेयपै शिरलाने के अर्थ जावो जिससे वरवर्णिनी पार्वती अब मेरे दूतका वल देखें तब नन्दी शिवकी आज्ञापाय गरुड़ प्रतिजाय २८।३० हे विशापते ! महाक्रोधकरके वह रम्य शिर लेनेको अपने नाककी वायु से गरुड़को तिससमय पृथ्वीपर घुमाने लगे किन्तु नन्दी अपनी वायुके वेगसे गरुड़को ले जाने में

तो समर्थ न हुये परन्तु रणमें मोटे हाथीके समान पकड़कर वन, सरिता, पर्वत, नदीनद, सत्यलोक, वैकुण्ठ, निर्मल कैलास आदि में घूमते २ तबे देवयोग से प्रयागमें खगराज प्राप्तहुये तो तहां श्रीकृष्णकी वाक्यका स्मरण कर तीर्थराज में शिर छोड़दिया तो जलमें शिर गिरतेही गिरते नन्दी ने पकड़ लिया ३१।३५ फिर गरुड़ विहँसते हुये महाराज विष्णुभगवान् के निकट प्राप्तहुये और नन्दीने कुण्डलों से युक्त महाशिर सदाशिवजीके हाथमें दिया ३६ तब शिवजीने मुण्डमालके मध्य में वह रत्न शिर करलिया तदनन्तर हंसध्वज ने सुरथ पुत्रको गिरते देख शीघ्रतापूर्वक ३७ रथ में सवारहो सैन्य के समेत वेगसे युद्ध करने को अर्जुन पै आया तो उससमय पृथ्वीदेवी कापने लगी और शेषजी चलते भये ३८ तिसवीर को इस प्रकार सबल क्रोधित आते देख श्रीकृष्णजी शीघ्र रथसे उतर अपने हाथ पसार खड़ेहो केशव भगवान् पाप से रहित हंसध्वज से बोले हे विभो! तुम्हारी प्रीति हमको बहुत है हमको आलिंगन देहु अर्थात् रणविषे पुत्रशोकका क्रोधछोड़ हमसे अंकभर मिलो ३९। ४० तब इसप्रकार हंसध्वज ने श्रीकृष्णको कहते देख आपभी रथसे राहमें उतर तहां हरिको अंक से मिलकर विहँसते हुये ये वचन कहे कि हे स्वामिन्! हम अनाथको तुम नाथ प्राप्तहुये अबपुत्र शोक क्याहै और हेदेव! न मुझको भवकहे संसार से न अन्य देवताओं से न कुल से कुछ भय है ४१।४२

तब श्रीकृष्णने कहा हे राजन्! अब घोड़ा छोड़ पाण्डवों के युक्त तिसकी रक्षाकरते हुये युधिष्ठिर के समीप गमन करो जैसे हमने पाण्डवोंके अर्थ अपना शरीर ४३ अर्पणकिया तैसेही तुमभी समर में अर्जुन की रक्षाकरो और मेरे सखा अर्जुन को रथ में बैठ हुये देखो ४४ तदनन्तर क्लेशनाशन केशव भगवान् राजा के समेत अर्जुन के निकटजाय दोनोंवीरों से मित्रता कराय घोड़ा छोड़ादिया ४५ और तिसनगरमें पांचरात्रि वासकर केशवभगवान् तो युधिष्ठिरके निकट हस्तिनापुर में प्राप्तहोकर सब चरित्र कहते भये ४६ यहां घोड़ा बंधनसे छूट पृथ्वीपर घूमने लगा तिसके पीछे हंसध्वज के समेत और प्रद्युम्नादि प्रमुख वीरों करके और अर्जुनसे पालित सो छूटाहुआ तुरंग उत्तरमुख भयानक देशको प्राप्तहुआ ४७। ४८ और तिसवाजिराज को महावीर अर्जुन विशालाक्ष हंसध्वज रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्न महाबाहु अनुशाल्व तथा वृषकेतु और पांचवें सुवेग सबके देखते हुये पांडव के अश्व को ये पांचरथी कभी नहीं छोड़ते थे ४९। ५० तहां तुरंग जलपीने के वास्ते कमलिनियों के समेत महासर में प्रवेशकरगया तो तिस तालाब से फिर घोड़ी होकर निकलता भया ५१ तिसको देख सब विस्मित हो कहनेलगे कि यह दैवने क्या किया कि इस दारुण वन में घोड़ा घोड़ी होगया ५२ इसके अनन्तर जबतक सब सैन्यवाले वहां तिस तालाब में प्राप्त हुये तब फिर

उस घोडीरूप घोड़ा ने जलमें प्रवेश किया तब सिंह होगया ५३ तब यहदेख मुख्य अर्जुनने कहा कि क्या होगा हे जनाधिप ! फिर वह सिंह जलमें प्रवेश करजाता भया ५४ इतनी कथासुन जनमेजय ने कहा हे मुने ! बड़ाआश्चर्य हुआ कि तिसवन में किसकारणसे जलके प्रवेश करने से उसीक्षण घोड़ा घोड़ीपनको प्राप्त होगया हे द्विज ! तिसका कारण क्याहै तुरगी होनेका हेतु तिस तालाब से या कि तिस वन से है जिससे फिर व्याघ्रता को प्राप्तहोगया हे विभो ! सब संशय कहो सो तुरग फिर अपने शरीर को कैसे प्राप्त हुआ सो आप वर्णन कीजिये ५५। ५७ तव जैमिनिजी बोले हे राजन् ! पूर्व की बात सुनो यह वन सरोवर उमावन रमणीयसर पार्वतीजी के महातप करने से महादेवजी प्रसन्न होकर आये तब पार्वतीजीने कहा कि मेरे यह इच्छा है कि हे स्वामिन् ! मैं यहां परमतपकरू और तुम सब विघ्नोंकी सदा रक्षाकरो ५८। ५९ यह संकल्प करके देवीजी ने बहुतकाल वहा महातपकिया तहां कोई दुराचारी दैत्य विघ्नकरने अर्थ जहा देवी स्थिर थीं तहां आय देवी से बोला किसकारण तुम महातप करती हो हे भद्रे ! तुम्हारा शरीर तो बहुत सुन्दर है इससमय तुमको क्या नहीं मिलता अर्थात् क्या अलभ्य है ६०। ६१ सो कहो सब मैं तुमको देसक्ताहू तुम मेरी भार्या होजाओ तब देवीजीने नीचके ऐसे वचन सुन महा क्रोधित हो ताम्र के समान नेत्रकरके तिसको शापदिया कि हे दुर्मते ! हे

दुष्ट! तू अभी भस्महोजावे तव तिसको भस्मकरके देवीजी तिस वनदेवताओं से बोलीं कि आज से लगाय मेरी वाक्य से इस सरोवर तथा वन में जो कोई दुष्ट पुरुष आवेगा सो स्त्रीलिंग करके स्त्रीही के चिह्नों से चिह्नित होजावेगा इसमे संशय नहीं ६२। ६४ हे राजन्! तवसे लगाय आजतकजो कोई दुष्ट वहा प्रवेश करता सो महामायाके शापकरके स्त्रीही के चिह्नों से देखागया ६५ इससे यह घोड़ा उस जलके स्पर्श करते ही उसीक्षण घोड़ीके स्वरूपको प्राप्तहोगया सो सव तिस देवीके शापका कारण है ६६ जो तुमने और प्रश्न पूछा कि घोड़ा सिंहत्वको कैसे प्राप्तहुआ सो हे राजेन्द्र! सुनो हम वर्णन करते हैं ६७ कि पहले सत्ययुग मे एक अकृतव्रणनाम ब्राह्मण तीर्थयात्रामें सव पृथ्वीपर्यटन करते जहातहा तप करतेहुये किसीसमय कालके वीतने पर इस देश में भी प्राप्तहुआ तो इस महासर को देख प्रवेश करके स्नानकिये और शुद्धात्मासे वरुणके मन्त्र का जप किया निदान विधिपूर्वक स्नानकर जलपीकरके जलसे वाहर निकलनेलगे तो ६८। ७० जलका दारुणग्राह तिनके चरण में लगकर ऋषिको दातों से काटते हुये पकड़कर महाजल में खींचनेलगा ७१ तव वारम्बार दारुणग्राहको खींचते देख कहा कि कौन दुष्टजीव इसजलमें प्राप्त है जो अपने वलसे मुझको खींचेलेता है ७२ या कोई दैत्य दानव अथवा अन्य कोई दुष्टात्मा मछली होकर जलमे प्रवेश किया मेरी मतिमें तो यही

आताहै इत्यादि मनमें चिन्तनाकर महामुनि क्रोधितहो तिस दुष्टजलको तथा जलस्थायी देवताओं को शाप दिया कि ७३।७४ इस दुष्टजलको जो कोई स्पर्शकरेगा सो शीघ्रही सिंहत्वको प्राप्तहोजावेगा मेरा कहा मिथ्या न होगा ७५ यह कह वह ब्राह्मण अपने बलसे ग्राहसे छूटजाताभया हे राजन्! तब से लगाय वह जल दुष्टहोगया ७६ इत्यादि जो तुमने पूछा सो सब हमने कहा अब कहो वह तुरग कैसे अपने वाजिरूपको प्राप्त हुआ सोभी कहते हैं ७७ हे राजन्! तब अर्जुन ने सिंहरूप भयङ्कर तुरङ्ग को देख मनमें भयके नाशकरनेवाले विष्णु भगवान् का चिन्तवन करनेलगे जिनके प्रभाव से पहले दुर्योधनादिकों के भयसे छूटेथे सोई देव यहां इसदारुण बिपत्ति से मेरी रक्षाकरैं जिन यदुनन्दन ने दिनही में रात्रिबनाय सब सेनाध्यक्षों को मोहितकर तहा मेरेप्रणकी रक्षाकी और सोई अच्युत आज युधिष्ठिरकी यज्ञ क्या सिद्ध न करैंगे इत्यादि वचनों से पार्थ ने श्रीकृष्णजी का स्मरण किया जिन पार्थ को उन्हीं भगवान् की कृपासे कहीं भय न था अर्जुन के स्मरण करते ही तिसी क्षण में सिंहरूप को छोड़ फिर वह घोड़ा होजाता भया ७८।८१ तब पूर्वरूप में घोड़ा को प्राप्त देखते सब महाहर्षित हो आनन्द में नाचने लगे और नानाप्रकार के बाजा प्रसन्न हो बजावते भये ८२ तदनन्तर दैववश से फिर तुरंग आगे चला तो नानाप्रकार के देश मँझाते हुये स्त्रियोंके

देश में प्राप्तहुआ जहां स्त्रीमयदेश सुन्दर रूपवान् नवयौवना स्त्रियों करके गहन अर्थात् भरा हुआ सघन था और वहां स्त्रीही राज्य करती थीं किन्तु कोई पुरुष तहां जीताही नहीं ८३। ८४ यदि जो कोई उनके रूप और सुन्दरता में मोहित होकर उनका मनोहर मुख-वास नेत्रों से देखता और अचल ताड़ित अर्थात् कुच-मर्दन करता तिससे गीत नाद नृत्य करते हुये सुन्दर मृदुल वचन बोलतीं इस प्रकार एक मासमात्र उन स्त्रियों को प्राप्त होकर फिर वह पुरुष क्लीबता अर्थात् उनके बलसे नपुंसकताको प्राप्त होजाताथा ८५। ८६ जब वह पुरुष बराबर रति न करसक्ता तो फिर उसको विषम घाव देने लगतीं किन्तु नानाप्रकारसे नखों करके काटतीं और यह कहतीं कि यह हमको काम से मारे डालताहै ८७ फिर उसको मुष्टिघात करते अर्थात् घूँसों से मारते हुये लेकर मुखचूँबने लगतीं और सुन्दर पक्षियोंकी भांति सुन्दर बोल बोलतीं फिर सहित मदके जिह्वाके घात करतीं और उसको पीड़ित तथा वन्दित देख टेढ़ी चितवनि से कहतीं कि हम तुम्हारी दासी हैं यहां आयकरके तुम अब अन्य स्त्रियों का स्मरण कर जाना चाहतेहो हे सुव्रत! कहो क्या अब हमारे घरमें तुम्हारी माता या बहिन प्राप्तहुई हैं जिनके भाव लाभके समेत जातेहो ८८।९० निदान इसप्रकारके वचन कहते तिसको जीवन से हीन करडालतीं फिर उसी से अपने स्त्री लिंगको अर्थात् अपने को अग्निमें प्रवेश करतीं ९१

अथवा जो कोई इसदशामें एकमाससे अधिक जिया तौ उससे गर्भ धारण करतीं तिस गर्भ से कन्याही उत्पन्न होती किन्तु तहा पुरुषका तो जीवनही नहीं होता तहा यज्ञाश्व अर्जुनादि पाच रथियों के समेत वहां प्रवेश करगया ९२ तव स्त्रियों के मण्डल में स्थित अर्जुन तिन वीरों से बोले कि यहा वलके युक्त स्त्रिया विद्यमान हैं जो ये घोराकहे कराल दुष्टा घोड़ा पकड़लेगी तो यहां वहुत कष्टहोगा अर्जुनके ऐसे कहतेहुये स्त्रियों के वृन्द आगये ९३।९४ कैसी स्त्रिया हैं कि घोड़ोंमें सवार चम्पकके समान दीप्तिवाले मुक्ताओं से भूषित और नानाप्रकार के सुन्दर रेशमी वस्त्रों को धारे हाव भाव के युक्त चामर गले मे वाधे और सहित तूणीर के धनुष लिये उन में से एक नारी निकल अर्जुन का यज्ञाश्व पकड़कर ९५।९६ अपनी स्वामिनीपै जाय तिस घोड़ा को दिखाय कहा कि युधिष्ठिरके भ्राता अर्जुन यहां इसकी रक्षा करते हैं मैं तुम्हारी आज्ञामे यह घोड़ा लेआई हूँ इसको क्याकरू ९७ तव रानी वोली तुम इसको हयशालामें लेजाओ और मैं अर्जुनसे युद्ध करने को जाती हूँ तदनन्तर रानी के वचन सुन वह स्त्री सब वैसेही करती भई और रानी पाण्डव पै जाती भई ९८॥

इत्यारवमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांस्त्रीराज्यगमननामएकविंशोऽध्यायः २१॥

वाइसवां अध्याय॥

जैमिनिजी कहते है कि हे जनमेजय! ते चन्द्रानना

अर्थात् चन्द्रमुखी वीर स्त्रिया अर्जुनको निशाना सा देख करके घोड़ों में सवारहो पार्थके रथप्रति खड़ी होजाती भई १ और वे स्त्रिया कैसी हैं कि कठोर ऊँचे तो कुच और श्यामा अवस्था को प्राप्त चारु कहे सुन्दर नेत्र-वाली कोई २ हाथियों में सवार निशाना सा शोभित देख कोईकोई रथों में सवारहो इसप्रकार लाखों स्त्रिया नगर से बाहर निकल खड़ीहो पाण्डवको तीन निशान बनाये रणमें देखा ३ तो प्रमीलानाम रानी ने ये वचन अर्जुनसे कहे कि हे वीर! तुम्हारा घोड़ा हमकरके पकड़ा-गयाहै जो तुम्हारे उसके छुड़ाइवे की इच्छाहो तो मेरे साथ युद्धकरो मैं तुम्हारे बलको परास्त करूँगी हे अर्जुन! तुम धीर्यको धारणकर मेरे महाप्रहार सहो४।५ हे पार्थ! पहले तो तुमको नेत्रभाव से ताड़ित करूँगी फिर मेरुके विदारनेवाले कुचरूपी तीक्ष्ण बाणों से तुम्हारा हृदय भेदनकरूँगी तदनन्तर उन सब स्त्रियों के मनोहर मुसक्यानि करके पांचो वीर भेदनकरने योग्य हैं विस्मित कर्णपुत्र के सिवाय फिर रानी बोली कि हे वीर अर्जुन! क्या मुझको नहीं जानते ६।८ हे पाण्डव! मैं तुमको जीतकर अपना दास बनाऊँगी यज्ञकरके क्या करोगे यहा मेरेसमेत मदिरा पीओ वे सुख तुमको यहा दिखाऊँगी जो तुमने पहले कभी नहीं देखेहोंगे तब अर्जुन ने कहा कि हमने सुनाहै कि तुम्हारेसाथ मरणही प्राप्त होता है ९।१० और यज्ञके अर्थ हम अकेले तुरङ्ग की रक्षा करते हैं सो हमारे बिना कौन करेगा यह

सुन फिर प्रमीलानाम उस रानी ने कहा हे पार्थ! अब दोनों तरहसे तुम्हारी मृत्युही प्राप्तहुई है ११ या मेरे बाणों से अथवा नैनबाणों से तो ताड़ित अर्थात् मारे हुये किसीप्रकार नहीं जीवोगे इससे मेरे सङ्गम में सुख प्राप्त करके अन्त में मेरेही समेत निधन होओगे १२ और शरों से पीड़ितकर व्यर्थ तुम को न जीतूँगी न वृथा तुमसे जय प्राप्तकरूँगी किन्तु तुम्हारे साथ रति ही करके तुमको बिजय करूँगी अर्थात् कामही के शरों से तुमको पतित करूँगी निदान जब तुम रतिको वर्जित करोगे तब हम सब पकड़कर निर्जीव करडालेंगी १३ । १४ हे मारिष! अब तुम्हारा दोनोंप्रकार से मरणही देख पड़ता है तिससे हे पाण्डव! अब हमारा रुचिर यौवन भोगकरो १५ अर्जुन ने तिस कामसे पीड़ित स्त्रियों को ऐसे कहते देख अपने हृदयमें तैसेही लक्ष्मण और शूर्पणखा की कथाको स्मरण करके १६ छःबाण छोड़े तिन शरों को उस स्त्रीने पाचटुकड़े करके धनञ्जय अर्जुनको महाघोर सातबाणों से ताड़ित किया १७ फिर अर्जुन ने हजारोंबाण देखतेहुये रणमें चलाये और उसी समय पाण्डव ने मोहनास्त्र अपने धनुष में धारणकिया १८ तब प्रमीला ने तिस मोहनास्त्र को सहित प्रत्यञ्चा के तीनबाणों से काटकर अर्जुन से कहा कि हे मूढ! तुमको मोहनास्त्र नहीं शोभितहोता १९ फिर अर्जुन क्रोधके युक्त जबतक अपना धनुष प्रत्यञ्चा के युक्तकरके बाणछोड़ें तबतक आकाशवाणी हुई कि २०

हे पार्थ। रणमें स्त्री के वधको ऐसा साहस न करो तुम इनके जीतनेको समर्थ नहींहो चाहो हजारों वर्ष युद्धकरो २१ यदिजीने तथा जीतनेकी इच्छाहै तो इन कल्याण कारियोंसे प्रार्थनाकर ये वचन कहो कि हे मामिनि। तुमको हम अपने नगरको लेचलेंगे २२ तदनन्तर पार्थ ने तब आकाशवाणी के वचन सुनकर वेसाही किया जैसी वाणी हुईथी और हे विशांपते। युद्धभूमि मे प्रमीलाकी प्रार्थना करते हुये २३ अर्जुन बोले हे विशालाक्षी। मेरा संगम हस्तिनापुरमें होवेगा और हे भद्रे। मैं तुम्हारा दास यहा हय रक्षण व्रत में टिकाहू इसकारण यहा संगम होना वर्जित है २४ और वहा चलनेसे तुम्हारे सब दोष श्रीकृष्ण के दर्शनोंसे दूरहोजावैंगे और इन सब स्त्रियों को मेरे नगरमे सुन्दर पति प्राप्त होजायँगे इसमें सन्देह नहीं अब घोड़ा छोड़ो तो हम गमनकरें तुम हमारे साथ हस्तिनापुर को चलो या केवल तुम्हीं चलीजावो २५। २६ इस प्रकार वहासे युधिष्ठिरका तुरग छूटकर आगे चला तो चलते २ वृक्षों के देशमें पहुचा जहा वृक्षों में मनुष्य, हाथी २७ स्त्री, गौ, पशु, बकरी, भेड़ी इत्यादि जीव फरतेथे और वे प्रातःकालमें तो उत्पन्नहोते और मध्याह्न में युवावस्थाके युक्तहोते २८ और सायकालमें नानाप्रकारके मनुष्य मृतकहो वृक्षोंसे झरपड़ते वहा हयके सगेत अर्जुन गये तो तिनके विस्मयसे लोचन प्रस्फुरित होगये २९ तदनन्तर फिर घोड़ाके संग नाना-

प्रकारके देश घूमतेहुये बहुतकानवाले, अनेकमुखवाले, बहुत चरणवाले ३० घोड़ेके मुखवाले, तीनआंखवाले, बड़ी नाकवाले, तीन पैरवाले, एक सींगवाले, बहुत सींगवाले, गदहाके मुखवाले ३१ ऐसे राक्षसोंके राजा भीषणके नगरमें घोड़ाप्राप्तहुआ जहां इसप्रकारके बहुत निशाचर मनुष्योंके भक्षणकरनेवाले ३२ बड़े क्रोधी बहुनकालके जीनेवाले तीनकोटि राक्षस उसनगर में विद्यमानरहते थे तब भीषणनाम राक्षसाध्यक्षके मेदोहानाम ब्रह्मराक्षसने बनमें घूमतेहुये घोड़ादेख अर्जुनही का तुरग प्राप्तजानकर वह ब्रह्मराक्षस मनुष्यकी आतों का सूत्रयुक्त कठमें यज्ञोपवीत धारणकिये ३३। ३५ और जपके वास्ते भयानक मनुष्यके मुण्डोंका माला पहिरे और हाथीके सूखेमुखका सहित जलके कमण्डलु लिये ३६ और गोल आखोंका माला गुहाहुआ गलेमें पहिरे और गजमुक्ताओं से युक्त कानोंमें कुण्डलपहिरे ३७ और हाथीकी पीठिवाले हाड़कासहित मांसके दण्ड लिये वह ब्रह्मराक्षस भीषणके निकट प्राप्तहोकर बोला कि हे राक्षसाधिप! अर्जुन तुम्हारे हित घोड़ा की रक्षा करतेहुये यहां प्राप्तहुये हैं जिनके जेठे भाई भीमने तुम्हारे बकनाम पिताको माराथा ३८। ३९ तिससे इसभीमके भाईको शीघ्र पकड़कर यह सब लक्षणों के युक्त है इससे मेरीआज्ञा से तुम नरमेधयज्ञ करो ४० और उसके आचार्य्य हमहोवेंगे और अन्य ब्रह्मराक्षस कुलीन व्रतयुक्त चतुर्मासा के व्रत में प्राप्त जे सुरापान

करते अथवा रुधिरसे भी सन्तुष्ट होते और जिन ब्रह्मराक्षसों ने श्रावण में व्रत करके नानाप्रकार के उपवास करनेवाले मनुष्यों का मास भक्षण किया है ४१। ४२ तैसेही भाद्रमास में ऊर्ध्वरेता यतियों का और आश्विन में जटावालों का और कार्त्तिक में व्रतधारण करनेवाले बालकोंका मास व्रतकरके भक्षण कियाहै तिससे सैन्य और घोड़ाके समेत अर्जुनको पकड़लेओ तो चिरकाल के व्रतमें टिकेहुये ब्रह्मराक्षस आज अर्जुनके हाथी और घोड़ादिकोंको भक्षण करें ४३। ४५ और आज वे तपस्वी मनुष्योंका उष्णकहे गरम २ रुधिर पानकर मास खाय अघाय आनन्दितहोवे ४६ और पूर्वमें महात्मा रावण ने नरमेध कियाथा तिसयज्ञ में सब ब्रह्मराक्षस भलीभांति सन्तुष्ट हुयेथे ४७ अब इससमय तुम करो तो उस यज्ञमें हम सब सन्तुष्टहोवें तब प्रोहित के ऐसे वचन सुन भीषण बोला हे तात! हम सब करेंगे जैसे आपने कहाहै ४८ और पिताकाशत्रु नगरमें प्राप्त कहो आज कैसे न पकड़ेंगे और आपके ये व्रतवाले और सुन्दर ब्रह्मराक्षसोंका व तुम्हारा यज्ञ में क्या भोजन है यह एक बात हम आपसे पूंछतेहैं सो हे विभो! जो हमको यथोचित हो वह हम पार्थकी सेनासे आज देवें ४९। ५० किन्तु आप अपनी रुचिकहिये तो निश्चय करके यज्ञकरें तब राजाके ऐसे वचनसुन मेदोहा नाम प्रोहित बोला कि बड़े मोटे मनुष्यों का मास और उनकी तथा हाथी घोड़ोंकी आखों में हमारी बड़ी

प्रीतिहै जैसे हम तुम्हारे प्रसादसे इसमास से तृप्त होंगे वैसे और से नहीं ५१।५३ और हे राजेन्द्र! हम हजारों पदातियों को तुम्हारी यज्ञमें भक्षण करडालेंगे, हम औरों के समान नहीं हम बहुत खाते हैं ५४ तिस प्रोहित के ऐसे वचनसुन वह राक्षस महा प्रसन्न होकर बोला कि मैं करूंगा तुम रमणीय मण्डप और ऋत्विज उपस्थित करो ५५ मैं यज्ञके अर्थ बड़े वेगसे अर्जुनकी सैन्यप्रति युद्धकरने को महाघोर तीनिकोटि राक्षसोंके समेत जाताहूं ५६ तब राक्षसोंको पर्वतारूढ आते अर्जुनने देखा और हनुमान्‌जीको देख एकराक्षसी बोली ५७ कि हे राक्षसियो! भागजाओ भागजाओ यहांसे जीतेजी न बचोगी देखो यहा वहीवानर देख पड़ताहै जिसने बहुतसे निश्चरोंको मारा है ५८ और मैंने तो जबसे रावणके नगर लङ्कामें जहां अशोकवृक्ष के नीचे जानकी विद्यमान तहां इसको देखा तबसे ल- गाय अभी भगजाती रहीहै ५९ जैमिनिजी बोले कि तिस राक्षसीके ऐसे वचनसुन एक और बड़ेपेट और कृशकहे जीर्णहाथ और बड़े पैरवाली और ऊंची ग्रीववाली राक्षसी बोली ६० कि हमारे आगे यह न कहो कि रात- णकी मृत्यु मनुष्य करके प्राप्तहुई हम अभी तुम्हारे आगे सभय वानरको भक्षण करतीहों ६१ तब और बोली कि हे कृशे! तुम क्या कहतीहो मेरेबड़े मोटेलट- कतेहये कुचोंको देखो ६२ जो मेरे पीछे योजन पर्यन्त प्राप्तहैं इनकुचोंसे हम नाशनेवाले इस हनुमान् ७

और पाडव वीरो को खींचकर इस भारत की सैन्य को वेगसे पतित करूँगी तुम राक्षसीगण भयभीत न होओ। फिर इस मन्द वानरकी क्या गणनाहै और मुझको क्या भीषण नहीं जानते ६३। ६४ तवतक क्रोधितहो तीसरी वड़ी मोटी राक्षसी जिसके स्तन कईयोजनमें प्राप्त थे सो बोली कि तू क्या अपने कुचों की भय सुनाती है वे स्तन क्याहैं ६५ तेरे स्तन योजनमात्र मे फैलेहुये मेरे आगे वे वेलहीके समान हैं मेरे कुच योजनोंमें प्राप्त देखो ६६ मैं सबके देखते २ सभय कपिराज हनुमान्को मारूँगी इसप्रकार के सबराक्षसी वचन कहतेहुये पार्थ की सैन्यको देख ६७ करके वे घोरा राक्षसी हाहाकार करते कूदते फादते धायके समरमें वड़े मोटे कुच घुमाय भ्रमाय इधर उधर वहुत सैन्य को और वड़े हाथियों को चूर्ण करतेहुये भगायदेती भई किन्तु जहां जहां उनके कुच लगते तहा तहा की सब सैन्य पतित होजाती भई ६८। ६९ केवल उन्हीं राक्षसियो ने सैन्य परमाणुकहे रञ्चकसी करदी अर्थात् वहुतसी मारडाली कुछ वची वचाई रहगई तिसको अपर दारुण राक्षसी गज अश्व मनुष्यों को एक एकपै चलाय देनेलगीं इसीप्रकार और भी राक्षसियों ने वैसेही क्रोधित रणमें सैन्यका क्षयकिया और तैसेही राक्षसों ने तिनवीरों को शीघ्र समर में मार गिराया ७०। ७१ तवतक राक्षसाध्यक्ष भीषण अर्जुन के निकट जाय ये वचन वोला कि हे पार्थ ! खड़ेहो कहा जातेहो वड़े भाग्यसे मुझे समरमें देख पड़ेहो ७२ जब

भीमने मेरे पिता को माराथा तब मैं वहां समीप न था अब आज तुमको समर में जीतकर नरमेधयज्ञ करूँगा ७३ और फिर भीमको भी वध करके उसका रुधिर अपने बल से पानकरूंगा यहकह बाण मुद्गर शिला वृक्ष छोड़े ७४ पाण्डव वीरोंको अपनी सैन्यसे पीड़ित करनेलगा तब अर्जुन ने भी तैसेही सहित गणोंके राक्षस को हजारों बाणों से ७५ भेदन किया तब चारों ओर से रोमादि वहानेवाली महाराक्षसियों को हनुमान् जी ने क्षयकिया ७६ अर्थात् सबों को पूंछ में बांधि पृथ्वीपर घुमाते भये जिससे बहुतसी तो घुमातेही नि ष्प्राण होगई और बहुतों के हाथ पैर अलग होगये अर्थात् टूटगये और घुमाने से सबोंके बार उखड़ गये तिससे औरभी भयावनी होगई ७७ इसदशासे बहुतसी भागकर पर्व्वतों में प्राप्त हुई तब रणोद्भट अर्ज्जुन ने राक्षसोंके नाशकरनेवाले बड़े तीक्ष्ण बाणोंको दैत्यना शन मंत्रोंसे मन्त्रितकरछोड़ा जिनके लगनेसे राक्षसोंकी सैन्य महाभयभीत होकर वनको भागजाती भई तब भीषण क्रोधसे पूरितहो राक्षसीमाया उत्पन्न करनेलगा ७८। ७९ कभी अपना पर्व्वत होजाता कभी सिंह और कभी सैकरों हाथीही होजाता और कभी शरभ कभी व्याघ्र कभी शार्दूल होजाता और वह राक्षस कभी आकाश में बिजुलीसी करता ८० हे राजन्! भीषण करके रणविषे ये माया अर्जुन से क्षीणहुई और फिर गंगाजी के निकट सुन्दर ऋषियोंकासा आश्रम

नानाप्रकार के पक्षी और मृगों करके युक्त वनाय आप शिष्यों समेत उसमे योग और ध्यानमें ऐसालीन हुआ कि मानों इसको किसीप्रकारकी वाञ्छाही नहींहै इसप्रकार स्थित होकर अर्जुनसे बड़ेवेगयुक्त बोला कि यहा राक्षस हमको त्रासितकरतेहैं ८१। ८२ हे धनजय ! हम को यहा सुखप्राप्त नहींहोता और न तप करनेपाते हैं अबतुम आयेहोटिको यहापथके श्रमसे रहितहो करवाम करो ८३ ऋषियोंके आश्रमों में भोजन वासकरनेसे क्षत्रियोंको महाबल प्राप्तहोताहै इससे हे पार्थ! तुम यहा कुछकाल मेरेसहित बासकरके ८४ मेरी दीहुई रुचिर विद्याका अभ्यासकरो तिससे सब राक्षस नाशहोजायँगे इसमें संशयनहीं ८५ तब अर्जुन वह राक्षसीमाया जान करके उस भीषणको वधकरके तिससे नानाप्रकार के रत्न और काचन छत्र दिव्य कुण्डलों के समेत अपने घोड़ोंको लेकर और पुत्रोंके समेत उसके घोड़ोंको लेकर सहित सैन्यके श्वेतवाहन अर्जुन चलतेभये ८६। ८७ तब रमणीय मणिनगरनाम बभ्रुवाहन करके पालित जहां सत्यव्रत करनेवाले मनुष्य और पतिकी सेवाकरनेवाली स्त्रिया विद्यमान ८८ जहा वेद और शास्त्र के अर्थमें निपुण अर्थात् पण्डित महाजन प्राप्त वासुदेव भगवान्की चिन्तनाके सिवाय अन्यका स्मरण नहींकरते ८९। ९० और जहा कोईमनुष्य स्वप्नमेंभी झूठनहीं बोलता और वहांकी स्त्रिया हृदय और मस्तकके बीच में सुन्दरमोती पहिरे ९१ और हे राजेंद्र ! वे रसीले स्-

रिहाववाली स्त्रियोंके नासाग्रकहे नाकके आगे मध्य में सुन्दरमोती सुशोभित होता और जहा सैकरों वीरराजा वभ्रुवाहनसे पूजित ९२ जो महाकालको भी प्राप्तहोकर अपने बलसे उसको सन्तुष्टकरते और वे रणमें कभी विमुख नहींहोते और न कोई अर्थीको आगे प्राप्त होने पर विमुखकरते किन्तु वे सत्यवक्ता अर्थीकी प्रार्थना में देह दानभी देदेते और प्राकृतकहे छोटे अल्पज्ञ मनुष्य भी मुखसे सुन्दरशुद्धही वाणी बोलते हैं ९३। ९४ ऐसे प्राणी जहा सर्वत्र विद्यमान रहते तहा अर्जुनका यज्ञाश्व प्राप्तहुआ और वह नगर तुष्टपुष्ट मनुष्यों के युक्त नित्यही उत्सवसे भूषित, रहता था ९५ और सुवर्णके आकाशमें रमणीय नगर महाबली महापराक्रमी वीरों से रक्षित हजारों गाड़िया सुवर्णसे पूरित और हंसध्वजादि राजाओंसे प्रतिवर्ष राजा राज्यदण्ड लेता ९६। ९७ और राजा वभ्रुवाहन सुवर्ण चांदी और रत्नों से सुन्दर घर और राजमार्ग गात्रोंके रहनेवाले मन्दिर और सुन्दर शिवालय मठादि भूषित करता ९८ निदान मानों वह दूसरा वैकुण्ठही बनाय विष्णु भगवान् ने पृथ्वीपर स्थापितकर दियाहै उसनिगरमें अर्जुन प्राप्त होकर सुन्दर नगर रचना युक्त देख बोले हे हंसध्वज! हम यहा कहा प्राप्तहुये सो सशयकहो ९९। १०० ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांमणिपुरागमनोनाम द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

———

तेईसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! अर्जुन के ये वचन सुन हंसध्वज आपही बोला कि हे अर्जुन! यहां बभ्रुवाहन नाम राजा वर्त्तमानहै १ जिसको हमारे सिवाय अन्य सम्पूर्ण राजाओं से भी प्रार्थना के युक्त हजार गाड़ियोंभर सुवर्ण प्रतिवर्ष दियाजाता है २ और यह मणिपुर नाम उसीका नगर है जिसमें हम सब घोड़ाके समेत आयेहैं और तेजस्वी, सैन्यकेयुक्त, ज्ञाता, वेदार्थ के अनुसार वर्तनेवाला ३ वृद्ध पुरुषों की आज्ञामें प्रसन्न, पराई स्त्रीसे सदैव विमुख दानियों में विष्णुभगवान् के समान दाता पहला एक वही राजा है ४ और जिसका सुमति नाम मंत्री महासत्त्व पराक्रमी विख्यातहै वह सेनाध्यक्ष शंकरजी काभी क्रोध सहसक्ता है किन्तु वह मन्त्री ऐसा पराक्रमी है कि समर में प्रलयकरनेवाले शंकरजीसेभी युद्धकरसक्ताहै और वह मंत्री पराया सुकृत कर्म रंचक के समानभी रणमें राजासे सूचितकर अपकार नहीं विचारता ५।६ और हे राजन्! यदि इसराजा के सेनाध्यक्ष जो घोड़ा पकड़लेवेंगे तो फिर बड़े क्लेशसे हम सब छुड़ाने को समर्थ होंगे ७ इसप्रकार तिस वीर के कहते हुये महादारुण मृत्यु के दिखानेवाला गृध्र अर्जुनके मुकुटके आगे बैठगया ८ तो सब विस्मितहो त्रासित होकर कांपने लगे जैमिनिजी बोले कि नगर में इन आप महावीर अर्जुनके समेत सैन्यमे पालित

रिहानेवाली स्त्रियोंके नासाग्रकहे नाकके आगे मध्य में सुन्दरमोती सुशोभित होता और जहा सैकरों वीरराजा वभ्रुवाहनसे पूजित ९२ जो महाकालको भी प्राप्तहो कर अपने वलसे उसको सन्तुष्टकरते और वे रणसे कभी विमुख नहींहोते और न कोई अर्थीको आगे प्राप्त होने पर विमुखकरते किन्तु वे सत्यवक्ता अर्थीकी प्रार्थनासे देह दानभी देदेते और प्राकृतकहे छोटे अल्पज्ञ मनुष्य भी मुखसे सुन्दरशुद्धही बाणी वोलते हैं ९३। ९४ ऐसे प्राणी जहां सर्वत्र विद्यमान रहते तहा अर्जुनका यज्ञाश्व प्राप्तहुआ और वह नगर तुष्टपुष्ट मनुष्यों के यज्ञ नित्यही उत्सवसे भूषित रहता था ९५ और सुवर्णके आकाशसे रमणीय नगर महाबली महापराक्रमी वीरों से रक्षित हजारो गाड़िया सुवर्णसे पूरित और हंसध्वजादि राजाओंमे प्रतिवर्ष राजा सव्यदण्ड लेता ९६। ९७ और राजा वभ्रुबाहन सुवर्ण चादी और रत्नों से सुन्दर घर और राजमार्ग गात्रोंके रहनेवाले मन्दिर और सुन्दर शिवालय मठादि भूषित करता ९८ निदान मानों वह दूसरा वैकुण्ठही बनाय विष्णु भगवान् ने पृथ्वीपर स्थापितकर दियाहै उसीनगरमें अर्जुन प्राप्त होकर सुन्दर नगर रचना युक्त देख बोले हे हंसध्वज हम यहा कहा प्राप्तहुये सो सशयकहो ९९। १०० ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायामणिपुरागमनोनाम द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! अर्जुन के ये वचन सुन हंसध्वज आपही बोला कि हे अर्जुन! यहां बभ्रुवाहन नाम राजा वर्त्तमानहै १ जिसको हमारे सिवाय अन्य सम्पूर्ण राजाओं से भी प्रार्थना के युक्त हजार गाड़ियोंभर सुवर्ण प्रतिवर्ष दियाजाता है २ और यह मणिपुर नाम उसीका नगर है जिसमें हम सब घोड़ाके समेत आयेहैं और तेजस्वी, सैन्यकेयुक्त, ज्ञाता, वेदार्थ के अनुसार वर्तनेवाला ३ वृद्ध पुरुषों की आज्ञामें प्रसन्न, पराई स्त्रीसे सदैव विमुख दानियों में विष्णुभगवान् के समान दाता पहला एक वही राजा है ४ और जिसका सुमति नाम मंत्री महासत्त्व पराक्रमी विख्यातहै वह सेनाध्यक्ष शंकरजी काभी क्रोध सहसक्ता है किन्तु वह मन्त्री ऐसा पराक्रमी है कि समर में प्रलयकरनेवाले शंकरजीसेभी युद्धकरसक्ताहै और वह मंत्री पराया सुकृत कर्म रंचक के समानभी रणमें राजासे सूचितकर अपकार नहीं विचारता ५।६ और हे राजन्! यदि इसराजा के सेनाध्यक्ष जो घोड़ा पकडलेवेंगे तो फिर बड़े क्लेशसे हम सब छुडाने को समर्थ होंगे ७ इसप्रकार तिस वीर के कहते हुये महादारुण मृत्यु के दिखानेवाला गृध्र अर्जुनके मुकुटके आगे बैठगया ८ तो सब विस्मितहो त्रासित होकर कांपने लगे जैमिनिजी बोले कि नगर में इन आप महावीर अर्जुनके समेत सैन्यसे पालित

घोड़ाको सुन उसको पकड़कर लीलापूर्वक राजा बभ्रु-वाहन के वीरयुद्धमें शूर हजारों सिपाही सभाके बीचमें हरिकहे उत्तम घोड़ा दिखातेभये ९। ११ वह घोड़ाकैसा है कि रमणीय वस्तुओंसे चर्चित और पूजित मुक्ताफल कहे मोतियों से विभूषित और उसराजा का सिंहासन उपविष्ट सुवर्ण और रत्नोंसे बनाहुआ १२ और तिसकी विचित्र सभा हिरण्मयी चित्रित रत्नोंसे विचित्रित नाना प्रकारके भाव दिखानेवाले हजारों खम्भों के संयुक्त १३ और हस, मयूरकहे मोर, शुककहे सुवा, पारावत कहे कबूतर, कोकिला, सारिका, केकाआदि ये सबपक्षी रत्न और सुवर्ण से बने राजाकी सभामें सजीवहीसे देखपड़ते किन्तु सुशोभित होते हैं और जहां सैकड़ो रत्न सुवर्ण के दीपक १४। १५ सुगन्धित तैल से प्रदीपित कहे जलतेहुये नानाप्रकारके दीपकों से राजसभा सुशोभित होतीथी और हे भारत! महाकांतिवाले, राजसी भूषण और अस्त्रोंसे बभ्रुवाहन सुशोभित होता था और सभाके मध्यमें पृथ्वीपर सुगन्ध के अर्थ कर्पूरकी कण छोड़ी गईथीं १६। १७ और हे जनमेजय! पृथ्वीपर लाल काले सफेद रङ्गके पशमीना दिखाई पड़ते थे और धूपके और रमणीय पुष्पोंके सुगन्ध से और अगुरु के सुगन्ध से और सुगन्धराज कस्तूरी और केशर के समूह जल से राजाके निकट बैठनेवाली सभा मूर्च्छित हो जातीथी १८। १९ तब चित्राङ्गदा के पुत्रने तुरङ्ग को देख उसके मस्तक का पत्र बाचा तो ज्ञातकिया कि यु

धिष्ठिरका घोड़ा तिसकी अर्जुन रक्षा करते हैं २० तब सुबुद्धिनाम मन्त्रियोंमें उत्तम तिससे पूँछा कि हे मन्त्रिन्! मेरीमाता अर्जुनकी स्त्री एकसमय अपने पिताके आगे नृत्यकरते तालहीनको प्राप्तहुई तब महात्मा पिता ने शापदिया कि हे विगततालिके! अर्थात् तालही ने मछली होकर बहुतकाल जलमें वासकर २१। २२ जब दैवयोगसे अर्जुन के चरणोंका स्पर्श होगा सोई तुझ को इसशापसे मुक्त करके वही तेरा पति होगा इसमें संशय नहीं २३ तैसेही पहले अर्जुन उस शुभ नगर को प्राप्तहोकर पाणिग्रहणकर मेरी माताको वहा छोड़ आप युधिष्ठिर के समीप हस्तिनापुर चलेगये २४ तब हमने यहा बहुत राज्य प्राप्तकी और हम इन्हीं पाण्डवके पुत्रहैं इससे हे सुबुद्धे! यहा अब हमको क्या करना योग्यहै किन्तु हम करके कार्यही विनाश किया गया अपने पिताका तुरग विचारने योग्य प्राप्तहुआथा २५ तब राजाके ऐसे वचनसुन उदारबुद्धिवाला सुबुद्धि नाम मन्त्री बोला कि हे राजन्! इसमे सन्देह नहींहै कि पहले तुमने विचार नहीं किया किन्तु तुमकरके तो वर्ष पर्यन्त वाजिराजकी रक्षाकरते अपने पिताकी आज्ञा का कार्य घोड़ा हरनेवालों से लड़ना और पिताका पूजन यहपुत्रका परमधर्म है २६। २७ और हे नृपोत्तम! इस समय सबप्रकार से धन व राज्य अर्जुन के समर्पण करो २८ और प्रसाद देनेवाले अपने गुरू और ब्राह्मणोंके समेत सब नर नारियोंसे घिरेहुये कुमारी कन्या-

ओंके युक्त पुष्टहाथियोंपर सवारहोकर २९ इनके सिवाय नृत्यकरनेवाले नर्त्तकियोंको और गानके गानेवालों को और सब सेनाध्यक्षोंको और नगरके प्रतिष्ठित मनुष्यों को ३० लेकर भक्तिपूर्वक श्रीकृष्णके सेवक अपने पिता को शीघ्र घोड़ा देवो यह मंत्र तुम्हारे सुखका उदय करनेवाला है ३१ जैमिनिजी बोले कि सुबुद्धिनाम मंत्री के ऐसे वचनसुन राजा बभ्रुवाहन शीघ्र घोड़ा लेकर सैन्यके और ब्राह्मणोंके तथा सुभट बीरोंके और नगर वाले महाजनोंके समेत वहांजाय चन्दन कस्तूरी कर्पूर के समूहोंसे चर्चित और गाड़ियोंके सिवाय और वाहन भी रत्नादिकोंसे पूरित और मतवालेहाथी चन्द्रवत्गोर सुन्दर सुवर्णसे चित्रितरथ ३२। ३४ और श्यामकर्ण घोड़ा लेकर आनन्दपूर्वक पाण्डवोंको घेरलिया और नानाप्रकारके बाजाओंके स्वरसे जयशब्द मङ्गलरूप से होनेलगा ३५ और हाथियों में सवार कुमारी कन्या हाथोंसे मुक्ताओं के माला छोड़नेलगीं और आगे धूप के धूमसे और दूर्वादलोंसे संयुक्त जहां अपनी सैन्यका व्यूह बनाये कपिध्वज अर्जुन खड़े और जिस व्यूह के अग्रभाग में प्रद्युम्न, यौवनाश्व, सुवेग, महावीर अनु- शाल्व, सुधर्मा नीलध्वज, महाराज हंसध्वज आदि सैनेय और यादवाध्यक्ष हार्दिक्य तथा और यादवमें श्रेष्ठ विद्यमान थे तहां जाय सो बलवान् बभ्रुवाहन हाथीसे उतर ३६। ३९ सब राजाओं के देखते पैदल अर्जुनका पुत्र हर्षपूर्वक नमस्कार करतेहुये वह भेटकी

लाईहुई वस्तु वहां रखकर अपने आगे अर्जुन के पैर पोछने के अर्थ बार छोरे दोनों पैरोंकी धूलि अपनेबालों से पोछनेलगा उससमय सब कन्यागण फूल और मुक्ताफल वर्षनेलगीं ४०।४२ तदनन्तर सबल बभ्रुवाहन दण्डकी भांति चरणों में पतितहुआ यह देख अर्जुन के निकट के बैठनेवाले महामतियुक्त राजाओं ने गद्गद गिरासे अर्जुनके चरणोंसे उठाया तो फिर उठकर यह बोला कि हे तात! मैं उलूपीकरके सेवितहूं ४३।४४ और मुझको पूर्व में चित्राङ्गदा ने तुम्हारेही प्रसाद से उत्पन्न कियाथा बभ्रुवाहन मेरानामहै और मैंने तुम्हारे घोड़ा को नहींजाना ४५ हे धनञ्जय! अब मेरी सबराज्य तुम ग्रहणकर प्रसन्नहोवो हे विशापते! फिर अर्जुन के आगे चरणोपर अर्जुनपुत्र गिरपड़ा ३६ और सैन्य तथा भृत्यों के समेत वाणी बोला कि हे तात! क्षमाकरो तिस अर्जुनके पुत्र का ऐसा भाषणसुन अर्जुनके सेनाध्यक्षोंने देख हे महीपते! पार्थसे अग्रगामी प्रद्युम्न बोला हे पार्थ! सुन्दर हितकारी वचन कहनेवाले पुत्रको कहो क्यों नहीं ग्रहणकरते ४७।४८ हे पाण्डव! पृथ्वी में पतित आये पुत्रको उठालो और महाश्रीके समेत अपने पुत्रके तेज प्रतापको देखो ४९ इतनी कथासुनाय जैमिनिजी बोले तिस प्रद्युम्नके भाषित वचनसुन अर्जुन क्रोधकेयुक्त हो विनाश करनेवाली भावीमें लीनहोकर ५० अपने हृदय के पुत्र बभ्रुवाहन का मस्तक चरणसे ताड़ित कर महाक्रोधकरके कालके समान दारुण वचन कहे ५१ कि तू

मेरा वक्षस्थलीय पुत्र नहीं है किन्तु तूने मयसे देहीको ग्रसित करलियाहे और तू चित्राङ्गदा से वेश्यकरके उत्पन्नहुआहै पाण्डवों से नहीं ५२ पहले कैसे अपनेवल से घोड़ा पकड़करके अब वणिजकी भांति अश्वराज के देनेकी इच्छाकरताहै ५३ तू मेराउत्पन्नकिया पुरुषार्थ से हीन क्लीव पौरुषहीन पुत्र नहीं है मेराउत्पन्नकिया एक पुत्र महाबुद्धिमान् पराक्रमी ५४ कृष्णप्रिय धर्म में तत्पर प्रिय सुभद्रानन्दन क्षत्रियों का अन्तकर्त्ताथा सो गया ५५ जिस वीरने समरमे द्रोणादिक अग्रगामी वीरों को विमुखकर चक्रव्यूह भेदनकरके युधिष्ठिरकी रक्षाकी ५६ देखो कहा सियार कहां सिंह कहा पगु कहा दौड़ने वाला शीघ्रगामी कहा तू सियार और कहां मेरा सुभद्रानन्दन सिंहवत् पुत्र ५७ हे मूढ ! हे दुर्मते ! अभी तो मेरेवाणों से पृथ्वीपर न तेरी सैन्य पतितहुई न हृदयमें वाणलगे कह अभीसे क्यों भयभीत होगया ५८ और गन्धर्वराज की कन्या तेरीमाता नर्तकी कहे वेश्या है तू भी अपना धनुष और राज आज छोड़के उस के साथ नटहो चलाजा ५९ हे कुलकज्जल, कुलमें स्याहीकरने वाले ! यह रमणीय विपुलरथों को त्यागकरो किन्तु अब तुमको क्षात्रधर्म से हीन जीवन सुखप्रद कहे सुख देने-वाला नहीं है ६० निदान अब तुम गलेमें मृदङ्ग बांध और उसकी रस्सी पीठमें बांध उच्चवंशको ग्रहण कर सभा में नृत्यकरो ६१ जैमिनिजी बोले कि तब पिताके ऐसे सब वचन कहते हुये सुनकर बिहँसता हुआ वार्तालाप में

प्रवीण तहां सहित क्रोधके पाण्डवको बभ्रुवाहन प्रत्यु त्तर देनेलगा ६२ कि हे पार्थ! तेरे सबवचन मैंने क्षमा किये किन्तु उसमें एक क्षमाकरने योग्य नहीं जो तुमने मुझे वैश्यसे उत्पन्न ऐसा वचन कहा और जाना किन्तु तुमने मेरी माताको अल्पबुद्धिसे मेरे सामनेही दूषित किया अब हे धनजय! आज सग्राममें तुम्हारे आगे क्ष-त्रियत्व दिखाताहूं ६३। ६४ और सब मङ्गलमुखी कन्या और नगरके महाजनलोग अपने नगरमें प्रवेशकरजावें केवल यहां सेनाध्यक्ष स्थितरहैं-और इस घोड़ा को अब बांध राखो देखो कैसे अर्जुन इस घोड़ाको छोड़ा-तेहैं मैंने अपने बलसे बांधाहै अब शीघ्र सैन्यका व्यूह निर्माणकरो यहसुन समरके अर्थ सुबुद्धिनाम अग्रगामी वीरने सबकिया और घोड़ापकड़ स्थितकिया फिर महा-घोरकालरूप धारणकर शब्दकरतेहुये चामर और मुकुटों के समेत सुशोभित तीन अनीसे सैन्यखड़ी होगई ६५। ६८ और नवीन रत्नोंसे और सुवर्णसे भूषित मनोहर कु-ण्डलधारे और नानाप्रकारके शंखादिकों के नादकरके विनोदित घण्टा और पशमीने की झूलें धारे एक अर्बुद कहे एक अरब सुन्दर हाथी और हे राजेन्द्र! सातकोटि रथ ६९। ७० तैसेही दो अरब अश्वारूढ़ कहे घोड़ोंके सवार और महावीर युद्ध में कुशल समर में परस्पर हितकरनेवाले सत्यव्रतयुक्त बड़े पुष्ट तीनअर्बुद पदाती युद्धार्थ ७१। ७२ नानाप्रकार के शस्त्रास्त्र धारे हास्य युक्त किलकिला शब्दकरते सिंहनादकर गर्जते अर्थात

बड़े ऊंचेस्वर से भयभीत करते खड़ेहो खड़ेहो ऐसे कहते मानो रणमें परसैन्यको पतितकरते सैन्य खड़ी हुई ऐसीसैन्यको चित्रागदाकापुत्र उसीक्षणमें महात्मा पाण्डवोंकी सेनासे युद्धार्थ जोरताहुवा तिस सैन्यको घेरलिया जैसे मोहके भावसे त्रैलोक्य आच्छादित रहताहै फिर सुवर्णसे चित्रित दिव्यरथ ७३। ७५ जिसमें सुन्दर अस्त्र शस्त्रधरे मुक्ताके मालाओं से विभूषित लम्बा चमरधरा मयूराश्वपताका शोभायमान ७६ सै करों घटिया रथ भरमें बंधी सुरेन्द्रके रथको हास्यकरता हुआ ऐसारथ तिसमें सवारहो अर्जुनका पुत्र पितासे सहित शेषके कराल वचन बोला कि खड़ेहो र ७७ हे अर्जुन! अब अपना धनुष धारणकरो और मेरा पराक्रम देखो मैंने पितृमात्र से आकर तुम्हारा घोड़ा तुम को समर्पणकिया और सब राज्यभी निवेदनकी और मैं भी शरणागत हुआ तिस मिलापको तुम ने न माना किन्तु संग्राम करने में उद्यतहुये तो हम सन्नद्ध रौद्ररूप खड़ेहैं कहो अब तुम्हारा कोई रक्षक यहां विद्यमान नहीं देख पड़ताहै ७८। ८० जैमिनिजी बोले कि यह कहते हुये बभ्रुवाहन समरमें युद्धार्थ अर्जुन को बुलाता भया तब दैत्यनायक ८१ अनुशाल्व ने क्रोधपूर्वक रथ में सवारहो निकटजाय हँसते हुये सुन्दर फोंकवाले नवबाण चलाय भेदन किया ८२ तब अर्जुन के पुत्र ने भी अनुशाल्वपर एकसौ बाण छोड़े तिन बाणों को दैत्याधिपति ने बीचही में शीघ्रतापूर्वक छेदडाला ८३ तो ब-

पने बाणों को क्षीणदेख महारोष करके शिलासितान् शुकपत्रवाले कोटिन बाण अनुशाल्व प्रति छोड़ने लगा ८४ निदान दोनोंवीरों के बाणोंसे अंग भेदितहो रुधिर वहतेहुये कैसे शोभित होतेथे हे महाराज! जैसे वसन्त ऋतु में पुष्पित किंसुक रक्षसा शोभित होता है ८५ और मारे युद्ध के देवों करके छोड़ाहुआ आकाश बाणों से पूरित करदिया जैसे जलदेनेवाले मेघ परस्पर गगन को छायलेते हैं ८६ फिर बभ्रुवाहन ने चारबाणों से अनुशाल्वके तुरंगमारकर यमराज के सदन को भेज दिये और पाचवेंसे हँसतेहुये सारथी ८७ और छठेसे विहँसते हुये रथछेद तिल २ करडाला और सातवें से ध्वजा और आठवें बाण से धनुष छेद डाला ८८ और सुवर्ण की फोंकवाले दशबाण दैत्यराज के हृदय में प्रहार किये तो अनुशाल्व विरथ दशा में अपर रथपर सवार हो और महाधनुष धारणकर ८९ अनुशाल्व ने भी उसी प्रकार अर्जुन के पुत्र को विरथ किया और शरीर मे हजारों बाण मार तिसका तेज अलग करदिया ९० हे राजन्! फिर उसी क्षणमें अर्जुन के पुत्र ने वैसेही विरथ किया तो दैत्याधिपने बड़ी घोर गदा बभ्रुवाहनके प्रहारकी तब गदाकी प्रहार सहकर मणिपुराधिप ने अनुशाल्व पर महाघोर नौ बाण छोड़े ९१।९२ तिन बाणों मे मर्दित राजा अनुशाल्व मूर्च्छितहो पृथ्वीपर पतितहुआ तिसवीर को मूर्च्छित देख प्रद्युम्न युद्ध को आय यह कहने लगे कि तिष्ठ २ खड़ाहो खड़ाहो यह कहते बभ्रुवाहन को

बुलाय शीघ्रतापूर्वक बाणोंका प्रहारकरके पुरुषार्थकरके तर्जने लगा अर्थात् भयभीत करने लगा और फिर सुवर्णकी फोंकवाले दशबाण अर्जुनपुत्र के मारे तव बभ्रुवाहन क्रोधित होकर दशहजार बाण ९३। ९५ प्रद्युम्न को मार समर में यथोचित अनग किया जैसे पूर्व जन्मके अनग कामदेव थे वैसेही मारे बाणों के अब भी करदिया ९६ और जब चित्त में काम स्थिर होताहै तो मूढबुद्धि में कार्य अकार्य नहीं देखपड़ता अथवा न गोत्र से उत्पन्न न वहां कन्याका बिचार रहता किंतु फिर यह ज्ञान स्त्रीही के सगम से छूटजाता ९७ हे नृपोत्तम! तैसेही प्रद्युम्न अर्जुन के पुत्र करके समर में पीड़ित हुये कि त्रोण से शर निकालना और छोड़ना इत्यादि कर्त्तव्य सब भूलगये ९८ और सर्वकार्य विशारद बभ्रुवाहन ने अर्जुनकी चतुरगिणी सेनाको बाणों से मथडाला सो देख श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्नने फिर बाण छोड़ बभ्रुवाहन को सहित सैन्य के समर में मोहित किया ९९। १०० और मदयुक्त हाथी कामबाण से पीड़ितहो विस्मययुक्त होकर समर के बीचमें घूमते हुये पतित होने लगे १ तहां तिनके गिरने से उनकी जड़ाऊ झूलें कांति से हीन होगईं और मस्तक भी अलग होगये किंतु चेत से हीन होनेलगे तब तिनके मस्तकों से यक्षांगना अपने यौवन के अर्थ गजमुक्ता निकाल २ सुन्दर धारण करतीं और मनुष्यके शिरका मेदा निकाल अर्थात् मज्जा से हीन करके उसमें रुधिर भरके २। ३ और २ के हँसते हुये

शिरमें मारतीं और परस्पर हाथियोंके शिरसे भी रुधिर फेंकतीं ४ और चौंसठों योगिनी हाथियों के दन्त ले घूमतेहुये मनोहर नृत्य और गान करने लगीं तब यह बड़ा अद्भुत सा होताभया ५ और तहां सूखे अगवाले वैताल अपने तनुमें मास मेदा लगाय पुष्ट करनेलगे और बाहरसे भी सब देहमें लीपलेतेभये ६ और गजमस्तक, नरमस्तक, खरमस्तक, गजपुत्रो के मस्तक, हयमस्तक लेकर भैरवगण गोलाकारसे युद्धमें नृत्यकरते और गगनपथको एकसे लेकर एक कौतुकार्थ उलारते फेंकते और कंकाला, भैरव, यक्ष, पिशाच आदि आमिष भक्षी मनोहर रुधिर पीते ७। ८ और हाथियोंकी आतोंसे मास निकाल नृत्य करते हुये वैताल पिशाच उनके मृदंग बजाते मधुर ध्वनि करते ९ और मनुष्यों के शीश चरणों में क्षुद्रघटिका की तरह बाधि तिनवीरो के समागम में नाचते और गाते ऐसे कोटिन शब्द वाद्योंके देखपड़ते और हाथियोंकी टूटे शुण्डोंको मुखमें लगाय वायु निकालते किन्तु उनको तुरहीकी भाति बजाते हुये हे नृपोत्तम। पिशाच कोलाहल पूरित करते और कोई गण हाथीके कानलेकर उनमें झांझें बजाते जाते १०। १२ और हाथियों के बच्चाओं की ग्रीवा का मास तो सियारों ने निकाललिया फिर उस मांस रहित ग्रीवामें नरकी आतोंको लगाय उनका वीणा बजातेहैं १३ और ग्रीवा चरणोंमें हीनहाथी और घोड़ाके अंगकटे हुये मेदासे हीन तिनको पिशाच गण मृदंगकी भाति

वजाते १४ हे राजन्! तिस प्रद्युम्नके युद्धमें तहां ब्रह्म-राक्षस भैरवगण अपने गणोंके युक्त वीरोंके शिर चरणों से क्षीणकर कौतुकार्थ अपने क्रीड़ा करनेको गेंद बनाय इधर उधर उछारते और हे मारिष! जहां जहां श्रीकृष्ण का पुत्र सैन्यका बधकरता १५ । १६ तहां तहां रुधिर नदी सेवारकी भांति वीरोंके बालों समेत वहनेलगी जिस में तहां हाथी तो बूड़कर दिखाईही नहीं देते फिर तिस में मनुष्योंकी कहो क्या गणनाहै मानों वह महाघोरा दूसरी वैतरणीही वह रहीहै ११७ । ११८ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांप्रद्युम्नयुद्धवर्णनोनाम त्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३॥

चौबीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी कहतेहैं कि हे राजन्! उस रुधिरनदी के तीर कुत्तावीरों के पाय पकड़ २ घमीटते और आंतोंको गिरते हुये शीघ्र भक्षण करलेते और अपने स्वरसे चिल्लातेहैं १ और तहां भैरवगण मास के चहलाका किला बनाय उस के बीच में नरकपाल कहे मनुष्यों के मूड़ और हाथी घोड़ों के मूड़ स्थितकर बड़े ऊंचे स्वरसे गर्जते हुये आनन्द पूर्वक युद्ध करतेहैं और हाथियों के मास को चील्हें खींचतीं उस में आकाश तक आंतें लगीजाती हैं सो मानों सूत्रके समेत पतंगें उड़ती हैं हे राजन्! इसप्रकार प्रद्युम्न करके समर में चरित्र किये गये २ । ४ और फिर प्रद्युम्न वीरने तिस सैन्यको अपने

पराक्रम करके घोर पदातियों को मथनकर पीड़ित किया ५ जैसे प्रलयकाल में भूतनाथ चन्द्रशेखर सब को हतनकरते हैं फिर मदसे मतवारे सैकरों हाथी और रथियोंके समेत रथ और सवारोंके समेत घोड़े बलवान् प्रद्युम्न ने रण मध्यमें हजारों बाणोंसे सबको चूर्णकर बभ्रुवाहन के सेनाध्यक्षों को अपना पराक्रम दिखाया ६। ८ तिसका यह पराक्रम देख महाबल बभ्रुवाहन क्रोधितहो बाणोंसे मीनध्वज प्रद्युम्न के तुरगोंको और सारथी को आच्छादित कर मारे क्रोधके वेगसे कृष्ण-पुत्रको मूर्च्छितकर पृथ्वीपर गिरादिया तब रुक्मिणी नन्दनने अपर रथलिया इसीप्रकार उसको भी पार्था-त्मजने क्षीणकिया निदान इसप्रकार बीसरथ महात्मा प्रद्युम्न लेतेगये और वह बभ्रुवाहन सबको नाश कर-तागया और वैसेही श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्न ने महारण में तिस बलवान्के भी बहुत रथ चूर्ण किये और ति-सके सारथी को रणमे मूर्च्छित कर गिराय ९। १२ कृष्णपुत्रको भी पतित किया जबतक क्रोधित कृष्णा-त्मज पृथ्वीसे उठे तबतक अर्जुनात्मजने पकड़कर बड़े कष्ट से रुक्मिणी नन्दन को चलादिया और ताड़ित किया फिर उठकर उसपर कृष्णपुत्र प्रद्युम्न ने महा दारुण गदा छोड़ी १३। १४ तिसको बभ्रुवाहन ने तीन बाणोंसे काट फिर वेगसे शीघ्र पाच बाणमारे १५ फिर रुक्मिणीनन्दनने भी बहुत बाणों से मारा इसीप्रकार दोनोंवीर बड़े धनुर्द्धर युद्धमे कुशल शस्त्र

और अस्त्रों में निपुण १६ दोनोंको आकाश जाने की शक्ति और दोनों पृथ्वी में विहरनेवाले युद्धक्रीड़ा पृथ्वीपर आकाश में करते किन्तु तैसेही आकाशमंडल को दोनों वीरोंने बाणोंसे पूर्णकर दिया १७ हे राजेन्द्र! पृथ्वीपर यह रोमहर्षण युद्धहुआ और परस्पर मारने से सुवर्ण फोकवाले बाणों के छेद सूर्य्य की किरणों के समान स्थित दिखाईदेते जैसे अचिन्त्य श्रीकृष्ण माहमें स्थित देख पड़तेहैं १८ जैमिनिजी कहतेहैं कि बाणोंकी वर्षासे कटक समेत हाथी कैसे रुधिर से बहते हैं जैसे गेरूके धातुवाला पर्वत बहतेहुये शोभित होता १९ और सैकरों हजारों कबन्ध तिस युद्धमें शीशसे चीण मानसे हीन श्रीके बिगत शिरके गिरने पर भी महास्त्र धारे खड़े बाणोंकी व्यथाको नहीं जानते जैसे स्त्रीके रति युद्धमें तरुणीके नखप्रहारकी व्यथाको पुरुष वीर कुछ नहीं मानता और कोई वीर हाथमें खड्गलिये पृथ्वीमें गिराहै २०। २२ और कोई करपत्र कोई गदा और कोई त्रिशूल और कोई समरमें शक्तिके संयुक्त और कोई बन्दूक कोई पाश कोई परिघ कोई करालकुल्हाड़ा कोई भिन्दिपाल कोई योधा मुशलधारे २३। २४ और कोई पट्टिश कोई यष्टि कोई अंकुश कोई युद्धमें कुन्तल और कोई कुठार कोई फरसा २५ धारे ये सब प्राप्तहोकर अर्जुनके पुत्रकरके मारेगये और श्रेष्ठहाथी घटाबाधे सवार तथा हाकनेवाले सारथियों के समेतरथ घोरबाणों से अर्जुनके पुत्रने विदलीकृत करे दलिमलिडाले और

तिस पार्थात्मज के बाण रथ घोड़ा हाथी भेदन करके २६। २७ जहां पीछे दूर पदाती कवच धारे खड़े थे वहां पहुँचते थे जैसे जहा २ बहुत तृण होता है तहा २ अग्नि शीघ्र प्राप्त होकर तिस वन को भस्म करती है तैसेही बाणभी सैन्यके अन्त पर्यन्त जाते हैं उस समय बुद्धिमान् अर्जुन की सेन्य में एक वही बभ्रुवाहन व्याप्त होगया २८। २९ तदनन्तर फिर वीर अनुशाल्व युद्ध करने को आता भया फिर तिसके पीछे प्रद्युम्न नील-ध्वज सहित पुत्र के यौवनाश्व हसध्वज पुत्र के समेत बलवान् मेघवर्ण ये सब पांचो एकत्रित होकर युद्धकरने को आते भये ३०। ३१ तिन सबको आते देख बभ्रु-वाहन ने सबके पाच २ बाण मार सबको अचेत करके विरथकर हाथी घोड़ों से गिराय छत्र मुकुट आदि तोड़ फोड़डाले ३२ और महाबली वीरोंके बालछूट और सब भूषण समर में अर्जुन के पुत्र ने गिरा दिये और ऐसी दशा में मुख और चामर सूखजाते भये ३३ और सो-मपानकी भाति अपना रुधिर पीते तात्पर्य यह कि मु-खाग्र में भेद होनेसे वह रुधिर मुखमे गिरताहुआ पीते और रण के बीच में सुवर्ण फोंकवाले बाणों के लगनेसे क्षीणहो घूमते ऊर्ध्व श्वासलेते धावते भागते कोई हाथी की देह आंतों से रहित तिसमें सुख के अर्थ प्रवेश कर गये जब तक प्रवेश करें तब तक वहा एक भेड़िया प्राप्तहोकर उस हाथी की देह को खींचनेलगा खींचनेमें उसके दोनों नेत्र फूटगये फिर उस वृक कहे भेड़िया ने

हृदय में प्रवेशकरके उसका भी मांस भक्षण करलिया
तैसेही और मारेहुये शत्रुको सियारी खींचरहीहैं ३४।
३७ अर्थात् सियारियों के नखों करके छिन्न भिन्न पृथ्वी
में अमर सा देखपड़ता है और उसी को आकाशमें सु
रांगना सराग हृदय घनसार और कुंकुम से चर्चित क-
रके सुन्दर बिमान में सवार कराय अपना पति बनाय
हँसतीहुई बोली हे नाथ ! अपनी देह को रणमण्डलमें
सियारियों करके मर्दित और पीड़ित देखो अब यहां इस
समयमें हमकरके वैसेही कुचों से पीड़ित कियेजातेहो
और उन्हींके समान हमभी करुणा नहीं करैंगी ३८।४०
तब अपर बिशालाक्षी सुरांगना ने कहा कि रात्रि में तो
स्त्रीकरके ओष्ठ काटेगये और दिनको समरमें अपने करके
मारे क्रोध के चबाये गये और अब स्वर्ग में सुरस्त्रियों
करके छेदित कियेगये इस तीनबारकी व्यथा को प्राप्त
होकर हर्षनेवालोंको महाकौतुकहुआ फिर एकदेहको रण
के बीचमें बाणों से छिन्न भिन्न हाथी की देहमें लटकती
हुई देखी और दूसरी स्वर्ग में प्राप्त दिव्य स्त्रियों के सं-
मेत हिंडोला में झूलते देखी ४१ । ४३ और कोई वीर
स्वर्गमें स्त्रियों के बाहुस्तंभ मे अर्थात् भुजों के पाश से
यन्त्रित समरके दारुण पाशको स्मरण किया जिससे प्रा-
णान्त हुआथा ४४ इसप्रकार तहांसमरमें अपनी देहियों
को महायष्टियों से पतितदेखा और उसी को बिमान में
प्रियाके मुखके मदसे कपोलों से मर्दित देखा इसप्रकार
अर्जुनके पुत्र बभ्रुवाहनने युद्धमें वीरोंकोकिया ४५।४६

और जो पतित होगईथी तिसको प्रीतिकरके छिन्नभिन्नों को भी पालनाके अर्थ चारोंप्रकारकी सैन्य को अपनीही सी बनाय अर्थात् बाणों से मोहित हर्ष पूर्वक सबको अपने नगर में लेजाकर गजशाला में हाथियों को और अर्जुनके घोड़ोंको घोड़सारमें अर्जुन के बली पुत्रने बँधा-दिया और प्रद्युम्नादि अग्रगामी वीरोंको बाण वृष्टि से मोहितकरके रथादिक उनकी सब वस्तु लेकर हेराजन्! अपने नगरको चलागया ४७। ४८॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांबभ्रुवाहनयुद्धवर्णनंनाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पच्चीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हेराजन्! यह बभ्रुवाहन और अर्जुन का संग्राम ऐसाहुआ जैसा कुश और रामचन्द्रजीसे अ-श्वमेधका घोड़ा धारण करनेपर हुआथा १ यह सुन राजा जनमेजयने पूँछा हेमुने! कहो रामके पुत्र और कुशकौन हैं जिन्होंने बाणवृष्टि की और उनपुत्रोंको कैसे रामजीने रणके बीचमें जीता क्या श्रीरामजी ने यह जानाथा कि हमारेही पुत्रहैं सो हेमुने! विपुल राम चरित्रान्तर्गत सर्व पातक नाशिनी रामकथा विस्तार पूर्वक हमसे कहो २। ३ तब राजाका यह प्रश्न सुन जैमिनिजी बोले हेराजेन्द्र! महाबाहु श्रीरामजीका महाद्भुत पूर्वचरित्र विस्तारपूर्वक हम कहतेहैं सुनो ४ श्रीरामचन्द्रजी ने महाबली कुम्भ-कर्ण और रावण तथा अपर घोर राक्षस मेघनादादि

वीरोको समर मे मार ५ पृथ्वीका भार उतार श्रीसीता-
जीको अग्निमुख से शुद्धकर वीरवर राक्षसेन्द्र विभीषण
और महात्मा लक्ष्मण तथा अग्रगामी हनुमानादि
वानरों से आच्छादित कहे उन से घिरे हुये अपने नगर
अयोध्या में प्रवेश किया जहा से ब्राह्मणों के शिरमौर
महात्मा वशिष्ठजी मगल पाठपढ़ते हुये सन्मुख आये
तव महात्मा वशिष्ठजीको देख दाशरथी रामचन्द्र रथसे
६।८ उतर उसी क्षणमें तिन मुनिको प्रणामकिया तिन
के पीछे फिर लक्ष्मण सीताने नमस्कारकिया९तदनन्तर
उन सतोगुणी वशिष्ठजी के समेत राजीवलोचन राम
लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न को आगे कर कैकेयी सुमित्रा के
निकट जाय वन्दना करते हुये पहले कैकेयी को नम-
स्कारकर पीछे माता कौशल्याको प्रणामकिया १०।११
जिनकी देह मलीन चहला से भरे सव अंग रामचन्द्र
के दर्शनों की लालसामें पुत्रदुःखसे पीड़ित रामजी के
दर्शनों से हर्षितहो कमलनैन रामजी को देख आनन्द
पूर्वक उठकर अधनी के समान धनको प्राप्त किया१२।
१३और पुत्रके वड़े स्नेहसे नेत्रोंके जलसे स्नानकराया
विशेष जटाओंसे वड़े स्नानसे होगये तव माताने प्रिय
रामको कराग्र कहे हाथ के आगे से स्पर्श करते हुये
राक्षसों के अस्त्रोंवाले घाव देख पुत्रसे ऐसे शुभ वचन
कहे १४ । १५ कि जो ब्राह्मणों के शिरमौर वशिष्ठजी
कैसे ये वचन कहते थे कि तुम्हारा पुत्र अच्छेद्य अभेद्य
और यम को भी क्लेश देनेवाला है १६ क्या मैं इसको

वृथामानूँ कि जो तुम बाणोंसे छिन्न भिन्न होगये अथवा
कोई मुनीश्वर कहते हैं कि शिवजीके भक्त तिनको स्थान
दियाहै सो मेरी मतिमें तो ये बाणही हैं तब तिन
अंगोंको कौशल्याने अपने हाथसे दया युक्त १७।१८
फिर स्पर्शकरके महाआनन्दको प्राप्तहुई जैसे ब्राह्मण
ज्ञानलाभकरके अतीव हर्षित होताहै तिस माताके हाथ
से स्पर्श करतेही श्रीरामचन्द्रजी दारुणदुःखसे छूटगये
१९ और माताको महाबाहु श्रीरामचन्द्रजीने पृथ्वीमें
शिर लगाय दण्डवत् किया इसके उपरांत कौशल्याजी
चेतपूर्वक अपनी बधू सीताजीसे कुशल पूँछनेलगीं २०
इसप्रकार सब भाइयोंके समेत आनन्द पूर्वक अयोध्या
पुरी में निवास करके सम्पूर्ण पृथ्वी और पर्वत और
कानन कहे रमणीय बनोंकी रक्षा करनेलगे २१ और
उन महात्माकी राज्यमें प्रजागण सुख भोगने लगे
किन्तु ब्राह्मण वेद पढनेलगे और गौवोंसे जब बछरा दूध
पीकर तृप्तहोजातेथे तब वह बचा दूध गोपाल सुन्दर
दोहनीमें लेकर प्राप्तकरते और वृक्ष सदैव फलदेते सब
लता सर्वदा फूलतीं २२। २३ तहा की सब औषधी
तत्काल फल देनेवाली जो दुःखकाल में आनेसे सब
रोगोंको विनाश करतीं और सरयूनीरमें यज्ञ करनेवाले
यज्ञ कररहे हैं २४ जिनके चारोंओर यज्ञस्तम्भ पशु
शोभित वह स्थान ऊँचेमें प्राप्त देखपड़ताहै जैमिनिजी
बोले कि हे राजन्! इसप्रकार श्रीरामचन्द्रजी सुख-
पूर्वक पृथ्वीमें तीनों भाइयोंके समेत अग्नि सत्पारते

वीरोको समर में मार ५ पृथ्वीका भार उतार श्रीसीता-जीको अग्निमुख से शुद्धकर वीरवर राक्षसेन्द्र विभीषण और महात्मा लक्ष्मण तथा अग्रगामी हनुमानादि वानरों से आच्छादित कहे उन से घिरे हुये अपने नगर अयोध्या में प्रवेश किया जहा से ब्राह्मणों के शिरमौर महात्मा वशिष्ठजी मंगल पाठपढ़ते हुये सन्मुख आये तब महात्मा वशिष्ठजीको देख दाशरथी रामचन्द्र रथसे ६।८ उतर उसी क्षणमें तिन मुनिको प्रणामकिया तिन के पीछे फिर लक्ष्मण सीताने नमस्कारकिया९तदनन्तर उन सतोगुणी वशिष्ठजी के समेत राजीवलोचन राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न को आगे कर कैकेयी सुमित्रा के निकट जाय वन्दना करते हुये पहले कैकेयी को नम-स्कारकर पीछे माता कौशल्याको प्रणामकिया १०।११ जिनकी देह मलीन चहला से भरे सब अंग रामचन्द्र के दर्शनों की लालसामें पुत्रदुःखसे पीड़ित रामजी के दर्शनों से हर्षितहो कमलनैन रामजी को देख आनन्द पूर्वक उठकर अधनी के समान धनको प्राप्त किया१२। १३और पुत्रके बड़े स्नेहसे नेत्रोंके जलसे स्नानकराया विशेष जटाओंसे बड़े स्नानसे होगये तब माताने प्रिय रामको कराग्र कहे हाथ के आगे से स्पर्श करते हुये राक्षसों के अस्त्रोंवाले घाव देख पुत्रसे ऐसे शुभ बचन कहे १४ । १५ कि जो ब्राह्मणों के शिरमौर वशिष्ठजी कैसे ये बचन कहते थे कि तुम्हारा पुत्र अच्छेद्य अभेद्य और यम को भी क्लेश देनेवाला है १६ क्या मैं इसको

वृथामानूँ कि जो तुम बाणोंसे छिन्न भिन्न होगये अथवा कोई मुनीश्वर कहते हैं कि शिवजीके भक्त तिनको स्थान दियाहै सो मेरी मतिमे तो ये बाणही हैं तब तिन अगोंको कौशल्याने अपने हाथसे दया युक्त १७। १८ फिर स्पर्शकरके महाआनन्दको प्राप्तहुई जैसे ब्राह्मण ज्ञानलाभकरके अतीव हर्षित होताहै तिस माताके हाथ से स्पर्श करतेही श्रीरामचन्द्रजी दारुणदुःखसे छूटगये १९ और माताको महाबाहु श्रीरामचन्द्रजीने पृथ्वीमें शिर लगाय दण्डवत् किया इसके उपरात कौशल्याजी चेतपूर्वक अपनी वधू सीताजीसे कुशल पूँछनेलगीं २० इसप्रकार सब भाइयोंके समेत आनन्द पूर्वक अयोध्या पुरी में निवास करके सम्पूर्ण पृथ्वी और पर्वत और कानन कहे रमणीय वनोंकी रक्षा करनेलगे २१ और उन महात्माकी राज्यमें प्रजागण सुख भोगने लगे किन्तु ब्राह्मण वेद पढनेलगे और गौवोंसे जब बछरा दूध पीकर तृप्तहोजातेथे तब वह बचा दूध गोपाल सुन्दर दोहनीमें लेकर प्राप्तकरते और वृक्ष सदैव फलदेते मन लता सर्वदा फूलतीं २२। २३ तहा की सब औषधी तत्काल फल देनेवाली जो दुःखकाल में आनेसे [illegible] रोगोंको विनाश करतीं और सरयूतीरमे यज्ञ करनेवाले यज्ञ कररहे हैं २४ जिनके चारोंओर यज्ञस्तम्भ [illegible] शोभित वह स्थान ऊँचेमें प्राप्त देखपड़ताहै जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! इसप्रकार श्रीरामचन्द्रजी [illegible]-पूर्वक पृथ्वीमें तीनों भाइयोंके समेत [illegible]

हुये राजीवलोचन श्रीरामचन्द्रजी सत रज तम तीनों गुणों के युक्त राज्य करते भये २५। २६॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायाकुशलवोपाख्यानेअयोध्याप्रवेशोनामपंचविंशतितमोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! इसप्रकार श्रीरामचन्द्रजी नौहजार वर्ष राज्य करतेहुये अपने पूर्वजों की स्थिति कहे मर्यादाको पालनकरतेहुये सीताजीमें प्रजा कहे सन्तानको न पाया १ तिसके उपरांत बहुत काल के अनन्तर श्रवणनक्षत्रके चतुर्थ चरणमें कि जिसके देवता विष्णुहैं और चरलग्नके प्रवृत्तहोते कि जिससे माताको देशान्तर होता है उसमें सीताजीने गर्भधारण किया सो रामचन्द्र सीताजीके साथ चारमास विहार करतेभये २। ३ फिर पांचवें महीनेके प्राप्तहोनेपर राघवराज रामचन्द्रजीने ऐसा स्वप्न देखा कि गंगाजी के निकट लक्ष्मणकरके छोड़ीसीता अनाथकी भांति विलाप कररही हैं यह आश्चर्यित स्वप्नदेख विस्मयसे युक्त प्रातःकाल उठ आह्निक कर्म्मको समाप्तकरके श्रीरामचन्द्र वशिष्ठजीसे यह बोले ४। ५ हे ब्रह्मन्! गंगाजीके तटमें रोदन करतीहुई सीताको स्वप्नमें मैंने देखाहै तिस के गर्भका जो विघ्नहै उसकी शांतिके अर्थ पुण्यनक्षत्र शुभ दिनमें सीताकी पुंसवनक्रिया शीघ्रही बताइये इस प्रकार रामचन्द्रजी के वचन सुन मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठजी

बोले कि ६ । ७ हे विभो! कृष्णपक्षको निहाय शुक्लपक्ष पुष्याकयोग पंचमी मे पुंसवनक्रिया करणीयहै और हे महाबाहुराघव! जबतक वह मुहूर्तका दिनआवे तबतक ब्राह्मणोंको तृप्तकरिये ८ । ९ मुनीश्वर वशिष्ठजीके ये वचन सुन रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा हे तात! पंचमी को सीताका पुंसवनकर्म होवेगा १० तबतक तुमजाकर राजा जनक और मुनिराज अन्य मुनियों से घिरेहुये विश्वामित्रजी को लेआवो ११ लक्ष्मणजी यह आज्ञा पाय रामचन्द्रजी को नमस्कारकर उत्तर दिशा को गये तब महाबाहु रामचन्द्र ने छ कोस लम्बाई चौड़ाईके समान शिल्पियों से मण्डप बनवाया तिसमें वशिष्ठजीने मनोहर और रुचिर यज्ञवेदी बनाई १२ । १३ और उदुम्बर कहे गूलर फलोंकी माला तथा सूत्रवेष्ठन और गूलर के काष्ठके चौकोनपीढा और वीणाइत्यादि सम्पूर्ण क्रिया के अंग वशिष्ठजीने मँगवाये १४ । १५ तबतक शीघ्रतापूर्वक लक्ष्मण ने महामुनि विश्वामित्र और राजा जनक को बुलाय रामचन्द्रजी से शिरनाय कहा १६ हे रामजी! राजाजनक व महातपस्वी विश्वामित्र अच्छे प्रकार आये हे तात! अब इनकी अर्घ्यविष्टर पाद्य से पूजन करिये तब रामजी ने लक्ष्मण के ये वचन सुन विश्वामित्र और राजाजनक इत्यादिकों को नमस्कार कर अर्घ्यदान से पूजन करने लगे १७ । १८ तदनन्तर मुहूर्त प्राप्त होनेपर वशिष्ठजी ने कहा हे राम! अब सीता सहित स्नानादिक कर्म करिये १९ और

अपने भाई और माताओ से घिरे हुये आइये इसके अनन्तर दशरथनन्दन रामचन्द्र अच्छे प्रकार सीता के समेत स्नानकर वेद और स्मृति के जाननेवाले सदाचारी कर्मकाण्ड में निपुण ब्राह्मणों से भूषित रमणीय यज्ञमण्डप में आये २० । २१ तब वशिष्ठजी ने रामचन्द्र और सीताजी को सुन्दर पीढा में बैठाय पहले चरु बनाय फिर तिल घृत की आहुतियों से होमक्रिया सम्पूर्ण होमकर ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठजी जल से अभिषेककर सीताजी के केश पाशों में सूत्रवेष्ठन कहे बालों के ऊपर छत्रडाला २२ । २३ और उसीसमय यज्ञाङ्ग फलके देनेवाली गूलरों की माला भी वशिष्ठजी करके डालीहुई ब्रह्माण्डों के समूहों कीसी पंक्ती धारण किये शोभितहुई तिससमय वीणा में प्रवीण भरतजी बीणा बजाते सीताजी के निकट प्राप्त हुये २४ । २५ मानों सो भरत गर्भही को गानविद्या सिखाते हैं इस प्रकार स्वस्त्ययनकर रघुनाथजी खीर शर्करा और घृत से ब्राह्मणोंको तृप्त कर वस्त्र सुवर्ण भूषण रथ और घोड़ों के समूह दिये २६ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर राजा जनकभी अकण्टक राज्य रामचन्द्रजी को दे विश्वामित्र को आगे कर वनवास को जाते भये २७ फिर एक समय अयोध्याजी में रात्रिविषे सीताजी के समेत शयन करते हुये रामचन्द्रजी ने हर्षित हो सीताजी से यह वचन कहा हे कल्याणकारिणि सीते! किस वस्तु में तुम्हारी कैसी वाञ्छाहै सोकहो रघुनाथजी

के वचन सुन सीताजी स्वामी से बोलीं की हेनिष्पाप राघव! तुम्हारी प्रसन्नतामे सदैव मेरी इच्छापरिपूर्ण हे केवल भागीरथी गंगाजीके निकट वास करनेको वाञ्छाहै २८।३० जहा ऋषिपत्नी और मृगचर्मधारी ऋषीश्वर वास करतेहैं यह सुन रामचन्द्रजी ने विहँसकर कहा हे सीते! तुम चौदहवर्ष दण्डकारण्य में वासकरके क्या सतुष्ट नहीं भई किन्तु अवतो प्रथम गर्भसम्बन्धी तुम्हारा मनोरथ कैसे निष्फल होसक्ताहै ३१। ३२ प्रातः काल भागीरथी गगाजीके निकट तुम्हारा गमनहोगा इसप्रकार सीताजीसे प्रतिज्ञाकर रामजी शयन कररहे ३३ फिर अर्द्धरात्रि के उपरांत पुरचारी कहे नगरके घूमनेवाले दूत रात्रिको आय एकातमें जाय श्रीरामचन्द्रजी से अलग २ समझाय वातें कहनेलगे ३४ हेमहाराज! तुम्हारे यश और प्रतापको सर्वत्र सव मनुष्य वर्णनकरै हैं तव रामजीने पूँछा किइससमय हमारे पुण्यश किस प्रकारसे विद्यमान होरहेहैं किन्तु हमारा व हमारी स्त्री तथा भाइयोंका सुकृत दुष्कृतकहे पुण्य पापयश अयश घूमतेहुये तुमने रात्रिको जो सुनाहो सो दण्डसे भय न करके सव सत्य२ कहो तव हँसतेहुये रघुनाथजी से एक दूत वोला कि ३५। ३७ हेराम! तुम्हारे दर्शनमात्रमे दुष्कृत भस्महोजाते हैं क्या तुम्हारे भी पातकहैं यह वात मैंने उलटीमानी ३८ और हे रघुनन्दन! हम पापिष्ठी स्थानो में घूमतेहै परन्तु भरताग्रज तुमको देख सम्पूर्ण पातकों से छूटजातेहैं ३९ तिसपर भी यह लोक

दुर्निवार है अर्थात् कोई दुष्टों को निवारणकरने योग्य नहीं है कोई कुछ दुष्ट वचन कहे हैं मैंने अर्द्धरात्रि में घूमतेहुये एक अतीव आश्चर्य देखा कि इसी पुरमें कोई एक रजककी स्त्री अपना घरछोड़गई और पिताके घर में जाय चार दिन रही ४० । ४१ तब उसका पिता चिन्ताको प्राप्तहुआ कि जिसकी कन्या पिताके घरमें रहे निश्चयसे यह वार्ता स्मृति और शास्त्रसे विरुद्ध है सो मैंने यह क्या किया ४२ तिससे इसकन्याको अब उसके पतिके निकट लेजाइहों जैसे मलीन कपड़ा का मैल मैं शुद्धकरके धोताहूं तैसे घरमें स्थित कन्या का मैलरूपी कलक कैसे न शुद्धकरूं इसप्रकार कह सम्पूर्ण भाइयों को सगलेकर वह रजक ४३ । ४४ जामाता कहे दामादके निकट जाय कन्या उसको निवेदनकी तब उस रजकका दामाद् कोधकर जिह्वासे गलफरोंको चाटतेहुये बोला ४५ कि तुम्हारी यह मति उत्पन्न हुई सो मैं रामहूं कि जो राक्षसों के घरमे रही सीताको फिर घर लेआये ४६ हे रघुनन्दन ! क्रोधसे इतनी यहीबात वारम्बार उसने हाथ उठाके कही और फिर कहा कियदि समर्थ मार्गमें प्राप्त राजा रामचन्द्रने किया तो तिसप्रकार मैं न करूंगा ४७ हेराम ! इसप्रकार निश्चय से वह रजक कहैहै और दूसरा कोई जन ऐसे कहनेको समर्थ नहींहै तद-नन्तर यह एकान्तकी बात सत्यकहते मैंने सुनी क्योंकि श्रीरामचन्द्र गंगाजीके तटस्थद्वीप में यज्ञस्तम्भगाड़ा गया धर्मनिष्ठ रहे रावणको जीता ऐसे त्रैलोक्य के

शरणदेनेवाले रामचन्द्र जगत्में किसके समानहैं ४८। ४९ यहरजक लोकाचारोंमे लीन और गुणो विषे इच्छा से रहित मूढ यहगुणी रामचन्द्रजीको नहीं जानैहै ५० इस प्रकार हे राम! मनसे विचारके मैं तुम्हारे निकट आया तिसदूतको शीघ्र विदाकर राघवजी विचारकरते भये कि यदि अग्निमे तो जानकी शुद्धहै परन्तु उसकी इसलोकमें निन्दा होतीहै तिससे जानकी को त्यागकरैं वा न त्यागकरैं बहुतकाल इसविचारको करतेभये ५१। ५२ कि कमलमुखी मृगनयनी सीताको वैदिकों के आचारके श्रेष्ठ पद्धतिके समान कैसे त्यागकरूँ ५३ फिर जैसे कलियुगमें ब्राह्मणोंके वेदकी भांति इस सीताको कैसे छोड़ देऊँ इसप्रकार विचारते श्रीरामचन्द्रजी को प्रात काल होगया जैमिनिजी बोले तदनन्तर रघुनन्दन ने जानकीजीके त्याग करनेमें मनको दृढकरके भरत वा शत्रुघ्न तथा लक्ष्मण को बुलाना चाहा ५४। ५५ इसी अनन्तर में रघुनाथजी की सेवा करने को भरत तथा लक्ष्मण और महाबाहु शत्रुघ्न प्राप्तहुये ५६ तबते सम्पूर्ण म्लानमुख दीनचित्त बैठे रामचन्द्र को देख परस्पर बोले कि हम शीघ्र नहीं आये तिससे क्या भ्राताजीने क्रोध किया वा हमको दान वर्जित देख क्रोधित हुये क्या हमने प्रात:काल श्रेष्ठ ब्राह्मणों की पूजन नहीं की तिसमे कि प्रात काल जागे नहीं तिससे अथवा किसीको शीघ्रही नमस्कार नहीं किया अग्निके समान तेजवाले मत्र भाई ऐसी वार्त्ता करते हुये ५७। ५९ आप रघुनाथजी को

नमस्कारकर बोले हे राम! सदा हम तुम्हारे मनके प्रेरक तुम्हारे में कर्म समर्पण किये हुये तुम्हारे दर्शनों की लालसायुक्त हमसे साक्षात् क्यों नहीं आज्ञाकरतेहो श्री रामतिनके ऐसे वचनसुन धीरेसे बोलते भये ६० । ६१ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकुशलवोपाख्याने रामवाक्यनामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले हे राजन्! फिर रामचन्द्र ने जिस प्रकार दूतने रात्रिमें कहा वह वर्णन किया कि जैसे पाखण्डी वेदकी तैसेही मनुष्य सीताकी निन्दा करते हैं १ जैसे संसारी भयकेडरसे योगियोंकी ममता तैसेही लोकापवाद के भयसे जानकी मुझसे छूटती है २ सो रामके वचनसुन रोमाञ्चित शरीर तीनोंभाई कांपने लगे तिनके बीच में भरत रघुनाथजी से ये वचन बोले हे राम! तुमतो कृपालुहो राजनीति में यह कहा है कि अन्त्यजों से अपने बलकरके कोई कपिला गौ लावे पश्चात् संसर्ग से दुष्टजान तिसको वनमें कौनछोड़े ३ । ५ तिसीप्रकार तुम राक्षससे सीतालाय छोड़नेका विचार करतेहो प्रथम ही अग्निके मुखमें सीताने अपनी शुद्धि तुमकोदी है सो तुम भूलगये अथवा पिताका कहा भूलगये ६ लपटोंसे, मानों आकाश को चाटती हुई इसप्रकार की प्रज्वलित अग्निमें सीताके प्रवेश करनेपर आकाशमें विमानपर सवार दशरथजी तिससमय हे राम! तुमसे सुन्दरवचन

बोले हे पुत्र ! इस पतिव्रता जानकीको शुद्धजानो ७।८ इसके चरित्रों ने हमारे सम्पूर्ण कुल को निर्मल किया जो पुत्र शोकसे मृतक हुये तिनकी भी श्रेष्ठगति भई ९ जिससे जानकी हमारी पुत्र वधू है इससे हमको स्वर्ग वास हुआ यह वचन दशरथजी ने कहा सो तुम भूल गये १० फिर ब्रह्मादिक देवगणों ने जो कहा उसको स्मरणकरो अग्निमें शुद्ध सुन्दरी फूलीकली के समान वानरोंसे गुप्त जानकी वानरोंने देखी व देखतेही प्रसन्न हुये तिसपर भी हे राम ! तुम्हारा मन कठिन देखपरैहै ११ । १२ जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार के वाक्य भरतजीने कहे तब रामचन्द्रजी बोले कि हे तात ! तुम ने सत्यकहा जनकनन्दिनी शुद्ध है १३ परन्तु लोकाप-वाद दुर्वारहै अर्थात् किसीके निवारणकरने योग्य नहीं यह राजाओंके यश को नाशकरदेयहै और यशहीनजीते भी मरे हैं राजा पुरूरवा, हरिश्चन्द्र, नहुष, पृथु ये यशहीसे पृथ्वी में श्रेष्ठ अग्रणीय गिनेजाते हैं १४।१५ मान्धाता, सगर, अम्बरीष, भगीरथ, ऋतुपर्ण, नल इनके सिवाय और जे पुण्ययशवाले राजाहैं ते निश्चय से सुन्दर यशही से प्रसिद्धि को प्राप्तहुये हे रघूद्वह ! यशकेसमान मनुष्योंको यहां कुछनहीं है १६।१७ पाप से रक्षकपुण्यदाई स्वर्गादिक प्राप्ति को करनेवाला है जिस का अयश मनुष्य पृथ्वीपर गानकरैं उसका जन्म वृथा मानों है और जीवनभीनिरर्थकहै मनुष्य शुद्धकर्ममें चाहै एक मुहूर्त्तमात्रही जियें और यशके विना कभी मनुष्य

युगान्तरभर न जिये क्यावहुतकाल काक उलूकादि पक्षी नहीं जियैहैं १८।२० तिसीप्रकार यश विवर्जित मनुष्यों का जीवनमानों है जिनपुत्रोंसे और भाई स्त्रियोंसे पुरुषों से अयशहोवे २१ पुत्र भाई स्त्री येसब प्राणोंसे प्रियहोवें तौभी त्यागकरने योग्य हैं सुनाजाता है कि पूर्वमें सत्य-वादी राजाशिविने यशही के अर्थ अपनी देह का मांस विष्णुको दिया तिसीप्रकार दानी कर्णने कवच इन्द्र को देदिया और मेघ वाहन गरुड़जी को प्राण देनाभया यशहीके अर्थ कीर्तिकारी दधीचिऋषि अपने हाड़ देता भया तिससे मैं भी इस सीता को त्याग करूंगा जैसे सर्प पुरानी खाल कैंचुलि छोड़देता है जो मेरे जीवनमें तुम्हारी इच्छा होय तो हे कैकेयिनन्दन। २२।२५ फिर इस प्रकार तुम को कहना योग्य नहीं है तव तक ल-क्ष्मणजी क्रोध युक्त हाथ पीटते और हाथों से हाथ मलते व सर्प के समान श्वासलेते नेत्रोंसे दुःख उत्पन्न तप्तजल छोड़तेहुये वोले आह! हे रघुनायक! क्या लो-कापवादसे सीता त्याज्यहै स्त्रीकी कलह से कोई माताको छोड़ने के योग्य होताहै २६। २८ तिसीप्रकार सर्वलोक की माता सीताको तुमछोड़ा चाहतेहो जे सीताजी को दूषणकरैहैं उनपापियोंको मैं नाशकरूंगा २९ हे राम! जैसे म्लेच्छ पूज्यअर्द्धमुण्डयवनों से श्रुति दूषित होयहै सो क्या ब्राह्मणोंकरके त्याज्यहै यह विचारिये ३० तव तक क्रोधयुक्त शत्रुघ्न रामजीसे वोले हे राघव! जोवचन तुमने कह्यो है तिससे मैं प्राणों को छोड़देऊंगा किन्तु

जिनके प्राण तुमनेछुड़ाये वह देवताहोगये ३१ जो तुमभी प्राणछोड़ोगे तो देवताहोजाओगे अथवा मृतकहोने पर तुमको पतिव्रता सीता जियावेगी तुम तिस मृगनयनी सीताको कैसे जियावोगे शत्रुघ्नके वचन सुन रामचन्द्र धीरा२ वचन बोलतेभये ३२। ३३ हे पुरुषश्रेष्ठ! अपवाद भयसे डराहुआ मैं अपनाको और तुम सबको त्यागकरूँगा तो फिर वैदेहीको क्या जैमिनिजी बोले हे राजन्! दुर्वा-रवचन रामचन्द्रके कहते सीताजीके छोड़नेका उद्यमक-रते देख तहासे भरतशत्रुघ्न अपने२स्थानकोगये३४।३५ लक्ष्मणजी दुःखारण्यमें प्राप्त रामचन्द्रजीको छोड़नहीं गये तदनन्तर केवल लक्ष्मणजी को देख रामचन्द्रजी बोले हे सुमित्रानन्दन! खड्गसे मेराशिर काटो इसमें वि-चार न करो अथवा गंगाजीके निकट सीताके छोड़नेको जावो इसमे देर न करो ३६। ३७ सीता के परित्यागका दोष हमकोहो तुमको न हो और तुम्हारे चरणों को नम-स्कार करोहों हे तात! नदीकिनारे सीताजीको छोड़ो ३८ इसप्रकार जब रामचन्द्रजी ने कहा तब लक्ष्मण लज्जा से श्वासले संशययुक्त चित्तहोकर चित्तमें विचारतेभये ३९ कि धर्म ... चो में गुरुकी आज्ञा श्रेष्ठ सुनीहै और पूर्वमें परशुरा... जी ने पिताकी आज्ञामे शीघ्रही अपनी माताका फरसामे शिरकाटडाला इसप्रकार मनमें राम-चन्द्रजीकी आज्ञाकरनेको निश्चयकर ४०।४१ सारथी से बोले कि घोड़ोंके समेतरथला यहसुन सारथीरथलाया तिसमें सवारहो लक्ष्मणजी ... गंगाजीके मन्दिरको -

तदनन्तर रथसे घोड़े पृथ्वी में गिरपड़े फिर सारथी के चाबुककी मार से ताड़ित धीरे २ चलतेभये ४२। ४३ सीताकामन्दिरपाय लक्ष्मणजी ने रथसे उतर जनकात्मजाके मन्दिरमें प्रवेशकर नीचामुखकिये नमस्कारकिया ४४ तब इसप्रकार लक्ष्मणकोदेख सीताजी बोलतीभई कि हे लक्ष्मण! कमलनैन मनोरथदेन मेरेस्वामी रघुवंशनाथ कने हँसतीहुई जो मैंने रात्रिकोमागा सो दिया देने परभी जबतक तुमनहींदेखोगे तबतक निष्फलहै४५।४६ इससमय रघुनाथजी की उसबात के सत्यकरनेको तुम आयेहो मुनीश्वर और मुनीश्वरों की स्त्रियों के देने को अपने कल्याण वृद्धी के अर्थ चित्र विचित्र वस्त्र अगरु चन्दन मैं लेतीहू तिस जनकात्मजा के ये वचन सुन लक्ष्मणजी व्यथित होते भये ४७। ४८ ॥

सो० जल छोड़तहैं नैन एव कुरुइति तिन कह्यो।
पराधीन नहिं चैन भ्रात वचनफसरी बँधे॥

जैमिनिजी बोले तदनन्तर सीताजी ने वस्त्र और चित्र विचित्र मृगचर्म और अनेकप्रकार भक्ष्यपीन वस्तुओं को लेकर और श्रीरामचन्द्र की सुवर्ण की मणि चित्रित पादुका ले ये सब वस्तु ले रथ में धरकर सासु के पूछवे को गई ५०। ५१ रामचन्द्रकी माता कौशल्याजीके नमस्कारकर सीता ने कहा कि मेरे गर्भ विद्यमानहै इसमे भागीरथीगङ्गाके तटपर विहार करने का मेरा मनोरथ हुआ ५२ ॥

सो० तेहिपूरणकेकाज लक्ष्मणदेवरप्राप्तहैं।

देहुअनुज्ञा आज तवजैहौं मैंतदवनहिं ५३ ॥

इसप्रकार कौशल्याजीने सीताके वचन सुन कहा हे सीते! शूकर व्याघ्र सिंहादि भयंकर जीवोंसे व्याप्त कण्ठकीय वृक्षोंसे युक्त तिसदारुण वनको कैसे जातीहो ५४ वहुत कालसे प्राप्त राज्य सुखको छोड़ हे पवित्र मुसुक्यान युक्त! और निन्दा रहित सीते ठण्ढी गरमी वायु वर्षादि दुःखोंके देनेवाले कठोर हृदयोंको सेवनीय वन जानेकी इच्छाकरतीहो फिर तुम रामचन्द्रजीको छोड़ वन जानेके योग्य नहींहो ५५ । ५६ प्राप्त काल परिश्रमसे तुम्हारा मुख मलिन और ओष्ठ सूखते हैं इस प्रकार सासके वचन सुन सीता बोली कि मेरे स्वामी वनवासी सदैव शत्रुमर्दन और निर्मलहैं जिन्होंने कोटियों वानरों को समर में जियायाहै तिन्हींका स्मरण करतीहुई मुझको वन दुःखदायी न होगा फिर राम नामको जपती मेरेओष्ठ कैसे सुखायँगे और मन वचन कर्म से मैंने तुम्हारी सेवा करी है ५७ । ५९ तिससे वनमें मुझको पीड़ा न होगी मैं तुम्हारे नमस्कार करतीहूं इसप्रकार सासकी प्रदक्षिणा कर आनन्द युक्त सीता ६० कैकेयी और सुमित्राके नमस्कार और आज्ञा मागकर जहा वीरलक्ष्मण रथलिये खड़ेथे तहाको जाती भई ६१ सीता मनमें आनन्दितहो रथमें सवारभई तव वे सुमित्रानन्दन लक्ष्मण गद्गद कण्ठसे सारथी प्रति वोले ६२ कि चावुककी मारसे घोड़ोंको हाको जिसमे शीघ्र चलें जैमिनिजी बोले हे राजन्! लक्ष्मण के ये

वचन सुन सारथी बोला ६३ हे पुरुषर्षभ! मैं घोड़ों के मनको जानताहूँ चलाचल बिचारमें पड़े घोड़े यहांबोलनेकी इच्छाकरै हैं ६४ प्रथम तो सीताके दु:खसे दु:खित पृथ्वीमें जो शीघ्रचलैं तो टापोंसे पृथ्वी पीड़ितहोवे ६५ हमारी चाल समरमें सराही जातीहै किन्तु इस कुत्सित मार्गमें नहीं हे भरतानुज! इसप्रकार घोड़े हृदयमें विचारते हैं ६६ तिसपरभी घोड़ोंको पुचकारताहूँ मेरे हस्तलाघवको देखो इसप्रकार कहिके सारथीने घोड़ों की गर्दनपर हाथ फेरा और बागोंको सम्हार चाबुकको उठाय तिसकाल शीघ्रगामी घोड़ोंको चलाया ६७॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायाङ्कुशलवोपाख्याने लक्ष्मणप्रस्थानंनामसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हे राजन्! कमलानना सीता को जाती देख अयोध्या दु:खमें पीड़ितहुई १ मानों वायु से चंचल ध्वजपत्रों से निवारण करतीसी देख परै है तदनन्तर तिस रथमें जाती जानकी मार्गमें बहुत घोर अशकुन भी देखतीभई कि सियारी सम्मुख आय भयंकर शब्द करती है हिरण मार्ग काट इधर उधर दौड़ते हैं हे जनमेजय! दहिना नेत्र फरकता है २। ४ जैमिनिजी बोले हे राजन्! तदनन्तर विपरीति शकुन दु:ख के चिह्न देख विस्मित जानकी वीरलक्ष्मणजी से बोली लक्ष्मण ये चिह्न देखो कि भयसूचक सियारी सियार मृगा ये मार्गमें आय खड़े और रोदन कररहे हैं ५। ६

रहे हैं ६ कौशल्याके आनन्द देनेवाले रामचन्द्रजी का परमकल्याणहो और भुजाओ में बलप्राप्तहो और आयुर्दाय बढ़ै ७ जिन रामचन्द्रजी ने घोर राक्षसो के वृन्द तीक्ष्णवाणोंसे पृथ्वी में गिराये तिनका सर्वदा कल्याण हो ८ और दण्डकारण्य में जिन्होंने खरदूषण त्रिशिरा को यमधाम को पठाया सो राम निश्चय राज्य करें ९ जिन रामने वानरों से अथाह सागर को थाह किया और विभीषण को भयसे बचाया सो अयोध्याधिप सुखीहो १० जिन्होंने सुन्दर तीक्ष्ण वाणोंसे समर में साक्षात् पापमूर्त्तिलङ्कापति पृथ्वीमें प्रसिद्ध महावली रावण कुम्भकर्ण को बिदारा ११ जिन्होंने मन्दोदरी के नेत्र जलसे लङ्काको सींच मेरे अर्थ प्रथमवीर केशरीनन्दन हनुमानको पठाया सो राघव समार के सुखदायीहों १२ इसप्रकार कहती जानकी अत्यन्त गौर पवित्र जलको धारण करती लहरियों के जलसे क्रीड़ा करती मनुष्यों के पापहरती ऐसी त्रिपथगामिनी गंगाजी के निकट में प्राप्तहुई १३ जिसगंगातटमें जमुनी, आब, चम्पा, कुलिन्द,खजूर,सुपारी,केला, कटहर, दाख, फलोंकेगुच्छों में शोभितभ्रमरों की पङ्क्ति सोनहलू केतकीवनोंकी पङ्क्ति धारणकरती जलप्रवाहों से रामचन्द्रके यशही के समान शुद्धजगत् के सम्पूर्ण पातकों कोनाशकरती तिस सुरसरी को देख प्रसन्नहो बोली कि मेरा यह जन्म सफलहै १४। १५ जैमिनिजी बोले कि तिस रथमे उतर जैसे लक्ष्मणजी पृथ्वी मे प्राप्तहुये तैसे फेंटकरके दुगाई नोकापाप शीघ्र

सवारहुये फिर अतिभयदायक गंगाका किनारा पाय सीता व लक्ष्मण नावसे उतरतेभये १६। १७ सुमित्रानन्दन लक्ष्मण और जानकी गंगाजी में स्नानकर सुन्दर वस्त्र धारणकर सघनवनको जातेभये १८ जिसवनमें धव, खैर, आँवरा, बेरी, बकुल, पीपर सूखेखोदकलों से चिह्नित कुशों की पैनीडाभें गुखुरू आदिक और बहुतीनीवें तथा क्रूर पक्षीगण जीर्ण बेधि वृक्षोंमेंबैठे कोवे काँव काँव शब्द को करते और तिनके खोदरों में बैठे सर्प फुफकारकरते १९। २१ चित्ता अष्टाभैंसा बड़ीदाढ कहे चीरवाले शूकर ऊपरको पूँछ उठाये और तिसीप्रकार बहुतसी काली विच्छू जैसे योगीजन समाधि में स्थिर होरहे हैं तैसेही मृगगणों के पकड़ने को व्याघ्र न्याप लगाये हैं और बिलार मूष बिलके निकटजाय खोदते हैं २२। २३ इस प्रकारका बन देख सीता रोमांचयुक्त शोभित भई जैसे रामचन्द्रकी कीर्तिमई स्त्री कण्टक शत्रुओं से घेरीजावे २४ फिर सीता बोली हे सुमित्रानन्दन! मुनियों के आश्रम और पवित्र वेष मुनीश्वरों की साध्वी तपस्विनी स्त्री मैं नहीं देखती हूँ २५ और मेखला कृष्ण मृगचर्मधारी शिखाधारी बारहवर्ष के ऋषिपुत्र तथा बल्कलधारी मुनीश्वरों को नहीं देखती हूँ २६ हे भरतानुज! अग्नि-होत्र से उठा धूम नहीं देख पड़ता किंतु यह काष्ठ तृण को जराते दावानल सर्वत्र देखपरे है २७ यहांपर वेद-ध्वनि नहीं केवल पक्षियों का शब्द सुन परे है मैं रघुनाथजीको छोड़आई तिससे वेदध्वनि कैसे सुनपरे

मैंने रघुनाथजीको छोड़ा मुनि और मुनि पुत्र मुनिपत्नी यह जान नहीं देखपरेंहैं पवित्र आश्रमवासी पवित्रही को दर्शन देते हैं कुरूपा रामचन्द्रजी से पराङ्मुखको वनवासियों के पवित्र अग्निहोत्र कैसे देखपड़ें जैमिनि जी बोले कि तिन वचनोंको सुनते २८। ३१ आसुओं को छोड़ते नीचे को हेरते वहुत विह्वल सो लक्ष्मणजी बोलतेभये हे सीते। सो आश्रम दूरहै धीरे २ चलो ३२ लोकापवादसे सत्य रामचन्द्रजी ने तुमको छोड़ा और तुम्हारे भी गर्भहै इससे तुम्हारा मनोरथ भागीरथीके देखने को भया ३३ यह रघुनाथजी ने तुमको वन में छोड़ने को कहा क्या करूं हे माता। अवश और भाई रामचन्द्रका आज्ञाकारीहूं ३४ इसप्रकार लक्ष्मण के वचनसुन मूर्च्छितहो जानकी पृथ्वीतलमें गिरपड़ीं जैसे आकाशसे रोहिणी और जैसे जड़कटी वल्ली और प्रसूत शूलकी पीड़ासे पीड़ित क्लोरिगी और सर्प्प की काटी कुमारिकाके तद्वत् पृथ्वी में गिरीं ३५। ३६ तदनन्तर भययुक्त लक्ष्मण एक हाथ से कमलवत् मुखमें छायाकर दूसरेसे वस्त्रकी वायुकरतेभये वोले कि जो मैंने साक्षात् रामचन्द्रजीकी सेवाकी हो तो इससमय जानकी शीघ्र उठखड़ीहोवें ३७। ३८ इसप्रकार लक्ष्मणजी के कहतेहुये चैतन्यहो जानकी नेत्रोंको खोल आगे लक्ष्मण को देख धीरेसे वोलतीभई कि हे सौमित्रे। जैसे दण्डकारण्यमें मुझको अकेली छोड़गये थे वैसे अत्र कैसे जाते हो ३९। ४० देवरोंके वीच में तुम हमारे श्रेष्ठ देवरहो

सवारहुये फिर अतिभयदायक गंगाका किनारा पाय सीता व लक्ष्मण नावसे उतरतेभये १६। १७ सुमित्रानन्दन लक्ष्मण और जानकी गंगाजी में स्नानकर सुन्दर वस्त्र धारणकर सघनवनको जातेभये १८ जिसवनमें धव, खैर, आँवरा, वेरी, वकुल, पीपर सूखेखोदकलों से चिह्नित कुशों की पेनीडाभें गुखुरू आदिक और बहुतीनीवें तथा क्रूर पक्षीगण जीर्ण वेधि वृक्षोंमेंबैठे कौवे काँव काँव शब्द को करते और तिनके खोदरों में बैठे सर्प फुफकारकरते १९। २१ चित्ता अन्नाभैंसा वड़ीदाद कहे बीरवाले शूकर ऊपरको पूँछ उठाये और तिसीप्रकार बहुतसी काली बिच्छू जैसे योगीजन समाधि में स्थिर होरहे हैं तैसेही मृगगणों के पकड़ने को व्याघ्र व्याप लगाये हैं और बिलारें मूष विलके निकट जाय खोदते हैं २२। २३ इस प्रकारका वन देख सीता रोमाचयुक्त शोभित भई जैसे रामचन्द्रकी कीर्तिमई स्त्री कण्टक शत्रुओं से घेरीजावे २४ फिर सीता बोली हे सुमित्रानन्दन! मुनियों के आश्रम और पवित्र वेष मुनीश्वरों की साध्वी तपस्विनी स्त्री मैं नहीं देखती हूँ २५ और मेखला कृष्ण मृगचर्मधारी शिखाधारी बारहवर्ष के ऋषिपुत्र तथा वल्कलधारी मुनीश्वरों को नहीं देखती हूँ २६ हे भरतानुज! अग्नि-होत्र से उठा धूम नहीं देख पड़ता किंतु यह काष्ठ तृण को जराते दावानल सर्वत्र देखपरे है २७ यहापर वेद-ध्वनि नहीं केवल पक्षियों का शब्द सुन परे है मैं रघुनाथजीको छोड़आई तिससे वेदध्वनि कैसे सुनपरे

मैंने रघुनाथजीको छोड़ा मुनि और मुनि पुत्र मुनिपत्नी यह जान नहीं देखपरेहैं पवित्र आश्रमवासी पवित्रही को दर्शन देते हैं कुरूपा रामचन्द्रजी से पराङ्मुखको वनवासियों के पवित्र अग्निहोत्र कैसे देखपड़ें जैमिनि जी बोले कि तिन बचनोंको सुनते २८। ३१ आसुओं को छोड़ते नीचे को हेरते वहुत विह्वल सो लक्ष्मणजी बोलतेभये हे सीते। सो आश्रम दूरहै धीरे २ चलो ३२ लोकापवादसे सत्य रामचन्द्रजी ने तुमको छोड़ा और तुम्हारे भी गर्भहै इससे तुम्हारा मनोरथ भागीरथीके देखने को भया ३३ यह रघुनाथजी ने तुमको वन में छोड़ने को कहा क्या करूं हे माता! अवश और भाई रामचन्द्रका आज्ञाकारीहूं ३४ इसप्रकार लक्ष्मण के वचनसुन मूर्च्छितहो जानकी पृथ्वीतलमे गिरपड़ी जैसे आकाशसे रोहिणी और जैसे जड़कटी वल्ली और प्रसूत शूलकी पीड़ासे पीड़ित स्त्रीरोगी और सर्प की काटी कुमारिकाके तद्वत पृथ्वी में गिरीं ३५। ३६ तदनन्तर भययुक्त लक्ष्मण एक हाथ से कमलवत् मुखमें छायाकर दूसरेसे वस्त्रकी वायुकरतेभये बोले कि जो मैंने साक्षात् रामचन्द्रजीकी सेवाकी हो तो इससमय जानकी शीघ्र उठखड़ीहोवें ३७। ३८ इसप्रकार लक्ष्मणजी के कहतेहुये चैतन्यहो जानकी नेत्रोंकोखोल आगे लक्ष्मण को देख धीरेसे बोलतीभई कि हे सौमित्रे। जैसे दण्डकारण्यमें मुझको अकेली छोड़गये थे वैसे अब कैसे जाते हो ३९। ४० देवरोंके बीच में तुम हमारे श्रेष्ठ देवरहो

तुम्हीं ने हम को दण्डकारण्य में विराध के अंक से ब-
चाया ४१ और शुद्ध फल मूलजलसे तुम्हींने हमारी
सेवाकी और चित्र विचित्र पर्णशाला बनाई ४२ हे
लक्ष्मण इससमय तुम्हारे विना पर्णशाला कौन बनावेगा
और आगे मेरे राम पीछे तुम चलते थे ४३ हा महादुःख
मुझ को प्राप्तहुआ जिस से कमलनेत्र वीर रामचन्द्रजी
ने विना अपराध छोड़दिया ४४ मनवाणी कर्मसे और
पतिको कभी नहीं ध्यानकरतीहूं और सदा तिन्ही के
मनोहर चरणारविंदों को चित्तमें चिन्तना करतीहू ४५
और मुक्ता मणियों से जड़ाऊ मुकुट और कुण्डलों से
शोभित सुन्दरी डाढ़ें और डाढ़ी जिस में कमलपत्रके
समान विशाल नेत्र चन्द्रविम्बकेसमान निर्मलमुखवाले
श्रीरामचन्द्रजीको में वनमें पड़ी कैसे देखिहौं ४६।४७॥
सो० कौशिकमुनिके साथ काकपक्ष धारणकिये।
आपपूर्णरघुनाथ तुमसह मिथिलाआइकै १।४८
ममविवाहके काज त्रैयम्बक धनुतोरिकै।
ममहितकीन्हयोकाज नरवानरकोसगप्रभु २।४९
मेरे वियोगमें पूर्वही जेरामचन्द्र वृक्षोंको मिलते रहे
तिस सीताको छोड़तेहैं इसमें दैवहीकारणहै ५० इसमें मैं
यह विचारतीहू कि इस में रामचन्द्रका यह दोषनहीं के-
वल मेरेपूर्व कर्मोंका फलहै ५१ हे महाबाहु लक्ष्मण तुम
और राघव निर्दोषहो शीघ्र अयोध्याको जावो क्योंकि
पराधीनहो ५२ जो परमेश्वरने गर्भ में और लकाधि-
वासमें रक्षाकीहै सो दैव निश्चयसे अब भी रक्षाकरेगा

तुमको दुःखकरना योग्य नहींहै ५३ और हे महाबाहो! लक्ष्मण सासुओं से मेरी प्रार्थना करो कि वन में प्राप्त तुम्हारे चरणोंकी नित्यही चिन्तना करती है और मुझ को सहितगर्भ के जान रामचन्द्रजी ने त्याग किया इस प्रकार विलाप करती सघनवन में शुभाचार सीता फिर लक्ष्मणजी से बोलतीभई कि इसव्यापार मे तुम दयालु को श्रीरामचन्द्रजी ने कैसे लगाया ५४। ५६ कठिनसुग्रीव भ्रातृघातक पठाइबे के योग्य था अथवा बलवान् विभीषण रावणका छोटाभाई ५७ हमारे छोड़ने के निमित्त तुमको रघुनाथजी ने वृथा पठाया हे लक्ष्मण! तुम्हारा कल्याणहो अब तुम रामपालित अयोध्यापुरी को जावो ५८ मार्ग में तुम्हारा कल्याण हो तुम्हारे भाई रामचन्द्रजी क्रोध किये हैं इसप्रकार सीता के वचन सुन लक्ष्मणजी अत्यन्त दुःखित हुये ५९ तिस समय नीचे को मुख किये सीताजीकी प्रदक्षिणा कर नमस्कार किया और चलते हुये लक्ष्मणजी बोले हे माता! इस वन में वन देवता तुम्हारी रक्षाकरे इससमय पराधीन में जाताहूं वीर लक्ष्मण जनकात्मजा को देखते हुये जाते भये ६०। ६१ परन्तु लक्ष्मणजी के पायँ नहीं चलते थे बड़ेही कष्ट से जाते भये लक्ष्मणजी की मूर्ति को जानकीजी टकटक देखती रहीं ६२ जब जाते हुये न देखा तब मूर्च्छा खाय पृथ्वी में गिर पड़ीं और मुहूर्तमात्र मूर्च्छित रहीं ६३ तिस पीछे वीर लक्ष्मण गंगाजी के तट आय पार जाय चले और अकेली सीता

वन मे मृगी की नाई विलाप करती भई ६४ हा मैंने क्या पातक किया जिससे सघन वनमें छोड़ीगई राजा जनकके कुल में उत्पन्नहुई पिताने प्रथम रघुनाथजीको दिया ६५ तिसीप्रकार जानकी सम्पूर्ण दिशा विदिशा शून्य देखती भई और विचार करतीभई कि लक्ष्मण भी फिर आय क्या हास्य करेगा ६६ फिर मूर्च्छाको प्राप्त यह जानकी भयसे विह्वलभई मृणालो को छोड़ तिन के दुःखसे दुःखित हंस क्रूरशब्दसे रोदन करतेहैं तिसी प्रकार तृणाकुरों को त्याग मृगबाल वा हरिणी कृष्ण-सार मृगा तिसी सीताको रोदन करती देखते हैं तिसी कालमें मयूरकहे मुरैला नृत्यों को छोड़ धावतेभये ६७। ६९ थलचारी पक्षियों ने भक्षण छोड़ पक्षों से छाया करी और जलचारी पक्षी वैदेही पर जल बिन्दुओं की वर्षा करतेभये ७० सुरागौ अपनी पुच्छ चमरों से जानकीपर चमर करती हैं इसके अनन्तर भागीरथी के तटमें स्नानकिये फूलोंको लिये सुभगगन्ध धारण किये सीताकी सेवा वायु करतेभये अर्थात् शीतल मन्द सुगन्ध वायु सीताजी के लगतीभई तिसकाल पृथ्वी में लोटती विहाल धूलिसेभरी बाल जिसके खुले विशालाक्षी रामराम यह कहतेहुये बोली कि जो इन प्राणोंको छोड़दूं तो भ्रूणहत्या होगी ७१। ७३ इधर उधर धावती पदपदमें गिरती कुशों की पैनी डाभोंने तिसके चरणकमलों को व्यथित किया ७४ हे जनमेजय। तिस समय सीताजीके पैरोंसे रुधिर गिरने लगा इस प्रकार

दुःखातुर सीता वनमें वर्त्तमान ७५ तबतक उग्र तपस्वियों से नमित बहुत शिष्यगणों से युक्त धीमान् वाल्मीकिजी यज्ञार्थ यज्ञस्तम्भ काटनेको आये तिन्होंने तिस विह्वल सीताको देखा ७६ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकुशलवोपाख्याने वाल्मीकिसमागमनामाऽष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले हे राजन्! तदनन्तर वाल्मीकिजी तिस दीन चित्तमलीन जैसे अनादरसे अपनी तपस्या की सिद्धि म्लानहो इसप्रकार की सीताको देख बोले १ कि हे कल्याणि! तुम कौनहो किसकी कन्या और किसकी भार्या और इस शून्य वनमें अतिशय क्यों खेद कररही हो २ तदनन्तर सीता नमस्कारकर अतीव दुःखितहो बोली कि हे द्विजोत्तम! मैं राजाजनककी कन्या और राजा दशरथकी पुत्रवधू ३ पतिव्रत धर्म्मसे युक्त रामचन्द्रकी स्त्रीहूँ न मालूम किसकारणसे वीर रामचन्द्रजीने मुझे वनमें छोड़दिया ४ तब यह सुन वाल्मीकिजी बोले हे सीते, सुव्रते! शोच न करो तुमको दोपुत्र प्राप्तहोंगे और मैं जनकपूजित वाल्मीकिनाम मुनिहूँ ५ पत्र पुष्प फलों से संयुक्त मेरे आश्रममें तुम प्राप्तभई हे वरवर्णिनि! तुम्हारे अर्थ पर्णशाला बनवाऊँगा ६ हे जानकि! जहां तुम्हारे श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्नहोंगे तिस मुनीश्वरके ये वचनसुन जनकात्मजा आनन्दित हुई ७ जैसे ग्रीष्म से व्याकुल

मयूरी मेघोंका शब्द सुनिके आनन्दितहोती है कहा यह वार्त्ता योग्यहै इसप्रकार कह सो सीता मुनीश्वरके पीछे जातीभई ८ महाभागवालमीकिजी सीतासहित आश्रममें प्राप्तभये जिसआश्रममें व्याघ्र सिंह आनन्दित गौवों के साथ क्रीड़ाकरते हैं ९ और बिलारियों के मुख में जहा मूषक अपने बिलकी भांति छिपरहे हैं और न्योरा सर्प मयूर जहां एकत्र क्रीड़ा करते हैं १० क्रोधको छोड़ चित्ता मृगोंकेसाथ विहरै हैं चित्रविचित्र नदियों में प्राप्त बकुला मछलियोंको नहीं मारते हैं सो सीताने वालमीकिके ऐसे आश्रमको देख तिसतपस्वी और शुभाचार ऋषिभार्या व सुन्दर ऋषिपुत्रोंको महाआनन्द से युक्त बारम्बार नमस्कारकिया फिर तिन्होंने आशीर्वाद दिया शुभलक्षणा जानकीने मुनिपुत्रोंकी बनाई पर्णशालामें प्रवेश किया और ऋषिपत्नियोंके दिये फल भोजनकिये ११। १४ दुग्ध पानकर निर्मल तिस पर्णशाला में रहती हैं और वालमीकिके चरणोंको नित्य नमस्कारकर कथाको श्रवणकरै हैं १५ इसप्रकार तिस वनमें रहती सीताको पुष्पितद्रुम वालमीकि के आश्रम में नवमास व्यतीत भये १६ नवमास बीतने उपरान्त अर्द्धरात्रि विषे सुन्दर मुहूर्त्तमें जानकी दो पुत्र उत्पन्न करतीभई फिर निपुण मुनीश्वरोंकी पत्नी १७ तहा आय मंगलाचार करतीभई यह सीता दो पुत्रों को उत्पन्न करतीभई तिसमें गीत गान करै हैं १८ इन दोनों पुत्रोंकी दीप्तिसे सम्पूर्ण घर प्रकाशित होगया और दिशा विदिशा निर्मल होगई

और अत्यन्त सुगन्धित वायु चलनेलगी और अनुकूल हवन की अग्नि प्रसन्न होतीभई फिर शिष्यगण वाल्मीकिजीसे कहने को दौड़तेभये १९।२० हे ब्रह्मन्! जानकी के दोपुत्र उत्पन्नहुये यह महाविस्मयहै तब तो वाल्मीकिजी एक मूठी कुश और दूर्वालिये जहां ये दोनों बालक थे तहां आये बालकों को देख आनन्द से युक्त कुश और दूर्वासे दोनोंका अभिषेककिया २१।२२ और मुनिश्रेष्ठ वाल्मीकिजी कुश लव ये नाम करते भये और बालक उदित सूर्य चन्द्रमा के समान दिन दिन मे बढ़ने लगे २३ जातकर्म आदिक सम्पूर्ण करते भये तदनन्तर बारहवे वर्ष दोनों का यज्ञोपवीत किया २४ मुनीश्वरों में श्रेष्ठ वाल्मीकिजी ने वशिष्ठ से कामधेनु की याचनाकर वनवासी ब्राह्मणों को भोजन कराया २५ कामधेनु से भात और मूंगकी दाल और अनेकप्रकार के शाक भी उत्पन्नहुये और चन्द्रबिम्ब के समान घृतपक्व पुआ और पूरी लड्डूइत्यादिक सहस्रों उत्पन्न होतीभई २६।२७ स्वच्छतिलोंके मोदक और अमृतके समान फल और हजारपर्तकी फेनिका और पापड़ उरद तथा चावलके उत्पन्नभये इसप्रकारके अनेक पक्वान्न कामधेनुगौ देतीभई तिस अन्नकरके वाल्मीकिजी ने सम्पूर्णजनोंको तृप्तकिया २८।३१ तदनन्तर यज्ञोपवीतहोने उपरान्त सूर्यके समान दोनोंपुत्रोंको वाल्मीकिजी सहित अंगों के वेद पढ़ातेभये तिसमे रामचरित्र मधुरवाणी से तालधारी लव और वीणाधारीकुश गान

आरम्भही में हज़ारों वेदपारगामी ब्राह्मण पूजनीय हैं और एक रथ एक हाथी और दश घोड़े एक भार सुवर्ण और सुवर्ण से भूषित सौ गौ और श्रेष्ठ मुक्ताफल एक पसर ४४। ४५ और कार्योंमें निपुण एक एक को चार २ सेवक निश्चय से इस यज्ञमें ऐसी दक्षिणादेनी योग्य है और हे राम! तुम असिपत्रव्रत कैसे करोगे यज्ञकर्म्म में स्त्री दूसरी धर्म्मकी सहायकहोती है ४६। ४७ और स्त्री रहित यज्ञ निष्फल कहीजाती है रामचन्द्रजीने कहा हे ऋषिराज! तुम समर्थ हो जानकीके सदृश सुवर्णकी प्रतिमा करो तिस सीता के साथ में उत्तम व्रतकरूँ अश्वमेधयज्ञ का आरम्भ श्रेष्ठ मुनीश्वरों से कराइये और हयशालो में शास्त्रोक्त लक्षणों से युक्त रुधिर घोड़ादेख तिसके उपरान्त मुझको दीक्षा दीजिये रामचन्द्रके कहे वचनसुन मुनियों से युक्त वशिष्ठ हयशालाओं में देख गोदुग्धवर्ण कुंकुम के समान पीतमुख श्वेत ४८। ५० और श्यामकर्ण घोड़ा देख वशिष्ठजी विस्मितभये और सम्पूर्ण ब्राह्मणों की वायु के समान वेगवाले घोड़े वस्त्र आभूषण और रथ तथा रेशमी वस्त्रोंकी भूलोंवाले मतवारे हाथियों और दूधदेनेवाली गौवों से पूजन की तदनन्तर सुवर्णकी सीता के साथ ५१। ५४ दीक्षित राम सुगन्धित चन्दन और फूलमाला चमरों से शोभित तिस घोड़ेकी पूजा करतेभये और तिसके मस्तक में लिखा सुवर्ण का पत्र बांध एक वीरा अर्थात् एकही वीर पुत्रवाली कौशल्या के पुत्र

दशरथात्मज महाबली रामचन्द्र तिन्होने अश्वघोड़ाको छोड़ा बलवान् मनुष्य पकड़ैं ५५।५७ यह अभिप्राय पत्र घोड़ाके मस्तकमें शोभितकिया और फिर शत्रुघ्नको आज्ञादी कि तुम घोड़ाकी रक्षाकरो ५८ इसके उपरान्त घोड़ा छोड़ागया पीछेसे बलवान् लक्ष्मणानुज शत्रुघ्न जी तीन अक्षौहिणी सैन्य लेजातेभये ५९ और अनेक प्रकारके देश नगर उपवनों को लांघता शत्रुघ्नके समेत घोड़ा लीलापूर्वक घूमताभया ६० राजालोग तिस घोड़े को देख युद्ध से विमुखहो नमस्कार करतेभये जे शूर बलवान् वीरथे तिन्हों ने घोड़ा पकड़ा तिनको शत्रुघ्न जीने समरमें पराजय करके घोड़ा छुड़ाया तदनन्तर वाल्मीकि के सुन्दर आश्रम में घोड़ा घूमताहुआ प्राप्त भया ६१।६२ और वाल्मीकिजी वरुण के बुलाये यज्ञ के अर्थ तल्लोक को गये थे और आश्रम के रमणीय उपवन में घोड़ा प्रवेश करगया ६३ जहा फरे अनार और नवीन पत्रोंसे युक्त श्याम तथा फूले अगस्तों के वृक्ष ६४ अनेकों फूलोंकी जाती देवताओं के समान फूल रही हैं और मृत्तिका के सुन्दर मण्डप कलश यन्त्रों से शोभित हो रहे हैं ६५ जहा केला के फले वृक्ष मानों स्वर्गलोकसे आये हैं तिस वनकी रक्षाकरते धनुष हाथ में लिये बली लव ६६ दूर्वा के अंकुरोंको चरतेहुये आगे घोड़ेको देखा तब ऋषिपुत्रों को बुलाय घोड़े के निकट गये ६७ और घोड़ाके मस्तकमें प्राप्तपत्र लवनेबाचा कि आज एकवीरा कौशल्या जिनका पुत्र रघुनायक राम

दशरथात्मज तिसने यह घोड़ाछोड़ा बली इसको पकड़ें तिस पत्रका अभिप्राय जान बली लवबोला ६८। ६९ कि क्या हमारी माता वन्ध्याहै एकवीरा नहीं है इसप्रकार कहकर लवने घोड़ा पकड़लिया ७० और दुपट्टा को डाल केलाके वृक्षमें बांधदिया तब मुनीश्वरोंके पुत्र भयभीतहो तिसको बरजतेहुये बोले ७१ हे लव! तुमने दूसरेका घोड़ा बल से वृथा बांधा इसके रक्षक तुमको पकड़ लेजावेंगे यहघोड़ा छोड़दो ७२ तिनके ये वचनों का निरादर कर लव बोला कि ऋषीश्वरों के स्त्री की कुक्षिसे उत्पन्न तुम और सीताके उदरसे उत्पन्न मैं ७३ जो भय की शंकासे घोड़ाको बांध छोड़दूं तो मैं सीता के पेटसे पैदाहुआ कीटही के समानहूं और मुझ को मरण श्रेष्ठहै परन्तु लज्जा न प्राप्तहोवे ७४॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकुशलवोपाख्याने तुरंगग्रहणोनामएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हे राजेन्द्र! तिसके उपरांत पियादों से युक्त मतवारे हाथियों और रथ घोड़ोंसे व्याप्त महान् सेना प्राप्तभई १ शत्रुघ्नके पालित सैकड़ोंहजारों बलिष्ठ रथीघोड़ा कहाहै घोड़ाकहा है ऐसापुकारते प्राप्तभये २ केलाके वृक्षमें बँधा घोड़ा देखा तब तिन छोटे ब्रह्मचारियोंसे पूँछा कि यह घोड़ा किसने बांधा ३ वे छोटे ब्रह्मचारी ऋषिपुत्र बोले नाम से विख्यात लव निर्भय

आमवृक्षकी मूलमें बैठाहै तिसने यह घोड़ा बांधाहै ४ फिर तिन रथियोंने हँसकर कहा कि यहबालक मूर्ख है किन्तु घोड़ाकी रक्षितसैन्यको नहींजाने है निदान यह बालकहै ५ घोड़ा जल्दी खोलो २ जिसमें पृथ्वीपरचले तबतक महाबाहु धनुषपाणि बली लव प्राप्तभये यह क्या अहङ्कारी वीरघोड़ाको छोरते हैं मुझको जीत घोड़ाको छोरो मेरे खड़े कभी नहींछूटेगा ६। ७ तब घोड़ाके छोरनेवाले तिसके वचनों को न सुनतेभये तब तो लवने बलकरके तीक्ष्ण बाणोंसे तिनके हाथकाटे ८ तब हृय-कटे योद्धा बोलतेभये कि यह गिरायाजावे तब सब एक-त्रहो बाणवर्षामे लवपर वर्षतेभये ९ कोई साग और सैकरों फसरियोंको बल से चलाते भये और बाणसमूह छूटते भये परन्तु लवको किसी अस्त्रने स्पर्श नहींकिया १० जैसे गौतमी नदीके स्नान करनेवाले मनुष्यको पापों के समूह स्पर्श नहींकरते तब तिन शस्त्रसमूहोंको लव ने काटडाला जैसे योगी ससारबन्धनको काटता है और अक्षय तर्कसोंसे बाणोंको लेकर पाच पाच बाणोंसे एक एक बीरके हृदयमें मारा ११। १२ तब और बाणों से हाथी दोप्रकारसे काटे और कटीशुण्डी दोदो प्रकारकी करदी और तीक्ष्णबाणों से महारतों के शिरकाटे १३ फिर कश्मीरकी झूलें और लटकती घण्टा काटी हा-थियों के हौदा और पताका बली लवने काटे १४ फिर धनुष धारियों में श्रेष्ठ लवने सुवर्णके रथों को काटा पहिया और चक्ररक्षक कहे धुरी त्रिदण्ड तथा सारथी

घोड़ा और रथी चामर ध्वजा स्तम्भ पुष्टयन्वा और तरकस कुशके छोटेभाई लवने तीक्ष्ण बाणोंसे काटे और सवारों सहित घोड़ोंको मारडाला १५ । १७ इसप्रकार लवने समरके बीचमें महान् कर्म्मकिया जैमिनिजी बोले कि अकेले पियादे बालकसे सेनाको मारी देख सो वीर शत्रुघ्नजी रथ में सवारहो आये श्रेष्ठ धनुषको टकोरते खड़ाहो खड़ाहो कहते हुये बोले १८ । १९ इस प्रकार कहते शत्रुघ्नको दश बाणोसे निर्भय मन लवने मस्तकमे मारा और एक बाण से हृदय बेधन और चारसे चारों घोड़े और एक से ध्वजाकाटी फिर चार बाणोंसे चक्र रक्षक एक बाणसे धनुष की प्रत्यञ्चा छिन्नकी तब शत्रुघ्नजी ने दूसरी प्रत्यञ्चा धनुपमें लगाय नालीक नामके भल्लाकार बाण छोड़े लक्ष्मणानुजने तीन बाणों से तिस लवका ललाट बेधितकिया २० । २३ तिस तीन बाणों से ताड़ित लव हँसकर बोला कि मेरे मस्तक में क्या कमलके फूले फूललगे हैं २४ हे वीर ! तुम्हारा सम्पूर्ण बल इतनाही देखपड़ता है ऐसाकह चार तीक्ष्ण बाणोंसे चारघोड़े यमराजकी पुरीको पठाये फिर एक बाणसे सारथीका शिर कायासे भिन्नकिया २५ और दो बाणोंसे शत्रुघ्नकी ऊँची ध्वजा काटी और दो बाणोंसे शत्रुघ्नका दृढ़ धनुष दो प्रकारसे काटा २६ सो शत्रुघ्न हतसारथी हताश्व विरथ छिन्नधन्वाहो क्रोधकर वीरने दूसरा धनुष २७ । २८ सहित प्रत्यञ्चाके ले पीतवर्ण पक्षोंसे युक्त एकबाण लगाय फिर शत्रुघ्न बोले कि इस

समय शिरकी रक्षाकरो तुम्हारे निमित्त मुझको करुणा बाधा करती है अन्यथा तुम्हारा मरणहोगा २९। ३० शत्रुघ्नके ये वचनोंको सुन बलवान् लवने तिस दिव्य बाणको काटडाला सो दो प्रकारका होकर गिरताभया ३१ फिर विस्मय युक्त शत्रुघ्नने और बाणलिया और कालके समान तिसबाणको जबतक धन्वामें लगावें तब तक सहित शरके धनुषको क्रोधकर लवने छेदन किया तिसके उपरान्त शत्रुघ्नने जिससे लवणासुरको माराथा ३२। ३३ वही धनुषबाण वैश्वानर सूर्य्यके समान दीप्तिमान् रुचिरछोड़ा और कहा कि मारागया ३४ तिस बाणको सफलजान लवने कुशको स्मरणकिया कि जो इस अवसरमें मेराभाई कुश होता ३५ तो इस बाण से भय मुझको किसीप्रकार न होती अथानन्तर जानकी तुम्हारे सत्य पतिव्रत धर्म्मसे इस बाणको मैं काटताहूं तिससे मेरी कीर्त्तिहो यह कह लवने बाणको छोड़ा तिस बाण से शत्रुघ्न के बाणको बालक ने बीचही से काटडाला ३६। ३७ जैमिनिजी बोले कि बाणका पूर्वार्द्ध भाग तो पृथ्वी में गिरा और उत्तरार्द्ध न गिरा तिस उत्तरार्द्ध बाण से लवका धन्वा और हृदय छिन्नभया ३८ सो छिन्नधन्वा हृदयमें ताड़ित भग्नधनुष रुधिर लिप्त देह से मोहित हो पृथ्वीपर गिर कुछ न जाना ३९ तब शङ्ख और तुरही बाजनेलगीं और शत्रुघ्नकी सेनाके मरे में बचे योद्धा आनन्दको पाय गर्जनेलगे ४० तिस लव को हराजान वीरोंने उस घोड़े को जोरा छूटाहुआ सो

तुरंग तिसकाल उपवनमें घूमताभया ४१ तब दयायुक्त शत्रुघ्नजी हाथ से लवको उठाय कहा कि रामाकृती यह बालकको जलसे सींचो तदनन्तर ते सेवक जलधाराओं से लवको सींचते भये सजीवकर रथमें चढ़ाय घोड़ा के पीछे चलते भये ४२। ४३॥

इत्याश्वमेधिकेपर्व्वणिजैमिनीयेभाषायांकुशलवोपाख्याने लवमूर्च्छाप्राप्तिर्नामत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय॥

इतनी कथा सुन जनमेजय बोले कि हे मुने! लवके पकड़े पर किसप्रकार युद्धभया और कुश कहा गया और किसप्रकार यह वृत्तान्त सीता ने जाना १ हे जैमिने! सम्पूर्ण समीचीन पवित्र कुशकी कथा कहो जैमिनिजी बोले हे राजन्! कुशका महा चरित्र वर्णनकरते हैं सुनो २ जिसके सुनने से स्त्री पुरुषभी महापातकसे छूटजावैं तब लवको महारथियोंके बांधे तिस घोड़ाके चलने पर आंसुओं से पूर्णमुखवाले मुनीश्वरों के पुत्र तत्काल सीता जीसे बोले हे सीते! किसी राजाका घोड़ा बलसे लव ने बांधा फिर तिस राजा की सेन्य से तुम्हारे पुत्र ने युद्ध किया और बहुत सेनाको मारकर यह बालक किसी वीरसे श्रमित भया ३। ५ हस्तगत धन्वाको काट पकड़कर अपने पुरको लेगया तिन बालकों के वचन सुन जानकी चित्र लिखीसी होगई जैसे वज्रपातका शब्द पाय कुमारिका चकित होजाय और जैसे धनी मनुष्य

वस्तु के नाश होजाने से उद्विग्न होजाय उस प्रकारकी होकर सीता बोली कि जो मन वचन कर्म से मैं राममें तत्परहूँ तो मेरा पुत्र लव समरमें कुशलीहो ६। ७ जब तक ज्येष्ठ पुत्र कुश आवे तबतक लवजी आवे अकेला बालक पापिष्ठी महारथियोंने मारा ८ सो बाला जानकी पुत्र शोक से पीड़ित अत्यन्त रोदन करती भई कि हे आज्ञानुपालक! लव हमसे बिना पूँछे तुम गये चन्द्र- बिम्बके समान तुम्हारा मुख बाणों से विदीर्णहुआ और तीक्ष्ण बाणोंसे लवका अंग छेदगयाहोगा कन्दमूलफल को भोजन करता बारह वर्ष अविचक्षण बालक तिम पर निर्दयी पापिष्ठी युद्ध करनेवाले वीर तिन के हाथ कैसे पड़े और इस समय में पिता वाल्मीकि और बली कुश नहीं हैं ९। १२ यह महाकठोर दुःख प्राप्तहुआ सो किसके आगे कहूँ जैमिनिजी बोले कि तबतक हवनकी लकड़ी और कुशांको लेकर कुश वनसे फिरा अथानन्तर कुशको आतेदुःखको सूचन करनेवाले हे भारत! बहुत मार्ग में चित्त के उद्वेगकारी अशकुन भये कि बायें से भयङ्कर शब्दकरते मृगाजानेलगे १३। १४तब तो व्यथा से युक्त रामपुत्रने मनसे विघ्नहारी केशवका स्मरणकिया चितासे युक्तमन कुशके दोनोंभुजा फरके और नेत्रों से आपही जल गिरनेलगा मन व्यथित हुआ १५। १६ इसप्रकार आश्रम के द्वार में प्राप्त कुशने विचारा कि काहे से लव वेगयुक्त मेरे सन्मुख नहीं आता १७ आते हुये लव को मैंने प्रातःकाल बरजा क्या तिम से क्रो-

धित नहीं आता अथवा किसीने पकड़ रक्खा १८ इस प्रकार चिन्तनाकरते कुशने अपनी माता जानकी जी को देखा और नमस्कारकर सुन्दर वचन कहे १६ हे माता! काहे से यह विलाप करतीहो लव कहांगया तब सीताने कहा कि चरतेहुये किसी के घोड़ेको लवने पकड़ा ते सब बांधकर जीताहो व मराहो अपने पुरको लिये जाते हैं हे पुत्रकुश! तुम्हारे विना तिस बालकको कौन छुड़ावेगा २०।२१ जैसे स्मरणकिये विष्णुभक्तको संसारसे शीघ्र छुड़ावें तिस सीताके ये वचन सुन टेढ़ीभौंहकर रक्तवर्ण नेत्र धारण किये कुश वचन बोले २२ कि आज मेरे बाणों से भिन्न शत्रुओंका गुनगुन रुधिर सूर्यकी किरणोंसे शो-षित पृथ्वीपान करेगी इन्द्र वरुण महाबली कुबेर यम और यक्ष गन्धर्व सम्पूर्ण देवता साध्य और मरुद्गण तिन के सहायकारीहों तिस परभी तिनको रणमें जीत तिस लवको छुड़ाऊंगा हे माता! इससमयमें मैं जाताहूं दोनों तरकस धन्वा २३। २६ और ढालतलवार मुकुट कवच मुझको दीजिये तब शाला में प्रवेशकर धनुष तरकस ढाल तलवार किरीट कवच सीताने दिये ते सब ले धारणकर तय्यारहो तिस जानकी के नमस्कारकर कुश जाते भये सीताने आशीर्वाददिया तब कुशने भुजा ठोंक उग्र धनुषका टंकोर किया शीघ्रही बली सिंहिनीका पुत्र जैसे मतवारे हाथी पर जाते तैसे कुश चलताभया तदनन्तर जातेही शत्रुओं को देख दूरसे बुलाया कि जो शक्ति होतो सब शत्रुगण खड़ेहो २७। ३१ जो शक्ति

वस्तु के नाश होजाने से उद्विग्न होजाय उस प्रकारकी होकर सीता बोली कि जो मन वचन कर्म से मैं राममें तत्परहूँ तो मेरा पुत्र लव समरमे कुशलीहो ६। ७ जब तक ज्येष्ठ पुत्र कुश आवे तवतक लवजी आवे अकेला वालक पापिष्ठी महारथियोंने मारा ८ सो वाला जानकी पुत्र शोक से पीड़ित अत्यन्त रोदन करती भई कि हे आज्ञानुपालक! लव हमसे विना पूँछे तुम गये चन्द्र-विम्बके समान तुम्हारा मुख वाणों से विदीर्णहुआ और तीक्ष्ण वाणोंसे लवका अंग छेदगयाहोगा कन्दमूलफल को भोजन करता वारह वर्ष अविचक्षण वालक तिस पर निर्दयी पापिष्ठी युद्ध करनेवाले वीर तिन के हाथ कैसे पड़े और इस समय में पिता वाल्मीकि और वली कुश नहीं हैं ९। १२ यह महाकठोर दुःख प्राप्तहुआ सो किसके आगे कहूँ जैमिनिजी वोले कि तवतक हवनकी लकड़ी और कुशोंको लेकर कुश वनसे फिरा अथानन्तर कुशको आतेदुःखको सूचन करनेवाले हे भारत! बहुत मार्ग में चित्त के उद्वेगकारी अशकुन भये कि वायें से भयङ्कर शब्दकरते मृगाजानेलगे १३। १४तवतो व्यथा से युक्त रामपुत्रने मनसे विघ्नहारी केशवका स्मरणकिया चिंतासे युक्तमन कुशके दोनोभुजा फरके और नेत्रों से आपही जल गिरनेलगा मन व्यथित हुआ १५। १६ इसप्रकार आश्रम के द्वार मे प्राप्त कुशने विचारा कि काहे से लव वेगयुक्त मेरे सन्मुख नहीं आता १७ आते हुये लव को मैंने प्रातःकाल वरजा क्या तिस से को

थित नहीं आता अथवा किसीने पकड़ रक्खा १८ इस प्रकार चिन्तनाकरते कुशने अपनी माता जानकी जी को देखा और नमस्कारकर सुन्दर वचन कहे १९ हे माता! काहे से यह विलाप करतीहो लव कहागया तब सीताने कहा कि चरतेहुये किसी के घोड़ेको लवने पकड़ा ते सब बाधकर जीताहो व माराहो अपने पुरको लिये जातेहैं हे पुत्रकुश! तुम्हारे विना तिस बालकको कौन छुड़ावेगा २०।२१ जैसे स्मरणकिये विष्णुभक्तको संसारसे शीघ्र छुड़ावें तिस सीताके ये वचन सुन टेढ़ीभौंहकर रक्तवर्ण नेत्र धारण किये कुश वचन बोले २२ कि आज मेरे बाणो से भिन्न शत्रुओंका गुनगुन रुधिर सूर्यकी किरणोंसे शोषित पृथ्वीपान करेगी इन्द्र वरुण महाबली कुवेर यम और यक्ष गन्धर्व सम्पूर्ण देवता साध्य और मरुद्गण तिन के सहायकारीहों तिस परभी तिनको रणमे जीत तिस लवको छुड़ाऊंगा हे माता! इससमयमे मैं जाताहू दोनो तरकस धन्वा २३। २६ और ढालतलवार मुकुट कवच मुझको दीजिये तब शाला में प्रवेशकर धनुष तरकस ढाल तलवार किरीट कवच सीताने दिये ते सब ले धारणकर तय्यारहो तिस जानकी के नमस्कारकर कुश जाते भये सीताने आशीर्वाददिया तब कुशने भुजा ठोंक उग्र धनुषका टकोर किया शीघ्रही बलीमिट्टिनीका पुत्र जैसे मतवारे हाथी पर जावे तैसे कुश चलताभया तदनन्तर जातेही शत्रुओं को देख दूरसे ललारा कि जो शक्ति होतो सब शत्रुगण खड़ेहो २७। ३१ जो शक्ति

नहो तो हमारे भाई को छोड़दो अथवा युद्धकरो किंतु कुश वीरके जीते विना भागने के योग्य नहींहो ३२ ये घोर वचन सुन योद्धा बोले कि ढालतलवार लिये युवावस्थामें प्राप्त यह कौनवीर आता है ३३ धनुषवाण युक्त किरीट कवच धारणकिये महावीर निश्चयसे हम सबोंका क्या यह काल तो न होगा ३४ इसप्रकारसे भयसे विह्वल सम्पूर्ण सैनिक कहरहे हैं और वायु ये प्रेरित वृक्ष के समान ध्वजा कणकणारहे हैं ३५ और आकाशसे उतर गृध्र बीरों के मुकुटों को स्पर्श करतेहैं और उस कालतरकसों से वाण आपही निकलते हैं ३६ और तलवारें आपही म्यानों से निकल जाती हैं और तीक्ष्ण वायु वृक्षों और ध्वजों को उखाड़ते हुये चलने लगी ३७ उस समय धूलसे आकाश व्याप्तहो सूर्य छिपगये एक क्षण में जब रज शांतभई तब वीरोंने तिस कुशको देखा ३८ जैमिनिजी बोले तिस कुशको आते देख शत्रुघ्नजी बोले हे सैनिक! इस बालकको बाणोंसे शीघ्रजाय निवारणकरो ३९ हे मारिष! जबतक मैं सेनाको व्यूहितकरताहूं तब तक तुम इससे युद्धकरो तब सेनाध्यक्षने कहा कि हे सुव्रत! तुम्हारे प्रसादसे मैं इस बालकको मारताहूं यह कह सेनाध्यक्षने उसबली बालकके निकट ४० जाय खड़ाहो २ कहिकै दश बाणों से कुशको मारा कुशने तिन बाणोंको छेदनकर तिस सेनाध्यक्षको पीड़ित किया क्रोधित कुश इसके चार बाणोंसे चारो घोड़ा और सारथी का शिर हँसतेही काया से भिन्न कर ४१। ४२ फिर

रथको तिल २ कर पीठिरक्षकों तथा सारथियोंको मार तिसका धनुष और अतीव निर्मल कवच विदीर्णकिया ४३ और दो वाणों से कुशने तिस दुष्टके हाथ काटडाले और पैरो की फरुही काट मासल जघा काटी ४४ और ढढ़ियारा कुण्डलों करके देदीप्यमान शिर ग्रीवा से भिन्न करदिया तिस सेनापति के मरने से महा हाहा-कार होता गया ४५ ॥ तव ॥

दो० सेनापति हत देखिकै तत भ्राता नग नाम।
गजारूढशक्तीहन्यो कुशको रणकेधाम ४६॥

तिस अग्निकूटके तद्वत् विज्ली के समान ज्वलित शक्तिकोआतेदेख सीताके पुत्र महावीर कुशने पाचवाणों से काट गिराया ४७ और तिसवीर के हाथीवाले चारो पैर कुशने काटे सो नगपै कटे हाथी से उतर विचित्र महान् गदा धारणकर कुशके निकट गया तव कुशने सर्पसमान गदावाले हाथीको भेदन करडाला ४८।४९ तव हथकटे नगने भूमिमें पड़े चक्रको वायेंहाथसे उठाया निदान तिस चक्रधारी भुजाको भी कुशने काट पृथ्वीमें गिरादिया तिसपर भी जल्दी दौड़तेहुये नगके पैरकाटे सो वली पैरकटा छिन्नवाहु धूलि से सर्वांगभूषित रुधिर से व्याप्त नग कुशके निकट आकाशमें सूर्य के निकट राहुके समान पहुँचा ५० । ५२ इसके अनन्तर कटी भुजोंसे कुशके ऊपर गदाचलाई तिस गदाके लगनेसे अपनी जगह से पैगभर भी सो वीर कुश न हटा ५३ और तिसप्रकार इसनगके प्रतापसे प्रसन्नहुआ फिर

तीक्ष्णबाण इसके मारनेको छोड़ा तिसीबाणसे शिरकटा आकाशमें प्राप्तहोगया शिवजीने मुण्डमाला के अर्थ तिस शिरको लिया ५४ । ५५ इसप्रकार नगके मरने उपरात क्रोधयुक्त कुश कालदण्डलिये कालहीके समान बाणों से तिसकी सेनाको वेधित करनेलगा ५६ पर्वत के समान हाथियोंको तिस कुशने विदारणकिया और उछलतेहुये रुधिरसे वीरोंके वस्त्र डूबगये ५७ अत्यन्त उद्विग्न फूले टेसुओंके समान बाणों से गिरते वीर हो गये फिर सैन्यमें बालक अग्निरूप होकर बढा जिस अग्निको ईंधनरूप रथ हाथी हैं गिरते मतवारे हाथियों से महारथी मरते हैं और आपही से रथ और चक्र ध्वजा टूटते हैं और घोड़ोंके सवार बाणों से भिन्न देह होकर प्राणोंको छोड़ते हैं और हाथी घोड़े रथोंके समूह पृथ्वी में पतित भये मानों विष्णुभक्तिके विहीन अधम पुरुष संसारकोगये ५८ । ६१ कन्याकीद्रव्यसे जीविका करनेवालोंके पितृ जैसे पतित होते तैसेही रथ हाथियों से युक्त सैन्य पतित होतीभई तिस कुशवीर ने अपनेही धर्म से पापके समान सेनाको नाश किया ६२ । ६३ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकुशलवोपाख्याने कुशयुद्धवर्णनोनामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले हे राजन् । तदनन्तर उस समय क्रोधसेपूरित महाबाहु शत्रुघ्नजी ने धन्वाकी टङ्कोरकरके

कुशके नवबाण मारे १ तब महावीर कुशनेभी सहित घोड़ोंके रथको चूर्णकर टेढ़ी फोंकवाला बाण शत्रुघ्न के हृदय मे मारा २ फिर साठबाण वक्षस्थलमेंमारे तब अतिविद्ध शत्रुघ्न रथके ऊपर गिरपड़े जैसे महामतवारा हाथी रपटकर पर्वत के ऊपरगिरै और मरेसे बचेवीर शीघ्र अयोध्यापुरीको जातेभये इसके अनन्तर मुच्छ्राको विहाय लववीर अपनेभाई कुशको देख उठधाय भेंटकर आनन्दको प्राप्तभया ३। ५ तब कुश भाईसे बोला कि तुरंगको पकड़लो तिनकी आज्ञापाय लवने तिस तुरग को बांधलिया और दोनोंभाई अग्नि और वायुके समान युक्तहोकर बलकरके वीरोंका आगमन देखते तहा खड़ेहोगये ६। ७ जैमिनिजी बोले कि मरेसेबचे योद्धा अयोध्यामें जाय मृगचर्म मृगशृङ्ग दण्डमेखला धारे भाइयो समेत मुनियों से घिरेहुये तिल घृतके होमके धूममे अरुणनेत्र सुवर्णकी सीतासे युक्त मण्डपमें बैठे श्रीरामचन्द्रजी से ये वचन बोले ८। १० हे राम। तुम्हारा घोड़ा पृथ्वीमें विचरताहुआ किसीवीरने तिसको न धरा तिसको फिर तुम्हारेही समान बालकने पकड़ा तिसीने हमारी फौजभी मारी ११ जब बालक श्रमित भया तब किसीतरह तुम्हारे भाईने उसका धनुषकाट पकड़ा फिर तिसका दूसराभाई मनस्वी धनुष खड्ग धारणकिये बलिष्ठ प्राप्तभया १२ तिसने भी सेनापति समेत तुम्हारी शेष उग्रसेनाको मारा तिस सेनाके मरते हुये सम्पूर्ण सेना दिशा व विदिशाओंको भागगई १३

जैमिनिजी बोले कि तिनके ऐसे वचन सुन रामचन्द्र जी बिस्मितहो बोले कि तुम्हारी यह क्या बातहै क्या तुमको भ्रमहुआ कि पिशाच लगा शत्रुघ्न किसके गिराये गिरता है तब योद्धा बोले कि हमको कुछ जल्पना नहीं है भ्रमनहीं है पिशाचतानहीं है १४।१५ जे तुमको एकहूबार स्मरण करते हैं उनको जल्पना पिशाचता और भ्रम नहीं होता किन्तु उनको उत्तमज्ञान प्राप्त रहता है १६ फिर साक्षात् तुमको देखते हे रघुनन्दन! हम में भ्रम और जल्पना पिशाचता क्यों करभई॥

सो० शिशुके लगे हैं तीर रणशायी शत्रुघ्न हैं।
सुनिकैंदु खितवीर रामचन्द्रबिलपतकहा १७।१८
लवणासुरको मार त्रिप्रद्दिट शितशरनते।
ममवचनन करतार ताहियुद्ध बालन हत्यो १९

दो० कौनदोषसे भ्रातमम करतयुद्ध में शैन।
आवो लक्ष्मण भद्रते सुनो हमारे बैन २०
भाई दीक्षित हेतुते नहीं युद्धको काम।
महासेनको लेचलो भ्राता जेहि संग्राम २१

तहां जाय युद्धकरणीय घोड़ा और भाईशत्रुघ्न मोचनीयहै तिनकी वाक्यसुन लक्ष्मण सेनाध्यक्षों समेत जातेभये तब तो मतवारे सुवर्ण से भूषित रथ सवार और पैदल नगर से निकलते भये और सबके सुखे पताका और रक्ताम्बरी ध्वजा चन्दन से चर्चित अङ्ग कङ्कणों से मण्डित वीरोंकी शोभाकोकिये मालाओं से

केशवाधे साक्षात् कलावतार युद्धमें मरणकी इच्छा किये युवावस्थामेंप्राप्त ढाढीरखाये युद्धमें चतुरप्रहारी श्वेतांवरधारणकिये कोई श्वेतपताकी एकपत्नीव्रतयुक्त धर्मिष्ठ जितेन्द्रियवीर तिसनगर से सैकरों हजारों निकलतेभये तिनके स्वामी अतिशय बलवान् लक्ष्मण हुये और कालजित् नाम ब्राह्मण प्रिय धर्मिष्ठ सेनाध्यक्ष हुआ २२। २८ चलते हुये तिससेनाने समुद्रगामिनी नदियों को शोषलिया और घोड़ोंकी दृढ टापोंसे पर्व्वत चूर्ण होगये २९ और वनोंकी मार्ग होगई और घोड़ा हाथियोंने नदियोंकाजल पानकरलिया ३० और रथोंके पहियों और घोड़ाओं की टापों से उठी धूलि मेघों के ऊपर गिरकर चहला होगई तिस चहलासे मेघों में तिसकाल सघनता होगई और उच्च हाथियों की शुण्डादण्ड से ताड़ित धूलि के भारसे नीचे आये मेघ भागते भये आगे ढाल तलवारधारी वीर उछलतेहैं ३१। ३३ और अश्वारूढ़ अनेकप्रकार की चालुओं को निकालते हुये दौड़ते हैं और मेघोंके समान गर्जतेहुये रथ चलते भये ३४ और पर्वत के समान हाथी पृथ्वी को कँपाते हुये चलतेभये जैमिनिजी बोले कि मतवारे हाथी युद्ध में चिग्घार करते घोड़ा हींसते ३५ चक्रों से रथ गर्जते पैदल बलगते हैं तदनन्तर लक्ष्मणकी सो भयानक कटक जहां मूर्च्छित शत्रुघ्न सैनिकों समेत शयन करते थे तहां प्राप्तहुई तब ज्येष्ठ सुमित्रा के पुत्र कालजित समेत आगे गये उन्हों ने सुकेश वीर

शत्रुघ्नको अत्यन्त विकल जीव शेषही देखा ३६।३७॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायाकुशलवोपाख्याने
लक्ष्मणागमनमामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तैंतीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि भयङ्कर सेना तथा तिसके स्वामी लक्ष्मणको देख शत्रुओंका अंकुशरूप धीर कुश निर्भय बोला १ हे लव ! इस समयमें क्या करना योग्यहै कटक आगई जिसमें हाथी रथोंकी सख्या करने से पार नहीं मिलताहै २ तब लव बोला कि यहा युद्धकरणीय सेनाध्यक्ष मारणीय और कुम्हड़ाके फलके समान भेदनीय और रथ आम्रफलके समान छेदनीय३ पकेफलके समान पृथ्वीमें शिर पातनीय हैं हे महाबाहो कुश ! समग्र तुम्हारे बलके योग्य यह सेना नहीं है जैसे अगस्त्यको झरना और सिंहके आगे शृगालोंकी पंक्ती नहीं दौड़ती ४।५ किन्तु जैसे पुण्यकारिणी भागीरथी गङ्गाजी को देख पापराशि नाशहोजाते तैसे तुमको संग्राम में देख सब सेना शीघ्र नाश होजायगी ६ केवल वेदपाठियों करके तुम धारणीय हो किन्तु सेनाध्यक्षों से नहीं और मैंभी किसीप्रकार सेनाके वेगसे भग्न नहीं होसक्ता हूं ७ उठो धनुष को उठाय बाणों को लगावो विलम्ब न करो मैंभी इस सम्पूर्ण सेनाको तीक्ष्णबाणों से रोकता हूं ८ और क्या करूं धन्वा कटगया यह कह फिर लवने निश्चल दृष्टिसे सूर्य्यनारायण को देख मनसे धनुपकी

प्रार्थना करते यह स्तुति की ९ कि (नम सवित्रे सूर्य्याय पूर्णज्योतिष्मतेनमः । नम सप्ततुरङ्गाय नित्यव्योमचरायच १० मेषादीनामधीशाय मासिमासि नमोनमः । अयनद्वयकर्त्रेच प्रकाशायनमोस्तुते ११ मूकान्धबधिराणांच वाग्नेत्रप्रददायच । शिरोर्त्तिमूल कुष्ठाना नाशकायनमोस्तुते १२ नमः सुवर्णवर्णाय सहस्रकिरणायच । जगतामेकनेत्राय जन्मत्राणचपापते १३ ऋग्वेदरूपिणेतुभ्यं नमोब्राह्मणरूपिणे । यजुस्सामाथर्वकर्त्रे पुराणागमवारिणे १४ गाथेतिहासकर्त्रेतेनमोब्रह्मस्वरूपिणे। नमोविश्वस्वरूपाय रुद्ररूपायतेनमः १५ विश्वस्यवाञ्छितकरायमनोरमाय विश्वेश्वरायपुरुषायसदामताय । हंसायचण्डघृणयेमणिकुण्डलाय नौम्याहवेजयकरधनुरद्यमेस्तु १६) जैमिनिजी बोले कि इस स्तोत्रसे प्रसन्नहो सूर्य्यनारायण ने लवको दिव्य धनुष और इस स्तोत्रकेपाठकोंको उत्तमकल्याण दिया १७ इसके अनन्तर सुवर्ण के वदोंसे बँधा सगुण रुचिर दृढधन्वापाय महाबाहु लव कुश से बोलतेभये १८ जो मुनीश्वर हमारेगुरु ने सूर्य्यकास्तोत्र बतायाथा तिसको जपा तिस से मुझको धनुष प्राप्तहुआ १९ जोन जोन अलभ्यभी वस्तुहै तौन २ सब मैंने पाई इसप्रकार इतना वचन कह सेनारण्यके भस्मकरनेको दोनों वायु अग्नी प्राप्तहुये लक्ष्मण से रक्षित घोरसेना में दोनों प्रवेश कर गये २० । २१ दोनों घोरशरोंकी वर्षा करते हैं जैसे मेघपर्वत में तब सेना में प्रवेश किये दोनों को

महाभ्रमर हुआ जैसे मैनाक व मन्दराचल के मथने पर समुद्र में भ्रमर होते हैं दोनों के प्रहारसे दो कोश सैन्य पीछे को हटगई २२। २३ तब कालजित् और लक्ष्मण दोनों ने क्रोधकर वाणो से कुश को छायलिया और लक्ष्मणकी घोरसेना ने लवको रोंकलिया तहां हाथियों के सौ सौ के झुण्ड से सौभ्रमीभई जिन भ्रमियों में एक एक हाथी में दश २ रथ और एक २ रथमें सौर घोड़े एक २ घोड़े में सौ सौ पैदल २४। २५ इस प्रकार सौ भ्रमियोंके घेरेमें लव खड़ा हुआ तब तो बाण मुद्गर और सांगों से सैकरों योद्धा लवको मारते भये २६ तिसी प्रकार गदा तलवार सांग लोथी फरसा और भालों से कावामेंलगे घोड़ोंपर सवार हाथको बांध लेनेवाली फ़सरियों से शोभित ऐसे वीरोंने तिसबालक को घेरलिया २७ लव लाघव से समरकर्म कर्त्ता तीक्ष्ण वाणों से शत्रुओं के शिर काट पृथ्वी में गिराये सो शिर भूमिमें चमकरहे हैं और कल्पातकारी यमराजके समान गर्जा २८ लव क्रुद्धहो सौ बीरों को सौ बाण से दो सौ को दोसौ से पाचसौ को पाचसौ से हजार को हजारसे दशहजार को दशहजार से लवको लक्षबाण से मारा जैमिनिजी बोले कि हाथियों की सौ भ्रमी मारकर सिंहके समान पराक्रमी लव २९। ३० बाणों से सर्वाङ्ग भिन्नहुआ आठों दिशाओं को देखता भया और तलवारों की चमचमाहट से चमकती रथ हाथियों से व्याप्त और हाथियों से भी श्यामवर्ण इधर सेना है

इधरसेना है देखा और पीछे कुशको न देखा ३१। ३२ तिसकाल वालकने वहुत ध्यानकिया कि मेराभाई कुश कहांगया इसप्रकार तिसलवका विचार तो उत्तमधनुष रामचन्द्रजीकी शरणागत में आया लवणासुरका मामा क्रोधयुक्त रुधिराक्षनामक लेकरभगा ३३। ३४ तव लवने धनुपकोलिये वेगसे भागते हुये राक्षस से कहा कि खड़ाहोखड़ाहो मुझसे जीताहुआ कहांजायगा ३५ इसप्रकार कह महाभुज लवने हाथमे चक्रउठाया और माता सीताजीके चरणों की चित्तमें चिन्तनाकर शीघ्रही चक्रपाणि आकाश में स्थित हुआ तव गगनस्थ लव को देख योद्धाडरे कि यह गिरेगा ३६। ३७ तव भयभीतहो धनुषोंमें रुचिर वाण चढ़ाये और कई वीरों ने पुष्टढालें अपने मस्तकों में धरलीं ३८ कि यह वीर हमारे ऊपर गिरेगा इसमे सन्देह नहीं यह अनुमानकर कोई वीर रथके नीचे छिपरहे ३९ और वाणोंसे भिन्न शरीर वाले हाथी पृथ्वीमें पड़ेथे तिनके उदरमध्य में कोई महारथी बैठ छिपरहे ४० तिस समय जे वीरथे तिन्होंने भयभीतहोकर इसप्रकारके कर्मकिये शेष दश महावीर निकले जोकि राजा दशरथ के मन्त्री सुज्ञकेपुत्र जितशुभ, धार्मिक, सुकेतु, शत्रुसूदन, चन्द्र, मद, शल, काल, मल्ल, सिंह ये दशो तीक्ष्ण वाणों से आकाशस्थ चक्रपाणि लवको मारतेभये ४१। ४३ दशदश वाणों से लवके चक्रकोकाटा छिन्नचक्र लवने शीघ्रही पृथ्वी में आय परिघ कहे लंगड़को उठाया ४४ और हँसते

ही तिस परिघसे मन्त्री के पुत्रोंकोमारा ते वीर कवच शरीर से विदीर्णहो रुधिर से भरे अगों से पृथ्वी पर गिरतेभये जैसे वेदविहीन कुशास्त्र जाननेवाले विष्णु की भक्ति से वर्जित माता पिताके अभक्त नास्तिक रौरव नरकमें गिरें ४५। ४६ तबतक सो रुधिराक्ष राक्षस गदालिये प्राप्तहुआ और लवकेमस्तकमें बड़ेजोर से गदामारी ४७ तब यह बालक मूर्च्छितहो पृथ्वी पर मुहूर्त्त मात्रको गिरा फिर सो लव मूर्च्छाको छोड़ सिंहके समान खड़ाहुआ ४८ और भालाको लेकर पृथ्वी में खड़े हुये राक्षसके निकटजाय तिसदुष्टके बालों में भालाको लगाय उसी से शिर काटडाला ४९ फिर सूर्यका दिया अपना धन्वा लेकर गर्जा और सेनाके नाशकरनेवाले बहुत तीक्ष्णबाण छोड़नेलगा ५० तदनन्तर महासेना से फिर भी घिरगया जैसे गर्भमें स्थितजीव जब उत्पन्न हो तब अज्ञान से घिरे तिसीके समान यह भी सैन्यसे आच्छादित होगया जैसे घाससे मूँदी अग्नि तिस घासही को जलावे वैसेही क्रोध युक्त बालकने भी तिस सेना को जलादिया ५१। ५२॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकुशलवोपाख्याने लवयुद्धविक्रमवर्णनंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हेराजन्! सिंहविक्रम कुश तिस लक्ष्मणको देख चला कुशको आतेदेख लक्ष्मणने कुशके

पांच वाणमारे १ वाणों से ताड़ित वीर कुश यह वचन बोला कि हे वीर! खड़ेहो पीछेको पैर मतकरो २ ऐसे वचन कह एक वाणछोड़ा तिससे रथसमेत लक्ष्मणजी दोघड़ी घूमतेरहे ३ और अत्यन्त घूमने से चारोंघोड़े मरगये तबतो लक्ष्मणजी अपर रथमें सवारहो वाणोंको छोड़ने लगे ४ दो वाणों से निर्मल कवच और तीन वाणों से मुकुट काटडाला सो अद्भुतहीसा होताभया ५ सोकवच भिन्न वीर केंचुलिको छोड़े सर्पराजही के समान परिश्रम से विगत सीतापुत्र शोभितहुआ ६ फिर विनय पूर्वक वीर कुश लक्ष्मणजी से बोला कि शत्रुभावको छोड़ मेरा भार तुमने उतार लिया ७ निश्चय से तुमने मेराउपकार किया तैसेही अब मैंभी करूँगा हे लक्ष्मण! तुमको इस समय सेना का बड़ा भारहै ८ सो सब नाशकिये देताहूँ मेरे हस्तलाघवको देखो इसके अनन्तर बड़े ऊंचेस्वरसे अथर्वणवेद का सूक्तपढ़ते सीताकेपुत्र ने आग्नेय वाण छोड़ा ९ जिस अग्निवाण से हजारहों ज्वाला उत्पन्न भईं तिन ज्वालाओं से महात्मा लक्ष्मणजीका रथभस्म होगया १० सेना जरी और पताका वस्त्र आभरण जरे और वीरोंकी डाढी वाल जामा जलगये सफेद घोड़ोंकी आली और पूँछजलीं और छत्र चामर रथ रथों के चक्र जलतेहैं ११ । १२ अग्नि से सम्पूर्ण हथियार जलगये तब शत्रु निवर्हण लक्ष्मण ने जलती सेनाको देख वरुणास्त्र से तिस वाणको शान्तकिया तदनन्तर महावीर कुशने वायु वाणको लगाया १३ । १४ तब वायुवाणसे पीड़ित

सब वीर आकाशको उड़ते हैं और उसी समय मतवारे हाथी वायुके वेगसे गिरतेहैं १५ इतनीकथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि कालजित् नाम सेनाध्यक्ष क्रुद्ध हो लक्ष्मणजीसे बोला कि इसबालकको मैं संहारताहूँ जैसे समुद्रकातट समुद्रको संहारताहै १६ जबतक इसका छोटा भाई नहीं आता तबतक पराक्रम करताहूँ इसप्रकार कहकर सेनाध्यक्ष कुशके निकट प्राप्त होकर बोला १७ कि आज तू निश्चय से रामचन्द्रका सेनानाशक प्राप्त हुआ मैं आज तुझ कुशको निश्चय से उखाड़ निर्मूल करूँगा १८ कालजित्का कहासुन कुश ये वचनबोला कि छेरीके गलेके स्तनोंके समान तेरानाम झूठही देखपड़ता है जैसे बधिरके कान,अज्ञानियों का ब्रह्म, तृणकी अग्नि वृथाहोती है किन्तु बहुजल्पक तुझको सेनाध्यक्ष किसने बनाया हे मूढ ! तुम्हारे देखते हमारा छोटाभाई सेना को मारता है और मैं तुम्हारी जिह्वा के काटनेवाला बाण छोड़ता हूँ तिसको काटो १९ । २१ यहकह कुशने बाण चलाय,कालजित्की जिह्वा काटडाली और कहा कि इस समय तुमने तो मौनव्रत धारण किया सो सेना में स्थित लवकी पूजन कर लावो और फिर तुम मौनव्रत धारण करो तदनन्तर सेनाध्यक्षने क्रोध कर टेढ़ी फोंकी के बाण से कुशका हृदय भेदन कर बायें हाथको व्यथित किया फिर कुशने भी तिसका दहिना हाथ बाणों से काटा और फिर इसका कुण्डल समेत शिर अर्द्धचन्द्रबाणसे छेदनकर डाला कालजित्

के मरने उपरान्त कुशके आगे सुमित्रानन्दन लक्ष्मण प्राप्तभये २२। २५ शाल ताल वट वृक्षों के छेदनेवाले घोर वाणगणों को वर्षतेहुये लक्ष्मण कुशके हृदयमें मारे और साग गदा कुशकेऊपर चलाई और भाला तलवार फरसा तोमरको भी चलाया २६। २७ कुशने तिन शस्त्रोंको बाणोंसे सात २ प्रकारसेकाटा और खड़ाहो २ इसप्रकार कहते सिंहके समान गर्जा २८ और वाल्मीकिके दियेहुये पांच नाराचनाम वाण गृध्रके पत्तोंसे युक्त विषम सर्पोंके समान तीक्ष्ण वीरकुशने जलती अग्निकणों के समान धनुष में लगाये इसके अनन्तर छूटे बाण आकाश में जलते हुये मर्मभेदी तिस महात्मा लक्ष्मणके हृदयको भेदनकरते भये और आकाशसे निर्दीप्ति सूर्य्यकेसमान लक्ष्मणजी पृथ्वीमें गिरतेभये २९। ३१ जैमिनिजी बोले तदनन्तर कुशने समर में लवका शब्द सुना तब ढाल तलवारले गरुड़के समान उड़ा ३२ तहां तिस लवको हाथियोंकी पंक्तियोंसे घिरा देख क्रोध कर तिन हाथी और बहुत रथों को विदीर्ण किया सो सम्पूर्ण भ्रमीकाट लवको छुटाया निदान वाल्मीकिजी के आश्रमके समीप में दोनों बालकों ने सम्पूर्ण सेना मारडाली और निर्भय से दोनोंवीर अपने आश्रम को देखतेहुये खड़ेहुये ३३। ३५॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकुशलवोनाम्नाख्याने लक्ष्मणसेनापराजयोनामचतुष्पञ्चाशोऽध्यायः ५४॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी कहते हैं हे राजन्! गङ्गाजीके तीर यज्ञ मण्डपमें दीक्षित मुनियों से आच्छादित रामचन्द्र भरत जीसे बोले १ हे भरत! घोड़े के हरनेवाले उन बालकोंको कि जिनसे तुम्हारा छोटाभाई शत्रुघ्न पराजय को प्राप्त हुआ था उन्हें जीतके लक्ष्मण वीर क्यों नहीं आये २ जिन सौमित्र लक्ष्मण को स्वप्न के मध्य संग्राम में देख त्रैलोक्य सहित चराचरों का नाश होजावे फिर प्रत्यक्ष में कौन सहसक्ता है ३ सो आज बहुत वीरों से सेवित क्रोधसे पूरित तुम्हारे भाईको भी बालकोंने पतित किया तिस परभी मेरी आज्ञा है कि इनको क्षमाकरो ४ नहीं तो वे योद्धा वनमें उत्पन्न विप्र चपलताने युक्त स्वामी से हीन लक्ष्मणकी भयसे त्रस्त किसकी शरण जावेंगे ५ निदान तिनको अपने प्रतापसे लक्ष्मणजी पतित करके धर्मावलोकित शत्रुघ्नको लाय कर माताके दर्शन करावेंगे ६ तब लक्ष्मणको क्रोधित सुनिके और अपने बालकों को महाशंकित सुनिके माताने उनकी प्रार्थना की, कि हे नाथ! इनबालकोंकी रक्षा करो ७ यह अपना नाशकराने वाले और विघ्नके करनेवाले कहांसे प्राप्तहुये अब वर्ष भरमें घोड़ाके केवल दो दिन बाकी हैं ८ शत्रुघ्नसे रक्षित उनके निकट प्राप्तहुआ उन्होंने मेरा अपमान करके बांधलिया तथा भरत सुग्रीव विभीषण वालितनय अङ्गद महाबल हनुमान् इनके सिवाय और मेरे सुहृद् बन्धुओं

को अपहारक बालकों ने तृणके समान माना ९। १०
देखो बालकोंकी ऐसी चेष्टावाले कुमारोंने घोड़ा हाथ में
प्राप्त करलिया तिससे हे भरत! जनोंको मेरे निकट से
सन्देशके वास्ते भेजदो लक्ष्मणके निकट समर में जैसे
वह घोड़ा ले आवें सो सौमित्र मेरे वचन सदैव कुद्दहो
करते हैं ११। १२ जैमिनिजी बोले कि यह सुन भरत
ने महाबली पाच दूत बुलाय रामचन्द्र के निकट उसी
क्षणमें प्राप्त किये तिनसे प्रभु आपही बोलते भये १३
कि लक्ष्मण के निकटजाय मेरे ये वचनकहो कि युद्धमें
जीतेही दोनों बालको को मोहन अस्त्रसे मोहित करके
ले आवें और हे लक्ष्मण! तुम करके ये अपराधी भी
बालक रक्षणीयहै क्योंकि तुम वीर और मन्त्र शस्त्रो के
जाननेवाले शूरवीरो से युक्त रथस्थ और समर्थ हो
और वे विरथ निराश्रय अर्थात् कोई उनका रक्षक नहीं
है इससे उन बालकोंको शीघ्र यहां लावो निर्बलों को
रणमें न पतितकरो १४। १६ और जे मनुष्य पराये
बालकमें दयायुक्त चित्तकरते हैं तिन साधुओं के पृथ्वी
में बहुत पुत्र पौत्र उत्पन्न होतेहैं १७ पृथ्वी में उत्पन्न
होकर मैंने सीताजीके वदनके समान पुत्रका मुख नहीं
देखा तिसीसे मैं तिनको छोड़ताहूं १८ और तिनसों
पूछो कि तुम किसके पुत्रहो और किस कारण वन में
वास करतेहो और तुम्हारी माता कहां है यहसब पूंछ
कर उनको लेआइयो १९ जैमिनिजी बोले कि हे नि-
शापते! जबतक इसप्रकार रामजी दूतोंसे कहै नवतक

वाणोंसे भिन्न घायल रुधिरकी धाराबहते २० लक्ष्मण
के महावीर इन महात्मा रामचन्द्रकी शरण में राम
राम यह बकते और महाभय कहते हुये आये २१ कि
हे राम! हे राम! हे महाबाहो! इससमय महाभयसे रक्षा
कीजिये जो कि बहुत सैन्यसमेत शूरलक्ष्मण उस घोर
वनमें प्राप्तहुये जहां कि मूर्च्छित शत्रुघ्न सेनाध्यक्षों
समेत कुशके बाणोंसे घायलपड़ेथे २२। २३ और कुश
हीके बाणोंसे भिन्न अंग पीड़ित हो रुधिर की धारा ब-
हते वीर नहीं देखपड़ते किन्तु मानो पुष्पित किंशुकहों
हैं २४ और वज्रपातके सहनेवाले नानाप्रकारके शस्त्रों
से पीड़ित व्यथाको न जाननेवाले वे वीर कुशकरके
मूर्च्छित किये गये २५ और अकेले कुशकरके सो स
घन सेना विमुखकीगई बालकका चरित्र देखकर पर्वत
में प्राप्त होतीभई २६ और हे राघव! लक्ष्मणजी का
कालजित् नाम सेनाध्यक्ष कुशके बाणों करके पीड़ित
पृथ्वीमें गिरा २७ तब दोनों भाइयोंको वनमें देख और
छोटेभाई शत्रुघ्नके वैरको छोड़ अपना मन दयायुक्त
कर लक्ष्मणने युद्धकिया २८ तदनन्तर तुम्हारे छोटेभाई
लक्ष्मण कुशसे बोले कि हे बालक! तुम अपने छोटे
भाई समेत घरजाओ हमने तुमको छोड़दिया घरजाय
मातासे कहो कि किसी सामयुक्त ने हमको छोड़दिया
लक्ष्मणजीके येवचनसुन कुश लवणसे बोले २९। ३०
कि तुम रामचन्द्रके निकटजावो क्योंकि मैने तुम्हें छोड़
दिया तुम दु खितसे युद्ध न करूँगा इससमय रामचन्द्र

में थोड़ी भी क्षमा नहीं देखी जाती है जो रामने छोटे भाई समेत तुमको क्लेश दिया और अपना नहीं आया और विगतमान संसर्गकारक रामचन्द्र से तुम डरे हो ३१। ३२ अब तुम्हारे निमित्त हे लक्ष्मण! मैंने कृपाकी विना घायके जावो और जो तुम्हारे पौरुषप्रकाश हो तो मुझको शीघ्र बाणों से मारो ३३ इसके अनन्तर लक्ष्मणने तिसको सातबाणों से हृदय में मारा तिसकाल वे तीक्ष्णबाण युद्धमें तिस बालक को भेदनकर वनमें गिरतेभये और वृक्षोंको भी काटतेभये तदनन्तर कुशके बाणसमूहों से लक्ष्मणका शरीर रणमें क्षणहीत्रिषे समाकीर्ण और त्वचाविहीन कियागया क्या लक्ष्मणजी अपना शरीर नवीन करनेको जानते हैं कोई पूर्वाभ्यास से जिससे बालकसे युद्धकिया पीछेको कुण्डलोंको धारण किये बाणोंसे घायल धीरलक्ष्मणगिरे ३४। ३७ हे राम! तुम्हारी सेना भग्न होकर पतित हो दशोंदिशाको भाग गई सो महावीर दोनोंभाई शत्रुघ्न और लक्ष्मण घायल हैं हमतो तुमसे कहने को आये हैं हे रघुपते! दीक्षाको छोड़ वनको चलो युद्धकरो जबतक कुशके धनुष से निकले बाण नहीं आते हैं हे प्रभो! तिस कुशके आगे दूसरे की गिन्ती नहीं ३८। ४० जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार तिनके वचन सुन भरताग्रज रामचन्द्र तिससमय मूर्च्छितहो पृथ्वीपर गिरे ४१ इसके अनन्तर भरतजी उठाय जलसे सींच नेत्रोंको शुद्धकर वारंवार समुझाय बुझाय ४२ चेतनायुक्त देखकर बोले हे राम! लक्ष्मण

के लिये विषाद मे मन न करो उसने शत्रुघ्न समेत तुम्हारे वास्ते शरीरको छोड़दिया और लक्ष्मण जबसे सीताजीको वनमेंछोड़ आयाथा तबसे अत्यन्त दु खित अपनी देह छोड़नेकी वाञ्छाही किये रहाथा सीताके दुःखसे जीता फिर तुम्हारे निकट नहीं आता ४३।४५ तुम्हारी आज्ञा मैंनेकी यहकहनेको सामने प्राप्तभयाथा तथापि जानकी और लक्ष्मणजी के विषय में तुम्हारी कृपा न उत्पन्नहुई ४६ और लक्ष्मणजीने हृदयमें विचार स्मरणकर समयमें मृत्युकोकी इसके अनन्तर हे राम! सानुज लक्ष्मणने यज्ञकार्यके निमित्त सीताका त्याग स्मरणकर युद्धमें प्राणछोड़े निरपराध जिम सीताको वन में छोड़कर आया ४७। ४८ उसी समयका पातक मदैव देहमें धारणकरते रहा तिस लक्ष्मणका पातक आज कुशके धनुष से उत्पन्न प्रचण्ड बाणगंगासे धोयागया और हे राम! आज लक्ष्मण शरीरसे पवित्रहुआ और अबमुझ अपवित्र भरतको क्यों नहीं पठातेहो ४९।५० और हेराम! आज अपना शरीर पवित्रकरनेको जाताहूँ और वनमे सीताके छोड़नेके निमित्त तुम्हारा सम्पूर्ण मनोरथहुआ ५१ तिसप्रकार सीता शत्रुघ्न और लक्ष्मण से हीन अयोध्यामें मै कैसे जीतारहसक्ताहूं इसप्रकार कहतहुये भरतसे रामचन्द्रबोले हे भरत! वनमें जायमहबालकको नहीं इमकोजानो और सानुजतिसकुशको जीतकर मेरे निकटलाओ और दोनों अपने वीर मूर्च्छित भाइयों को उठाओ ५२। ५३ और इमसमय हनुमान्भी जावें

और तुम्हारी सेवाकरते वानरों समेत जाम्बवान्‌भी जावें यह मेरी कही वाक्य करो ५५ जगलमे घूमते मैंनेपिताकी वाक्य की जटावल्कल धारणकिये नदिग्राम में तुमने तिस पिताका बड़ा वचन नहीं किया इस समय तिस पातक का उद्धारकरो मेरे वचन करनेही से हे महाबुद्धे! पवित्र होवो तब भरतजी बोले हे रघुनाथक! कहताहू कि दो वीर बालक तुम्हारी सेना के नाशकरनेवाले तिनको मैंने सुना है आप नहीं जानते चाहे हनुमान् जानताहो वा नहीं ५६।५९ या तुम्हारा मन्त्री नीतिका जाननेवाला अंगद जानताहो तब अगदने कहा मैं जानताहूँ कि ये रामचन्द्रके दुर्मन्त्ररूप दोनों बालकहैं जिससे रघुनाथजी ने लोकापवादमे सीताजी को छोड़ा इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार रामचन्द्रजी की आज्ञा पाय हनुमदादि प्रमुखों से युक्त क्रोधसे रथमें सवारहो शीघ्रही भरतजी चलतेभये रघुनाथजीके रमणीय पुरसे निकली बहुत सेना आकाश और पृथ्वीमें व्याप्त होगई तब सघनवनमें जाय भरतजी हनुमान्‌से बोले ६०।६३ हे हनुमन्! देखो समर में कुशके बाणों से गिराये राम-चन्द्रके बहुत वीर बिना शिर भुजाके पड़े हैं और हाथी रथ और घोड़ेवीर बिना शिरके हाथियोंके वक्षोंको देखो इधर उधर दौड़रहे हैं ६४।६५ और इससंग्राममें शत्रुघ्न लक्ष्मण कहा पड़ेहैं और रुधिरके भाग बहते महा-बली वीर यहां तक चले आते हैं सो मैंन्यमे महावीर हमारे भाई क्या भागीरथी गंगाजीमे तो न प्राप्त होगये

के लिये विषाद में मन न करो उसने शत्रुघ्न समेत तु
म्हारे वास्ते शरीरको छोड़दिया और लक्ष्मण जबसे
सीताजीको बनमेंछोड़ आयाथा तबसे अत्यन्त दुःखित
अपनी देह छोड़नेकी वाञ्छाही किये रहाथा सीताके
दुःखसे जीता फिर तुम्हारे निकट नहीं आता ४३।४५
तुम्हारी आज्ञा मैंनेकी यहकहनेको सामने प्राप्तभयाथा
तथापि जानकी और लक्ष्मणजी के विषय में तुम्हारी
कृपा न उत्पन्नहुई ४६ और लक्ष्मणजीने हृदयमें विचार
स्मरणकर समयमें मृत्युकोकी इसके अनन्तर हे राम!
सानुज लक्ष्मणने यज्ञकार्यके निमित्त सीताका त्याग स्म
रणकर युद्धमें प्राणछोड़े निरपराध जिस सीताको बन
में छोड़कर आया ४७। ४८ उसी समयका पातक स
दैव देहमें धारणकरते रहा तिस लक्ष्मणका पातक आज
कुशके धनुष से उत्पन्न प्रचण्ड बाणगणासे धोयागया
और हे राम! आज लक्ष्मण शरीरसे पवित्रहुआ और
अबमुझ अपवित्र भरतको क्यों नहीं पठातेहौ ४९।५०
और हेराम! आज अपना शरीर पवित्रकरनेको जाता हूं
और बनमें सीताके छोड़नेके निमित्त तुम्हारा सम्पूर्ण म
नोरथहुआ ५१ तिसप्रकार सीता शत्रुघ्न और लक्ष्मण
से हीन अयोध्यामें मैं कैसे जीतारहसक्ताहूं इसप्रकार
कहतेहुये भरतसे रामचन्द्रबोले हे भरत! बनमें जाय यहबा
लककौनहै इसकोजानो और सानुजतिसकुशको जीतकर
मेरे निकटलावो और दोनों अपने वीर मूर्च्छित भाइयों
को उठावो ५२। ५३ और इससमय हनुमान्भी जावें

प्रकार मेघनाद के बाणों से मूर्च्छित नहीं हुये थे इनको आतुर देख मुझको यह मूर्च्छा आती है कि बालकोंकी मारी सैन्य सम्पूर्ण सेनावाले वीर देखते हैं ७८। ७९॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां कुशलवोपाख्यानेहनुमद्दापनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि इसी अन्तर मे धनुषको टकोर करते कुश और ढाल तलवार लिये लववीर समर में प्राप्तहुये १ किरणों से सागर मेखला पृथ्वीको प्रकाश कर सूर्य्य अन्तर्द्धान को प्राप्तहुये और अन्धकार होजाता भया २ उस समय अपना पराया वीर नहीं जानपड़ता था रणकोविद् परस्पर नामों से पुकारते हैं ३ और मतवारे हाथी बहुतसे रथोंको चूर्ण करते दौड़ते हैं और रथके वेगसे घोड़ोंके सवार घोड़ेकी पीठसे गिर पड़ते हैं और घोड़ों के वेगसे सवार और पैदल पृथ्वीपर शयन करते हैं तब लव तलवार को चमकाय महासेना में प्रवेश करता भया ४। ५ और शिरमें ढाल को औंधाय तलवार से घोड़ोंके पैर और हाथियोंकी विशाल शुण्डादण्डोंको काटा ६ और लम्बेहाथ उँचाय हाथीके ऊपरजाते हाथियों के मस्तक फाड़ता है जैसे बढ़ई काष्ठको चीरताहै ७ और गजमुक्ताओंको हाथकी मूठीमें लेकर पृथ्वीपर फेंकताहै हाथीके दांतोंमें गिरती तलवारों से भयानक अग्निकी चिनगी उठकर वहीं सैन्यवालों को जलाती हैं तब तक महाबाहु वीर कुश

इस समर में मनुष्यों के कहीं हाथ कहीं पैर कहीं दांत देखपड़ते हैं ६६। ६७ और बाहनों के कहीं केश कहीं माला देखपड़ते हैं अब इस नदीके पारजाय देखो ६८ जिसप्रकार पहले तुम समुद्र को उतर लकाको गये थे उसीप्रकार तहाजाय हमारे दोनों भाइयों को देखो और तिन दोनों लवकुश बालको को देखो तब हनुमान्‌जीने कहा हे भरत! पूर्व में सीताजी सम्मुख रहीं उन्हीं सीता से मैं समुद्र उतरा इससमय वह विमुख देखपड़ती हैं और हे लक्ष्मणाग्रज! रुधिरकी नदी में दुस्तर मानताहूँ ६९। ७१ तिसपर भी तुम्हारी बाक्य से भाइयों के देखने को जाताहूँ यह कह नदी उतर पारजाय पड़े हुये दोनों वीरोंको देखा लक्ष्मण और शत्रुघ्नदोनों वीर शरों से सर्वाङ्ग निर्भिन्न सीता के त्यागसे दुःखित पृथ्वी की मानो प्रार्थनासी करतेहैं ७२। ७३ कि क्रोध न करो सीता के द्रोही हम दोनों को जगह दो इसके अनन्तर हनुमान्‌जी मूर्च्छित दोनोंको भुजों से उठाय लेकर भरत के समीप वेगसे फिर आये कुशके बाणों से चारोंओर भिन्नहैं यह भरत देखतेभये ७४। ७५ और दोनों भाइयों को रथमें स्थापितकर रक्षाके निमित्त अङ्गदको दे विस्मयसे युक्त भरतजी हनुमान्‌जी से बोले कि ये दोनों वीर रामकी सेना के गिरानेवाले बालकों का वेष धारण किये देवता महारण में लक्ष्मण शत्रुघ्न को गिराय कहीं गये देखो तब हनुमान्‌जी बोले कि हे भरत! जिसप्रकार-कुशके बाणोंसे व्याप्त लक्ष्मण कष्टको नहीं छोड़ते तिस

प्रकार मेघनाद के बाणों से मूर्च्छित नहीं हुये ये इनको आतुरदेख मुझको यह मूर्च्छना आती है कि बालकोंकी मारी सैन्य सम्पूर्ण सेनावाले वीर देखते हैं ७८।७९॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां कुशलवोपाख्यानेहनुमदा
पयनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः १५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि इसी अन्तर मे धनुषको टकोर करते कुश और ढाल तलवार लिये लववीर समर में प्राप्तहुये १ किरणों से सागर मेखला पृथ्वीको प्रकाश कर सूर्य्य अन्तर्द्धान को प्राप्तहुये और अन्धकार होजाता भया २ उस समय अपना पराया वीर नहीं जानपड़ता था रणकोविद परस्पर नामों से पुकारते हैं ३ और मतवारे हाथी वहुतसे रथोंको चूर्ण करते दौड़ते हैं और रथके वेगसे घोड़ोंके सवार घोड़ेकी पीठसे गिर पड़ते हैं और घोड़ों के वेगसे सवार और पैदल पृथ्वीपर शयन करते हैं तब लव तलवार को चमकाय महासेना में प्रवेश करता भया ४।५ और शिरमें ढाल को औंधाय तलवार से घोड़ोंके पैर और हाथियोंकी विशाल शुण्डादण्डोंको काटा ६ और लम्बेहाथ ऊँचाय हाथीके ऊपरजाते हाथियों के मस्तक फाड़ता है जैसे वढ़ई काष्ठको चीरताहै ७ और गजमुक्ताओंको हाथकी मूठीमें लेकर पृथ्वीपर फेंकताहै हाथीके दांतोंमें गिरती तलवारों से भयानक अग्निकी चिनगी उठकर वहीं सैन्यवालो को जलाती हैं तब तक महाबाहु वीर कुश

बाणोंको छोड़तेहुये वीरोंके शिर और वजुल्लोंसे भूषित भुजोंको काटा और हाथियों के शिरोंको बाणों से काट स्वर्गको पठाये ८। १० ते आकाशमें एकही भावमें टिके अवतकभी देखपड़ते हैं इससे श्रेष्ठ नक्षत्र न होगा न हुआहै तिसीसे आकाशमें हाथियोंकी शुण्डा नक्षत्रता को प्राप्तहोगई वे आजभी पृथ्वीमें बड़े जलकी वर्षा करतेहैं तिसका पवित्र जल मोतियोंका चिह्न है इसप्रकार सैकरों हाथियोंके शिर ११। १२ तिस कुशवीरने काटे सो अद्भुतहीसा होताभया इसके अनन्तर धनुषकी टंकोर से दिग्गजोंको बधिर करते भरतने स्वामिकार्तिक और गणेश के समान अपनी सैन्यवनको वा वायु अग्निके समान नाश करते देखा १४। १५ तब उन्होंने तीक्ष्ण बाण छोड़े जैसे मेघजलकी धाराओंको छोड़ता है जैमिनिजी बोले कि काकपक्षधारी घनश्याम धनुर्द्धारी दोनों बालकोंको प्राप्तदेख हनुमान्‌जीने कहा कि यह रामाकृती दोनों बालक रामचन्द्रकी सेनाको देखते हैं १६। १७ भरतादिक महावीर सर्वत्र तय्यारहो खड़ेहों इसप्रकार वीर वायुपुत्रके कहते १८ प्रथम कुश युद्धगत लव से बोला हे लव! देखो बड़ी सेना प्राप्त भई और घोड़ालेने की इच्छा करती है १९ तबतक मैं इस सैन्यमें जाताहूं तुम घोड़ेकी रक्षाकरो तदनन्तर कुश रामानुज भरतको देख ये वचन बोला कि शत्रुघ्न और लक्ष्मण दोनों शयन करते हैं और सैन्य मृतक पड़ी है शत्रुमें कुशनामक आकर प्राप्तहुआ क्या मेरा नामनहीं

जानतेहो २० । २१ तब भरतजीने कहाकि सानुज तुम को जीत अपनी पुरीको लेजाऊंगा इससे इस समय घोड़ाको छोड़ चलेजावो २२ और तुम्हारी माता तप-स्विनी हैं इससे तुमदोनों को देख मुझको दया उत्पन्न होतीहै मातासे जाय कहो कि सबन्धु हमको भरत ने छोड़ दिया २३ और इससमय जो तुमने सेना पतनकी सोभी क्षमाकिया तब कुश ये वचनसुन बाणों से ताड़ित करता भया सातबाण से वीर भरतको २४ और पचह-त्तरसे बानरोंको और सो बाणोंसे समरमें हनुमान्जीको मारा और हँसतेही हजार से अङ्गदको पाचसों से नील को सतहत्तर से नलको वेधितकर तीनहजार बाणों से जाम्बवान् को घायलकिया जिसके हृदय मे अतिशय बलसे बाणलगा सो सो सीतापुत्र के मारे मूर्च्छित ह्वै गिरता भया हे राजेन्द्र । अत्यन्तबली लवने छ बाणों से २५ । २८ भरतका धनुष काट२४ खण्डनकिया और कुशके धनुष से छूटे बाणों से भरत मोहित हुआ तब भरतको मूर्च्छितदेख वायुपुत्र हनुमान् ने योजनभर के विस्तारवाला पर्वत उखाड़ सीतापुत्रों के मस्तक में फेंका २९ । ३० दीर्घनेत्रवाले दोनों बालकों ने तिस पर्वत को आकाश में त्रसरेणु जोकि धुँआड़े मे जो सूर्यकी किरणों के पड़ने से छोटे छोटे कणदिखाई देते हैं तिनके तीसवें भाग के समान काटके कर डाला अर्थात् चूर्ण करडाला मानो रुद्र के लगानेकी विभूति होगया ३१ और पांच बाणों से विदीर्ण हनुमान्जी को भी कुशने

अपने बलसे मूर्च्छित किया ३२ तबतो फिर टूटीफौज पतितभई यह रामचन्द्र के निकट जाय किसी ने कहा सो सुनकर हे राजेन्द्र! तिससमय महाबाहु सुग्रीव समेत भ्रातृदु खसे दु खित विभीषण युक्त विस्मय से फुल्ल लोचन रामचन्द्रजी रथमें आरूढ़होकर चलतेभये तहां जाय सो सेना और दोनों बालकों को देख सेना मारी गई यह रामचन्द्र ने कहा ३३। ३५ जैमिनिजी बोले कि रामचन्द्रजी ने धनुर्धारियों में श्रेष्ठ और अपनी आकृति के दोनों बालकों को देख पूँछा कि तुमने धनुर्वेद कहा सीखा जिससे तुमने फौज मारडाली ३६ और किसने तुमको बिधिपूर्वक यज्ञोपवीत दिया और किस वेद में परिश्रम किया और किन कलाओं में तुम निपुणहो व धर्म्मश्रवणमें तत्परहो ३७ और कभी पराई स्त्रियों में तुम्हारी विरुद्धदृष्टि नहींहै और ब्राह्मणों में तुमने प्रतिज्ञा पालनकी है ३८ कौन तुम्हारा पिता और कौनमाता और कहां वासहै सो कहो तिनका यह कहासुन कुश बोला हे राजन्! तुम्हारे सदृश मनुष्य कहतेहैं कि क्षत्रिय को युद्धमें पौरुषही दिखलाना चाहिये यही उसका धर्महै तिसधर्मको छोड़के हमारे वंशकी कथा पूँछनेसे तुम्हें क्या प्रयोजनहै ३९।४० इससे हे राजेन्द्र! जल्दी युद्धकरो विलम्ब क्यों करते हो घोड़ा हमारा नहींहै यह कहो अथवा युद्ध करो हे राजन्! तिनके ये वचन सुन रामचन्द्रजी बोले कि मैं युद्ध न करूँगा तुम निश्चय कहो तब कुश बोला ४१।४२ कि क्षमा शील हम दोनों को वनमें

सीताने उत्पन्नकिया और पिताके समान सम्पूर्ण जात-
कर्म्मादिक महात्मा वाल्मीकिजीने किये ४३ औरयज्ञो-
पवीत दिया और वेद अच्छेप्रकार पढ़ाया तथा सत्पु-
रुषोंके मनको निवृत्तदायी रामचन्द्रजी के चरित्रकोभी
पढ़ाया ४४ तिसके अभ्यास योगसे दृष्टि निर्मलहोजाती
है बुद्धि और मन स्वस्थताको प्राप्तहोता है और प्रताप
भी वढताहै ४५ तिसीसे तुम्हारे योद्धाओंकी सेनामारी
गई तिससे हे राम! तुम्हारे पुत्र स्त्री और धनमें ममता
नहींहै जिससे तुमको मरीहुई सेनाकीभी गिन्ती नहींहै
और हे राम! तुम्हारे शक्ति नहींहै सो क्या तुमने वनमें
छोड़दी ४६। ४७ शक्तिसे हीन कौन मनुष्य तीक्ष्ण
वाणोंसे युद्धकरेगा जैमिनिजी वोले कि सीता शब्दके
उपवर्णनसे दोनोंको अपना पुत्रमाना और कहाकि इन
से हमारे युद्धको धिक्कारहै यहकह धनुषको त्याग करदिया
४८ इसके अनन्तर हे जनमेजय! मूर्च्छितहो रथमें गिर-
पड़े जैमिनिजी वोले कि सत्यपराक्रम धीरधर्मात्मा राम-
चन्द्रजीने सुग्रीवसे पूछा हे कपिश्रेष्ठ! जानतेहो ये दोनों
किसके पुत्रहैं ४९। ५० तव सुग्रीवने कहाकि हे राघव!
यह मैं जानताहूं कि ये दोनों पुराणपुरुष से उत्पन्नहैं
औरजलके मध्यमें देखो तुम्हारीही छाया इनमें देखपड़ती
है ५१ समरके वीचमें प्रभुको छोड़ दूसरेको जययुक्त
मैं नहींमानताहूं हे राजन! मैं तुम्हारे मामनेही वालकोंसे
युद्धकरनेको जाताहूं ५२ हे राजेन्द्र! यहकह सुग्रीवने एक
वृक्ष लेकर दोनोंके आगे फेंका तो दोनोंने वृक्षको तीक्ष्ण

वाणोसे तिलके समानकाट कपिराजको मूर्च्छितकिया ५३ फिर तबतक नीलनाम वानर युद्धकरनेलगा तब क्रोधयुक्त कुशने नीलकोभी बाणोंसे मूर्च्छितकिया ५४ तिसनील के रुधिरसे बहुत वानर उत्पन्नहुये तिन महावानरों से संग्राममण्डल व्याप्तहोगया ५५ तबतक वीर कुशने अच्छी तरह विचारकर जलौकास्त्र से वेधनकिया तब सम्पूर्ण वानर पृथ्वीमें गिरे ५६ सो नीलभी उनमें पतितहुआ और सब सेनाध्यक्षभी पतितहुये केवल एकरामही समर में खड़ेरहे तब रामचन्द्रने कालानलके समान तीक्ष्ण नाराचनाम बाणछोड़े सो निष्फलहो गिरे जैसे निर्द्धन के मनोरथ कृपणके मन्दिर में और शरदकालके मेघ आकाशमें निष्फल होते हैं और जो जो बाण समर में कोविद रामचन्द्रजी छोड़ते हैं सोसो बाण ये दोनों दो दोप्रकारसे काटतेहैं तो वह चारप्रकारसे होजाताहै ५७। ६० तिसकाल इस प्रकार लोकके विस्मयकारक युद्ध होताभया तब रघुनाथजी दोनों बालकों का तुल्यबल और सीताजीके मुखके समान मुखदेख बाणोंकरके ताड़ित रथके ऊपर मूर्च्छित होकर गिरपड़े तब तो कुश लव रामचन्द्रजी को मूर्च्छित देख रथसे उतर उन के कुण्डल और बजुल्ला कण्ठका हार और लक्ष्मण का मुकुट ६१। ६३ तथा संग्राम मण्डलमें पतित सम्पूर्ण वीरों के मुकुट लेतेभये हे राजन्! इसी अन्तरमें लव कुशसे बोले ६४ किहेभाई! हनुमान्‌को पकड़े लेताहूं माताजी वानरको देख निःसन्देह प्रसन्नहोगी ६५ और

तुम दुर्जय रामचन्द्र के मनोहर रथमें सवारहो और मैं रमणीय लक्ष्मण के रथमें आरूढ़हो चलताहूं ६६ और जाम्बवान् इत्यादिक वीरों को अपने रथमें डाललो जैमिनिजी बोले कि हनुमान् और जाम्बवान् दोनों मूर्च्छारहित पृथ्वीपर पड़ेहुये आपस में बोले कि अब यहां नेत्रोंको मूँदलेना चाहिये हनुमान् ने कहा कि हे जाम्बवान्! देखो रामादिकवीर बालक के बाणों से मूर्च्छित हैं और हमको भी रामसम्भवकुश मूर्च्छित करता है क्या करेंगे जो हमको बलसे कुशपकड़ लेजावेगा तो सीताजी के निकट जाने मे निस्सन्देह हमारा मरण होजावेगा ६७।७० इस प्रकार हनुमान्जी के कहते हुये आनन्द से रणगत लवने प्राप्तहोकर कपटमूर्च्छित दोनों वीरोंको पकड़ लिया ७१ इसके अनन्तर सीता के निकट दोनों पुत्रों ने सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा कि सेना समेत रामचन्द्रको जीता और उनके भूषणलेआये ७२ और तुम्हारे कौतुकके अर्थ दो वानर लाये हैं सो देखो हे माता! भाईने युद्ध किया और विजयकर फिर आया ७३ सीताजी पुत्रोंको मिलकर फिर यह वचन बोलीं कि हे पुत्र! इन माननीय दोनो वानरोंको सेनाके बीचमें छोड़आवो ७४ मुझको देख मरे ये जीवहीन होजावेंगे तब तो महाबुद्धिमान् लव इन दोनोंको रणके मध्यमें छोड़आया ७५ हे राजन्! इसी अवसरमें महर्षियों से युत महातेजस्वी वाल्मीकिजी वरुणालय से आये तिनके निकटजाय कुश लवने सपूर्ण वृत्तात कहा तद-

नन्तर महामुनिवर बाल्मीकिजी ने जानकर अमृतमयी जलसे सबको छिड़ककर उठाय जिलाया और रघुनाथ-जीसे बोले हे महाराज रघुनन्दन! ये तुम्हारे दोनों पुत्र हैं इनको ग्रहणकरो ७६।७८ और जो सीताजीको भी निर्दोष मानते हो तो लेजाने के योग्यहो तब उठकर रामचन्द्र ने सेना समेत पुरीमें प्रवेश किया ७९ और विस्मय को करते हुये बाल्मीकिजी के छोड़े हुये घोड़े की तिनवीरों से रक्षाकरा पश्चात् महायज्ञ किया तब बाल्मीकिजी ने बालकों के समेत सीताजी को लेकर रामचन्द्र के निकट स्थिरकर कहा कि ये निश्चय तुम्हारे पुत्रहैं ८०।८१ तब रामचन्द्रजी पुत्रयुक्त होकर सीताके समेत स्थितहुये हे राजन्! जिस प्रकार श्रीरामचन्द्र और लव कुश से पिता पुत्रका युद्ध हुआ उसी प्रकार बभ्रुवाहन और अर्जुन का होताभया सूतजी बोले कि हे शौनक! जैमिनिजीने सो सम्पूर्ण जनमेजय से कहा ८२।८३ हे मुनिश्रेष्ठो! सो मैंने तुम सबसे कहा और यह पिता पुत्र का युद्ध बाल्मीकिजीने नहीं कहा जो कहते तो यह लोक करुणासागरमें मग्न होजाता ८४ इस रमणीय कथाको जे नरश्रेष्ठ सुनते हैं ते पुत्र और पौत्रों से आनन्दको प्राप्तहो विष्णुपद को जाते हैं ८५ इस पुण्यकारी इतिहास को जो नर सुने सुनावे वह उत्तम राजसूय और अश्वमेध के फलको प्राप्त हो ८६ और सुवर्ण के विमान पर सवारहो वह नरोत्तम स्वर्ग को जाताहै फिर लक्ष्मी और रूपयुक्त होकर पृथ्वीतल

में उत्पन्न होताहै ८७ यह इतिहाससुन फिर और अव-णीय इतिहास नहीं अच्छालगता जैसे कोकिला का शब्दसुन फिर रुक्ष काकवाणी नहीं शुभ लगैहै ८८ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकुशलवोपाख्यानेरामाश्वमेध परिसमाप्तौफलस्तुतिवर्णनन्नामपट्त्रिंशोऽध्यायः३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले हे नराधिप! तिस संग्राम में बभ्रुवा-हनके हजार रथ काटकर हंसध्वजने युद्धकिया १ और सुरथ को आगे पतितकराय बाणोंसे बभ्रुवाहन का श-रीर भेदनकिया फिर पार्थपुत्र के शस्त्र निष्फलकरडाले २ तब श्रीकृष्णचन्द्र के वचनों और पुत्रोंका पतितहोना समरमें स्मरणकर हे जनमेजय! पाच अक्षौहिणी सेना जीती ३ तब बभ्रुवाहन अर्जुन के ऊपर बाण छोड़ताहै तिस बाणकरके हजारवीर की सेना पतितहोगई ४ तिससमय संग्राम के बीचमें बभ्रुवाहन के बाण समूहों करके हंसध्वजके घोड़ा और रथभी परमाणु कहे रचक होगये ५ सो राजाहंसध्वज विदीर्ण हृदयहो पृथ्वीमें गिरा महावीर महात्माहंसध्वज के गिरनेपर ६ सुवेग संग्राममें युद्ध करनेको बभ्रुवाहनप्रति आया और आके नव बाणों करके बभ्रुवाहनका वक्षस्स्थल ताड़ितकिया ७ और छत्र ध्वजा धनुष तीनबाणोंसे काटकर दोखण्डकरडाले औरसौ बाणोंकरके हजारोंके वक्षस्स्थलमेंमारे ८ फिर इसवीरने ह-जारों वीरोंकोमारा और चन्द्रमाकेसमान श्वेत हाथियोंके

सैकड़ा महासंग्राम मे मार मासके चहलासे पृथ्वी सुदारुणकी सो सम्पूर्ण युद्धके क्षेत्रको हाथियोंको शुंडकेऊपर बाणलगे उसके नीचे शुण्डादण्ड लटकती और हाथी घोड़ोंके कन्धामेंवँधी त्रिगुणितकहे तेहरी आतोंकी जो तीकर ऐसे हलरूपसे शृगाल मोतीके फलोंके बीजवोरहेहैं और शिर मूलफलके समान उसमें बिथरातेहैं ९।१२ और यक्षिनी कटे हाथियों के पैरोंके मूशल बनाय सैकरों गान करतीहुई नरशिरोंको कूटतीहैं १३ और कोई कटे हाथियोंके मुखसे जातबनाय मांसपीसतीहैं फिर सुवेगने कालाग्निके समानवाण सन्धानकर १४ बभ्रुवाहनकेऊपर छाड़ा तब उसके अर्जुन पुत्रने दोखण्डकरडाले तिसपर भी इसका अग्रभाग रणमें बभ्रुवाहनके सन्मुखआया १५ तो तिसकेभी दोखण्डकर बभ्रुवाहन देखै तो दोनोंखण्ड जो कियेहैं सो सामनेआये फिर इसने तिनकेभी दोखंड किये १६ हे राजन्! ते चारखण्ड तो पृथ्वीपरगिरे और पाचवावाणका अग्रखण्ड आया सो अर्जुनपुत्रके हृदयमें प्रवेशकरगया उससमय बभ्रुवाहन मूर्च्छित होगया १७ फिरभी अर्जुनका पुत्र शीघ्रही मूर्च्छाको त्याग शीघ्रही उठा और प्रलयकारी अग्निही के समान जलतासा चलताहुआ १८ और अर्जुनके रथके निकट टिकी पाडवी सेनामारी तिसदिन दोनों अर्जुन और कर्णकेपुत्र स्थित भये जैसे शरीरकेनाशमें जीव परस्परलीन होजाता और जे मूर्च्छित जीवशेष अर्थात् अधमरे बीर ते पुरकोगये हैं १९। २० तिनको उलूपी विशल्यकहे बाणकी पीड़ा

नाशकरनेवाली औषधों से पालन करतीभई पूर्वही ना-
गराजकी कन्या गुरुकेशाप से तीर्थयात्रा के प्रसङ्ग करके
तथा चित्रागदा के समेत अर्जुन को प्राप्तभई २१। २२
फिर गुरुके शापसे उत्पन्नभई तिसी समय तहा पाण्डव
अर्जुन महाबली वृषकेतु से बोला हे कर्णात्मज! हमारी
सेना नष्टभई और वस्तुजात हरिगई २३ हंसध्वजादिक
श्रेष्ठवीर मेरे निकट पतितभये और पुत्रसमेत प्रद्युम्न
मणिपुर में पकड़गया सो दोनों वीरोने मेरे वास्ते युद्ध
किया और बाणोंसे भिन्नभये अनुशाल्वभी समरमें गिर
गया क्योंकि देखनहीं पड़ता २४।२५ और आज सुवेग
मारागया और आज हमारे वीरभी छत्रध्वजा धन्वा चमर
और उत्तम वस्त्रों समेत पकड़ेगये २६ हे पुत्र! यहापर एक
तुम्हीं हो तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा नहीं देख पड़ता
जहाधर्मराजयुधिष्ठिर और कृष्णहैं तहाहस्तिनापुरको तुम
जावो २७ तुम्हारा कल्याणहो तुम पिण्डदायिनके वीर्य
हो हे राजन्! इसप्रकार अर्जुनके कहतेहुये जबतक आगे
से अर्जुनके मुकुटमें गृद्धबैठगयाथा तब अपने मस्तकमे
गृद्धको बैठा अर्थात् मृत्युको कहता देखकरके २८। २९
तिसीप्रकार कबूतरभी रथकी छतुरीमें शयनकरता शि-
रसेहीन अपनी छाया नासिकासे रहित मुख और प्रका-
शरहित नेत्र देखकरके फिर अर्जुन बोला ३० हे पुत्र!
नगरको जाओ मुझको समरमें अशकुन होतेहैं ये घोर
अशकुन युधिष्ठिर भीम और श्रीकृष्णजी से जायकहो
३१ तुम जो हमारेसाथ रणमण्डलमें मरणको प्राप्तहोने

हो तो आज केवल तुम्हारे नाशभयेसे युधिष्ठिर भीमसेन कुन्ती सबनाश होजावेंगे ३२ तुमने बहुतयुद्ध किया बाणोंसे तुम्हारा शरीर भिन्नहै और तुम्हारे बिना कुन्ती किसीप्रकार न जीवेंगी तिससे हमको छोड़करजावो ३३ और मुझसे बड़ा अकार्य हुआ राजादीक्षित आसिपत्र व्रतचारीहै यज्ञकी क्रिया कैसे होवेगी ३४ युधिष्ठिरको यज्ञ के अन्त में अवभृथादिक स्नान नहींहुआ और चौंसठ स्त्री पुरुषों के सहित जल यात्राभी नहीं कीगई युधिष्ठिरादिक श्रेष्ठऔर भीमादिक मेरे भाईहैं और सौ शलाका का छत्र व्याघ्र चर्म से युक्त ३५। ३६ युधिष्ठिरके आगे यज्ञारम्भमें नहींधारण कियागया और चमरयुक्त आठवर्षवाली कन्याओं का हजारा धर्मराज के आगे लाईकी वर्षा करतेहुये नहींगया और ब्राह्मणों की वेदध्वनिका शब्द स्वर्गमण्डपको नहीं गया ३७। ३८ और सुवासुवर्ण से नहींबँधे और स्रुकबहुत सरकार को नहीं प्राप्तभये और यज्ञविषे चपालों से मण्डित वैकङ्कत नहीं भये और बेल बेरी ढाख और खैरोंके सुन्दरस्तम्भ जिनमें पताका फहरारहे हैं तिनका पूजन हमारे भाइयोंने नहींकिया ३९। ४० और श्रीकृष्णचन्द्र को आगे कर रुक्मिणी को प्रसन्न नहीं किया और अनसूया अरुन्धती आदिवृद्ध मुनिपत्नियोंको पतियोंके समेत यज्ञान्तमें नमस्कारकर युधिष्ठिरको आशीर्वाद से मैंने युक्त नहीं कराया ४१। ४२ मेरे जीनेको धिक्कारहै मे अपना जीना वृथा समझ इसीसे युद्ध करताहूं तब

वृषकेतुने कहा कि हे धनञ्जय! तुमको रणमें छोड़ मृत्युके भयसे मैं नहीं जाऊंगा ४३ और हमारे पितामह कहे बाबा सूर्य्यनारायण प्रकाशित होरहे हैं वे हमारे भङ्ग से पतित होजावेंगे अभग्न भङ्ग होजाता है तिससे मृत्यु किसप्रकारकी है ४४ हे महाबाहो! तुम जावो मेरा गमन किसप्रकार से है कि तुमको रणमें छोड़ विमुख प्राप्त मुझको एक स्त्री रम्य सोभी नहीं देखेगी ४५ यह तुमसे मैं सत्यकहता हूँ मेरे पराक्रम को देखो हे अर्जुन! आये बभ्रुवाहनको सेनासमेत संग्राम में तुम्हारे आगे युद्ध कराऊंगा जो मित्र गौ ब्राह्मण और स्वामी के अर्थ संग्राम में प्राणछोड़ता है तिसको सनातनलोक प्राप्तहोते हैं इसमें सन्देह नहीं किन्तु उसी को मोक्ष भी होताहै ४६। ४८ जबतक महाबाहु संग्राम में अर्जुनहै तबतक यज्ञभया मुझसे यह वृथा क्या कहते हो ४९ इसप्रकार के वचन नमस्कारकर बड़े ऊँचे पताका के रथमें सवारहोकर जाय बभ्रुवाहन को बुलाता भया ५० कि हे वीर! अर्जुन के धीरवीर तुम करके मारे समरमें जे हैं तिन सबकी महाशान्ति आज करूंगा इसप्रकार कहतेहुये बली कर्णके पुत्रका शीघ्र तीनबाणों से हृदय वेधितकिया ते बाण हृदयभेधनकर तृषितहीसे भोगावती का जल पानकरनेको पृथ्वी में प्रवेशकरगये तब वृषकेतुने तिसको छ बाणोंकरके वक्षस्स्थलमें मारा ५१। ५२ तब बाणों से पीड़ित बभ्रुवाहन भ्रमताहुआ किसीप्रकारसे अपनेको स्थितकर अचरनहो वृषकेतु मे

युद्धकरता भया ५४ कि तिलके समान तिसका रथ करके सारथी और घोड़ों को मार प्रतापी बभ्रुवाहन ने शङ्ख बजाया ५५ तिसके उपरान्त कनकचित्रित बाणों से महावली कर्णपुत्र को मारा ५६ तिसका जुवोंसे युक्त सुचित्रित रथ सारथीसमेत काटकर एकलाख बाणमारे सो बभ्रुवाहन ने फिर अग्निबाण लगाया तब वृषकेतु ने भी बभ्रुवाहन के अर्थ वरुणास्त्र प्रयोजित किया ५७। ५८ तदनन्तर श्रीमान् अत्यन्तबली और सर्व शास्त्र में निपुण तिसने भी वायुबाण लगाया और पर्व तास्त्र इन्द्रास्त्र दारुण कौबेरास्त्र त्वष्ट्रास्त्र शत्रु के ऊपर फेंका और सौरास्त्र शाम्भवास्त्र कार्त्तिकेयास्त्र याम्यास्त्र संग्राम में लगाये इसप्रकार के शस्त्रास्त्रों के प्रहार से संग्राम में महान् कदन कहे बड़ानाशहुआ ५९। ६१ तिस वृषकेतु और बभ्रुवाहन के युद्ध में बहुत बीर मारे गये जैसे प्रलयकाल में यमकरके मारे जाते हैं ६२ तब कर्णपुत्रसे रथहाथी घोड़े पियादों का नाशभया भूतोंको प्रसन्न करनेवाला मानों रुद्रगणोंकी क्रीड़ा का स्थानही होगया ६३ तिस वृषकेतु के अस्त्रोंसे घिरे महाबली बभ्रु- वाहन ने चिन्तनाकर वैष्णवास्त्र को लगाय तिससे सब अस्त्र शान्त किये और घोरबाणोंसे मार बड़ाअस्त्रलिया और तिस कर्णात्मज से बोला कि मैंने बहुतबीर मारे किन्तु मैं जैसे कर्णपुत्र से व्याप्तहुआ इसप्रकार किसीसे नहीं घेरागया अब वृत्रासुरको इन्द्रकी भांति इससमय यहां तुमको मारताहूं ६४।६६ इसप्रकार तिसको उद्देश

कर संग्राममें बाणचलाया सो बाण महात्मा वृषकेतुके हृदयमें लगा ६७ तिसबाणने वृषकेतुको लेकर आकाश में तथा दिशाविदिशा सम्पूर्णनदी समुद्रोंमें घुमाया परन्तु पृथ्वी में न गिरा यह अद्भुतहीसा होताभया ६८ और बाणके साथ भ्रमतेहुये त्रैलोक्यमें वृषकेतुको पितापुत्र अर्थात् अर्जुन और बभ्रुवाहन देख कहने लगे कि यह वीर क्या इसी नरदेहसे पितामह सूर्यमण्डलको भेदन करजावेगा तबतक तीन मुहूर्त्तमें तिस मणिपुरमें पृथ्वी में अर्जुनके आगे गिरा और फिरभी क्रोधकरउठा ६९। ७२ फिर तिस बभ्रुवाहनके रथमें साहसीय हँसकर पांच बाणमारे ते बाण सहित अश्वसूत पताकाके रथको ले बभ्रुवाहन समेत मनोहर स्वर्गलोकमें प्राप्त करताभया सूर्य मण्डलमें प्रवेशकरते अपना रथदेख बाणसे भिन्नदेह भीहै अपनाको छोड़दिया अर्थात् रथसे कूदपड़ा सोरथ सूर्यके तेजकरके भस्महोगया जैसे सम्पाति गृद्धके पंख जलगये थे ७३। ७५ तब वृषकेतुने गिरतेहुये बभ्रुवाहन को देख फिर बाणोंसे सूर्यमण्डलको पठादिया और कहा कि तुमने पूर्वही मेरे वीर हंसध्वजको जीत यहां पठाया है उसी से तुमको भी देवालयको पठाताहूँ ७६। ७७ इसप्रकार हे विशांपते! क्रोधकर बोला तबतक बाणोंको तीन प्रकारकर बभ्रुवाहन तिसके ऊपर पर्वतके समान गिरके धींचमें हाथ डालकर खींचता भया तो तहां वृषकेतु पांच बाणों से मारताभया इसप्रकार बभ्रुवाहन और वृषकेतु पृथ्वीतलमें घोर बाणोंसे युद्ध करतेहु और

अर्जुन दोनों का तमाशा देखते हैं तिस प्रकार के युद्ध में अर्जुन से वृषकेतु बोला ७८। ८१ कि हे पुरुष र्षभ! कर्ण के रथका पहिया पृथ्वी में गड़ा तो किस प्रकार कर्ण ने कहा कि खड़े हो मैंने इसका शरीर बाणों से भिन्नभी करदिया है तिसप्रकार यह नहीं कहता न युद्धको छोड़ता है ८२ ८३ इसप्रकार अर्जुन के आगे वीर वृषकेतु कहरहाहै फिर बभ्रुवाहन क्रोधकर वृषकेतु के शिरपर गिरा रणमें बाणों से तथा नानाप्रकार के शस्त्रों से भेदित दोनों वीर आकाश को उछलते गिरते रथमें स्थित मनुष्योंने देखे और परस्पर अपने घोरबाणों से देवालयमें प्राप्त भये ८४। ८६ दोनों के अंगोंसे बाणों करके हजार प्रकार का कटामास गीदर और बाज इत्यादिक पक्षी पृथ्वीसे आकाश को लेजाते हैं ८७ एक पृथ्वीमें दूसरा आकाशमें फिर वह पृथ्वीमें दूसरा आकाश में तैसेही ये दोनों वीर पाच दिन रणमें युद्ध करते भये ८८ फिर पाचवें दिन बभ्रुवाहनने तिस कर्ण पुत्रको चारोंओर से तीक्ष्णबाणों से छापदिया ८९ और क्रोधित नयनहो बोला कि हे वृषकेतु! तुम धन्यहो, तुम्हारे समान कोई दूसरा नहीं मेरा युद्ध किसी वीरने ऐसा नहीं किया ९० इससमयमें हे वीर! तुम तिमप्रकार जनार्दन को स्मरण करो पश्चात् तीक्ष्णबाण से तुम को पतित करताहूं ९१ जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! इस वृषकेतुके अर्जुन पुत्रने अर्द्धचन्द्रबाण छोड़ा तिस बाणको आनेदेख तीन खण्डकर जब तक वृषकेतु गर्जे

तबतक कनकपत्रित दूसराबाण बभ्रुवाहनने छोड़ा सो बाण वृषकेतुके कठनालसे शिरको हरणकर आकाशको जाताभया ६२। ६३ छिन्नशिर आकाश से गिरते हुये बभ्रुवाहनके हृदय में लगा और उसको पतनकर पीछेगेंद के समान अर्जुन के पैरोंपर गिरताभया ६४॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांबभ्रुवाहनविजये वृषकेतुवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अड़तीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! तिससमय वृषकेतु का महाशिर कुण्डलो से भूपित केशव राम नृसिंह ऐसे कहते हुयेको दौड़कर आनन्दसमेत अर्जुनने हाथों से पकड़ा और कबन्धको दौड़ता संग्राम के मध्य में शत्रुओंके ऊपर गिरते सामने के सुमुख शत्रु गिराय समरमें नाचता है तिसका स्वरूप देख तिससमय अर्जुन ने महाविलाप किया १।२ हा पुत्र! संग्राम में तुम्हारे विना महा कष्ट प्राप्तहुआ धर्मात्मा युधिष्ठिर के निकट जाय क्या कहूंगा ४ हे पुरुषसिंह! तुम्हारे विना देवी कुन्ती और पार्वती द्रौपदीसे क्या कहूगा क्योंकि माता ने समर्पण किया था कि यह बालक रक्षणीय है ५ तिससे और भीमसेन तथा नकुल सहदेव और अपने प्रिय श्री कृष्णचन्द्रसे क्या कहूगा ६ और यौवनाश्व का घोड़ा अपने पराक्रमसे तुम लाये हे पुत्र! कृष्णचन्द्र के विना तुमने पहिलेही से कैसे प्राण छोड़ दिये ७ क्या कृष्ण

तुम्हारे प्राण हैं जैसे हम कृष्ण के प्राण हैं हे पुत्र! तुम्हारा शरीर आकाश में पक्षियों करके भक्षित हुआ तुम्हारा पिता अपने अंग नोचकर इन्द्रको देताभया तैसेही तुमने इन्द्रपुत्र मेरे अर्थ अपना मांस पक्षियों के अर्पण करदिया बहुत बार अकेले भीमसेन म ग्राम को जाते थे तिनके कोई दूसरा सहायक मनुष्य न होता था ८। १० तुम करके पितामह सूर्यनारायण को शत्रुओं के रुधिर भरे शिररूपी कमल और मुक्ताओं के समेत आनन्दसे समरके बीचमें अर्घ रोज रोज दियागया और दो वीर दिवाकर और अर्जुन प्रख्यात स्थित हैं सो हे वीर! आज तुम्हारे गिरने पर हमारा दोनों का पतन होना योग्य है और तुम्हारे यश से आकाश में सूर्य सत्कार को प्राप्त हुये और मैं तुम्हारे कृष्ण गोविन्द कहनेवाले इस शिर से तृप्तहुआ हे पुत्र! निश्चय करके तुमने मेरे साथ यह महाबैर किया ११। १४ और मुझ अर्जुन करके तुम्हारा पिता रण के मध्य में मारागया जैसे तुम्हारे पिताके रथका चक्र पृथ्वीने ग्रस्त किया तिस कर्णवीर ने पृथ्वी को शाप दिया १५।१६ श्रीमन् इस समय उपकारकारी दूसरेको नहीं देखताहूँ और आजमेरी सेनामारीगई और मेरा पुत्र शूर सुभद्रानन्दन आजही मारागया आजही मेरा कुल नष्टहुआ और श्रीकृष्णचन्द्र ने भी मुझको छोड़ दिया और वृषकेतुके गिरे १७। १८ जैसे सूर्यबिना पृथ्वी,दीपबिनाघर,लिङ्गहीन शरीर तैसेही तुम्हारे बिना

जयकी शोभा नहीं है १६ इसप्रकार कहकर डिङ्कार छोड़ अर्जुन तिसका स्मरणकर रोदनकरताभया हेकृष्ण! तुम कहांगये दुःखित मुझको नहीं मिलते तुम स्मरण मात्रसे आते थे सो अब नहीं आते मैंने जानाकि तुमने मुझको त्यागकर दिया इसप्रकारके वचन कहके तिसका शिर छाती में धरके मूर्च्छितहो अर्जुन तिस महासंग्राम में गिरते भये तदनन्तर चित्रांगदासूनु धरणी तलमें पतित इस अर्जुनको धनुष कोटि से शिरताड़ित करता हुआ हँसकर बोला हे अर्जुन! कैसे वैश्यसे उत्पन्न तौलने के वास्ते आयेहौ २०। २३ अब रणके सागर में मैं यश के जहाज में सवारहूँ इस समय रणमें किसके शिर बड़े और किसके छोटेहैं २४ सो हे धनञ्जय! सबके शिर साथही तौलेगये और वृषकेतुका शिर अद्भुतहै उठो और शिव पूजनलिंगमें देवता शिवजीके अर्थ अर्पणकरो तब प्रसन्नहो महादेवजी तुमको पाशुपतास्त्रदेंगे २६। २३ और युद्धार्थ तुमको स्मरण करावेंगे तब तुम नाशको प्राप्तहोगे जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर क्रोधयुक्त बल-वान् प्रबुद्ध अर्जुनजगा और तिसका शिर और धनुष ले रथमें स्थापित कराय तिसशूर बभ्रुवाहन सहारूपी पुत्रको देख बोला कि मेरे आगे से कहांजायगा २७।२८ कि सम्पूर्ण मेरेवीर पृथ्वीतलमें पातित किये और पकड़े महासंग्राम में मैं क्रोधितहो तुझको मार इनको छुड़ाता हूँ २९ बाण ग्रहण कर मेरेवीर वृषकेतुको अपने पराक्रम से गिराय तेराजीवन किसप्रकारसे होसक्ता है मेरे प्रहार

कोसह निश्चयसे मैं पर्वतको भी फोड़ताहूं जैमिनिजी बोले कि जलदजलबिन्दुओं के समान वभ्रुवाहनके आगे बाण समूहों को छोड़ा तिन बाणों से तिसवीरका प्रबल बल और शरीर भेदनकर महाबली अर्जुन ३०।३२ अति मेघके समान अत्यन्त भयंकर शब्द से गर्जा अर्जुन के घोर बाणोंसे उड़ेहुये हाथी रथ घोड़े पैदल आकाश में चक्रकी नाईं घूमि रहे हैं किला और शहरपनाहों के तोड़नेवाले अर्जुनके बाणों करके जगत् व्याप्त होगया जैसे बढीहुई बायु पृथ्वीसे सूखेपत्ते और तृणों को उड़ाय आकाशमें वौंडर बनाती है तैसेही अर्जुन ने बाणोंकरके वीरों को उड़ाय आकाश में चक्रकिया ३३। ३५ और हे राजन्! बाण वृष्टिसे पतित मरे शरीर युद्धमें अर्जुन के तेजसे भस्म होते हैं तदनन्तर ३६ बाणपक्षसे उठी बायु आकाश में उड़रही है और अर्जुनके मारे मनुष्य घोड़े सेनावालों को तीव्र बड़बानलके समान अर्जुन जलाताहै जिन करके संग्राम में अर्जुन देखागया वे मुक्ति युक्तहोगये ३७।३८ जैसे अंतकाल मे काशीजी में संसार से डरे जनों करके शिवजी देखेजावें तैसेही पार्थ भी होगया देहान्त में वे भी उसी प्रकार होगये तब वभ्रुवाहन को तीव्र बाणोंसे आच्छादितकर महावीर अर्जुन गर्जता भया और रण के मध्य में अर्जुन का बाण निकालते धनुषमें धरते छोड़ते कोई नहीं देखता है और अर्जुनके तेज करके सहसासे मनुष्य मुण्डित होजाते हैं तदनन्तर वभ्रुवाहन ने क्रोधकर अर्जुनको वेधितकिया शार

तीक्ष्ण बाणोंसे घोड़े और तीनसे सारथी ३६।४२ और एकसे छत्र और सातबाणों से हनुमान्जी को प्रहारकिया इससमय बभ्रुवाहन और अर्जुन दोनो जयके आकाक्षी हो परस्पर युद्ध करते हैं तब बभ्रुवाहन बोला ४३ हे अर्जुन! पूर्वमें तुमने द्रोणाचार्य और देवताओं से शस्त्र अस्त्र सीखे सो तुम्हारे सीखे आयुध इस समय कैसे निष्फल होतेहैं ४४ और हे दुर्मते! तुम्हारा सारथी किस हेतुसे नहीं आताहै तिसको तुम नहीं जानते गतबुद्धि तुमने मेरी पतिव्रता माताको मेरेआगे दूषित किया और सत् पुरुषो का दोषही भयदायक होताहै जबतक तुमने जहा तहा सग्राम में स्थित कृष्णको स्मरणकिया तबतक कृष्णचन्द्र स्मरण मात्रही से आते गये तिम महात्मा विष्णुका स्मरण तुमको भूलगया ४५।४७ तबतक क्षण-मात्र रणमें प्रत्याशा करताहूं जबतक तुम श्रीकृष्ण भग-वान्का स्मरणकरतेहो और हे अर्जुन! पहले तुमसे युद्ध न करूंगा ४८ और कृष्णके विस्मरण करनेवालोंकी पद २ मे हानि होतीहै और कृष्णही तुम्हारे स्वामीहैं इससे उन्हीं का स्मरण करो वृथा अहङ्कार न करो ४९ हे अर्जुन! जैसे महात्मा कर्णके पुत्रने सत्पुरुषोंके सम्मत युद्ध किया तैसेही तुमभी करो ५० हे अर्जुन! हमको रणमें अपनी शूरतादिखाओ और रणमें वीर कर्णका पुत्र सोभी इससमय स्वर्गको गया ५१ जैमिनिजी बोले इस प्रकार तिसने कहा तब क्रोधसे युक्त अर्जुन मोहको छोड़ सुवर्ण से जटित महाकार बाणों से वर्षा करके हँसतेहुए

अग्निके समान दीप्तिवाले बाणोंसे रथस्थ पुत्रको भेदित किया तब भी विद्ध बभ्रुवाहन रणको न छोड़ता भया ५२।५३ और फिर धनुष चढाये॥

दो० बभ्रुबाहनिजशरनते कीन्ह्योनभकोपूर।
भेदितकरतबअर्जुनहिंशरनतेकीन्ह्योचूर॥५४

तब युद्ध में गंगाशापसे मोहित अर्जुन कर्त्तव्य को भूलगया जिस २ बाण और शस्त्रको सन्धानकरता है ५५ तिस २ बाण और शस्त्रको बभ्रुवाहन काटताहै हे राजन्! इसी अन्तरमें क्रोधित बभ्रुवाहन शत्रुवीर नाशकने अपने धनुष में कालकल्प ज्वालानल युक्त बड़वानलके समान अर्द्धचन्द्राकार बाणलगाया तब इन्द्रादिक देवता और पितृतथासूर्यादिकग्रह सपूर्ण सर्पभयसे आच्छादितकापने लगे ५६।५८ देवी पृथ्वी तीन प्रकारसे फटगई उल्कापात होनेलगा और सिटकियों के समेत वायु चलनेलगी और मेघरुधिर वर्षने लगे अर्जुन प्रलयानलरूपी बाणको देख अपने भयंकर बाणोंसे रोकने को समर्थ न हुये जबतक महाबल पार्थ कृष्ण का स्मरण करें तबतक अर्जुन का ज्वलित कुण्डल शिर तीव्रबाणके वेगसे गिरा पीछे को वृषकेतुके रणान्तिकमें कुन्तीपुत्र पार्थका कबन्ध अनेक रत्नों से युक्त कार्तिक मासकी एकादशी को बुधवार उत्तरा- भाद्रपद नक्षत्र सायंकाल समयमें पतितहुआ सो कटा हुआ पार्थका मुख वासुदेव ऐसे कहता हुआ अलंकारों के रहित छिन्न कमलके समान हुआ तहांविषे कारुणि- कजन दोनों वीरों के शिर भूमिमें पतित सूर्य्यवत् मानते

भये ५९। ६५ तहां वृषकेतु और अर्जुन के निकट मणिपुर में चित्रागदा अर्जुनका युद्ध और शापभी नारदसे सुनकर घोड़ेजनलिये रथमें सवार हे राजन्! धर्मराजकी आज्ञा विना प्राप्तहुई ६६। ६७ तिस समय में महाकठोर बड़ा हाहाकार हुआ और बभ्रुवाहनकी सेना में बड़ा आनन्द हुआ ६८ और बाजा बाजनेलगे और सम्पूर्ण कन्या आनन्दित होकर अपने स्वामी के विजय में फूलोंकी वर्षा करतीभई ६९ तिससमय वन्दीजन बभ्रुवाहनके पराक्रम की प्रशंसा करते प्राप्तभये रणमें विस्मृत सौहृद सहित सेन प्रसन्न राजाभी पताकाओ से शोभित फूलोंकी छिटकाई से युक्त चन्दन जलसे सींचा नाचती हुई स्त्रियों से घेरे रम्य पुरको प्राप्तहुआ और हे मारिष! सपात्र दीपों करके युक्त दूर्वादल धारण किये गोरोचन कुंकुम दधि दिव्यवस्त्रों से युक्त राजा को नीराजन करती उलूपीसमेत ७०।७३ चित्रागदाप्रति वचन कहती हैं कि हे देवि! तुम धन्यहो तुमने महाबली वीर पुत्र को उत्पन्न किया जिस करके पृथ्वी में सदा विजयी पार्थ निहत हुआ तिनके वचन सुनकर श्रेष्ठालङ्कारों से मण्डित ७४। ७५ पुत्रके नीराजन करनेको आई और दुःखित हो कष्ट से पृथ्वी पर गिरपड़ी तब बभ्रुवाहनके मन्दिर में महान् आनन्द में विषाद होता भया ७६ और सम्पूर्ण स्त्रिया सहसा घेरकर घरमें स्थित रोदनकरती चन्दनकेयुक्त शीतल जलमें सींचतीभई और वायुकरतीं और मुष्टिकों से हृदय ताड़ित करतीं

पतित स्वामिनीको देख अपर राजाके निकट प्राप्त भई और वभ्रुवाहनके अर्थ हे राजन्! चित्रांगदाका पतन कहती भई हे नरश्रेष्ठ! तुम्हारी माता आज पतित है हम नहीं जानतीं कि किसकारणसे इसको और उलूपीको उठाओ विलम्ब न करो तब रथसे उतर वभ्रुवाहन तिसको देख तामया ७७। ८० कंठसूत्र और कुंडलोंसे रहितश्वास लेती नागकन्या चित्रागदा और तिस दूसरीमाता उलूपी को उठाय ८१ तिससमय तिसने नेत्रधोये तब तिन दोनोंको जीवित देख आनन्दित होकर बोला ८२ कि आनन्द समय में मेरी माता कैसे पतित हुई और हे मातो! सुनो मैंने घोड़े के अर्थ युद्धकिया ८३ और कोई पार्थ अर्जुन नाम महाबीर प्रद्युम्नादिक वीरों से युक्त अश्वरक्षणमें प्राप्तहुआ ८४ तिनके सम्पूर्ण वीरमारे गये और अर्जुनभी युद्धमें मारागया और सम्पूर्ण वीरोंके मध्यमें श्रेष्ठ यहबालक वृषकेतु ऐसा विख्यात कर्णका महाबली पुत्र भी मारागया तिसबड़ेवीर करके हम संग्रामके बीचमें मोहितहुये ८५।८६ और बड़े कष्ट करके संग्राम में पवित्र यह मारागया अब कण्ठसूत्र और कर्णभूषण ताटक ग्रहणकरो ८७ आभूषणों के विना तुम्हारारूप अमगल देख पड़ता है तब चित्रागदा बोली इससमय तुझ पापरूप पुत्रने क्या किया ८८ अपने पिता अर्जुन धर्मराज के छोटेमाई नारायण के मित्र नर कुन्ती के नागेन्द्रदायकको गिराकर ८९ मेरा मण्डन तथा कण्ठसूत्र हरा मान किया तथा मकरिका पत्र नष्ट

किया हे मूढ। कहते लजातानहीं ९० तेरेप्रति बलतेजको धिक्कारहै जिससे समर में अर्जुनको गिराया यज्ञ नाश भये आज धर्म्मात्मज राजा युधिष्ठिर किस अवस्थाको प्राप्तहोंगे ब्राह्मणों से दीक्षित और परिवारित हैं और आज तुझ पौत्र ने कुन्ती को पुत्रहीन किया ६१। ६२ पिताके ऊपर दयायुक्त चित्त कैसे न किया हे पाप। विनयकोविद जिस अर्जुन से तू उत्पन्न है ९३ सो मेरा पति शूर यहा आज वृथा तुझ करके मारा गया मेरे साथ सम्मत न करके कैसे सग्राम में युद्ध किया ९४ तुम्हारे शस्त्रोंका सग्रह निश्चय से देहका विदारणहै हे पितृघातक। तुम्हारा वक्षस्स्थल कैसेनहीं फटजाता ९५ और हे दुर्मते। तुम कर्णभूषण न छोड़ो मुझसे यहक्या कहताहै मेरेकपठमें खैरकी अग्निसे तपी घोरजजीर जल्दी डाल और हे पुत्र। मेरेकानोंमें लोहकी कीलडाल और मेरे स्वामी को कहा गिराया वह स्थान शीघ्र दिखा जिससे उसके साथजाऊ यह पुत्रसेकह भूषणोंको छोड़ चल निकली जहा अर्जुन था तहा गई ९६। ९८ हे राजन्। तिस समय में उलूपी वर्जती हुई चित्रागदा से बोली ६६ हे देवि। हे यक्षराजसुते। अर्जुन के मरने में मुझ को सन्देह विद्यमान है देखो मैं अपने वन में प्रवेश करती हूं १०० जिस वन में पूर्वही अर्जुन करके मेरेआगे मरण कहागया हे देवि! अनारके पचक जब दग्ध होजायँगे १ तब तुमको मेरामरण अपने से जानना योग्य है और जिस वन में तिस प्रकारका सङ्केत

देखती हैं २ तिस समय तिस चित्रांगदाको ले उलूपी बन मे दाड़िमी पंचक बिना अग्नि के जला देखा ३ तदनन्तर नागेन्द्रकन्या हा नाथ! हा नाथ! कहती चित्रागदायुक्त अर्जुनके शिरकेनिकट प्राप्तभई ४ तब तक सेनाके सहित पुत्रसमेत दीपभासित छूटेकेश पतित अर्जुन को देखा तदनन्तर तिसका छिन्न शिर देख अर्जुनके पायँन में देहकर वचन बोली ५।६ हे नाथ! मेरी देहगतभई तुम्हारे चरणोंका स्पर्शहो हे अनघ! तुम्हारे साथ वाञ्छा करती देहसंयुक्त पदको प्राप्तहूगी ७ इहां जो तुम मेरेपुत्र के अपमान से क्रोधितहो तो तुम्हारी दास्य मैं करूंगी हे अर्जुन! आज क्षमापनकरो ८ हे नाथ! उठो आज राजाविराटकी गौवें फिर कौरवोंकरके घेरीजातीहैं तिनके रोकिवेके योग्यहो ९ हे अर्जुन! द्रुपदराजकरके पूर्वही अपमानित द्रोणाचार्य्यको देख तिस द्रुपदराजको बाधकर तिसको पार्थता क्यों नहीं दिखाते १० हे वीर! द्रौपदी के वरणमें वीर आये हैं शरायन्त्रको भेदनकर हे स्वामिन्! तिसको तुम लावो ११ मैं सवति का भाव तुम्हारे आगे नहीं करूगी इस समय अग्नि तुमसे खांडवबन मागनेकोप्राप्तहै १२ हे विभो! वाणों करके फिर पंजरछावो किरातदेशमें गुप्त महादेव बन चारी शूकरको इससमय लियेजातेहैं महाकोल तुम्हारी शरणागतमें आया इसप्रकार सो उलूपी तथा चित्रांगदा कहतीहै और अर्जुनका तथा वृषकेतुका कुण्डलोंसे युक्त शिरले दोनों देवी घनस्वनसे रोदन करती हैं १३।१४

हे कर्णपुत्र महाबाहो! तुम्हारापिता संग्राममें अर्जुनकरके मारागया हे पुत्र! पितृवैर नहीं स्थितहै कर्णके पुत्र के मारे हाहतहूँ नष्टहूँ हे बभ्रुवाहन! तुम्हारा कल्याण हो मेरामनोगत करो खड्गसे मेराशिर काटडालो परशुरामसे अधिक होजाओ और परशुरामकरके तो पूर्व मे मातारेणुका मारीगई १६।१८ तुम अपने बलसे अपने पिता और दोनों माताओंको मारगिराओ तुम्हारी समता को परशुराम नहीं पावेंगे १९ हे सुव्रतपुत्र! इहाविषे काष्ठ लाओ और अग्निको ज्वलितकरो उलूपी समेत मुझको जलाने के योग्यहो २० और एक अतिशय करके कष्टकार्य दुःखविवर्द्धन याचकन को कल्पवृक्षाख्य वृषकेतु के मारनेवाले तुम करके कियागया २१ और हे पुत्र! मुझकरके आशाकीगई थी कि मैं हस्तिनापुरको प्राप्तहूँगी तहा यज्ञक्रियाको अर्जुनकेसहित राजाप्रति प्राप्तहूँगी २२ और कृष्ण रुक्मिणी, सत्यभामा, द्रौपदी सात्वती, विशालाक्षी उत्तरा, बाणासुरकी कन्या ऊषा तिनकी माताकुन्ती तथा और भी सम्पूर्ण मनुष्यों को स्त्रियों करकेयुक्त देखकर बहुत धन देऊंगी यह आशा तुमने नष्टकरदी २३।२४ तब बभ्रुवाहनबोला हे माता! मुझकरके पिता जानागया तबमैं तिसघोड़ा को आगेकर अर्जुनके नमस्कार करने को गया २५ मुझ प्रति जो दुष्ट वचन बोला सो कहनेकी सामर्थ्य नहीं इसमें सन्देह नहीं और इससे अधिक पृथ्वी में कीर्त्ति का नाश करनेवाला धर्म नहीं २६ पितृहन्ता देख प्रकट मुझको जनत्याग

करैं पितृघ्न कहे पिताके मारनेवाले मुझको शुद्ध करने को पृथ्वी में तीर्थनहीं २७ और दान, व्रत, यज्ञ, ज्ञान कोई न होंगे और सो शुद्ध चक्रपाणि श्रीकृष्ण अपने मित्र के पतन से २८ महाक्रोधकरके सयुक्त नरक में छोड़ेंगे कृष्णके स्मरणसे सम्पूर्ण पातक छूटजातेहैं २९ वैष्णव अर्जुन हमकरके मारेगये वे श्रीकृष्णके मित्र हैं इससे अत्यन्त दुःखयुक्त पातकों के नाशकरनेवाले प्रभु प्रत्यक्षमें भी यहां प्राप्तहोकर तिनके वधका मेरा कुत्सित पातक जानकर न नाश करेंगे ३० । ३१ तिससे मेरी मति अग्नि के प्रवेश करने को उत्पन्न भई एक माता उलूपी और चित्रांगदा पहले भूलगई ३२ कि उत्पन्न मात्र दुष्ट पितृघ्न मुझको जानकर ज्ञानयुक्त माता ने प्रसूति समयमें मुझको बालसर्पके समान क्यों न मारा ३३ तिससे दुष्ट मैं माता का शोकदायी न होता जो मैं शत्रुओंकी स्त्रियोंका वैधव्यदान दीक्षा में गुरुथा सो मैं इस समय माता के वैधव्यका दायकहुआ तिस से आज अग्निमें प्रवेश करताहू अन्यथा मेरी शुद्धी नहीं ३४ । ३५ जैमिनिजी बोले कि तब दूतों से बोला कि शीघ्र इंधनका महान् संचय कहे ढालकरो मैं अग्निमें प्रवेश करूंगा ३६ तब चित्रांगदा बोला कि हे पुत्र! पितृघातक दुर्मते क्षण भर प्रत्याशा करो यह उपाय करणीयहै जो अर्जुनजियैं तब उलूपीने कहा कि अर्जुन के जियाइबेको निश्चयसे मैंने उपाय देखा है कि मृतस-जीवनीमणि शेषराज के खज़ानें मे स्थित है और

महाविषधारीसर्प तिसकी रक्षा करते हैं वे उससे मरे हुये सर्पोंको जियाते हैं ३७।३९ और ये सर्प दृष्टिहीं करके तृणवृक्षों समेत पर्वतों को जलाते हैं कर्कोटक कुलिक वासुकितथा तक्षक ४० शङ्ख दीर्घजिह्व मूपकाद और भासुर फणोंके सैकरों से युक्त कोई दोसों के कोई तीनसों के कोई चारसों के कोई पाचसोंके कोई छःसों के कोई सातसों के कोई आठसों के कोई मणियोंसे दीप्तित नवसै के फणोंसे युक्त स्थित हैं और धरापर्वतधारी वली शेषजीको जानते हो जिससे सहित श्री के सुखपूर्व्वक वासुदेव का शयन होताहै तिससे मणिकौन लावेगा ४१।४४ तुम्हारे पिताके जीनेका उपाय देखाहै परन्तु वह निष्फल होता है आज क्या वैधव्य बाधित होताहै हे पुत्र! साथ जाऊगी विलम्ब न करो ४५ जबतक कुन्ती न आवे और पतिघ्नी सर्पिणी मुझको न देखे तबतक तुझ करके मैं मार डालने योग्यहूं ४६ तैसेही यह चित्रागदा भी मेरीसखी और तेरीमाता मारने योग्य है सजीवकमणि पूर्वही शिवजी ने गरुड़ से भयभीत सर्पोंकोदीहै ४७ जीवरूपी तिसमणिको सर्प अर्जुनके वास्ते नहींदेंगे तिसमे शोच करतीहूँ ४८ तब बभ्रुवाहन बोला कि हे माता! अर्जुनान्तक मेरेकोचकरने से ये प्राकृत सर्प क्या हैं ते धैर्य मे अपने बल मे विष गर्जनसे मणिको न देंगे तो सात पातालोंको फोड़ और महाविषधर सर्पोंको विफणकर अमृत लाऊंगा जिस पिताकरके महादेव तथा इन्द्रादिक देवता प्रसन्न किये

गये सो मुझकरके युद्धमें मारागया ४९।५१ अब नाना के मारने में मेरा कैसा उपाय होगा पहिले आते हुये संपूर्ण सर्पोंको गिराऊंगा ५२ तदनन्तर अर्जुनके सहित वृषकेतुमुख सब वीरों को मणि से जियाऊगा ५३ हे माता! क्षणमात्र प्रत्याशाकरो ते सम्पूर्णसर्प प्राणलेकर जायेंगे मैं संजीवकमणि से सबको जिआऊगा ५४ तुम मेरे बीरोंसेयुक्त स्वामी अर्जुनकी रक्षाकरो आज देवताओंकेसहित तीनोंलोक मेरेपराक्रम को देखें ५५ तब उलूपीनेकहा हे मूढ़! मणिलेने में यह पराक्रम क्या कहताहै तिन महाविषवाले नागेन्द्रों को कैसे अपमान करता है ५६ सो शेषराज महाकाय महामाय मनोजवहैं तू दुर्बल बलीके साथ वैर करनेसे लजाता नहींहै ५७ तब बभ्रुवाहन बोला कि कहाहुआ मेराबचन किसीप्रकारभी झूंठा नहीं होता जो तिन सर्पोंको कुबेर इन्द्र यमराजकेसहित क्रोधित महादेवभी पालन करेंगे तोभी मुझको डर नहीं है बलकरके सर्प और असुरों को चित्रार्पित से कर दूंगा जो मैं अर्जुनका पुत्र और निर्भय पाण्डुका पौत्रहूं तब उलूपी बोली कि हे पुत्र! साहस न करो तुम को उपाय बतातीहूं ५८।६० मेरा मित्र पुण्डरीक मंत्री मन्त्रवेत्ताओं में निपुण तिसको पातालको पठातीहू ६१ हे वीर! जिसप्रकार तिनको मन कृपायुक्त वह करेगा बुद्धिसे जो कार्य होताहै वह बल से नहीं होता ६२ बुद्धि और शम करके जो प्राणियों को यहा कार्य होतो कौन बुद्धिमान् क्लेश सयुक्त पौरुषको करै ६३ जैमि-

निजी बोले कि इसप्रकार पुत्रको मनाकर पुण्डरीक नाम सर्पको बुलाय अर्जुनके जीवनार्थ आज्ञा देती भई ६४ हे नागेन्द्र पन्नग! मेरा कण्ठभूषण और कर्ण-फूल लेकर मेरी आज्ञासे शेषप्रति जावो अर्जुन और वृषकेतुका वृत्तान्त पुत्रकरके कियाहुआ समय में वर्त्तमान महात्मा शेषजीसे कहना योग्यहै और महात्माओं से युक्तहो दुष्ट सगसे रहितहो किन्तु जैसे मणि तुम्हारे हाथ में देदेवें वैसाकरो ६५। ६७ मेरी प्रीति के अर्थ जातेहुये तुमको मार्गमें कल्याणहो जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर सो सर्प सम्मनके साथ शान्त करता हुआ शोकयुक्त उलूपी से बोला हे देवि! तुम्हारी आज्ञा से दिव्यमणि लेनेको में सर्पराज के मन्दिर को जाताहूं तुम पुत्र समेत अर्जुनकी रक्षा करो अर्जुन का शरीर बहुत काल न रहेगा ६८। ७० इस पृथ्वीतलमें मरे जन्तुओंका शरीर नाश होजाता है और राजसभाओंके विषे मनुष्योंका शीघ्रही कार्य नहीं होता ७१ राजालोग बहुकार्यी होते हैं मित्र धर्मको स्मरण नहींकरते अर्जुन के अंगको में काटता हूं तब अर्जुन का अग मेरे विषमे न विनाश होगा ७२ तुम को रक्षा करना योग्यहै रतिकरके काम के अगकी रक्षाकी गईहै तब बभ्रुवाहन बोला कि हे पन्नग! प्रथम तुम वृषकेतु का शरीर डसो जिसने मेरेसंग युद्धकिया और संग्राम में गिरायागया जिसप्रकार यह अर्जुनका मित्र अपने जीवनको प्राप्तहो ७३। ७४ इसके विना मेरा पिता

अर्जुन प्राण नहीं धारणकरेगा तिससे वृषकेतुके समेत अर्जुन को डसकर तुम जावो मैं अर्जुन के शरीर की आज रक्षाकरूंगा इसमे सन्देह नहीं जैमिनिजी बोले कि तिससमय पुण्डरीकने तिसके वचनसे अर्जुन और वृषकेतुको डसा ७५। ७६ और वेगयुक्त नागराज के पुरको प्राप्तहुआ और महासर्पों से भूषित घोर अतल लोकको देखा ७७ जो अतल सम्पूर्ण काचनमयी रम्य विपुल वन शास्त्रवेत्तों ने जिसका प्रमाण दशहजार योजनका गिनाहै ७८ दिव्य नागकन्याओं करके युक्त अत्यन्त शोभितहै और दिव्यचम्पाके वृक्षोंसे सुशोभित वितलको देखताभया ७९ फलित छीकुरके कावली वृक्षोंसे युक्त सुतलको देखा फिर आमवृक्षोंसे युक्त महा-तलको देखा और मरकतमणि कहे नीलमणियों से युक्त दिव्य चन्दनके वनोंसे युक्त रसातलको देख वि-स्मयको प्राप्तहुआ ८०। ८१ झूला में सवार नागक-न्याओं करके अत्यन्त विराजित है भोगावती नदी के तीर दिव्यचम्पोंसे पूजित और मनोरम सर्पों और मनो-हर सर्पिणियों करके स्तुति कियेगये सघन कुचोंसे म-ण्डित रमणीय नागपत्निन करके स्तूयमान पाताल में बड़ा लिंग हाटकेश्वरको देख नमस्कार करके भोगावती के जलसे स्नान करके सन्तुष्टहुआ ८२। ८४ और निर्मल कमलगन्धों करके दिव्य वृक्ष लताओं करके तथा अमृतकरके शोभित ८५ और अमृत करके परिपूर्ण नवकुण्डों से शोभित महानागों करके रक्षित

शेषराजके महत्तर कहे बड़े घरमें प्रवेश किया ८६ अनेकप्रकार के भावों से विचित्र सर्वत्र सुन्दर प्रकारसे शोभित नानारत्नमयी अनेक दिव्यमन्दिरों से विराजित ८७ हजार फणों करके शोभायमान शेषजी को बड़ी दीप्तिमेयुक्त देखा तौन कर्कोटकादिक तक्षकादिक सर्पोंकरकेयुक्त वाणी मन काय कर्मसे वासुदेव यह जपते पुण्डरीक इनको प्रणामकर कण्ठसूत्र दिखाताभया और सभाके मध्यमें कन्याके कर्णफूल नागराजको दिखाये ८८। ९० शेषजीके आगे खड़ाहो धराधर शेषजी से पुण्डरीक बोला हे नाथ! पन्नगेश्वर तुम तिनकी शरण मे प्राप्तहू ९१ यहां उलूपीने कुछ कामनासे तुम्हारे निकटपठाया है तुम्हारे दौहित्रने ऐसा कर्मकिया कि अपने पिता अर्जुनको मारा अब अर्जुन के जीवनार्थ श्रेष्ठतम मणिदीजिये तब शेषजी बोले कि तिस मेरी कन्याका पति महाबाहु सव्यसाची कहे दोनोंहाथों से बाण चलाता कृष्ण जिसके सारथी संग्राम में महादेव के प्रसन्न करनेवाला महादेव ने जिसे वरदानदिया देवता दैत्योंकरके वह अर्जुन अजेय है ९२। ९४ सो वाक्य महादेवकी भूठकरनेको कोई सामर्थ नहीं मैं तिस धनुषधारी अर्जुनका पराक्रम जानताहूँ ९५ किसने इस अर्जुनको गिराया तिसने क्या कृष्णको छोड़दिया श्रीकृष्णचन्द्र के विना तिसकी रक्षा करने को कौन समर्थ है ९६ और किसकारण हितार्थिनीकन्या उलूपीने मेरेनिकट तुमको पठाया है सो सब कारण कहो ९७

आज मुझको पार्थका पतन सुनकर महाविस्मय हुआ तब पुण्डरीकने कहा कि हे नागराज! राजा युधिष्ठिरने भीष्म द्रोण आदिकों को तथा अपने गोत्रवालों को संग्राम में मारा तिन सबके दुःखसे दु खितहोकर युधिष्ठिरने श्रेष्ठ अश्वमेधयज्ञ करनेकी कामनाकर पृथ्वीपर ९८।९९ घोड़ा छोड़ाथा तिसको बभ्रुवाहन ने पकड़ा वह अर्जुनकरके रक्षित था तब महाबली २०१ बभ्रुवाहन के मणिपुर में प्राप्तहोकर अर्जुन और बभ्रुवाहन का युद्धहुआ और गङ्गाशाप करके मोहित पिता पुत्र वृषकेतु अर्जुन समरमें मारेगये १ हे महामते! तुम्हारी कन्याके प्रिय पाण्डव पृथ्वी में विद्यमान हैं और उलूपीने पार्थ के अर्थ सजीवनी लेनेको तुम्हारे निकट अपना दूतबनाय आज्ञादी है हे नागराज! अब तैसे करोजैसे तुमको यशमिलै २।३ हे प्रभो! धर्मराजके भाई श्रीकृष्णमें रत महायज्ञकराते तुम्हारे जामाता कहे दामाद युद्धमें मरे जियै ४ और महात्माओं का ऐश्वर्य लोकमें पराये कार्य्यहीके अर्थ है और दुष्टोंकी द्रव्य केवल पराये नाशही के अर्थ है ५ फिर क्या श्रीकृष्ण शरण वैष्णव तुम्हारी कन्याका पति पाल्य है यह क्या महात्माओंकरके अपने धनसे व जीविकासे सब पतित पालनीयहैं ६ जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार शेष तिस समय पुण्डरीक करके याचित महासर्पोंप्रति बोले कि विधिका कियाहुआ देखो ७ अर्जुन के वास्ते जीवनदायक मणिको देऊंगा हे सर्पो! द्रव्य और शरीर तथ-

राज्य करके यहां क्याहै ८ और हे सर्पो! जो मुझकरके धारणकरी द्रव्य शरीर राज्य तिस करके अर्जुन जो न जियै तो फिर क्या है मरेहुये अर्जुनको अमृत वा मणि से आजे जियाऊँगा ९ और वैष्णव के अर्थ आरनाल सुधा कपर्दकमणि न दीजायँ तो लोभ से धारणकरी नष्ट होजावें १० अन्याय करनेवालों के सिखानेवाले श्री कृष्ण विद्यमानहैं जिनकरके अश्वमेध का करानेवाला अर्जुन दण्डित किया गया ११ तिससे मेरी आज्ञा से इसमणिको इसी समय लेकर यह पुण्डरीक जावे और अभी वैष्णव अर्जुन को जियावे १२ ॥

सो० इमप्रकारके वैन सुने शेषके परस्पर।
दुःखितपन्नगतेन शुभमानतमेहृदयमहँ १। १३

तिनके बीचमें महाबुद्धि धृतराष्ट्रनाम पन्नग शेषजी से विस्तर कथानक बोलतामया १४ हे नाथ! दानियों को पृथ्वी में अदेय कुछ नहीं है तथापि अपने सदश वचन कहताहूँ १५ हे राजन्! मृत्युलोकमें जीवनद यी यह मणि मरेहुये मनुष्यके वास्ते तुम कैसे छोड़ने कहते हो १६ हे नागेन्द्र! गुरुघाती कृतघ्नी के अ.पत्र मणि मन्त्र देवता अर्थसाधक नहीं होते हैं असत्य मनुष्य मृत्यु को पाय जीतेही नहीं और फलदायी वृक्ष अपनी जड़को नहीं देखाते हैं १७। १८ तुम सर्पों का सर्वस्व यह जीवदायी मणि दिये देतेहो हे नाथ! निरन्तर गरुड़करके विग्रह विद्यमान है १९ मतग मुनि के शाप करके पातालमें यह नहीं प्रवेश करता भूतलस्थ मणि

को पाय गरुड़ क्या नहीं लेगा २० सब मनुष्य कृतघ्नी हैं मणिके गर्वसे गर्वित हमारे विषके भयको छोड़ अमृतको भी लेजावेंगे २१ सुधामणिसे हीन पन्नगों के फणोंमें स्थित मणियोंको मृत्युलोकमें मृगलोचनी स्त्रियां भी लैलेंगी २२ हेराजन्! सर्पोंका जीवन वृथा होजागया फिर सुन्दर स्थान देख पांडव कैसे छोड़ैगा, स्थानभ्रष्ट शोभाभ्रष्ट और निर्विष सर्पों को पेटभरनेवाले भिक्षुक घर २ पकड़कर लिये फिरैंगे २३। २४ राजाओंका हित जिससे हो वही मंत्रियों करके अपनी बुद्धिसे कथनीय और करणीयहै चाहे राजा करैं वा न करैं २५ जैमिनिजी बोले कि तिसके वचनसुन वार्त्तालाप में निपुण धरणीधरशेषजी हँसतेही महातापयुक्त इस धृतराष्ट्र से बोले २६ कि धरीहुई संजीवकमणि तुम्हारे वचनसे महात्मा पाण्डवको कैसे न दीजावे २७ मूर्खके साथ विना व्यवहार भी वास करने से पुरमें ग्राममें घरमें अनर्थही होता है २८ समुद्र पाताल अग्नि और गड़हामें गिराना तो श्रेष्ठ है परन्तु विद्याहीन मूर्खके साथ सगत नहीं २९ सजीवक मणिके न देने से मेरायश नाश होजायगा जो हमकरके मणि न दीजायगी तो क्या अर्जुन न जियेगा ३० तहा कृष्णरूप मणिकरके अर्जुन क्या नहीं जीवन को पावेगा हे मूढ। निश्चयसे कृष्णमणिके सहारे चराचर जीवनको प्राप्तहोगा और होता है ३१ और हमजीव-सम्हार युक्त चिरंजीवी होरहेहैं हे सर्प! पूर्वही कृष्ण से ब्रह्माजी ने वत्सपाल और बछरों को चुराकर सत्य

लोकमें प्राप्तकिया था क्योंकि कृष्णचन्द्रकी महिमाको जानना चाहताथा सत्यलोकमें प्राप्त गोपाल कृष्णको न देख ३२। ३३ ते वालक और अज्ञानी समझकर ब्रह्माकी निन्दा करतेभये और बोले कि धिक् सत्यलोक निष्फल है जिसमें कृष्ण नहीं हैं ३४ यशोदानन्दनने आज हमको किसवास्तेठगा कमल से ब्रह्माका जन्म सुनाहै सो निश्चयसे अमृतहै और सो पातकरूपी भस्म से उत्पन्न कमल विष्णुकी नाभि से उत्पन्नहुआ ब्रह्मा ने कृष्णप्रिय हमलोगोंको कर्म जड़ कैसे करदिया तिनके वचन सुनकर तिसीप्रकार ब्रह्मा सत्य मानते भये फिर जिस विष्णुने नवीन वत्स और गोपालरचे और कृष्ण वालकने तिन स्त्रियोंको सपुत्र और गौओंको सवत्स कर प्रसन्न किया क्या मृतपुत्रा कुन्तीको विशोक नहीं करेंगे ३५। ३८ श्रीकृष्णचन्द्र से वज्रतृण होजाता और तृण वज्रहोजाता तिससे हे सर्पो! मैं मणि देऊंगा इसमें मुझको विचार नहीं है ३९ और परोपकार के करनेको साधुओंका जन्म इस लोक में हुआ है तिस को दधीचिने देवताओंका कार्य्यकरके दिखाया है ४० तव धृतराष्ट्रने कहा कि यदि पाण्डव कृष्णमणि को पाय जासक्ताहै तो वृथा मणिको पठानेहो जिस मणि करके हम जीतेहैं ४१ जो तुमको गरुड़ करके पन्नगों का नाशही रुचताहै तो हे नाथ! मणि देदो हमलोग फिर कुछ वचन हम नहीं कहते २४२॥

इति श्रीजैमिनीयेभाषाश्वमेधपर्वणिअनुशासनपर्वणि... ... ...ध्यायः ३८॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार के वचन सुनकर तिस पुण्डरीक सर्प से शेषजी बोले कि सञ्जीवकमणि हमारा कुल नहीं देता १ हे सर्प तुम बभ्रुवाहनके निकट जाय यह सम्पूर्ण हाल कहो मेरा कहा ये नहींमानते २ दुष्ट प्राणियों का जन्म उपकारके वास्ते नहीं होता किम अर्थ श्रीकृष्णचन्द्रको छोड़ झूठ मुझमे मांगनेको आये हो ३ मनुष्य पातालवासी जान प्रार्थना करते हैं और हम तो हाथ पैरोंसे रहित निश्चय करके भय से यहां स्थितहैं ४ तदनन्तर पुण्डरीक आशासे रहित तिस रणांगणको गया जिसमें बभ्रुवाहनकी सेनाकरके अर्जुन घिरा विद्यमान था ५ और सैकरों कपूरके दीपों करके प्रकाशित है जिसमें कोई दीप चन्दन के तेलसे मीले प्रभासे युक्तहैं जहां पार्थ पार्थ ऐसा कहती और रोदन करती उलूपी और दूसरी चित्रागदा आशासे पुण्डरीक का आगमन चिन्तना करती हैं तदनन्तर निष्फल लौटे तिस सर्पको देखा ६। ८ तब पुण्डरीक ने कहा कि मान से अन्धे क्रोधित सर्प मणिको नहीं देते तिस से पुत्रकी दी अग्निमें तुम यथासुख प्रवेश करो ९ जैमिनिजी बोले कि तिसके ये वचन सुन क्रोधयुक्त बभ्रुवाहनने अर्जुनकी रक्षाकराकर सम्पूर्ण सेनाको आज्ञादी और आपभी अपनेही बहुतसे बाण लेकर क्रोधि से नेत्रोंसे आंशू और कानोंसे अग्निकी ज्वाला छोड़ता

हुआ चलताभया १०। ११ शेष कहाहै और वासुकि कहा है तक्षकादिक वेसर्प कहा हैं और कर्कोटक कुलिक धृतराष्ट्र कहा हैं १२तिनसे आज मणि और अमृतधनभी छुड़ाऊंगा मेरापिता धर्मराजका छोटाभाई श्रीकृष्णचन्द्र का सेवक अर्जुन मेरे आगे कैसे पृथ्वीमें स्थित रहैगा आज अमृततुल्य सर्पोंको मेरी सेनावाले देखें और सब सर्पों के अङ्ग भस्मकरताहूँ आज बाणों से पृथ्वी फोड़ भोगावती का जल अर्जुन के अङ्ग धोनेको प्राप्त होगा १३।१५ आज सर्पोंकी सबमणिया लीलामात्र स्त्रिया ग्रहण करें १६ जिनको समरमें मैंने माराहै ते सम्पूर्णवीर आज जियें आज शेषके निमित्त जो सदाशिवजी मेरे आगे होंगे १७ तो अपने शिरकरके तिस देवता को निवारण करूंगा इसमें सन्देह नहीं और बाणों से चराचर व्याप्त मनुष्य देखें १८ जैमिनिजी बोले कि बभ्रुवाहन ने पाताल मुखमें जाय तिस सेनाको सम्हारा तब सर्पराजने जाना कि अर्जुनका पुत्र बली बभ्रुवाहन क्रोधित है १९ अपने सेवक नीतिसे रहित तिनसे शेषजी बोले कि मन्द धृतराष्ट्र ने आज बभ्रुवाहनको क्रोध कराया जैसे युद्धमें धृतराष्ट्र विगत बुद्धि मनुष्यने अ-अपने पुत्रों को नाश कराया तैसेही हम इस धृतराष्ट्र पन्नग करके नाशहोंगे श्रीकृष्णके सेवकको समर में कौनजीतेगा सो खड़ा होवे आज कालानलकी दीप्ति-मानों से रसातल और सम्पूर्ण सर्पोंको भस्म करदेगा यह मेरीमतिमें आताहै धृतराष्ट्रकरके यह महाबल वीर

युद्धकरने के योग्यहै २० । २३ जिसने जो बीज ववाया उसका फल वही भोग करता है कर्कोटक तक्षक तथा और भी युद्धकरनेको जावें २४ तब तो राजाकी आज्ञा करके सेना बाहर निकली सर्पविषको मुखसे वमनकरते कहे उगिलते फुफकार छोड़ते २५ तिससमय दोसौ तीनसौ चारसौ फलवाले महावीर दिव्यरूप और देह धारण किये धनुषधारे दिव्य कवचलगाये मतवारे हाथी पर सवार चतुरङ्गिणी सेनाके समेत २६ । २७ घोड़ोंरथों पर सवार और सैकरों पैदलही निकलतेभये हार कुंडल बजुल्ला मुकुटके घन मुक्ताओंकरके जिनके मस्तक मणि रत्नकरके देदीप्यमान हैं २८ चित्रविचित्र सुवर्ण के नानालंकारों से मण्डित कहे भूषित विराजमान हे राजन्! अर्जुनके पुत्रके ऊपर गिरतेभये २९ और रण में पांच योजन पृथ्वी को व्याप्तकर स्थितभये तिनके मुखों से घोर विषोंकी वृष्टि होतीथी और हजारों लपटों में अपनी सेना जलीजाती थी सो देख बभ्रुवाहन अपने बलसे रक्षाकरताभया सो सर्प मनुष्योंकी दोनों सेना तेहिक्षण युद्धमें मिलजाती भई ३० । ३२ और प्रलय आने के समय जैसे महादेवकी भृकुटी होजाती हैं तदनन्तर तिसमय दोनों सेनाओंका युद्ध प्रवृत्त हुआ ३३ बाण तलवार गदा और भालों के पातों करके गिराये और गिरते हैं तिन करके घोर कठोर रण शोभित होताभया ३४ ब्रह्मा इन्द्र और चन्द्रमा सहित देवताओं करके आकाशव्याप्त देखपड़ताहै कोई

सर्पराजकी और कोई बभ्रुवाहनकी जयको सराहतेहैं ३५ युद्ध के प्रवृत्त होते हजारों मनुष्य सर्पों करके डसे विष से मोहित तहा नाशको प्राप्तभये ३६ धृतराष्ट्र करके बभ्रुवाहनकी इकीसहजार सैन्य घोर शस्त्रास्त्रों करके पातित कीगई ३७ तब महाबाहु बभ्रुवाहन रणमे तिस प्रकारके धृतराष्ट्रको विरथ और हतवाहन करता भया ३८ और तिस समरविषे अतुलतेज विष्णुकेस्मरण से बाणजालकरके बभ्रुवाहनने असह्य सेना को क्षय किया ३९ और बाणों करके कटी सर्पोंके फणों से गिरी मणीं प्रलयकाल में भूमिमें नक्षत्रसी देख पड़ती हैं ४० तदनन्तर चारों ओर महाविषवाले सर्पों करके रोक-लिया गया भयङ्कररूप तैसे शोभा को प्राप्तहुआ जैसे रणमें महादेवजी शोभित होते हैं ४१ जैसे यमुना के जलमें श्रीकृष्णचन्द्र शोभाको प्राप्तहुये थे तिनके फणों की सर्वत्र वायुके वेगकी फुफकारों करके सेना भस्म के समान होगई देख बभ्रुवाहन ने सम्पूर्ण सर्पों के नाश करनेवाला मयूरास्त्र सधान किया ४२। ४३ तदनन्तर सहतकी वर्षाकर तिन सम्पूर्ण नागराजों के अङ्ग सहत से भरदिये और बाणजालों से तिनकी देहें विदीर्ण कर-डालीं फिर वीर बभ्रुवाहन ने पिपीलिकास्त्र छोड़ा तिस बाणसे चींटिया उत्पन्नहोकर तिन सर्पों के शरीर में चिपट गईं तो उस समय सर्पों ने सग्राम छोड़दिया ४४। ४५ और धृतराष्ट्रका सब अङ्ग मांसरहित होगया हाड़ों और मज्जा को भेदनकर चींटियों ने हाड़ों में

अमिली के फलके समान घाव करदिये तिसी प्रकार यह वीर चींटियोंकरके काटागया जिससे चलने को समर्थ नहीं है और बाणों तथा मयूरों और घोर न्योरों तथा चींटियों और सहत करके रणमण्डल में भय को प्राप्त शेषके मन्दिर को गये ४६ । ४८ शेषजी भिन्न अङ्गवाले तिन सर्प्पोंसे हँसतेही बोले कि धर्म्मके वास्ते दीजाती महामणि जिन्होंने मना किया और अच्छी सलाहके विचारनेवाले युद्धमें निपुण तुम करके मनुष्य-युद्धसे भागना कैसे कियागया ४९ । ५० हितका देने-वाला मन्त्रियोंका स्वामी धृतराष्ट्र कैसे तिस बभ्रुवाहन को नहीं मनाकरता इस प्रकार के तिस मणि और अमृतकी क्यों नहीं रक्षाकरता ५१ समर्थ के अर्थ धन और प्रिय शरीर भी देना चाहिये और जो न दियेगये तो दोनों शोचनीयहैं श्मशानमें मालाके समान स्थित हो ५२ शीघ्रही तक्षकादिक महाविषवाले सर्प मणिको दें और सौ शलाका छत्र दिव्य रत्नमयी माला बहुत मोलके कुण्डल अर्जुनके पुत्रको तबतक देना योग्य है जबतक धूम कल्लोलों से तिस करके भूतल व्याप्त न हो अर्थात् तिससे जबतक भस्म न किये जावें तब तक हम सब वहां जाते हैं जहां केशव का प्रिय अर्जुन विद्यमान है और इस मणि से अर्जुन का क्या कार्य होगा त्रैलोक्य के पालक कृष्णचन्द्र समीप स्थित हैं जैसे क्षीरसागर में प्राप्त किया छेरीका दूध नहीं गिना जाता तैसे कामधेनु सुरतरु कल्पवृक्ष श्रीकृष्ण के गये

नहीं गिनेजाते तुम सब सर्प्प मनुष्यकरके पराजित कियेगये ५३।५७ और मणि देने में तुमने भगकिया है उसका प्रायश्चित्त करो कि मणिपुर में प्राप्त गरुड़ारूढ मृत्युनाशन कृष्णको देखो ५८ हे सर्पो। जो भक्तिसयुक्त नेत्रों से जीवन करके भगवान् देखे जाते हैं तो तिनको गरुड़ और काल बाधा नहीं करसके तदनन्तर यह कह पाताल विवरसे पन्नगेश्वर शेषजी निकलते भये ५९। ६० मणि और अनेक प्रकार के रत्नादिक और वस्त्रालङ्कार इत्यादिक उत्पन्नमात्र बहुतसी वस्तु लेकर स्वयम्प्रभु शेषजी बभ्रुवाहन को देते भये ६१ जैमिनि जी बोले कि तिस समय राजा बभ्रुवाहन मणि और अनेकप्रकार के रत्न लेकर आनन्दपूर्वक मणिपुरको आता भया ६२ और हे वीर। जिस प्रकार का दुःख धृतराष्ट्र को होता भया सो अच्छे प्रकार सुनो तुमसे अब कहताहूं कि अपने घरमें पुत्रों समेत यह सम्मत करताभया कि ६३। ६४ दुस्स्वभाव और दुर्बुद्धी को बुलाय यह कहा कि हे पुत्रो। बड़ा अनर्थ हुआ श्रेष्ठका अपकार किया अर्जुन ने जो जीवित पाया तो मुझको सुखदायक नहीं धर्मराजका छोटाभाई अर्जुन और बभ्रु-वाहन विजयी होंगे ६५। ६६ अश्वमेधयज्ञ होगा पा-ण्डव मेरे बहुतकालके वैरी हैं यहाविषे क्या जल्दीकार्य करणीय है सो तुम दोनों पुत्र कहो ६७ दीर्घदर्शी मंत्रे राजाको अपने हितार्थ मनाकिया तब दुर्बुद्धी बोला कि हे महाबाहो। शोकनाशकरो जहां मैंहूं तहां यज्ञ और

पुण्यकी कथा कहीं नहीं होती और हे तात! तुमसे मैं उत्पन्न हूं और दुस्स्वभाव मेरा छोटा भाईहै ६८। ६९ हे तात! हम दोनों पुत्रो समेत तुम कैसे शोचकरतेहो मैं भाई समेत जिनके घरमें क्षणमात्रटिकौं तहा जय नहीं देखता हूँ फिर यज्ञकी विधि कैसे होगी तिन शत्रुओं का पतन नरकमें है धर्ममें मति नहीं होती ७०। ७१ जहां राजा नरके जियाइबेको जाता है तहा तुम जाओ मैं आगे अर्जुनके शिरहरनेको जाताहूं ७२ लेकर घोरवनमें डालूंगा जहा महाघोर गरुड़ नहीं है समर से शिर लिये पर कैसे जियावैंगे ७३ ये वचनकहकर दुस्स्वभावकरके युक्त कुण्डलोंके समेत अर्जुनके शिरहरने को जाताभया ७४ जाय सकुण्डल शिरको लेकर वकदाल्भ्य के शून्य वनमें सो स्थितभया तव उलूपी, चित्रांगदा महाशिरको न देखती भई ७५ और वोलीं कि यह क्या हुआ पांडव अर्जुन फिरमारागया किसने सुन्दरशिरविष्णुनामकेकहनेवालेका हरलिया ७६ जैमिनिजी बोले कि अर्जुन के चरणोंकीशरणमें दोनोंस्त्रियागिरीं और सग्रामकेमध्यमें कलकलाशब्दहुआ ७७ तव महावल बभ्रुवाहनभी शान्तहो तिनसवोंके सहित आनन्दसेयुक्त शेषजीको आगे करमणिपुरमें प्रवेशकरताभया ७८ सोजवतकमणिलेके रणमध्यमें प्रवेशकर तिस अर्जुनको देखे तवतक तिस ध्वनिकोसुनताभया ७९ छलसेकिसीकरकेहमारेपिताका शिर हरागया शिर हरागया पतित माताओं को और शिरहीनअर्जुनकोदेख८० हेराजन! मृतककीभांतिपृथ्वी

तल मे गिरपड़ा जिस समय मे अर्जुन रणमण्डल में पतितहुआ ८१ तिसदिन अर्द्धरात्रको कुन्ती स्वप्न देखतीभई और धर्मराज और श्रीकृष्ण से शीघ्रजाकर रात्रिका देखा स्वप्न कहतीभई कि मैंने अर्जुन को देखा कि तेलकी बावली के मध्यमें प्राप्त है ८२। ८३ और गधापर सवार गोवर अङ्गमे लगाये नलद मालती के माला पहिरे दक्षिणदिशा को गया ८४ हे कृष्ण! तुम्हारा मित्र अर्जुन निश्चयसे विद्यमान नहींहै और मेराहृदय विदीर्ण होताहै कि सुभद्रा का आज कङ्कण गया ८५ प्रभु श्रीकृष्णने तिनके वचनसुन गरुड़का स्मरणकिया तब गरुड़आये तिनपर सवारहो कुन्ती भीमसेन और माता देवकी गोपकन्याको सवारकराय तहांगये जहां स्त्रियोंसे युक्त दशहजार चोबोंके तम्बू में अर्जुन पड़ाथा वहांजाके बभ्रुवाहनका कराया घोरसमर देखा ८६।८८ जहां श्रीकृष्णचन्द्र निशामध्य में जाय रात्रिको रत्नके दीपों और स्त्रियोंके हजारों सुवर्ण के कुण्डलोकरके प्रकाशित और चन्दनसेलिप्त भुजाओं और किरीटकटकों करके आच्छादित तिस अर्जुनकोदेख यहबोले कि स्त्रियों के मुख चन्द्रोंकरके अर्जुनका कमल मुख कहीं २ म्लान होगयाहै तब भीमसेनने श्रीकृष्णसे कहा कि इससमय श्रीकृष्णचन्द्ररूपी सूर्य्यसे मेरेभाईका कमलवत् मुख प्रकाशितहोगा जैमिनिजीबोले कि तदनन्तर महायशस्वी श्रीकृष्णचन्द्र गरुड़से उतरकर भीमसेन और कुन्तीइत्यादिक स्त्रियोंके समेत अर्जुनके निकटजाय बोले। क्या

भया किस वीरकरके अर्जुन तुम गिरायेगयेहो ८९। ९३ यह मेरीमाता देवकी और यशोदामैया फूफूकुन्ती और भीमसेन रणमें तुमको वारम्बार देखतेहैं ९४ श्रीकृष्ण चन्द्रके इसप्रकार कहतेहुये उनसे भीमसेन बोले कि हे गोविन्द ! जो तुम्हीं गिरेको पूछतेहो ९५ अन्धकारसे उत्पन्न भय सूर्य्य क्या जानताहै सो कौनहै संग्राम में मेरे भाई अर्जुनको पतितकर छोड़ालेकर कहागया अब मैं आयाहूँ मुझको जाने और यह वीर कौनहै जो अर्जुनके समान उन्हींके निकट पड़ाहै ९६। ९७ इस दूसरे को जानताहूँ कि गिराया कर्णपुत्रहै जैमिनिजी बोले कि तिसके उपरान्त यह बभ्रुवाहन महाबली वीर जागा और तिसकी दोनों चित्राङ्गदा और उलूपी माता जागतीभई और जागकर श्रीकृष्णचन्द्र कुन्ती और यशोदायुक्त देवकी तथा प्रद्युम्न अनिरुद्ध और सात्यकी से युक्त भीमसेन को देख और जानकर अतिदुःखित अर्जुनका पुत्र भीमसेन से बोला ९८। १०० कि हे पवनात्मज ! मुझपापी पुत्रकरके पिता संग्राम में पतित कियागया सेना मारीगई और वृषकेतुभी निहत कियागया १ इसप्रकार के मुझ अपराधीको गदासेमारो अपने जीवनाश के वास्ते नाना प्रकारका यह विग्रह किया २ मुख्य पन्नग शेष आदिक सजीवक मणिलेकर प्राप्तहुये हैं बीचमें किसी दुष्टकरके हमारे पिताका शिर हरलियागया हे गोविन्द ! तुम्हारे चरणों को नमस्कार करताहूँ मेरे ऊपर कृपाकरो सुदर्शनचक्र से मेराशिरकाटो विलम्ब न करो ३। ४

हे मधुसूदन! जैसे पूर्व में राहुका शिर तुम ने पातित किया है जिससमय माता पिता भाई बन्धु नहीं रहते तिस समय में तहा तुम्हीं रक्षा करतेहो पिताके मारने-वाला मैं नरकार्णव कहे नरकों के समुद्रो को जाऊंगा ५। ६ परन्तु नरकभी मुझको पीड़ित नहींकरेंगे क्योंकि तुम नेत्रोंकरके देखेगये तुम्हारे आगम से अब मेरी मृत्यु न होगी नरक हतहोगये ७ मृत्यु मुझ को बड़ा प्रिय है और जीवन महादु खदायी है और वैष्णव तु-म्हारा सर्वस्व है सो मुझ चोरने चुराया ८ ईश्वरकी आज्ञा उल्लघन की अब मुझे महादेव के त्रिशूल में चढ़ावो अथवा हे जगन्नाथ! आजही चक्रसे शिरकाटो ९ माता करके नमस्कार करी पितामही आजीको नहीं देखताहूँ और नहीं बोलती कुन्ती आशीर्वाद कैसे नहीं देती हैं ११० ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकृष्णागमोनाम एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

इतनीकथा सुन राजाजनमेजय बोले कि हे मुनि-राज! तहांपर धनञ्जयवीर मणि स्पर्शकरके कैसे जि-याया गया सो कहो १ तब जैमिनिजीने कहा हे राजेन्द्र! तदनन्तर कुन्ती से नागराजकन्या उलूपी बोलती भई कि हे देवि! अर्जुनके हाथ में सलग्न विषदग्धा सर्पिणी करके तुम नमस्कार की गई २ अब आप क्यों नहीं

बोलते जैसे पूर्वकाल में तिसकरके पुत्रका मारनेवाला सर्प छोड़ागया ३ इससमय तिसीप्रकार मैं तुम और विराटकी कन्याकरके त्यक्तहूँ शापदण्डकरके इससमय मेरी जिह्वाको दण्डितकरो ४ जैमिनिजीबोले तदनन्तर कुन्ती करके सहित सम्पूर्ण हापाण्डव! ऐसा कहती बड़े स्वरसे रोदन करतीहुई सबके देखतेहुये गिरीं ५ इसके अनन्तर शेषजी श्रीकृष्णके नमस्कारकर बोले हे हृषी- केश! हे जगन्नाथ! तुम क्या देखतेहो ६ धर्मराजका सम्पूर्णकुल रसातल में मग्नहोगया हे कृपासिंधु! इस मणिकरके शीघ्र उद्धारकरो ७ जिससे पाषाणजातीय डूबाताहै उतारता नहीं यह अमृत भी सुलभहै जनों के नेत्रोंके जल समूह में महात्मा पाण्डवके कुलको मग्न करतेहो और मनुष्योंके रोदनकरके हम नहीं जानते कि अर्जुनका शिर पृथ्वीपर कहा गया और कौन लेगया ८। १० तब श्रीकृष्णजी बोले सब मेरे मंत्र सयुक्त व- चनोंको सुने जो मैं पृथ्वीतल में सदैव ब्रह्मचर्य से-भग रहों ११ तो मेरी तिस पुण्यसे अर्जुनका शिर प्राप्त होजावे और जिन्होंने शिरलियाहो वे मेरी आज्ञासे आज मस्तकसे भिन्नहोकर गिरें १२ जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर श्रीकृष्णके कहते दोनोंमहाविषवाले पन्नग नाशहुये और तिसीसमय दोनों शिर मणिपुरमें आगये १३ तब श्रीकृष्णचन्द्र स्वयम्प्रभु शेषजीसे महादिव्य मणिको ले बोले कि हमारे सदृशोंकरके महादेव की आज्ञा विनाशनीय नहीं है १४ अर्जुन महादेव के प्र-

सादसे इस मणिकरके फिर जीवनको प्राप्तहोवे पहिले इसकर्णपुत्र के हृदयमे इस मणिको लगाताहूं पीछे धनुर्धारी अर्जुन के हे कर्णपुत्र। उठो आज तुम्हारे हृदयमें मणिधरा है १५। १६ जैमिनिजी बोले कि मणिधारण करनेपर युद्ध में बभ्रुवाहन के बाणोंकरके भिन्न वृषकेतु का शिर कैसेजुरा जैसे घनोसे फोरालोहा चुम्बक पत्थर के सयोगसे जुड़जावे १७ वीर कर्णपुत्र वृषकेतु फिर बाणोंको धनुषमें लगाताहुआ उठा कृष्ण २ केशव ऐसा समरमें कहता तथा खड़ाहो खड़ाहो कहता तिसका मुख श्रीकृष्णने चूमा तब अत्यन्त आनन्दसे वृषकेतुने श्रीकृष्णचन्द्रको नमस्कार किया वृषकेतु के उठने पर तिसीप्रकार इस के अनन्तर अर्जुन भी कृष्णचन्द्र से तिसी विधि करके उठा जैसे जीव सुन्दरयोगाभ्यास से निर्विकारको पायकरके मायासे भिन्नहोजावे तिस सर्वों ओर तीनों बीरों करके देखाजाता अर्जुन कृष्णकी भुजों से गाढ़हुआ और देवता आकाश में अर्जुन के ऊपर फूलोंकी वर्षा करते भये और तिन वीरो ने शंख बजाये १८। २० तिस समय अर्जुन के सेनावाले सब आनन्दितहुये और तिसपीछे प्राप्तहुये कृष्ण कुन्ती इत्यादि प्रभुओं की वन्दना करते भये तिसीसमय वृषकेतुवीरने आनन्दसे सबको नमस्कारकर भीमसेन और पुत्र के देखेसे आनन्दित कुन्तीको देखा २१। २२ ते प्रद्युम्न प्रमुखवीर सब मिलकर श्रीकृष्ण के पीछे बभ्रुवाहन के पुरमें प्रवेश करतेगये २३ तहां सम्पूर्ण पुरस्थजनों से

द्रव्य समूहों करके पूजन कियेगये और सरसठि वेश्या भावयुक्त नृत्यकरतीहैं २४ और कुबेरके समान धनाढ्य सैकरों तिन करके पुरमध्य में देखेगये कुबेर के नगर समान दीप्ति हाथी घोड़ा रथोसे मंडित नादयुक्त पताकाओं से शोभित देखते सब अत्यन्त विस्मितहोगये और बभ्रुवाहनकी सभामें मोतियोंके चौतरामें श्रीकृष्ण अर्जुनको बैठारते थे वीर सर्पों के समेत वचन बोले हे अर्जुन! लज्जा न करो मुझ पुत्रकरके आप जिलायेगये मेरी सेना मारीगई सबसे सर्वत्र जयकी इच्छाकरै परन्तु एक पुत्रही से पराजय २५। २८ हे अर्जुन! गंगाके शाप करके तुम्हारा पतनहुआ फिर कृष्णकी प्रसन्नता करके तुम जियेहो २९ हे वीर! भीमसेन सहित पुत्रका ऐश्वर्य्य और अपनी प्रिया चित्रांगदा और दूसरी नागकन्या उलूपी को देखो और लज्जित वीरपुत्र को समझावो सम्पूर्ण राज्य ग्रहण करो जो तुम्हारे पुत्र ने जोड़ी है ३० । ३१ हे महाबुद्धे! वासुदेव अर्जुन को समझावो और कुन्तीकरके पुत्र और नाती इन दोनों का संगम करने योग्यहै तथा देवकी भीमसेन और तुम्हारी माता यशोदा करके ये पिता पुत्र का समागम कराना योग्य है और नीचे मुखकिये यह वीर अर्जुन को नहीं देखता है ३२। ३३ और पिता के वधसे पातकी अपनी देहको छोड़ने की इच्छा करैहै जैमिनिजी बोले कि तिसके उपरांत श्रीकृष्णचन्द्रके समेत पिता को अपने आसनमें बैठाय महायशस्वी यह पुत्र बभ्रु-

वाहन बोला कि मैं हिमाचलको जाऊंगा वहां जाय शरीर को पतित करूंगा इसके सिवाय अन्यथा यह घोरपातक देहसे न जायगा धर्मकार्य करानेवाला पिता श्रीकृष्णका भक्त ३४। ३६ तिसकावध मुझको सुख न देगा इससे देह छोड़दूंगा तब भीमसेन ने कहा कि हे वीर। पृथ्वीतल में जो तुम्हारे अङ्गमें पातकहोता तो देवकीनन्दन भगवान् तुम्हारे निकट न खड़े होते जैसे हम सब तुम्हारे पिताहैं सो गुरुद्रोणाचार्य तथा बाबा भीष्मपितामह और कर्णको पतितकर स्थितहुये श्रीकृष्णचन्द्रने देखा सब पातकदूरहोगये तिसीप्रकार पितृजीवक और पवित्र श्रीकृष्णने तुमको किया ३७। ३९ अब शोचको विहाय युधिष्ठिर के अश्वकी रक्षा करो हे पुत्र। कृष्ण के आगे पापियो के बीचमें तुम्हारी क्या गिनतीहै ४० पांच पातको के करनेवाले क्या कृष्ण के नामसे नहीं उद्धार किये गये अतुलतेज इस विष्णु का नाम कलियुगके प्राप्त होने पर पाप से पूरित मनुष्यो को पवित्र कर देगा। जिन मनुष्यों की जिह्वा सुन्दर भक्तिसे युक्त श्रीकृष्णका नाम कहती है तिन मनुष्योंको दुःख और दीनता तथा पातकों की भय कहां जैमिनिजी बोले कि श्रीकृष्णचन्द्र करके ते सब वैर शोकसे रहित ४१। ४३ आनन्दित और संतुष्टित कियेगये तिस समय मणिपुरमें बाजा बाजनेलगे और बहुत दान दिये गये ४४ और तिस युद्ध का चरित्र बड़ा विस्मय मानते भये और शेषयुक्त सबजन

वृषकेतु और कृष्णकी प्रशंसा करते भये ४५ तब पाचवें दिन श्रीकृष्णने घोड़ाको तहासे छोरा तदनन्तर पुत्रवधुओं के समेत कुन्ती नातीके मन्दिरमें आनन्दसे प्राप्तहोती भई ४६ और तहा पर गायक गान और नाट्यकारी नट नाचनेलगे हे राजन्! आनन्दित कृष्णचन्द्र श्रेष्ठासन पर बैठे पुत्र समेत अर्जुन से यह वचन बोलतेभये कि हम सब सुखपूर्वक बभ्रुवाहनके मन्दिरमें रहे ४७। ४८ और सुखही से हमारी पाच रात्रि व्यतीत भई और हे अर्जुन! देखो इस समय भीमसेन कुन्ती यशोदा उलूपी करके सहित धर्मराज के मन्दिरको जावें तिसी प्रकार चित्राङ्गदा भी त्रिविध प्रकार के धनलेकर जावे और मेरी यह मति है कि ये को प्रारम्भ करावे मेरे गये से राजा बड़ी चिन्ताकरेगा ४९। ५१ पुत्रयुक्त तुम और हम वृषकेतु प्रद्युम्न हंसध्वज ये रक्षामें रहें ५२ आगे श्रेष्ठ वैष्णवराजा हैं ते जल्दी युद्धकरके भी अजेय हैं तिस से मैं तुमको कैसे छोड़ों ५३ जैमिनिजीबोले कि इस प्रकार सम्मत करके इसके अनन्तर भीमसेन को श्री कृष्णने बहुत द्रव्य और बहुतसी स्त्रिया देकर पठाया ५४ और कृष्णचन्द्र घोड़ाकी रक्षा के वास्ते स्थित रहगये तदनन्तर शेषादिक श्रीकृष्णचन्द्रकी आज्ञा लेकर आनन्दसे ५५ बभ्रुवाहन करके पुजित पाताल को जातेभये जो यह अर्जुन समेत श्रीकृष्णका चरित्र सुनै तो निस्सदेह सम्पूर्ण पातकों से छूट जावे और

वृषकेतु सहित अर्जुनका संजीवन पुण्यकारी यह कृष्ण का कथानक जो मनुष्य सुनता है सो निश्चय करके कभी अपमृत्युसे नहीं बाधित होता ५६। ५८॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांबभ्रुवाहनविजयोनाम चत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

इकतालीसवां अध्याय॥

राजा जनमेजय बोले कि हे मुने! तिसके उपरान्त क्या हुआ श्रीकृष्ण समेत वीरोंसे युक्त अर्जुनने कैसे घोड़ेकी रक्षाकी १ तुम्हारे मुखसे कृष्ण का कथामृत सुनते मेरे हृदय में बड़ा आनन्दहोताहै २ सन्तापका दूर करनेवाला एक क्षीरसागरही सदा कहा जाता है फिर मलयाचल से युक्त चन्द्रमा की किरणों करके शीतलतासे प्राप्त पुष्पोंसे अलंकृत क्या तिसीप्रकार कहते तुम रससयुक्त वासुदेवका चरित्र तथा भूतमें मानताहूं हे महामते! भीमसेनके हस्तिनापुर जाने उपरान्त श्रीकृष्ण फिर क्या करते भये ३। ५ आज मैंने तुम से पूछा सो सम्पूर्ण कहो जिनके मुख श्रीकृष्ण की माहात्म्य न कहैं तिनके मुखों को मैं कीड़ा से भरे बिलवत् मानताहूं बभ्रुवाहन के पुरसे खुला बाजिराज किन राज्यों में घूमताभया सो कहो जैमिनिजी बोले कि हे राजेन्द्र! मणिपुरसे खुला घोड़ा कृष्णयुक्त महावीरों के समेत जबतक जावे तबतक अपने अश्वमेधके घोड़ाकी रक्षाकरते ताम्रध्वजकरके देखागया ६। ९ रत्ननगर से

ताम्रध्वज के पिता बर्हिकेतु करके छोड़े घोड़े के निक
अर्जुनका घोड़ागया १० तिसका मुख सूघ कानउठा
हिहिनाया और लात उठाकर हे राजन् ! उस को
और मुक्ताफलमयी आलिको क्रोधकरके दांतोंसे का
तब दूसरा घोड़ाभी तिसकोलातोंसे वक्षस्थलमेंमा
ताभया ११।१२ फिर पीछेको दोनोंघोड़े परस्परको
खुजलाने लगे तब ताम्रध्वजने अपने प्रधान बहुलध्वज
से पूंछा कि किसीकी यज्ञ के निमित्त यह घोड़ा छोड़ा
गया सो बांचो तदनन्तर बहुलध्वज उत्तम घोड़े को
पकड़कर पत्र बाचता भया पत्र का सम्पूर्ण अभिप्राय
राजाको समझाय दिया राजा प्रधान के वचन
क्रोधसे पूरित १३ । १५ अर्जुन कृष्णकरके रक्षित घोड़े
को पकड़ता भया फिर वह पांडु का घोड़ा कैसे है कि
प्रद्युम्न अनिरुद्ध हंसध्वज अनुशाल्व वृषकेतु इनकरके
पाल्यमान तथा और वीरों करके रक्षित है तब भयसे
रहित ताम्रध्वज अपनी सब सेनाको शस्त्रयुक्त करता ये
वचन बोला कि दीक्षित मेरेपिताने सात यज्ञेंकी हैं १६।
१८ फिर इस आठवें घोड़ासे राजा की अठई यज्ञ
होवेगी जे पहिले की यज्ञें हुईं ते सब कृष्ण करके मा
नता हूं और यह सहित कृष्णके हुई है हे महाबुद्धे ! तुम
सब श्रीकृष्णके सामने होवो महायुद्ध होगा तब बहुल
ध्वज बोला कि हे राजन् ! तुम्हारी बहुत सेनामें अर्जुन
की थोरीसेना घेरी है जिसमें जान न परै तुम्हारी राज्य
को बभ्रुवाहन जानता हो वा न जानता हो १९ । २१

जो तुम्हारे पिताको मुक्ताफलों का एकभार करदेता है सो मोती मयूरध्वजके मन्दिरको जाते हैं रोजपुष्पाजलि के अर्थ नर्त्तकियों की धूलिके तुल्य इस ग्राम विषे महावीरों करके रणकिया देखपड़ता है २३। २४ कोई अशक्त पतितहुये कोई मृत्युको प्राप्त भये निर्द्धन अपुष्ट थोड़े पराक्रमवाले इनके घोड़ा पकड़नेसे क्या युद्धहोगा तव ताम्रध्वज वोला कि मेरे आगे और वीरों की क्या गणना है २५। २६ इसरणमें धीरवीर दोई हैं एक वृष-केतु दूसरा वभ्रुवाहन रात्रिको नारदजीसे इनदोनों का पराक्रम मैंने सुना है २७ तिसने कृष्णार्जुन को नरना-रायण वताया है प्रद्युम्न अनिरुद्ध सात्यकी तथा अपर २८ वीर यह सव कृष्णचन्द्र के समान हैं तिससे युद्ध होगा और अर्द्धचन्द्र व्यूह करके हमारी सेनाकी रचना करो २९ पाचजन्य शङ्खका घोरशब्द कृष्ण करताहै और देवदत्त शङ्ख को वेगयुक्त अर्जुन वजाता है और घोडा के रक्षक वीर रक्षाकेवास्ते शस्त्र हाथमें लिये आ-तेहैं जैमिनिजी वोले कि जिससमय राजा इसप्रकारका शीघ्र विधानकर धैर्य्य से निश्चयकर युद्धमें स्थितहुआ ३०। ३१ तव कृष्णचन्द्र तिन योद्धा को युद्ध करने में स्थित देख हँसतेही अर्जुनको हाथसे स्पर्श करतेहुये वोले हे अर्जुन! मयूरध्वजके पुत्र ताम्रध्वजको देखो अपने घोड़ेकी रक्षाकरतेहुये हमने तुम्हारा घोड़ापकड़ा ३२। ३३ इहाविषे सुन्दर वीरोंका पतन होगा सो युद्ध हमने विचारा महावीर से घोड़ा छुड़ाओ जैसे पूर्वमें भगवानने

शङ्खासुर से वेदको छुड़ायाथा ३४ और प्रद्युम्नादिक वीर जे बभ्रुवाहन करके पालितहैं ते सब युद्ध करैंगे हे अनघ! तुम मेरेसाथ रणभूमि को छोड़कर जहां जाताहूं तहां आवो हे अर्जुन! इसका पिता दीक्षित नर्मदाके तटपर विद्यमान है ३५।३६ यह शूरहै कामजित् है ईर्षा करने वाला नहींहै सत्यवादी है सो निश्चय से अर्जुन करके योधनीय नहींहै यह सत्यही कहता हूँ ३७ हे अर्जुन! यथास्थान गृहव्यूह को रचो ताम्रध्वजकी सैन्यमें ये महा- काय वीर कालरूप हैं तिनको मैं जानताहूँ तिनसे हमारे सबवीर युद्ध करैं मैं सारथी करके नहे अपने रथमें सवार होकरके पुत्र पौत्रों समेत युद्ध करूँगा अर्जुन तुम अब श्रमित हो आज सब वीरोंका नाश आया यह मैं मानता हूँ ३८।४० इसप्रकार के वचन कहके कृष्णचन्द्र अपने रथको गृहव्यूहके समेतगये हे राजन्! घोड़ा के निकट रथमें सवार कृष्णको सब देखते भये गृहके मुखमें राजा और बीचमें अनुशाल्व और नेत्र में हंसध्वज और दोनों पक्षों में यदुनन्दन प्रद्युम्न अनिरुद्ध सात्यकी और भोजवर्द्धन दोनो पैरों में ४१। ४३ और व्यूह की रक्षा विधान करनेवाले यौवनाश्व मेघवर्ण बीच में और बहुत वीरों करके रक्षित अर्जुन को तिनके बीचमें और बभ्रुवाहन वृषकेतु ये महावीर चोंच में स्थित हुये ४४। ४५ ये सब बहुत वीर और राजाओं को देखकर ता- म्रध्वज आनन्दसे युक्त कृष्णचन्द्र को बुलाता भया ४६ कि मैंने महात्मा पार्थ का घोड़ा पकड़ा उसको

रणमें छुड़ाइवे को जो तुम्हीं प्राप्तहौ ४७ तो रणमें धैर्य्य करके अर्जुनकी रक्षाकरो जातेहुये मेरेघोड़ा को हे कृष्ण! क्यों नहीं पकड़वाते हौ और हे कृष्णचन्द्र! तुम्हारे विना और की शक्ति नहीं है कि मेरेसाथ महारणमें संग्राम को करावे ४८। ४९ अब सुदर्शनचक्र शार्ङ्गधन्वा और अस्त्र शस्त्र धारणकरो जो तुम समर में देखे गये तो मुझको कुछ भय नहीं है ५० ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीये भाषाया कृष्णप्रतिताम्रध्वजसम्भाषणं नामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि बली ताम्रध्वज इसप्रकार के वचन कह तैसी अर्जुन की सेनापर अर्द्धचन्द्राकार बाणोंसे वर्षा करताभया १ अर्जुन के सत्तरिबाण मारे और तीन बाणो से वेगयुक्त कृष्णको भेदनकर सिंहनाद करताभया २ सारथी को पांच बाणों से और चारों घोड़ों को चारसे कुपित वीरने भेदन किया सो अद्भुतहीसा होता भया ३ फिर नवबाण से सात्यकी को आठसे कृतवर्मा को और हजार से प्रद्युम्न तथा दश हजारसे अनिरुद्धको वेधन किया ४ तदनन्तर अनिरुद्ध ताम्रध्वज को बुलायकर यह वचनबोले कि हे ताम्रध्वज वीर तुम रणमें खड़ेहोकर मेरे पराक्रमकोदेखो ५ मेरे प्रहारको सहो घोड़े को छोड़ दो २ हमारेआगे तुम को रणसे कौन बचावेगा सो कहो ६ तब ताम्रध्वज

बोला कि तुम्हाराजन्म पुष्पबाण कामदेवसे है और बाणासुरकी कन्या ऊषाके पतिहो सो तुम क्या युद्ध करोगे ७ और ऊषाके स्नेह करके सीधे बाणासुरने तुम्हारी रक्षाकी तिसप्रकार मैं नहीं करूंगा ८ आज कृष्णके आगे महाबाणोंकरके गिराऊंगा हे विभो! अपनी रक्षाकरो तुम्हारा जीवन नहीं होगा ९ बाण को छोड़ताहूं तुम खड़ेहो बहुत क्या बोलते हो ज्ञानीलोग अपनाको आप वर्णन नहीं करते और प्रत्यक्षको अनुमानसे नहीं कहते १० जैमिनिजी बोले कि फिर अनिरुद्ध ने प्रलयानल समान बाण छोड़ तिस धनुषधारी सुचित्रका हृदय भेदन किया तब सुचित्रने भी नव्वे बाणों से अनिरुद्धको मारा तिन बाणों को अनिरुद्ध ने पाचप्रकार से काट दिया और फिर ताम्रध्वज गो रणमें ऐसा मारा कि चार बाण से वाहन और पांचवें से सारथी और तिसके अन्य दारुण वीरों को बाणों से भेदन किया ११ । १४ अनिरुद्ध के बाणों करके संपूर्ण सैनिक भेदन भये दिखाई दिये जैसे चित्राग वन के बीचमें चमक्ते हों तैसे स्थित भये वीरों की भुजा अंगुली काटी तैसेही नखों को भिन्न किया मणिबन्ध कहे गट्टा से हाथ काटे और वक्षस्स्थलके हाड़ मांसल कटिप्रदेशों को शिर और मस्तकोंको हँसतेही काट डाला १५ । १७ दांत और भृकुटी तथा डाढी क्रोध करके काटा किन्तु ताम्रध्वज के वीरों को परमाणु तुल्य छिन्न भिन्न किया अनिरुद्ध करके प्रयुक्तकी वायुमे

सो धूलिसागर में डालीगई हे राजन्! तिसकाल १८। १९ चार प्रकार की चतुरंगिणी सेना को कोट विधूम अग्निही के समान ज्वलतामया इस वीरवली कृष्ण के प्रपौत्रने ताम्रध्वजके रणागणमें तीन अक्षौहिणी सेना पतित की २०। २१ धनुर्द्धारी ते सब पाखी के समान भस्म किये गये और रथ कटे तिल के समान भये हाथी भयभीत होकर वन को चले गये २२ घोड़ामारे गये घोड़ासमेत वीर वाणो से विदारित कियेगये महाबाहु सुचित्र ने भी रणमें अनिरुद्ध को तीक्ष्ण वाणों से वेधन कर विरथ किया भग्नचक्राक्ष तिस रथको छोड़ धनुष को लेकर ताम्रध्वजको ऊपानाथ ने बहुत वाणों से मारा और क्रोधयुक्त हो निरथ किया २३। २५ सो दोनों रथी पृथ्वी में पैदल होकर युद्ध करने लगे तदनन्तरताम्रध्वज अनिरुद्धको मूर्च्छित कर अपने रथमें स्थित हुआ २६ और प्राप्त हुये पाण्डवों के सैनिक वीरों को पतित किया और पाच वाणों से प्रद्युम्न को मारकरके यह वचन बोला कि सुन्दर योद्धा काम मुझ करके जो युद्धमें पराजय हुआ तो देवकीनन्दन कृष्ण क्यों नहीं युद्ध करता गोविन्द आवे और काम जावे मेरा कार्य तो हुआ जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर महाबाहु यशस्वी कर्णपुत्र वृषकेतु प्राप्त हुआ और ललकारकर तीक्ष्ण पाच वाणों से ताम्रध्वज को मार निरथ किया २७। ३० तब अपर रथमें स्थित हो जब तक वृषकेतु को गिरावे तबतक दूसरा रथभी वृषकेतु

ने चूर्ण किया ३१ यह ताम्रध्वज जिस २ रथमें जाता है तिस २ रथको संग्राम में उदारबुद्धी वृषकेतु सिंह लीलासे छेदन करता है ३२ इसप्रकार तिस करके रथों के तीनसेकड़ा गिरायेगये तब अपर रथमें सवार हो ताम्रध्वजने वृषकेतु को ३३ मूर्च्छित कर गिराया जैसे व्याधि शरीर को-पतन करती है इसीप्रकार अनुशाल्वको पराक्रमसे वर्जित किया ३४ और यौवनाश्व को वाणही से रथसे पृथ्वी दिखाई सात्यकी तिस के घोड़ों को सात वाणों से मारकरके जब तक शंखको बजावे तब तक तिसने गिरादिया और कृतवर्मा भी दो वाणों करके पीड़ित गिरा ३५।३६ राजा ताम्रध्वज के आगे यह कौतुकही सा हुआ इस के वाणों करके पतित वीर पृथ्वीपर कैसे शोभित होरहे हैं जैसे पुण्यक्षीण मनुष्य पृथ्वी में शोभित होतेहैं ताम्रध्वज संग्राम में वभ्रुवाहन को आते देखकर ३७।३८ वही वीर हँस कर बोला कि तुम्हीं युद्ध करतेहो मेरे युद्धमें क्षणभर खड़े होतेहो और पाचवाण धैर्य से छोड़ते हो तो मैं मोतियों का कर छोड़दूं जैमिनिजी बोले कि वभ्रुवाहन ताम्रध्वज के ऊपर पांच नाराच नाम वाणों को छोड़ता भया ते वाण ताम्रध्वज ने सातप्रकार से खण्डित किये ३९।४० और तिसी क्षण तिस वभ्रुवाहनका रथ चूर्ण किया महारण में वभ्रुवाहन खिन्नीभूत हो पतित हुआ ४१ गिरतेहुये तिस वीरके आभूषण बिथरिगये जैसे प्रलयकाल में नक्षत्र पतित होकर पृथ्वी पर

विथरि जाते हैं ४२ तिसप्रकार अर्जुनकेकुमार पाताल तलभेदी को अकेला कर क्रोधमे हे कृष्ण ! खड़ाहो यह कहते गया ४३ तिस वीरको देखकर वीर गतजीवित नेत्रों को बन्दकर खड़े होजाते भये जैसे रुद्रको देखकर प्राणी भयभीत होजावें ४४ ताम्रध्वज के बाणों करके आच्छादित हंसध्वजको छोड़कर वाहन त्याग सेना-वाले भागते हैं तिस अत्यन्त भास्वर युद्धमें शस्त्र और अस्त्रों को छोड़कर वीर रुधिरकी प्रवाह में जल मे मछरी की भांति छिपते हैं शरजालमे बँधे अपना को नहीं जानते ४५।४७ हे वीरो ! नहीं डरो नहीं डरो ऐसा कहते अर्जुन अपने धनुषको टंकोरित करते हुये रणमें आया ४८ तब ते वीर बोले कि हे अर्जुन ! घोड़ा लेकर क्या करोगे गोत्रको नाशकरके अभयकर यह उत्तम यज्ञ करता है ४९ इसके हाथसे हम सबको नाशकराय क्या पुण्यकरोगे जिससे पवित्रहोजावगे ५० इसप्रकार तिस समय संग्राममें वीर बार २ ऐसे शब्दों को कहते हैं तदनन्तर अर्जुन ने इस प्रकार की सैन्य रोकली ५१ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांताम्रध्वजविजयोनाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि हे नरेन्द्र ! अर्जुन ताम्रध्वज के निकट जाय क्रोधकर नवबाण वक्षस्थल में मार तिन्हों

से रथसे गिरा दिया १ तब रथियों में श्रेष्ठ ताम्रध्वज अपररथ में सवारहोकर अर्जुन के ऊपर चारों ओर से पर्वतके ऊपर घनके समान बाणों की वर्षा २ हे राजन्! अर्जुननेभी युद्धमें तिसको अपने बाणों से अदृश्य करके शङ्खबजाया और खड़ाहो यह कहा ३ और घोड़ा सारथीसमेत रथको तिलवत् चूर्ण किया तब ताम्रध्वज क्रोध से पूरित अपर रथमें सवार होकर ४ अर्जुन के घोड़ा और रथ सारथी को गिरायकर बोला कि तुम्हारे घोड़े मारे और यह सारथी रथसे गिराया ५ अब कहां जावोगे घोड़ा समेत तुमको अपने पुरको लेजाऊंगा तिसकी वाक्यसे भिन्न अर्जुन संग्राम में तिस वीर को भेदित करताभया कि रथ संयुक्त देही को भेदित किया और अर्जुन करके तिस वीरके हजाररथ फाटगये ६।७ तिस समय युद्धविषे यह खड़ा नहीं होता समरसे बाणों करके अर्जुन को भेदनकर अन्यरथ में प्राप्त भया फिर कृष्णके आगे अर्जुन को मूर्च्छित किया मुर्च्छा को छोड़ अर्जुन ने फिर ताम्रध्वज को बाणों से मारा ८।९ तब ताम्रध्वज ने अर्जुनको रथसमेत तीक्ष्णबाणों करके धरणीपथ योजन दक्षिणदिशा को पठाया १० फिर अत्यन्त बलसे आयेहुये रथको देख महाबाणों से तिस अर्जुन के सम्पूर्ण रथको भेदनकिया ११ अर्जुन ने रथ सहित तिसको तीन बाणोंकरके आकाशमें पठाय सिंह-नादकिया १२ अर्जुन ने दूसरारथ सारथी पाय ताम्र-ध्वजकी सघन सेना को यमपुरको भेजदिया १३ सुवर्ण

से चित्रित वाणोंसे ताम्रध्वज अर्जुनको मारताभया निदान दोनोंवीर वाणविद्यामें निपुण चित्र विचित्र मण्डल करते वीर शोभासे युक्त धीर संग्राम को नहीं छोंडते दोनो युद्धछोड़ नहीं गये सो कौतुकहुआ १४।१५ दो अक्षौहिणी ताम्रध्वजकी अर्जुन ने और एक लक्ष अर्जुनकी ताम्रध्वजने सेना गिराई १६ दोनोंवीर जय-कांक्षी परस्पर युद्ध करते हैं और अर्जुन का सुनहला धनुष और पताका चक्ररक्षक सम्पूर्ण सामग्री छत्र रथ घोड़े और सारथी को भी क्रोधसे छेदन किया १७।१८ जिस २ रथमे ताम्रध्वज सवारहोता है तिस २ को अर्जुन काटता है फिर भी तिस धनुर्द्धारी ताम्रध्वज के रथोंका एक हजारा दूसरीवारकाटा और अर्जुन के वाणों से पीडित अग ताम्रध्वज पराक्रमको नहीं छोड़ता हे रा-जन्! तिसके छिन्न मासकण उड़ते हैं वे कृष्णके मस्तक में पृथ्वी में आकाश मे वायुसे हत पतितहोरहे हैं १९।२१ इसप्रकार तिससमय दोनोंवीरोंका त्रैलोक्य मोहन सात दिन रात घोर युद्धहुआ २२ रात्रि दिन दोनों वीरोंको युद्ध करते देख भययुक्त सबवीर तिसको सन्देह मानते महा विस्मितहुये २३ तब ताम्रध्वज अर्जुन रथले आ-काश में जाय मास लेकर गगनपन्थ में बाजके समान घूमताभया २४ तदनन्तर घोड़ा ध्वजा पताका समेत रथको दूरसे पृथ्वी में पटका तब तिसको देख श्रीकृष्ण भगवान् ने तिसको अपने हाथ से पकड़लिया २५ तब ताम्रध्वज बोला कि मैंने रथसमेत इसको पृथ्वीपर पट-

का तो तुमने हाथसे पकड़लिया तो मेरापराक्रम अच्छा है २६ इसप्रकार कहतेहुये तिस ताम्रध्वजको श्रीकृष्ण ने गदा से मस्तक और लात से छातीमें मारा २७ सो राजा भिन्न हृदयहो कृष्णके सामने गिरा फिर अपने रथमें सवार होकर कृष्णको बाणों से भेदन किया २८ श्रीकृष्णजीने कहा कि हे अर्जुन! तुम भी युद्धकरो और मैं भी युद्ध करता हूँ हमारे तुम्हारे सगम करके यह जीतने योग्य है हमारी यही मतिहै २९ और महासमर इस वीर में शंका न करो ताम्रध्वज के बाणों से पीड़ित सेना देखो भागती है ३० और जे बभ्रुवाहनसे मुख्यवीर तेइसने कौतुकही से जीतलिये तुम गाण्डीवसे छूटे बाणों करके गिराओ देर न करो ३१ और मैं इसको शार्ङ्गधनुष करके गिराता हूँ चिन्ता न करो तदनन्तर गोविन्दने महाबाणों को धनुष से छोड़ा ३२ तब कृष्णकरके प्रेरित अर्जुन वीरको सामने मारता भया तिसपर श्री कृष्णचन्द्र ने रथ में स्थित वीरके ऊपर बाणोंकी वर्षाकी ३३ तिसने तीक्ष्ण बाणों से नरनारायण दोनोंको भेदन किया और दोनों के धनुष अपने बाणों करके प्रत्यक्षा से हीन करदिये ३४ और आनन्दसे उत्फुल्लनेत्र राजा ताम्रध्वज कृष्णसे बोला कि अपनी गतिकी इच्छा करते जन करके पृथक्भूत नरनारायण मिलाने योग्य हैं ३५ और हे केशव! तुम अर्जुन के सारथी हो तिस अर्जुन का रथ छोड़ अपर रथीहो यत्नमें स्थित युद्ध करतेहो ३६ तुमकरकेहीन अर्जुन निस्सन्देह पतित होताहै हे कृष्ण!

सारथी होवो अर्जुन को न गिरावो ३७ तदनन्तर कृष्णचन्द्र रथको छोड़ फिर सारथीभये और किंकिणी-युक्त घोड़ोंको वेगसे हाका और तिस रथको सम्हाल घोड़ोंको चाबुकसे मार क्रोधसे अरुण नेत्रहुये ३८।३९ तब ताम्रध्वजभी तीक्ष्णदशबाणो से कृष्ण को भेदन कर फिर साठ बाणों से अर्जुन को विदीर्ण किया ४० फिर अर्जुनका छत्र काटा और कृष्णको भी बाणों से घायल किया तब तिस वीर का रथ अर्जुन चूर्ण करता भया ४१ जहा २ अर्जुन के बाणों करके ताम्रध्वजकी देही प्राप्त की जाती है तहा २ लोमवाही नाराचों से चारोंओर भेदन करताहै ४२ फिर शस्त्रयुक्त अर्जुन के समीप आते तिसको पदमें प्राप्त कृष्णचन्द्र लात से फेंकदेते हैं चरणप्रहार से हत पृथ्वीतल में गिरा फिर उठकर यह वीर मतवारे हाथी में चढा और हाथी पर सवार तीक्ष्णबाणों से कृष्णार्जुन को मारा और घोड़ों के तथा कृष्ण के समेत रथको भ्रमयुक्त किया अर्थात् रथ घुमाया ४३।४५ और मूर्च्छा को छोड़ बभ्रुवाहन के समान वीर युद्ध करने को प्राप्तहुये तो ताम्रध्वजने फिर तिन सबको बाणों से मूर्च्छित करदिया ४६ इसप्रकार युद्धको करते ताम्रध्वज पे श्रीकृष्ण क्रोधकरके दिव्य सुदर्शनचक्र दारुण हाथ में लेकर खड़ाहो खड़ाहो कहते रथसे उतर समरमें राजाप्रति दौड़े तहां पृथ्वी पानी देवताओं के भय प्रवेश करगया ४७।४८ समुद्र क्षोभितहुये सूर्य कांपे दिशा अग्निलगीं

शेषादिक सम्पूर्ण पन्नग भयसे कुण्डलीभूत कहे गिडुरी मारलीं ४९ तब ताम्रध्वज हाथी को छोड़कर कृष्ण चन्द्रके सामने आया तो तिस चक्रकरके महान् कदन किया फिर क्रुद्ध कृष्णने अक्षौहिणियो का सैकड़ा मारा ५० । ५१ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांताम्रध्वजयुद्धेश्रीकृष्ण, कोपोनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि ताम्रध्वज पतित तिस सेना को देख संग्राम में चक्रपाणि कुपितकृष्ण से आनन्द-पूरित बोला १ कि बीचमें भेद देनेवाली सेना मारीगई तुमने कार्य्य किया इससमय तुमको यथारूप स्थित देखताहूं २ हे मधुसूदन ! पिता करिकै यज्ञार्थ नियुक्त आज मैं सुन्दर जाको दर्शन ऐसे तुम्हारे रूपको कैसे छोड़ूंगा खड़े हो ३ अपने अश्वकी रक्षा करते मुझकरके कैसे देखे गये जैसे काच को ढूंढते दिव्यमणिकी प्राप्ति होवै तैसे ४ युद्धमें अर्जुन के वास्ते तुम ने पूर्वही पुण्य अर्पण की या समय हे केशव ! अपना शरीर भी अर्पण करते हो ५ रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन और चक्र-धरको पकडूंगा जिससे मेरे पिताकी यज्ञमें देवताहोय ६ इतना वचन कहकर संग्राममें कृष्णको दहिने हाथ से चक्रहस्त कर पकड़ा ७ और बायेंहाथ से केशवका पांव शीघ्रतासे पकड़ अपने मस्तकपर धर सामने

अर्जुन के दौड़ा ८ तिसको सकृष्ण आते देख अर्जुन भी चला कृष्णकी आज्ञासे अपने धनुष वाणों का मैकरा लगाया ९ और हे जनमेजय! तिसप्रकारके ताम्रध्वज को मारा तब महाबल ताम्रध्वज ने भी अर्जुनको लात से मारकर १० आनन्दयुक्त भुजों से सकृष्ण अर्जुन को पकड़ा तदनन्तर कृष्णका चलाया पृथ्वी तलमें गिरताभया ११ गिरते तिसके हस्तवेगसे खैंचेहुये कृष्णार्जुन भी तिसकाल मोहयुक्त हो पृथ्वी में गिरे १२ यह अपने उठावको जबतक पृथ्वी तलमें देखे तबतक दोनों घोड़े तिसके नगर को प्राप्त भये १३ हे राजन्! मारने से बचे वीरों को पकड़ कर तिसकाल कुछ समय में मयूरध्वज के निकट पहुंचा १४ बाहर पुराभ्यास में रम्य यज्ञमण्डप में स्थित राजा आये हुये परमबली पुत्र और दोनों घोड़ों को देख १५ वह वीर हँसकर मयूरध्वज तिस अपने पुत्रसे बोला हे पुत्र! वर्ष नहीं बीता घोड़ा फिर प्राप्तहुआ १६ और दूसरा किस राजा का घोड़ा तुमने पकड़ा तब नमस्कारकर आगे खड़े पुत्रने तिससे यह कहा १७ कि दीक्षित मृगाका शृंगहाथमें लिये यज्ञार्थ वाजिके रक्षण में धर्मराज करिके धनुर्विद्या में निपुण और वाम दोनों से वाणको चलाता सहितकृष्ण के अर्जुन नियुक्त कियागया १८ धीरवीरों ने चुन, बभ्रुवाहनके पुरमें घोड़ाकी रक्षा करता मुझ करिके देखा गया १९ तहांपर जिसप्रकारके युद्धको व्यवसाय हुआ सो अपने प्रधान मानी बलवान् वक्ता बहुलध्वज से

शेषादिक सम्पूर्ण पन्नग भयसे कुण्डलीभूत कहे गिडुरी मारली ४९ तब ताम्रध्वज हाथी को छोड़कर कृष्ण चन्द्रके सामने आया तो तिस चक्रकरके महान् कदन किया फिर क्रुद्ध कृष्णने अक्षौहिणियों का सैकड़ा मारा ५० । ५१ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांताम्रध्वजयुद्धेश्रीकृष्ण कोपोनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि ताम्रध्वज पतित तिस सेना को देख संग्राम में चक्रपाणि कुपितकृष्ण से आनन्द-पूरित बोला १ कि बीचमें भेद देनेवाली सेना मारीगई तुमने कार्य्य किया इससमय तुमको यथारूप स्थित देखताहूं २ हे मधुसूदन ! पिता करिके यज्ञार्थ नियुक्त आज मैं सुन्दर जाको दर्शन ऐसे तुम्हारे रूपको कैसे छोड़ूंगा खड़े हो ३ अपने अश्वकी रक्षा करते मुझकरके कैसे देखे गये जैसे काच को ढूंढते दिव्यमणिकी प्राप्ति होवै तैसे ४ युद्धमें अर्जुन के वास्ते तुम ने पूर्वही पुण्य अर्पण की या समय हे केशव ! अपना शरीर भी अर्पण करते हौ ५ रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन और चक्रधरको पकड़ूंगा जिससे मेरे पिताकी यज्ञमें देवताहोय ६ इतना वचन कहकर संग्राममें कृष्णको दहिने हाथ से चक्रहस्त कर पकड़ा ७ और बायेंहाथ से केशवका पांव शीघ्रतासे पकड़ अपने मस्तकपर धर सामने

अर्जुन के दौड़ा ८ तिसको सकृष्ण आते देख अर्जुन भी चला कृष्णकी आज्ञासे अपने धनुष वाणो का सैकरा लगाया ९ और हे जनमेजय! तिसप्रकारके ताम्रध्वज को मारा तब महाबल ताम्रध्वज ने भी अर्जुनको लात से मारकर १० आनन्दयुक्त भुजों से सकृष्ण अर्जुन को पकड़ा तदनन्तर कृष्णका चलाया पृथ्वी तलमें गिरताभया ११ गिरते तिसके हस्तवेगसे खैंचेहुये कृष्णार्जुन भी तिसकाल मोहयुक्त हो पृथ्वी में गिरे १२ यह अपने उठावको जबतक पृथ्वी तलमें देखे तबतक दोनों घोड़े तिसके नगर को प्राप्त भये १३ हे राजन्! मारने से बचे वीरों को पकड़ कर तिसकाल कुछ समय में मयूरध्वज के निकट पहुंचा १४ बाहर पुराभ्यान में रम्य यज्ञमण्डप में स्थित राजा आये हुये परमबली पुत्र और दोनों घोड़ों को देख १५ वह वीर हँसकर मयूरध्वज तिस अपने पुत्रसे बोला हे पुत्र! वर्ष नहीं वीता घोड़ा फिर प्राप्तहुआ १६ और दूसरा किस राजा का घोड़ा तुमने पकड़ा तब नमस्कारकर आगे खड़े पुत्रने तिससे यह कहा १७ कि दीक्षित मृगाका शृंगहाथमें लिये यज्ञार्थ वाजिके रक्षण में धर्मराज करिके धनुर्विद्या में निपुण और वाम दोनों से वाणको चलाता सहितकृष्ण के अर्जुन नियुक्त कियागया १८ धीरवीरों से युक्त बभ्रुवाहनके पुरमें घोड़ाकी रक्षाकरता मुझ करिके देखा गया १९ तहांपर जिसप्रकारके युद्धको व्यवसाय हुआ सो अपने प्रधान मानी बलवान् वक्ता बहुलध्वज से

पूछिये २० वहुलध्वज कहताभया प्रद्युम्नप्रमुख वीर महावली पाण्डवार्थ आये ते तुम्हारे पुत्रके गिराये गिरे पीछे कृष्णार्जुन दोनों युद्धकरते भये २१ तिनमे महा युद्धकरिके ओर कृष्णार्जुन दोनोंको पकड़कर तिसयुद्धमें मूर्च्छित तुम्हारे पुत्रने किया २२ तिसके वाद रणसे दोनों हम कहे घोड़ा केवल अपनी इच्छा से निकले इनके पीछे से ताम्रध्वज अपने पुरमें प्राप्तहुआ २३ मूर्च्छा छोड़ कृष्ण अर्जुन क्या करते हैं हम नहीं जानते हम कुशलयुक्त घोड़ा समेत पहुँचे यह घोड़ा खड़ा है २४ मयूरध्वज कहताभया मूर्ख पुत्र दोनों घोड़ों को पकड़ कर महत् अकार्य्य करके मेरे निकट प्राप्तहुआ में ठगा गया २५ वशमें प्राप्त कृष्ण अर्जुनको छोड़कर घोड़ोंसे मेरी यज्ञ नहीं होगी यह मेरी मति है २६ पुत्र शत्रुरूप मुझको घरमें वाधने को प्राप्तभया जो मधुसूदनदेव भगवान् सहित अर्जन तुझकरिके देखेगये युद्धसमय मे तो तिसको छोड़ कैसे आया जैसे दुर्भगा स्त्री रात्रिमें पतिको प्राप्तहोकर दैवयोगहीसे निद्रालु होजाती है तैसे तुझने किया कृष्णको त्यागकर अव मेरे घरसे दूरजा २७। २८ तू घोड़ा पकड़ने से अपनी वुद्धि को धन्य गिनता है तुलसीवन छोड़ विजयाके आश्रय हुई ३० श्रेष्ठ चम्पाकी माला त्यक्तकर कौन मोहित रसवेत्ता पुरुष धतूरपुष्पकी माला ग्रहणकरै ३१ अव मैं यज्ञको छोड़जाताहूँ घोड़ों को दूर करताहूँ हे दुर्बुद्धे! उस स्थान को वतला जहां कृष्णार्जुन हैं ३२ जैमिनिजी वोले

या प्रकार सो राजा स्त्री समेत निश्चय कर घर में कृष्णकी आकांक्षा करता वारम्वार पुत्रकी निंदाकरता स्थित हुआ ३३ फिर कृष्ण मणिपुर में सावधान हुये और सर्वजन सावधान हुये तदनन्तर अर्जुन कृष्ण देवसे हे राजन्! यह वचन वोला ३४ कि हे स्वामिन्! घोड़े कहा गये और यह राजा कहागया हे देवेश! तहा मुझको लेचलो जहा युद्धहो ३५ कृष्णचन्द्र वोले हे अर्जुन! महासग्रामसे घोड़े रत्नपुरको गये यह मैं मानता हूं मयूरध्वजसे रक्षितपुरको सव हम चलैंगे ३६ तुम मुझकरके सहित आगे और वीर पीछे से जायँ आगे तुम को मयूरध्वज को सहसा दिखाऊँगा ३७ यह कह अर्जुन को हाथमे पकड़ तिस राजाके निकट गये पीछे महात्मा अर्जुनकी सेना पहुँची ३८ तदनन्तर वासुदेव ने यह अर्जुनसे कहा हे अर्जुन! यह राजा यज्ञमें दीक्षित है याको पुर रमणीय और दिव्य छज्जा और शहरपनाह है ३९ इसको मानसी चरित देखो तथा छलैके निमित्त मेरे थाये परभी सत्यको नहीं छोड़ैगा ४० मैं वृद्धब्राह्मण होकर इसप्रकारके राजासे प्रार्थना करूँगा तुम्हारे हितार्थ तुमको वालक करूँगा ४१ मेरे साथआवो अर्द्धरात्रि के वीचमें वहुतजनोंसे रक्षित रत्नपुरमें प्रवेश करूंगा ४२ जैमिनिजी वोले दोनों कृष्ण अर्जुन वृद्ध और वालक हो प्रवेशकर अर्द्धरात्रिको निद्रित जन और स्त्रियोंका चरित्र देखते भये ४३ कृष्ण ने तिन पुरुषोंको देखा कि श्रेष्ठ मकान में सोने हैं और हे नृप!

परस्पर आनन्द से वार्त्तालाप करते हैं ४४ कोई पुरुष अपनी स्त्री चन्द्रदीप से प्रकाशित को अपनेही हाथ से मुख पकड़ यह बचन कहरहा है ४५ हे भद्रे, कमलनयने! तुम्हारे सर्व अंग देखकर तिमप्रकार मुझ को तृप्ति नहीं होती जिसप्रकार कृष्णके देखने में होतीथी ४६ स्त्री बोली हे नाथ! मैं कृष्ण समेतहीं मेरे नेत्र में कृष्ण को देखते हो मैं जानती हूँ कि रतिकाल में तुम्हारा मोक्ष प्राप्तहुआ है ४७ पुरुष ने कहा मेरे शिरके कुटिल बाल तुम करिके वाम करसे पकड़े गये मैं क्या भिन्नकेश नहीं होताहूँ ४८ स्त्री बोली हे धीर! अधर पुट छोड़ो कुचमण्डल भेदन करो गोलकों को भेदन किया स्खलनार्थ होगा ४९ पुरुष ने कहा जब तक ये कुच सुवृत्त मोतियों से त्यक्तसंग दोनो कृष्णचूचक नहीं होंगे तबतक पीड़ित करूँगा ५० जैमिनिजीने कहा कृष्णचन्द्र इसप्रकार के वचन रात्रि को सुनते अर्जुनयुक्त प्रात काल वर्त्तमान भये पर ५१ विविध प्रकार के राजोंसे गुप्त ब्राह्मणों से घिरे मण्डपमें श्रेष्ठा-सन में बैठे राजाके देखनेको प्राप्त भये ५२ कस्तूरी मृग के समूह और चन्द्रकलाओं से युक्त नानाप्रकार के रत्नोंकी चौकी में बैठे राजाको देखा ५३ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणि जैमिनीयेभाषायां वाम्रध्वजविजयोनाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि दो घोड़ोंसे युक्त पत्नीयुक्त दीक्षित तिसकाल तिससे ब्राह्मणने स्वस्ति यह प्रथम वचन कहा १ हेनृपशार्दूल! तुम्हारी स्वस्तिहो आये मुझ द्विजको जानिये शिष्य समेत यज्ञमण्डप में प्राप्त हों तब मयूरध्वज बोला हे ब्राह्मण! जबतक सशिष्य तुम्हारे नमस्कार करिबे को यहा खड़ा हुआ तब तक तुमने स्वस्ति बोलही दिया २ जो ब्राह्मण नमस्कार विना जिस पुरुषको स्वस्तिबोले तिसको शापसे क्या कार्य्यहै तिसमें तुमने योग्य नहीं किया ३ जैमिनिजी बोले कि पीछे कृष्णके आगे दण्डवत् पतितहुआ अर्थात् गिरा ४ तब अमितबुद्धि कृष्णने उठाया ५ फिर राजा ने ब्राह्मणरूपमें छिपे कृष्णसे कहा सशिष्य तुम पूज्यपाद हो किसलिये मेरे यज्ञमण्डप में प्राप्तहुये ६ या समय आप का मुझसे क्या अभीष्ट कार्य्यहै मुझपर अनुग्रह हुई धन्य हों मुझको कुछ अदेय नहीं है७ब्राह्मणबोला विज्ञप्तिकाल में राजा नमस्कार के बिना ब्राह्मणों से स्वस्तिवाच्य है औरो से नमस्कार करिबे योग्य है ८ राजा बोला सुनकर दान देहों अशक आप को कथनीय है धन और प्राणों से सम्पूर्ण कार्य्य करूंगा ९ ब्राह्मण बोला हे राजन्! सुनो यदर्थ में आयाहूं रम्य धर्मपुर से अपने पुत्र के विवाह करने को १० यहा तुम्हारा पुरोहित कृष्णशर्म्मा कन्यायुक्त स्थियमान है यह मान-

शीलहै यह मानकर कन्यादेगा ११ जबतक पुत्रसमेत तुम्हारे नगरप्रति आवों तबतक मार्गमध्य घोर वन में क्रोधयुक्त सिंह १२ हे राजन्! मेरे देखते तरुण पुत्रको पकड़ताभया तेहिके उपरात मुझ करिकै पुत्रके छोड़ाने को उद्यम कियागया १३ तहा नृसिंहको स्मरण किया मेरे स्मरणसे शीघ्र नृसिंह न आया तब दुःखित मुझसे हँसते मनुष्यकीसी वाणी सिंह बोला मेरे पुत्रकी देह नखों से पीड़ित करता और भयंकर दाढ़ों और पूंछ से मुझे डरवाता १४। १५ सिंह बोला हे ब्राह्मण! पुत्र के निमित्त वृथा परिश्रम करतेहो मुझ कालसे ग्रसा गया और कौन छोड़ाने को योग्य है १६ हे ब्राह्मण! शिष्य समेत जावो कुछ विचार न करो हिंस्र जीवों के आगे वास सुखार्थ नहीं होय है १७ और पुत्र उत्पन्न करो जो तुम को लोकदायी हो यह वेद करिकै कहा है कि पुत्रहीन को परलोक नहीं है ब्राह्मण बोला हे सिंह! मुझको भक्षण करके लोक देनेहारे पुत्रको छोड़ दे थोड़ी आयुष वृद्ध को पुत्रहीन जीवित व्यर्थ है १८। १९ सिंह बोला हम तो मृत्यु करिकै ग्रसित जन को कहीं मारते हैं सपूर्ण हिंस्र जीव जल सर्पादिक सहायकारक है २० तुम्हारी आयुष बहुत है और तुम्हारा पुत्र गतायुहै तिससे मेरी आज्ञासे जाव यह तुम करिकै क्या किया जाताहै २१ ब्राह्मण बोला कि किसी उपाय दान तपस्या करिकै छोड़तेहो तिसकाल सिंह ने कहा तुम से कुछ प्रार्थना करते हैं २२ मयूर-

ध्वजने कहा हे विप्रेन्द्र। मेरी राज्य में छोटा सिंह नहीं नारसिंह बिना को तुम्हारे पुत्रको छुटावे २३ ब्राह्मण बोला हे राजन्। सिंह करिके तुम से कुछ प्रार्थित नाम मांगाहै जो सिंह मागताहै सो तुमको देना योग्यहै २४ राजा बोला सिंह करिके मुझसे क्या प्रार्थित है सो हे अनघ। तुमको देऊगा हे विप्रेन्द्र। तुम जल्दी कहो मेरा कहा झूठा नहीं है २५ ब्राह्मण बोला मुझ करिके जो प्रार्थना की जातीहै सो तुम कैसे देवोगे अपुत्रत्व क्या कठोर है सिंह करके प्रार्थित प्रिय प्राण कौनदेगा जो तुम देवो तो कठोर सुनो तिसने महारण्यमें कहा राजा मयूरध्वजको आधा शरीर तुम लावो तौ तुम्हारे पुत्रको छोड़ोंगा तेराअङ्ग तपस्यासे जरा वृद्ध अच्छा नहीं लगता २६।२८ दिव्य रस दुग्ध नानाविधि फलोंकरके पुष्ट मयूरध्वजको भिन्न सुन्दर प्रिय अङ्ग हमको दीजिये २९ जबतक तिसप्रकारका अङ्ग न लावोगे तबतक तुम्हारे पुत्रको नहीं खाऊगा यह तुमसे सत्यकहताहूं ३० ब्राह्मण बोला राजा सुन्दर अपना शरीर किमर्थ भेदन करेगा हे सिंह। परार्थ में राजा के निकट नहीं जाता हूँ ३१ सिंह ने फिर भी कहा ब्राह्मण राजा के निकट जावो दधीचिने हाड़दिये और कर्ण ने कवच दिया ३२ तिसीप्रकार ब्राह्मणार्थ शरीर देवेगा अन्यथा न होगा यशस्वियों को अपने शरीरमें बड़ी प्रीति नहींहोती ३३ रणके बीचमें वा ब्राह्मणार्थ क्षत्रियों करके अपना शरीर पातनीय है हे ब्राह्मण! तुम पुत्रहीनहो तिसमे तेहिके

निकट जावो ३४ शोकविनाशन तिस राजाके निकट जाय प्रार्थनाकरो तिसने बहुत पुत्र उत्पन्नकरे और बहुतकाल राज्य की है ३५ तुमको देखकर दयायुक्त होगा सन्देह नहीं है अर्थी सब मागता है दाता दे या न दे ३६ तब ब्राह्मण बोला हे राजन्! इसप्रकार तिस सिंहने वन में कहा और मुझको प्रेरित किया तब मैं पुत्रशोकसे आकुल सहित शिष्यके तुम्हारे घरमें प्राप्त हुआ किसी उपाय करके वनमें सिंहसे पुत्रको मँगावो कठोर वचन कहता सिंह अदृश्यहुआ ३७। ३८ तिस राजाके आधे शरीर विना तुमको आनायोग्य नहीं है बिना राजाके अङ्गके लिये आये तुम्हारे पुत्रका अंग नहीं छोड़ूगा इसप्रकार जब तिसने कहा तब मैं तुम्हारे निकट आया दुर्बल मनुष्योंकरके राजामें अपनादुःख निवेदन करके निकट स्थित होना योग्य है ३९। ४० वीर रामचन्द्रकरके ब्राह्मण का मराहुआ ब्रह्मचर्य व्रत करनेवाला पुत्र अपने बलकरके पूर्वकाल में लायागया हे राजन्! पुत्रकी इच्छाकरके अर्थात् पुत्रार्थ तुमको सत्त्व और धैर्य्य में रामचन्द्रही के समान मान करके मैं तुम्हारे निकट आया ४१। ४२ तब राजाने मण्डप में कहा कि हे ब्राह्मण! खड़ेहो सम्पूर्ण ब्राह्मणों के आगे यहा अपनाशरीर तुमको देदूगा तुमने अच्छाकहा ४३ जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार के वचन कहिके राजा पुत्रको राज्यमें बैठाय कैसा पुत्र कि गङ्गाजलसे स्नान किये तथा शालग्राम शिला जलकरके स्नानकरे तुल॰

सीदलकी माला कण्ठ में कियेहुये ऐसे पुत्रसे हँसतासा शङ्खचक्र से अङ्कित अङ्गकर राजा आनन्दसेयुक्त सभा मण्डप में आकर सम्पूर्ण ब्राह्मणों से बोला कि यह त्रि-प्ररूप कृष्ण पुत्रार्थ मेरे निकटआया ४४। ४६ तिसको अपनी आधी देहसे पूजन करूँगा जिससे पुत्र युक्तहोवे तब सम्पूर्ण ब्राह्मण यज्ञमण्डलमे कौतुक देखें ४७ और करपत्र युक्त वढ़ई आवें आकर यहा दो खम्भे गाड़कर मेरा मस्तक भेदनकरें ४८ जिनको मैं सदैव प्रिय हूँ तिन करके दूषण कहना योग्य नहीं है ४९॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायामयूरध्वजदेहार्द्धदान निश्चयोनामपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

छियालीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! तिसके वचन वे प्रधान और ब्राह्मण सुनकर तिस समय कम्पित और भय-भीत होतेभये १ और करुणा से युक्त बोले कि कहा से कालके समान हमारे राजाके प्राण हरनेवाला निर्दयी ब्राह्मण आया २ बहुत याचक देखे परन्तु कभी इसप्रकार का नहीं देखा यह निर्दयी निर्लज्ज राजाकी देह मागता है लोकमे प्रसिद्ध मांसभक्षक सिंह घातुक कहागया है फिर यह तो जाति करके मनुष्य ब्राह्मण ज्ञानवान् ब्राह्मण जाति में उत्पन्न होकर स्वार्थनिष्ठ कैसे हुआ इसमे हमारा क्या उपायहै जो भावीहै सोतो होहीगी ३।५ अवश्य भाव्यभावों को निषेध नहीं है मत्य-

वादी अतिथि जिसके प्रिय ऐसा राजा कैसे निवारण करने योग्यहै ६ क्या यह वामन यज्ञ समय में ब्राह्मण रूप करके जैसे बलिप्रति प्राप्तहुआथा तिसीप्रकार ब्राह्मण को मैं हरिही जानताहूँ ७ इस प्रकार कहतेहुये वे सब तिसकाल राजाकरके वर्जित कियेगये तदनन्तर राजा अनेक दान देकरके आनन्दितहुआ ८ तिस समय बढ़ई आप दो खम्भे गाड़कर तिरछा एककाष्ठ करके रस्सियों से पुष्ट बाधते भये तिसी समय राजा अपने मस्तक मे आरा धरनेकी आज्ञा देताभया और अपना आनन्दसे युक्त सबोंके देखतेहुये ९। १० ब्राह्मण के पैरोंको धुलाय बोला कि आधे शरीर करके यज्ञनायक गोविन्द प्रसन्नहों हमारे कुलमें उत्पन्न कल्याण की बाञ्छा करते बिप्रकार्य के अर्थ शरीररूपी धनकोदेते तिनके मध्यमें सभाके बीच अलग मेरा आधा शरीर ग्रहण करो सिंह सन्तोष को प्राप्तहो अपनी देही को फाड़ताहूँ रेरे बीरो! मेरी आज्ञासे वस्त्र की रस्सियों से बँधा मेरा शरीर अपने बलसे खींचो देर न करो ब्राह्मण जावै ११। १४ इस ब्राह्मण करके किया में पृथ्वी में धन्यहुआ सम्पूर्ण मनुष्य आदरपूर्वक मेराकहा वचन सुनैं १५ परोपकार के अर्थ जिनका शरीर और जो द्रव्य जावे सो स्थितहै और दानसे वर्जित शरीर द्रव्य दोनों शोच्य हैं १६ तिससे सभासदों को मुझे देख आनन्दकरना योग्य है जैमिनिजी बोले कि तब तिससमय राजा को देख करके सब राज्य हाहाभूत होकर १७

कुररी गणके समान विलाप करने लगी उसी समय तिस राजाकी रानी निकट आकर ब्राह्मणके आगे रम्य कुमुद्वती नाम राजासे बोलती भई कि हे राजन्! ब्राह्मण के अर्थ तुम करके देहार्द्ध देय मैंने सुना है १८। १६ तुम्हारा अर्द्धांग में स्त्री हू मुझको देकर सत्यवादी होवो सजीवदान दियां जाताहै और कटाहुआ तुम्हारा अंग जीवहीन होजायगा और मेरी यह मति है कि दूसरे करके भिन्न सिंह न ग्रहण करेगा जो चतुर्थांश देना है तो तुम्हारा भग्न शरीर चतुर्थांश होगा आधा सिंह मागता है सो स्त्री रूप मुझको जानो जो स्त्री अपने प्राणनाथ के आगे मृत्यु को प्राप्त होजावे सो उत्तम गति को प्राप्त होती है इस में सन्देह नहीं इस में विचारना कार्य नहीं है २०। २३ तिसके सो बचन सुनकर वाक्य में निपुण राजाको एकाग्रमन जान कर ब्राह्मण शीघ्रही बोला कि हे राजन्! सिंह करके कहा दक्षिण अङ्ग राजाको देना योग्यहै राजाको वामाङ्ग सो कैसे लिया जावे शरीर का दक्षिणाङ्ग सिंह के अर्थ मुझ को देने को उचित है २४। २५ कदाचित् जो नहीं दोगे तो निराशहो तिसके निकट जाऊंगा हे राजन्! उसीकरके तुम्हारे निकट में भेजा गया हूं २६ जाकर के कहूंगा कि यथासुख पुत्र को भोजन करो इमप्रकार ब्राह्मण के कहने और सभासिन के सुनते और गौतुक देखते अति आनन्दित राजपुत्र शिष्य युक्त तिस ब्राह्मणप्रति तिस समय कोमलवाणी से पिता की कीर्ति को सम्पा-

दिन करता ताम्रध्वज बोला कि जो पिता सपुत्रहै यह सनातनीय श्रुति है कि समग्र पुत्र पिताका आधाशरीर है ब्राह्मणार्थ निश्चय से मेरे पिताने आधा शरीर अर्पणकिया है २७। ३० हे महाबुद्धे! मास से पुष्ट तरुणको देख सिंह प्रसन्न होगा और पुत्रको महायश होगा ३१ भीष्म रामादिक पिताकी वाक्य करनेवालों करके यश पायागया तब ब्राह्मणने कहा कि हे पुत्र! तुम सत्य कहते हो सिंहकरके कहे वचनों को सुनो पुत्रकरके और स्त्री करके भिन्न मयूरध्वज का मस्तक दो प्रकार का भया शरीर दे दक्षिणाङ्ग तुम लावो ३२। ३३ सो मेरे समान करके अन्यथा कैसे करने को समर्थ है जैमिनि जी बोले कि तदनन्तर सो राजा स्त्री और पुत्रको मना करके ३४ तिनके हाथ में आनन्दित हो तिस महात्मा ब्राह्मण के आगे आरा दिया ३५ केशव राम नृसिंह ऐसे कहतेहुये इसप्रकार के राजाको सम्पूर्ण इन्द्रादिक देवता देखते भये जिस समय अपने मस्तक में राजाने आरा धरा उसी समय महात्माओं को ग्लानि अर्थात् म्लान और पुरवासी दुःखितभये ३६।३७ तिसकेकहने से स्त्री पुत्र आरा धरते भये रामराम कहती ब्राह्मण से सबके सुनते तहापर कुमुद्वती नाम राजाकी स्त्री बोली ३८ कि हे ब्राह्मण! मैं अपने पतिको फाड़ती हूं जैसे पूर्व में नृसिंहजीने क्रोधकर खम्भाको फाड़ाथा और हिरण्यकशिपुको विदारण किया था उसीप्रकार मैं स्वामी को विदीर्ण करतीहूं तब राजाने कहा कि हे प्रिये! तेरे हाथ

में आराको में तिसप्रकार देखताहूं ३९। ४० जैसे केतकी का कोमल पत्र शरीर में सुखदायी होता है तुम निःशंक मेरे शिरको भेदन करो जैसे सगम में नखों करके भेदन करतीथी ४१ जिसप्रकार हे प्रिय! मुझको नखों करके पीड़ा नहीं होतीथी तैसेही आज आराके कमल सदृश कोमल दातों करके न होवेगी तदनन्तर सो रानीपुत्रके समेतहो तिस राजाका मस्तक कृष्णार्जुन के आगे भेदन करती भई ४२। ४३ हे जनमेजय! शिरके कटते हुये बड़ा हाहाकार होताभया तिस समय दुरासदब्राह्मण ४४ नेत्र घूमेहुये कटे राजासे बोला हे राजन्! रोदन करतेहुये तुम दान देतेहो तुम्हारा अंग ग्रहण नहींकरूंगा अभावसे दियादान विद्वज्जन नहीं ग्रहणकरते विना पुत्र करके मेरा स्वर्ग रुद्ध टिकाहै सो टिके ४५। ४६ सिंह मेरे बालक को ले यथास्थान को जावे यह राजा वामनेत्र से रोदन करके आधी देहही ४७ देता है सो मैं श्रेष्ठब्राह्मण कैसे ग्रहणकरूं इतने वचन कह राजाको छोड़कर ४८ अर्जुनके समेत श्री कृष्णचन्द्र जाते भये तब जातेहुये ब्राह्मणको देख हाथों से पतिका मस्तक पकड़कर सुमुखी सती कुमुद्वती बोली हे सत्यव्रत! हे महाबुद्धे! दानियों के शिरोमणि कटेहुये तुमको छोड़कर ब्राह्मण आज जाताहै हे स्वामिन्! अर्द्ध देहके याचक ब्राह्मणको जातेहुये मनाकरो ४९। ५१ विना ग्रहणकिये चलेगये तुम्हारी कीर्ति निष्फल हो जायगी तब राजाने कहा कि हे भद्रे! तुमने मेरा कटा

मस्तक फिर धरा तिससे जंगलको जाते ब्राह्मणसे कह-
ताहूं हे मुनिशार्दूल ! मेरे वचन सुने विना न जावो मेरे
वचन सुनकर जावो ५२। ५३ हे द्विजश्रेष्ठ ! जो वाम-
नेत्रमें जल प्राप्तहुआ और दक्षिणाङ्ग ब्राह्मणार्थ मेरा
अच्छा भया और पतित वामाङ्ग पृथ्वीमें जाता है इस
से रोदन किया तिसप्रकार तीक्ष्ण व्यथा मुझको आरा
से नहीं हुई जिसप्रकार ब्राह्मणसे विमुख वामांग से
यहा होती है तिसके ये वचनसुन परमेश्वर प्रसन्नहुये
५४। ५६ और अपना सुन्दरस्वरूप राजाको दिखाया
कमललोचन श्रीकृष्णजी बीरको मिलकर बोले ५७ कि
हे नृपशार्दूल ! हे सुव्रत ! हे मयूरध्वज ! तुम धन्यहो हम
और अर्जुनकरके बहुत तरहसे परीक्षा लियेगये हो ५८
हे महाबाहो ! तुम स्त्री पुत्रोंके समेत यज्ञ करो हम दोनों
तुम्हारे पुत्र ताम्रध्वज के युद्ध करके प्रसन्न हैं ५९
वीरमथन करने वाले हम दोनों सेना समेत मूर्च्छित
किये गये मुझको देखकर प्राणियों को फिर दुःख कहा
से होगा मेरे वचन करके महात्मा तुमने आधीदेह देदी
हे महामते ! मैं तुम्हारी यज्ञ में कर्मकर्त्ता हूंगा जिससे
मैं भक्त के आधीन हूं तुम्हारे पुत्र करके जीता गया
तुम युधिष्ठिर का घोड़ा पकड़ो ६०। ६२ और तुम भी
स्फुट दोनों घोड़ों को हवनकर सुन्दर कीर्ति को प्राप्त
होवो तुम्हारे अङ्ग का भेदन मेरे देखते किसप्रकार
का हुआ ६३ तब मयूरध्वज ने कहा हे विष्णो ! जो
तुम्हारा परम श्रेष्ठपद यज्ञादीसिमान् धामहै सो मेरे

शरीरको भिन्नकरके जो बाहरस्थित सो प्रवेश करगया ६४ हे श्रीपते ! हे वासुदेव ! आज में तुमकरके धन्य किया गया हे गोविन्द ! जो तुम प्रसन्नहो तो मुझको यज्ञकरके क्या ६५ जगत्नाथ तुम तुम्हारे कीर्त्तन नमस्कार और श्रवण में कोटि यज्ञ होती हैं इस में सन्देह नहीं तुम ने जो कहा कि कर्म करूँगा हे जनार्दन ! तैसाही करो घोड़ा और मैं तथा पुत्र स्त्री नगरके महाजन और यज्ञकी सामग्री समेत यज्ञकर्त्ता अपने हाथ से लेकरके अपने हृदयमें प्रवेश कराओ अर्थात् बैठाल लेवो ६६ । ६८ हे गोविन्द ! तुमको पाय अब जो मुझ करके यज्ञ कीजाय तो जे ब्राह्मणो के पढे मन्त्र हैं ते मुझे हँसेंगे ६९ बड़ी अग्नि को छोड़ करके शीत से व्याकुल कौन मूढ़ मनुष्य चिनगारियों का सेवनकरे ७० और प्यासा मनुष्य श्रीगङ्गाजीका जल छोड़ कुहिरा के निकट जाय और मूढबुद्धी घोड़ो को पाय तुम्हारा अनादर कर अश्वमेधों से यज्ञकरता है सो यमराज करके दण्ड देने योग्य है मेरा पुत्र कृष्णार्जुनको युद्धमें छोड़करके आया ७१ । ७२ भाग्य के उदय होने से ये नरनारायण दोनों मुझ करके देखे गये ऐसे कह राजा स्तुति करने लगा कि ॥ नमस्तेपुण्डरीकाक्ष ब्रह्मणेगुरवेनमः ७३ ब्रह्म गोलोकसाहस्रैः फलितायनमोनम ॥ इन्द्रेगोप्त्रेनमस्ते स्तु सृष्टिकर्त्रेप्रगीतुषे ७४ अनन्तायसुपूर्णाय वेद निश्वासकारिणे ॥ श्रीधरायनमोनाथ शेषपर्यङ्कशा यिने ७५ शरणागतशान्ताय नमस्तेश्वरितायच ॥

ज्ञानायज्ञानगम्याय नम कालजितायच ७६ नमोऽ
श्यायवेद्याय नमःपारम्परायच ॥ जैमिनिजी बोले कि
इसप्रकार तिस समय तिस करके विश्वात्मा मधु
सूदन भगवान् ७७ स्तुति किये गये तो कृष्णचन्द्र
प्रसन्नात्मा हुये और अर्जुन के अर्थ भक्ति को दि
खाते भक्ति से प्रसन्न जगत्प्रभु तहा तीनिरात्रि स्थित
हुये ७८ राजा मित्रोंके समेत पीछे को वाजिपालन के
निमित्त कृष्णचन्द्र के हाथमें सम्पूर्ण द्रव्य प्राण देकर
के कृष्ण समेत अर्जुन को आलिङ्गनकर आगे चलता
भया ७९ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां मयूरध्वजविजयवर्णनन्नाम
षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! दोनोंघोड़ा वीरवर्मा
के पुरमेंगये पीछे से रक्षा करते हुये सर्वसैन्य के समेत
आनन्दपूर्वक कृष्णचन्द्र प्राप्त हुये १ जहा धर्म चतु
ष्पद कियागयाहै जिसकी राज्यमें मूर्त्तिमान् शमननाम
दामाद विद्यमान है रम्यसारस्वतपुरमें निश्चय से धा
र्मिक रहतेहैं जहा मनुष्य धर्म अर्थ काम और मोक्ष के
पारगन्ता हैं स्वप्न में भी कुत्सित मार्ग में नहीं चलते
कृष्ण सहित अर्जुन को श्रेष्ठ घोड़ों की रक्षा करते बहुत
सेवक सुन्दरी राज्यमें वीर वर्मा सुनता भया तदनन्तर
राजा घोड़ा पकड़नेके वास्ते महावलियोंको आज्ञादेता

भया २।५ कि मेरी रमणीय राज्यमें महात्मा पाण्डु के घोड़ा बहुतकालसे विचरते हैं सो उनका पराक्रम से हरणकरो ६ राजा के वचन सुनकर विविध प्रकारकी सेना निकली जिसमें पाच धीर महावीर सुमाल,सुरभ, नील, कुमल, सरल ये वीरवर्मा के पुत्र दिव्यरथों में सवार पकड़ने के अर्थ निकले ७।८ ते पाण्डवी सेना में प्राप्तहुये रथियोंको तृणवत् मानकर क्रोधसे घोड़ोंको पकड़ राजाके निकटगये ९ जबतक ते वीर राजाके निकट जायँ तभीतक हे राजेन्द्र! बभ्रुवाहन ने बुलाया १० शङ्खके शब्द से तिनवीरों को बधिरकर्ण करके अर्जुन का पुत्र ११ महातेजस्वी बभ्रुवाहन कनक चित्रित बाणों करके तिससमय शत्रुकी सेनाका नाश क्रोधकरके करताभया तदनन्तर तुमुल राजों करके १२ दारुण केशाकेशि मुष्टामुष्टि नखानखि रणमें यह अतीवयुद्ध होताभया मदोत्कट वीर आगे पैदलों के समूहों में जाते भये १३ रथ हाथियों से मिलगये कहीं हाथी घोड़ोंसे मिलगये रुद्र किरण के समान यह विपरीत हुआ १४ बभ्रुवाहन वीर करके महासेना तैसे भूतसंकोचको प्राप्त भई अर्थात् सिकुड़िगई जैसे अग्नि में धरा चमड़ाहो जाताहै १५ तबतक क्रोधयुक्त संयमनी के पति धर्मराज राजाके निकट आकर अर्जुनकी समुत्कृष्ट बड़ी सेना नाश करतेभये १६ हे राजन्! श्वशुर के अर्थ मोरेहैं वीर जिसके अत्यन्त उग्र अर्जुनकी विचित्र सेना धर्मराज करके पातित कीगई १७ तब अर्जुन धीर धर्मा

के दमाद करके सारी सेनादेख विस्मयसा करके देवता कृष्णचन्द्रसे बोले १८ कि हे माधव! हे हृषीकेश! तुम्हारेआगे तीक्ष्ण बाणों करके मेरीसेनाको मनुष्यरूप करके पतितकरताहै यह कौन देवताहै १९ तब श्रीकृष्णजीने कहा कि हे महाबाहो! अपने पुरमें वीरवर्मा करके कन्यार्थ प्रार्थित किये समरमें अपने आगे स्थित यम राजको जानो २० तब अर्जुन ने कहा कि हे कृष्ण! यह क्याकहा राजाकी कन्याके पति यमराज यह कैसे सङ्गत हुआ सो सब कहो २१ तब श्रीकृष्णजीने कहा कि इस वीरवर्मा के मालिनी नाम कन्या उत्पन्नहुई सो पृथ्वी में मनुष्य वरको नहींवरती २२ जिससमय पूर्वही मालिनी पिता करके घरमें पूंछीगई कि जो मनुष्यकी इच्छा नहीं करतीहो तो तुम्हारा वर मुझकरके कौन करना योग्य है २३ तब कन्याबोली कि हे तात! धर्मराज के अर्थ मुझको देओ दूसरावर नहीं और मेरेमनुष्य यम-राज के घरको जाते हैं २४ धर्मराज के शरीरको पाय करके यशको प्राप्तहूँगी पतिके प्रसन्न करनेवाले अपने गुणों करके कृष्णप्राप्त मनुष्यों को प्राप्तहूगी २५ मनुष्यका पाणिग्रहण जो मुझकरके पहिले किया जा-यगा तो पीछेको अग्निमें मेरा शरीर भी स्पर्श होगा २६ जिसप्रकार दूसरे पुरुषकी संगत मुझको नहीं प्राप्तहो तथा धर्मराजही वरविधान करने योग्यहै २७ जो स्त्री पिताकेदिये पतिको पायकर पृथ्वीमें स्थित अपनेपति को ठगिकर मोहितहो अन्यपतिमें जाती है २८ तिसको

ये राजा धर्मराज नरकमें डालते हैं तिन्हीं धर्मराजको में धर करके उनकी आज्ञा में मुझकरके टिकाजायगा २९ तहां मुझको धर्मराज पापसे पालन करेंगे और हे तात! तुम्हारी पुण्य सर्वदा सुगुप्तहोगी ३० मनुष्य के अर्थ कन्यादी पुण्यप्रदायिनी होती है धर्ममूर्त्तिकोदी में कल्याणप्रदहूं तो क्या बातहै ३१ हे तात! इसप्रकार मेरे हृदयका विचार कर्त्तव्य है जो मेरे नानाप्रकार के धर्मगुप्त कार्य होंगे तो मेरा रम्यमनोरथ होगा ३२॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषाया वीरवर्मायुद्धवर्णनन्नाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि सो वीरवर्मा इसप्रकार कन्याके वाक्य सुनकर यमसूक्त अर्थात् वैदिक यमके मन्त्रों से निरन्तर नित्य यमकी स्तुति करते हैं १ और मालिनी विधिपूर्वक देव के समाराधन में तत्पर युवावस्था को पाय यमको ध्यान भाव नहीं छोड़ती भई २ तिस समय राजाके चिन्तित विचारको नारदजीने जाना कि राजाकी कन्या ऐसाभाव करती है परन्तु यमराज इस को नहीं जानतेहैं ३ तिनके निकट जायकरके इसका सुन्दर अभिप्राय कहूंगा कि धर्मराजकी प्रसन्नता के अर्थ दिनदिन विषे धर्मकार्य करती है ४ यमराज समवर्ती हैं मनुष्योंके हृदयमें स्थित सुचेष्टित जानतेही हैं समवर्ती यम कैसे मन्दहोकर मालिनी के फल को द-

पित करते हैं ५ जैमिनिजी बोले तदनन्तर नारदजी यमराजके मन्दिरप्रतिगये राजाकीकन्या मालिनी तिस के अर्थ प्रियाबताई ६ हे धर्मराज! तुम्हारे अनुव्रत सत्यव्रतयुक्त धर्म में रतपुण्य सर्वस्व के देनेवाली तिस को तुम नहीं जानते हो ७ तुम्हीं को निरन्तर जानती है तिसको तुम वरो विलम्ब न करो पराई आशाको सन्तजन सफलही करते हैं असन्त नहीं ८ मनुष्य वेप में टिकिकै अपने सेवकों के समेत वीरवर्मा करके पालित रम्य सारस्वतपुरमें जाव ९ जहां चतुष्पदधर्म है और भयसे रहित मनुष्य हैं मेरी मति है सो पुरी तुम करके धन्य होगी १० तब वासुदेवजी बोले कि यमराज नारदजी को रम्यसारस्वतपुर को भेजते भये और कहा कि वैशाखमास के शुक्लपक्षमें निश्चय से तिसको वरूंगा ११ तिस करके कहे नारद वीरवर्मा के निकट गये और यमकरके कहा सुन्दर मंगल वृत्तांत कहते भये १२ राजा कन्याका विवाह करने की इच्छा करके स्थितभये यमराज भी १०८ एकसौआठ नायकों को आनन्द से १३ आज्ञा देते भये जिनकी महानदेही और बड़े पराक्रमी हैं और रोगो का नायक महावीर क्षय कहे क्षयी अपना प्रधान तिन सबों के बीच में अगुवा ब्रह्महत्याको शेष ज्वर धातु विनाशक तिस से वचन बोले हे यक्ष्मा! मेरे रमणीय विवाहमे अपने सेवकोंसहित तुम निमन्त्रितकिये गये सो पृथ्वीमें चित्रपुर प्रतिआवो १४। १६ यक्ष्मा बोला हे नाथ! तिसराज्य

में कैसे समागम होगा वे लोग ब्राह्मण प्रियहैं और राजाभी द्विज सेवक है १७ और पढतेहुये ब्राह्मणोंकी उग्रध्वनि और होमसे उत्पन्न धूम मेरेनेत्र और कानोंको दु:खदेंगे १८ और प्रमेह पुत्रक सूक्ष्म घृताक्त मूत्रनाशक बहुत कालकरके जन्तुओं का मेरे गुणों करके सम्मितहै १९ फिर हे रविनन्दन! विषूचिका से अधिक किस करके महिमा प्राप्तकीजाती है वह तुम्हारी दासी क्षणहीमें मनुष्यको नाश करती है २० और बड़ेतेजस्वी भाई पाण्डुका स्थान नहीं देखताहू और विशालाक्षी भाई की स्त्रीजनको शोषा कर्त्री तिसके सहित तिस पाण्डुकरके उत्पन्न किया पुत्र जलोदर गुणों करके पिता के समान तिसको कहा बैठाहहों २१। २२ हे भानुपुत्र! जहांपर महात्मा और पवित्र नित्यही धर्मपर राजा है तहांपर मैं क्या शरीरवान् होऊं २३ और हे स्वामिन्! व्रणों के आगे स्थित मैं अतीव शोभितहों तुम करके अच्छेप्रकार से माननीयो के बीचमें परमाणु के समानहों २४ गुरुकी स्त्रियोंमें रमते ब्राह्मणों को नाश करते बालकों के घातकी राजाओंको इनरोगोंका परमतेज नाश करताहै २५ हे विभो! व्रणके बहुत १०८ एक सौआठ रूपहैं विषर्चिका जिसकीस्त्री और भगन्दरपुत्रहै २६ गुरुस्त्रीगामियों के लिङ्गमूलमें भगन्दरहोताहै धर्मनिरत मनुष्य स्वप्रशास्त्र गुरु अर्थात् अपने सिखाने वाले की छायों को कभी स्पर्श नहीं करते वीरवर्मा भी तैसेही है इस स्फोट राज का निवास तहा नहीं होसक्ता

और यह गुरु तेरहप्रकार का सन्निपातिक ज्वरराट् महादेवजी करके उत्पन्न कियी कहांपर बैठेगा सो कहो २७। २९ और यह वीर तुम्हारा नायक महाबल अतिसार जिसकी संग्रहणी प्रियाहै और ध्मान और भासुर ३० आरोचक और परमपातक कोथन पुत्र इन समेत कहा निवास पावेगा सो हे स्वामिन्! कहो ३१ तीनसौ शूल सो किन महात्माओं के स्थानको जावेंगे हे राजन्! स्थान हीन तहां नाश होजायँगे ३२ और हुचकी कासश्वास आदिक और महाबली कुष्ट वायु भूत ऊपर स्थित पुरमें घूमने को समर्थ न होंगे ३३ और धनुर्वात इत्यादिक वायु और भासुर कर्णशूल भी और पातक मुख रोग ३४ और वाल्मीक गण्डमाला तथा मृगी बाल कोढ मरु रौद्र विस्तीर्ण शिर व्यथा ३५ ये मुख्य तम रोग और बहुत हे यम! तुम करके आज्ञाको प्राप्त किससे राजा के पुरको नहीं जाते हैं तब यमराज ने कहा कि तुम विविधाकार सबरोग महाबली अपने दिव्य अलंकारों से मण्डित अपनेरूपकरके राजाके निकट जावो ३६। ३७ जैसे तुम करके हमारे पुरमें वास और वचन किया जाताहै तैसेही इसी वीरवर्माके यहा भी कर्त्तव्य है ३८ जे जीव पृथ्वीमें पापसंयुक्त हैं ते भयानक निपातनरोगों को देखते हैं और सुकृतकारी शुभों को देखते हैं ३९ मुझको धर्मिष्ठ धर्मरूप देखते हैं और पापिष्ठी पापरूप देखते हैं पापकारी मेराशरीर कालानलके समान देखते

हैं ४० जिस गतबुद्धी प्राणी करके ब्रह्महत्या निस्तीर्ण नहींहै तिसके गातमें राजरोग तेरह स्थान हो और विशेषसे गलतकुष्ठ हो तुझकरके ग्रस्तजन जो शाङ्करी जप ओर होमके सहित रुद्रपाठ और चौविसनिष्क का बनाया सुवर्णका पुरुष ब्राह्मणको दे ४१। ४३ तब तिसका अंग तुम करके छोड़ाजावे की हुई पुण्य के आगे तुम को मृत्यवत् वर्त्तमानहो ४४ और क्षयरोग-वाला द्रव्यहीन सोमवारको सागरस्थ गौतमी नदी के निकट स्नानार्थ महीना प्रमाण स्नातमात्र जन को पीड़ित न करो नहींतो पतित होवोगी और यह तुम्हारी प्रिया देवी पातनीय त्रिसूचिका लक्षण ऐसे मनुष्यों को पतित करती जिस पातक से प्राप्तहोती है देवतार्थ दीयमान द्रव्य जो मन्दबुद्धी हरता है ४५। ४७ और जो पातकी भोजनोंके स्थानमे ब्राह्मणोंका वियोग कर-ताहै और पुत्र ब्राह्मणोंको ठगिकरके अकेला आपही अन्न भोजन करताहे ४८ तिसको हे महाभाग। ये तु-म्हारी प्रिया विसूचिका बाधनकरती हे और अन्नके देने-वाले देवताओंके सेवन करनेवाले मनुष्योंको न पीड़न करें ४९ जे पुरुष काममे मोहित गोत्रमे उत्पन्न स्त्रीकी वाञ्छा करतेहैं तिसीप्रकार स्त्रीभी पुरुषोमे मयुक्त होती हैं ५० ते तुम्हारे पुत्र प्रमेहकरके हे प्रभो। पीड़ित होती हैं और अन्य जे सुवर्ण के चोर हे ते सर्वदा मूत्रकृच्छ्र करके पीड़ित रहते हैं ५१ सुवर्ण की धूलि और सुवर्ण के देवभूषण पल प्रमाण मे तुलित देकर प्राणी प्रमेह

से छूटता है ५२ सुवर्णका कमल पूर्ण पलकरके किया वेद पढनेवाले ब्राह्मणको देकरके लिंगपीड़ासे छूटजाता है जे लोभसे शिवजीकी द्रव्य हरते हैं और पराई प्रभा को देख करके थूंकते हैं ५३ । ५४ तिनका शरीर पाण्डुरोग करके पीड़ित कियाजाता है ब्राह्मण के अर्थ शास्त्र सम्मतपिण्याक कहे पीना सरसों के युक्त जपा कुसुमसे पूजित मुद्गलाख्या रम्य तीर्थ में भैंसा का दान देता है और तिरपन हजार वैष्णवी जप करता है सो तुम्हारे भाई पाण्डुरोग करके छोड़ाजावे जो न करै तो मरजायगा ५५ । ५७ जो मनुष्य सुवर्ण के वस्त्र से आच्छादित वेद पढनेवाले ब्राह्मणको छेरी देता है तिसको शोफा छोंड़देती है ५८ तिस पुरुषके अंग में तुमको कभी भी टिकना योग्य नहीं है गर्भपाती मनुष्य के निकट आदर से जलोदरजाय ५९ पीछे तिस प्राणी को पौशाला के दान करके छोंड़देवे और मेरे मानी व्रणों का घोर अष्टोत्तर सैकड़ा ६० तुला पुरुष के दान करके सो सब शान्त होता है अर्द्धप्रसूता सुरभी जैसे कही है तैसे जो देता है तिसके गात में तिन सब व्रणों करके कभीभी टिकना योग्य नहींहै असत् चोर दुष्ट नर को विचर्चिका बहुतकाल ६१ । ६२ तबतक पीड़ित करतीहै जबतक सुवर्ण नहींदेता और भगन्दर † पलमात्र

† पल प्रमाण उस को कहते हैं (चार मासा का सुवर्ण पांच गुंजा का [illegible] पल आठ पल का धरण आठ धरण का कर्ष चार कर्ष का [illegible] [illegible] गुंजा का मासा ॥

सौवर्ण कदलीफल ब्राह्मणार्थ दाताको छोड़ करके जावे और पृथ्वी लोक में शिव के मन्दिर के भगकरनेवाले के निकट सन्निपात जाता है ६३। ६४ और विश्वासघात तथा परापवाद करनेवाले के निकट यह अतीसार जावे और कूप वावली के जीर्ण करनेवाले के निकट तुम्हारा मित्र अतीसार प्राप्तहोवे धर्म की द्रव्य ग्रहण करनेवाले जनके निकट संग्रहणी जावे ६५। ६६ सो अतीसार की प्रिया सती ग्रहणी बकरी के दान से जावे भोजन करते जो ब्राह्मणों से वैर करता है तिसके अरोचक जावे ६७ विविध प्रकार के अन्नों से ब्राह्मणों को भोजन करावे तिसको अरोचक छोड़ देवे जे आशा देकर आशाको तोड़देते हैं उनके निकट शूल गणजावे ६८ और बन्दितखाने से बँधुओं को और पिंजरों से पक्षियों को और मार्ग में चोरों करके मारेजाते प्राणियों को जे महाभय से छुटाते हैं ६९ जे सदा शिवमें भक्त हैं तीन से शूलके गण तिन के निकट नहीं जावें और हुचकी इन की प्रिया जो पराये उदय को न सहे कहे परसन्तापी तिनके निकट जावे और लक्ष होम करनेवाले निष्पाप के निकट न जावे और यक्ष वित्तके निकट धनुर्वात जावे ७०। ७१ उर्द का पर्वत और तेल की वावली देनेवाले को छोड़ देवे जे साधुजनकी तथा परमेश्वर की कथा नहीं सुनते ७२ तिन मनुष्यों को कर्णशूल व्याप्त करे और इतर कपिला धेनु के दाताओं को तथा वैष्णवी कथा के श्रोताओं को न व्याप्त

करै ७३ पराई द्रव्य में दृष्टि लगानेवाले मनुष्यों के और परस्त्री हरनेवालों के और सवारी में भोजन करनेवालों के नेत्ररोग प्राप्तहोवे ७४ यहांपर सुवर्णकमलके दाता को छोंड़े शैलेश सोमनाथ काशी विश्वनाथ इनके द-र्शन करनेवालों को जो देखताहै सो संसार को तत्क्षण से नाश करदेताहै क्या तेहि प्रकारके नेत्र रोगोंको नहीं भस्म करदेगा ७५ । ७६ कदाचित् जिसकी वाणी साधु वर्णनमें नहीं प्राप्तभई पराये अपवादको नित्यही करती मुखको सन्ताप करती ७७ तिसको देख सकुटुम्ब मुख रोग आनन्दित होताहै जो जन सदा साधुसंयुक्त शिव की भक्तिपूर्वक स्तुतिकरताहै ७८ और यथोचित ब्राह्मण को श्वेत वृषभ दान करताहै तिसको देखकरके मुखरोग दूरही से भागता है ७६ जो प्राणी इस धनकी रक्षाकरो यह कहागया उसको अपनाही लोभ से मोहित स्था पित धन धनेशको नहीं देता वह बड़ा पातकीहै तिसके पैर में प्राप्त होकर वल्मीक कहे पीलपांव उत्पन्न होता है जो ब्राह्मणोंकाधरा धन बहुत देता है ८० । ८१ तिस हरिसेवक के निकट वल्मीकरोग पीड़ा करने को नहीं जाता पराये मुखमें स्थित ग्रास और देवताओं की सामग्री जो दुर्बुद्धी हरता है तिसके गण्डमाला होती है वह नाना प्रकार के रत्नों के दानकरके नाश होजातीहै ८२ । ८३ गुरुकी पत्नी में गमन करनेवाले के खाजु कुष्ठ होताहै फिर यह कण्डु कुष्ठ शिव के घण्टा दान में जाता है ८४ दानी को रोगसंयुक्त देख जिसको मूर्च्छा

आतीहै तिसको यह अपस्मार कहे भिरगी रोग घुमाते हुये टिकती है ८५ फिर सुवर्ण के कमल और कृष्ण गौके दान करके जाती है कपट करके दम्भ करके जो धर्म करता है तिस के गजचर्म जावे ८६ हंसतीर्थ के जल में स्नान करनेवाले के निकट न जावे शिरपीड़ा इत्यादिक रोग विश्वासघातक के निकट जावें ८७ सूर्य पूजादिकों के पुण्य करके नाश होजाते हैं इस में सदेह नहीं जे दुष्ट मनुष्य अन्य का यज्ञोपवीत तोड़ते हैं तिनके पैरों से डमरू वालक रोग नहीं छोड़ता है सुवर्ण का सूत्र देवताओं को और ब्राह्मणों को दे करके वालुक रोगोंसे छूटतेहैं फिर उनके वालुकरोग नहीं होता जैमिनिजी ने कहा कि यमराज ने इस प्रकार से वर्णन किया कि जो कोई मनुष्य पृथ्वी पर सुनते हैं तिन के रोगसे उत्पन्न पीड़ा कभी नहीं होती ८८। ९० ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषापापकर्मविपाकवर्णन
नामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर यमराज कामरूप तिन सेवकों करके युक्त राजाकी कन्या के विवाह करने को जहां नारदजी विद्यमानहैं १ तिस परमरम्य नगर सारस्वत को पाय और देख करके अपने में तत्पर मालिनी धर्मिष्ठा को वरा २ होमशालामें स्थित अग्नि को तृप्त करती नारदादिक ऋषियों की पूजन करती पति

करै ७३ पराई द्रव्य में दृष्टि लगानेवाले मनुष्यों के और परस्त्री हरनेवालों के और सवारी में भोजन करनेवालों के नेत्ररोग प्राप्तहोवे ७४ यहांपर सुवर्णकमलके दाता को छोंड़े शैलेश सोमनाथ काशी विश्वनाथ इनके दर्शन करनेवालों को जो देखताहै सो संसार को तत्क्षण से नाश करदेताहै क्या तेहि प्रकारके नेत्र रोगोंको नहीं भस्म करदेगा ७५ । ७६ कदाचित् जिसकी वाणी साधु वर्णनमें नहीं प्राप्तभई पराये अपवादको नित्यही करती मुखको सन्ताप करती ७७ तिसको देख सकुटुम्ब मुख रोग आनन्दित होताहै जो जन सदा साधुसयुक्त शिव की भक्तिपूर्वक स्तुतिकरताहै ७८ और यथोचित ब्राह्मण को श्वेत वृषभ दान करताहै तिसको देखकरके मुखरोग दूरही से भागता है ७९ जो प्राणी इस धनकी रक्षाकरो यह कहागया उसको अपनाही लोभ से मोहित स्थापित धन धनेशको नहीं देता वह बड़ा पातकीहै तिसके पैर में प्राप्त होकर वल्मीक कहे पीलपांव उत्पन्न होता है जो ब्राह्मणोंकाधरा धन बहुत देता है ८० । ८१ तिस हरिसेवक के निकट वल्मीकरोग पीड़ा करने को नहीं जाता पराये मुखमें स्थित ग्रास और देवताओं की सामग्री जो दुर्बुद्धी हरता है तिसके गण्डमाला होती है वह नाना प्रकार के रत्नों के दानकरके नाश होजातीहै ८२ । ८३ गुरुकी पत्नी में गमन करनेवाले के खाजु कुष्ठ होताहै फिर यह कण्डू कुष्ठ शिव के घण्टा दान से जाता है ८४ दानी को लाभसयुक्त देख जिसको मूर्च्छा

आतीहै तिसको यह अपस्मार कहे मिरगी रोग घुमाते हुये टिकती है ८५ फिर सुवर्ण के कमल और कृष्ण गौके दान करके जाती है कपट करके दम्भ करके जो धर्म करता है तिस के गजचर्म जावे ८६ हंसतीर्थ के जल में स्नान करनेवाले के निकट न जावे शिरपीड़ा इत्यादिक रोग विश्वासघातक के निकट जावें ८७ सूर्य पूजादिकों के पुण्य करके नाश होजाते हैं इस में संदेह नहीं जे दुष्ट मनुष्य अन्य का यज्ञोपवीत तोड़ते हैं तिनके पैरों से डमरू वालक रोग नहीं छोड़ता है सुवर्ण का सूत्र देवताओं को और ब्राह्मणों को दे करके वालुक रोगोंमे छूटतेहैं फिर उनके वालुकरोग नहीं होता जैमिनिजी ने कहा कि यमराज ने इस प्रकार से वर्णन किया कि जो कोई मनुष्य पृथ्वी पर सुनते हैं तिन के रोगसे उत्पन्न पीड़ा कभी नहीं होती ८८। ९०॥

इत्यारब्यपेभिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषापाकर्मविपाकवर्णन नामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर यमराज कामरूप तिन सेवकों करके युक्त राजाकी कन्या के विवाह करने को जहां नारदजी विद्यमानहैं १ तिस परमरम्य नगर सारस्वत को पाय और देख करके अपने में तत्पर मालिनी धर्मिष्ठा को वरा २ होमशालामें स्थित अग्नि को तृप्त करती नारदादिक ऋषियों की पूजन करती पति

को ढूंढती ३ तिसकामिनी को पाय राजासे प्रचन बोले कि प्रसन्न हैं वरदान मागो हेअनघ ! तुमको क्या दें ४ थोड़े समय करके निश्चय से तुम्हारी मृत्यु देखी जाती है तब बीरबर्मा बोला हे जामाता ! अपना जीवनदायी वरदान तुमसे नहीं मागताहूं या नहीं वाछा करताहूं ५ कन्याकी द्रव्य करके ते नरकको प्राप्तहैं धर्मराजने कहा कि तुम दाता और मैं दान लेनेवाला धर्म तुम करके प्रसन्न कियागया ६ आशीर्वादों करके दाता को बढ़ाताहूं इसमें क्या सन्देह है राजाने कहा कि हेभानुपुत्र ! जिस दिन मेरा मरण हो ७ तिसदिन तुम्हारे वरदान करके विष्णु की कामना करताहूं तब यमराजने कहा कि जबतक तुमको कृष्णका समागम न होगा तबतक न छोडूंगा तुम्हारे निमित्त परबलको धारण करूंगा यह मेरा वर है तब वासुदेव ने कहा हे अर्जुन ! यह तुम्हारी सेना को सन्तापित करता यम भासित होरहाहै ८। ९ हे अर्जुन ! सनद्धहो महारथी वीरों से आच्छादित मेरे दर्शन को आकांक्षी वीरवर्मा आता है उसे आते हुये देखो १० मयूरध्वज प्रमुख वीर वभ्रुवाहन वृषकेतु और प्रद्युम्नादिक युद्धकरैं तुम कौतुकदेखो ११ अनेक हाथियों का पतन जिसमें ऐसा महायुद्ध होगा जैमिनि जी बोले कि अर्जुन के रथमें सवार इसप्रकार कृष्ण के कहते १२ तिस प्रकारके युद्धमें प्राप्त होकर वीरवर्मा ने अर्जुनसेकहा कि हेअर्जुन ! संग्राममें ये तुम्हारे वीरमुझ करके जीतेगये १३ केवलमेरी ऐंद्रार्त तुम्हारेबिना शान्त

नहीं होती है गोविन्द। तुम वीरहो अर्जुन हो या न हो १४ मेरे प्रहार को सहो खड़ेहो समरको न छोड़ो इतने वचन कहकर सत्तरि वाणों से अर्जुनका १५ हृदय ताड़ितकिया और साठिवाण करके कृष्णको मारा और पाच वाणों करके ते वीर मयूरकेतु प्रमुख गिराये हुये मूर्च्छित कियेगये सो अद्भुतहीसा हुआ और अर्जुन भी रणमें मेरे घोड़ा छोड़ बारम्बार क्रोधमे कहते राजा को चारोंओरसे आच्छादित करता भया १६। १७ राजा बोला जिस प्रकार युद्ध में दोनों घोड़े पकड़े हैं तिस प्रकार यहा सम्मुख माधवार्जुनको पकड़ूगा जैमिनिजी बोले कि वीरवर्मा हजार वाणों करके कृष्ण के सहित अर्जुन को संछादित कर सजल मेघहीसा गर्जता भया तिसके वाण अर्जुन ने क्षणही में तिल के समान काट-डाले १८। २० जैसे बुद्धिमानों करके विचारा मंत्र शत्रुओं के देशों को नाश करता है वैसेही सात वाणों करके अर्जुन ने समर में वीरवर्माको मारा फिर तीक्ष्ण साठि वाणों से इस वीरवर्मा ने अर्जुन को मारा तथा कृष्ण और हनुमान् को सौ २ वाणोंसे मारा २१। २२ और घोर वाणों करके जो घोड़े भिन्न भये जिन को हाथों से कृष्ण ने पकड़ा तिसी मे हे राजन्! ते निषम पृथ्वी में चलते हैं २३ और वीर वाणों मे गुप्त पृथ्वी-तल मे नहीं देखपड़ते पाडवकी सेना मोहकरके जगत् के समान घूमती भई २४ वीरवर्मा को देखकर कृष्ण-चन्द्र अर्जुन से बोले हे महाबाहो पार्थ! जानतेहो जैसे

और वीर क्षत्रियों को जीता है २५ तिसी प्रकार इस रणमें बीरबर्माको जीतैंगे यह मुम्फकरके जीतनेके समर्थ नहीं है ते बीर उपायों से मारेगये २६ जैसे कर्ण का चक्र महारण में पृथ्वी करके ग्रस्त भया तैसे इस का चक्र पृथ्वी नहीं ग्रसैगी फिर समर्थ होता है और सुदर्शन करके शिशुपालका शिर काटागया इसके कण्ठ से मेरा सुदर्शनचक्र शिर गिराइबेको समर्थ नहीं है सिन्धु राज कहे जयद्रथका जिन तुम्हारे बाणोंकरके शिर रण के बाहर कियागयाहै तिन बाणों करके दाह देनेवाला मुख नहीं देखा जायगा समरमें बीरबर्माको हनुमानही रथलूम कहे पूंछ वन्धनों करके बाधै २७ । ३० और सत्गुण घुमाय करके महार्णवमें छोड़ै तब हनुमान्जी ने कहा कि न यह रावणका वन न जम्बुमाली राक्षस ३१ और न सीताके त्रासदेनेवाली राक्षसी आगे खड़ी तब कृष्णजी ने कहा कि मेरी आज्ञामें प्राप्तहोकर इस का रथ हे वायुपुत्र। तुम चलावो ३२ आज युधिष्ठिरके अर्थ हम तुमकरके सो बातें अकार्यहों तो कार्यहैं कहे कर्त्तव्यहैं जैमिनिजी बोले कि कृष्णचन्द्र करके प्रेरित इसका सारथी घोड़ा सहित राजा के रथको पकड़कर आकाशको चलता भया राजा उसीसमय रथको छोड़ अर्जुन के ३३ । ३४ रथको पकड़ आकाश में हनुमान् जी के निकट प्राप्तहोकर बोला कि तुम करके हमारा शून्य रथ आकाश मे लियाजाता है ३५ देखो कृष्णका रथ हम करके हरागया जहां रथको लेजावोगे तहां

कृष्ण अर्जुनको मैं लैजाऊगा ३६ छोडूंगा नहीं भाग्य से तुमकरके संग्राम में छूटेंगे तो क्षीरसागर में कृष्ण स्वामी की शेषमचक में शयन तहापर छोडूंगा जहां लक्ष्मी नित्यही विरहिनी जो माधवकी चिन्तना करती हैं सो अर्जुनकी भक्ति करके प्राप्त मुझ करके दिये कान्तमाधवको प्राप्त हों ३७। ३८ नयथातेभाति सूर्यो नचन्द्रोवीक्षितेतथा ॥ यन्निमित्तगतश्चन्द्रस्तंजानन्ति विचक्षणा. ३९ त्वत्तोधिकंकृतकर्महद्विजानातितस्त्वतः ॥ ये श्लोक कूटहैं इसकारण इनका अर्थ नहीं कियागया तब हनुमान्जी ने कहा कि तुम्हारी महिमा देखी और पश्चात् तुमने वर्णन भी की ४० जो अपने पराक्रम को विस्तृत करताहै सो पराक्रम साधुओं करके वर्णन नहीं कियाजाता तब वीरवर्माने कहा कि हे वीर ! हमारे रथको पकड़कर तुम जाने नहीं पावोगे ४१ मेरे प्रहार को सहो जैसे मैंने कृष्ण अर्जुनको पकड़ा है तदनन्तर सहित रथके हनुमान्को भी अपने घूसासे मारा ४२ तिसके मुष्टिक मारे से हनुमान्जी आगे को न चलते भये इसप्रकार एकवीर करके ते तीनोंवीर युद्ध में पकड़े गये तिस राजाको कृष्ण अपनी लातसे हृदय में शीघ्र मारतेभये सो मूर्च्छित पृथ्वी में गिरा और उठकरबोला मुझ करके तुम तीनों घेरेगये में एक तीन करके भी नहीं पकड़ा गया यमराज ने जो मेरा मरण कहा सो कहांगया ४३। ४४ अर्जुनके घोड़ा पकड़े और मुझ करके वीरप्रमत्त किये गये कृष्णचरणके स्पर्श करके

निश्चय से आज मेरी मृत्युभाग गई ४६ तदनन्तर कृष्ण अपने रथमें राजाको स्थितदेख युद्ध में अर्जुन से बोले हे पार्थ! हमारे बचन सुनो ३७ यह हजार वर्ष से हम तुम करके जीतने योग्य नहीं है सम्पूर्ण अस्त्र संग्रहको जानता है और लघुहस्तमें महाबलहै सम्पूर्ण वीर रणमें जीते तथा मैं भी संतुष्ट हुआ अर्जुन यह सुन बोले हे नाथ! जिस करके तुम प्रसन्न किये गये सो विजयी होताहै ४८। ४९ मेरे पराक्रम करके पराजयको प्राप्तही न होगा इस प्रकार कहते अर्जुन से शीघ्र बीरबर्मा बीरबोला हे अर्जुन! ऐसा न कहो तुम करके समरमें चराचर जीतने योग्यहै ५०। ५१ हे वीर! तुम्हारे ये बचनों करके कौन प्रसन्न न हो यह कह धनुषको छोड़ कृष्णके चरणोंमें गिरा तिस समय राजा अर्जुनका मिलापकर पैरोंपर गिरा और घोड़ों करके समेत अपनी राज्य देह ५२। ५३ कृष्णचन्द्रके हाथमें देताभया और वीरोंसे मित्रता और भक्तिकरके कृष्णचन्द्रके चित्तको प्रसन्न करता हुआ आगे खड़ाहुआ ५४ इस के अनन्तर छठयें दिन शीघ्र सारस्वतपुर और अपनी द्रव्य धीमान् अर्जुनको देखाता भया ५५ और सम्पूर्ण रत्नजात जो लेनेको समर्थ नहींहोते और इकहत्तरहजार चन्द्रमा के समान श्वेत हाथी ५६ एक ओर श्यामकर्ण घोड़ा सुन्दर बहुत नवहजार स्त्री दूसरी ओर अर्जुन के हाथ में देता भया और अपना आगे होकर घोड़ोंकी रक्षा करताभया तदनन्तर अर्जु-

नादिकवीर दीप्तिमान् नदको देखते भये ५७। ५८ नानाप्रकार के चक्रों तथा सैकड़ों जलकी भ्रमरों से व्याप्त है जहा हाथियों को मछलिया खींचती हैं तब उनको और मच्छर खींच लेजाते हैं ५९ और बड़ी जलकी कल्लोलों से हँसता सागरहीसा है तब अर्जुन महाभाग वीरवर्मा से आदरपूर्वक बोले ६० मैं नद प्रतिजाताहू घोड़े जलमें प्राप्तहैं सेनाको जहाजों से उतारो तब वीरवर्मा तैसाही करता भया हे जनमेजय! अर्जुनकी समग्रसेना उतरती भई ६१। ६२॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणि जैमिनीयेभाषायां वीरवर्माविजयकथनं नामैकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

पचासवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि सारस्वत पुरसे छूटे हुये घोड़ा जहा गये गणेशजीको नमस्कार करके तहाको कहता हूं १ वायुवेग के समान दात चन्द्रदीप्तिके समान मुख घोड़े तहासे कौन्तलक नाम चन्द्रहास के देश में प्राप्त हुये २ पीछे से हंसध्वज ताम्रध्वज और बभ्रुवाहन वृषकेतु सम्पूर्ण कृष्ण प्रद्युम्न और अर्जुनादिक जाते भये ३ घोड़ों को ढूंढ़ते व्यामोहाविष्टमन हमारे घोड़े कहा को गये तललोकको प्राप्त भये ४ किंतु आकाशको उड़ गये ते सबवीर ग्रीवउठाय आकाशको देखने लगे तब तक आकाश में दूसरे सूर्यतुल्य शोभासे भ्राजमान दूसरे पुरुषको देखते भये ५ मुनीश्वरोंमें श्रेष्ठ वेदवेदान्त

के पारगामी युद्धके आकाक्षी वैष्णवोंमें श्रेष्ठ कृष्ण गोविन्द माधव मन करके नित्यजपते केवल भक्तिकरके युक्त तिस नारदमुनिको अर्जुनादिकवीर अलग २ नमस्कारकरते भये ६ । ८ पूजनीय चरण आप कहासे प्राप्त भये क्या हमारे घोड़ा देखेहैं इसप्रकार अर्जुन स्वामिगौरवसे इनप्रति पूंछताभया फिर नारद बोले कि घोड़ा कौन्तलके पुरको गये जहां राजा वैष्णव चन्द्रहासपुरी की रक्षा करताहै ९ । १० जिसके अर्थ कौन्तलपुरको राजा राज्यदेकर बनको गया जो धृष्टबुद्धि प्रधान की कन्याको विवाह करताभया ,११ केरलदेश के राजाका पुत्र पीछे कुलिन्दकरके पालित सो महाबाहु चन्द्रहास लक्ष्मीपति के प्रसाद से कौन्तलापुरी को पाय योद्धा जिसके समान नहीं है ये राजा तिसकी षोडसीकला के योग्य नहीं है १२ । १३ नारदजीके ये बचन सुन कर अर्जुन बोले कि अहह महाबल राजा चन्द्रहास कौन है हे नारद! मुझ से तिस राजाका विस्तारपूर्वक सम्पूर्ण चरित्र यथातथ्य कहो १४ । १५ जो राजा वासुदेव हरिमेधमका भक्त है नारदजी बोले कि हे अर्जुन! समय किसप्रकारका है घोड़ा मार्गसे च्युतभये १६ चिन्तासे आतुर धर्मराज हस्तिनापुरमें विद्यमान हैं तब अर्जुन ने कहा कि कुरुक्षेत्र में दोनों सैन्य के बीचमें स्वस्थचित्त होकर कृष्णमुखसे कैसे कथानक मैंने सुना सत् कथा श्रवण में जिन पुरुषों का समय न होगा ते अल्पायु पुरुष कालकरके ठगे हैं तिस से

सर्व यत्न से इस कथाको कहो १७। १९ हे विप्रेन्द! मेरा घोड़ा जाय यज्ञहो वा न हो कल्याणार्थी मनुष्यों करके अच्छेप्रकार करके वैष्णवी कथा श्रवणीयहै २० यही अश्वमेधादिकोंका यज्ञ शतक किया है तब नारद जीने कहा कि सुन्दरधार्मिक केरलाधिप पूर्वही राजा होता भया २१ विधिपूर्वक पृथ्वीकी रक्षा करता सो राज्य करताभया मूलनक्षत्र में बड़ा भाग्यवान् तिसका पुत्रहुआ २२ तिससे कुछदिनोंमें वैरियों करके तिसराजाका पुरघेरागया जैसे अन्त में श्लेष्मादिकों करके शरीर २३ सुन्दर धार्मिक राजाने युद्ध करके प्राणों को छोड़दिया परलोकमें प्राप्त पतिको सुन स्त्री पत्निसे पतिलोकको गई २४ तब माता पिताकरके रहित बालक को धात्री कहे दाई कौन्तलपुरको लेगई तिस पुरीका ऊर्जित भविष्य पतिथा २५ तीनवर्ष यत्नसे कण्डन पेषण अर्थात् काढ़ब पीसब कर्मों करके कौन्तलपुर में धात्री करके बालक पालागया २६ दाई अपने राजा का ध्यानकरती दिन २ में सन्तापको प्राप्तहोती तदनन्तर बालकको छोड़ वहभी मृत्यु को प्राप्त भई २७ सो बालक गौरवर्ण लक्षणों करके अभिलक्षित तीन वर्षका बायेंपैरमें छोटी छठई अँगुरीको धारणकिये तिस समय बड़े स्नेह से कोई स्त्रियों करके प्रतिपालित पाच वर्षका हुआ तब इच्छापूर्वक घूमने लगा २८। २९ मार्गमें बालकों के साथ खेलता और उन्हीं के साथ भोजन करताथा तिसको कोई पुरकी स्त्री भोजन कोई

स्नान और कोई सुगन्ध चन्दनों करके लेपन करती थीं ३० और बालक तिसपुरमें तिन्हीं स्त्रियों करके सोताभी था हे अर्जुन! और कोई अँगुलिया टोपी इत्यादिक देतीथीं ३१ जूता और पट्टसूत्र अर्थात् करगताधारण किये पवित्र बालक प्रधान धृष्टबुद्धिके मन्दिरको अपनी इच्छासे गया शान्त योगेश्वर ब्राह्मणों करके सहित मुनीश्वर समलंकृत तिस बालकको देख सब विस्मयको प्राप्तभये हे अर्जुन! पीछे तिस बालक के सहित भोजन करते भये तब धृष्टबुद्धि नम्रहोकर तिन मुनीश्वरों ३२। ३४ की अर्घ्यादिक किया करके पूजन करता भया और भलीभांति खीर और अनेकप्रकार के अन्न अपूप कहे पुवा और बरा लड्डू भोजन कराता भया ३५ ते मुनीश्वर बालक युक्त तृप्त होकर आचमनकर पैर धोय धृष्टबुद्धि करके दिये चन्दन सुगन्धसे युक्त रम्यवस्त्रालंकार करके शोभित बोले हे धृष्टबुद्धे! आशीर्वाद देते हैं कि सुखी हूजियो ३६। ३७ और जो तुम करके देखा यह पांचवर्षका बालक आगे खड़ा है सो कौनहै किस काहै किस देश से आया है सो कहो ३८ इसप्रकार पूंछाहुआ धृष्टबुद्धि मुसकराताहुआ बोला कितने अनाथ बालक इस पुटभेदन में रहतेहैं ३९ राजकाजके गौरव से मैं बालकको नहीं जानताहूं तब मुनीश्वरोंने कहा कि यह बालक मनोहर लक्षण पूजित अग राज्यधर प्रकाशितहोताहै हे धृष्टबुद्धे! तुम इसका प्रतिपालनकरो यह बालक तुम्हारी सम्पदा को आगे पालन करेगा ४०

तदनन्तर क्रोधबुद्धि से चिन्तना करता भया कि इस प्रकार यह क्या फिर धृष्टबुद्धि करके पठाये मनुष्य जहासे आये तहाको मुनीश्वर गये फिर सो राजमन्त्री अत्यन्त सन्तापको प्राप्तहुआ ४१ इन पूज्यों ने मुझ से क्या वचन कहा कि जो यह बालक तुम्हारी सम्पदा का अधिपतिहोगा सो कैसे होगा तिन मुनीश्वरो का वाक्य मैं विपरीत करूंगा राजमंत्री विचारके बालक के निकट अन्त्यजोंका वृन्द बुलाय कहा हे चाण्डालो! तुम इस बालकको महा सघन वन में लेजाकरके मारडालो मेरे प्रसन्न करनेवाला इस बालक के शरीर का अंग कोई चिह्न लेआवो फिर तुम को अनेकप्रकार की भैंसी घड़ाभर दूध देनेवाली दूंगा ४२ । ४४ इतनी कथा सुनाय नारदजी बोले कि तिसकी वाक्य सुनकरके अत्यन्त प्रसन्न मतवारे चाण्डाल प्रात काल तिस बालकको पकड़ गह्वर वनमें प्राप्त करते भये ४५ वह वन कैसाहै कि भयानक पक्षियोंके समूहों करके सेवित कण्टकोंसे युक्त तिसप्रति सुधार्मिकके हँसते पुत्रको बैठाकर तीक्ष्ण धारवाले शस्त्र तिस समय म्यानों से खींचते भये और घुमाते हुये तिस बालक करके जो भगवान् की प्रतिमा देखी गई ४६ । ४७ सो रम्यशालग्राम की शिला तिसको बालक मुखमें करता भया और बालकों के साथ लाख पत्थरकी गोलियों से खेलता ४८ अवस्थाके बालकों करके बोलाया गया कि आज इस गोले पत्थर करके क्या सुखपूर्वक खेलते हो सो तिन

वालकों से बोला कि हे मित्रो! चित्र विचित्र पत्थरकी गोली बहुतहैं परन्तु इसप्रकार का स्निग्ध अनुपम पत्थर मुझ करके नहीं देखा गया ४९। ५० इनगोलाकार गोलियों से प्रथम में खेलताहूं और इसप्रकार इससमय निश्चय से गोलक को मैं धारण करताहूं सो वालक तिस रमणीय शिलाको मुख में धारण करके खेलता भया और अन्य पुराणान्तर में लिखाहुआ है कि वह बालक सब गोली हारजाने पर उसीको निकाल फिर सब जीतलेताथा सो बालक उस समय चाण्डालों करके ग्रसित हे कृष्ण! हे वासुदेव! हे जनार्दन! हे जगन्नाथ! हे अर्जुन! इसप्रकार देवेश अपने नारायण का ध्यान करता भया कि चाण्डाल तीक्ष्ण धारावाले खड्गोंसे मारते हैं हे जगत्पते! ५१। ५२ हे परमानन्द! हे सर्वव्यापी! तुम्हारे नमस्कारहै मेरी रक्षा करो तदनन्तर सो देवता भगवान् तिन चाण्डालों को मोहित करतेभये ५४ तब मोहित चाण्डाल वचन बोले कि मनोहर दीर्घबाहु सुकुमार विशालाक्ष किसप्रकारका बालक है धृष्टबुद्धिने क्या कहा कि वालक वनमें मारने योग्य है जो हम पूर्व नानाप्रकार के पातक करके अन्त्यज भये अब यहां बालक के बध से फिर किस प्रकार के घोरहोंगे अथवा यह किस दोष करके माता पितासे हीन होगया ५५। ५७ यह कह बालककी देह को चाण्डाल तिससमय देखते बायें पैरमें छठई पातरी अँगुरी देखते भये ५८ और कहा कि इसी को दुरात्मा

धृष्टबुद्धि के चिह्नार्थ लैजायँगे तिसको छोड़दिया और वही छठई अँगुली काटली ५९ सो शीघ्र चिह्नको लेकर आनन्दितहो पुरको गये धृष्टबुद्धि को नमस्कारकर अँगुली देखाते भये और दुर्बुद्धि प्रसन्नहुआ कि मैंने मुनीश्वरों के वचन झूठे किये अनन्तर चाण्डालों को भैंसी देकर सन्तुष्ट किया ६० । ६१ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषाया चन्द्रहासोपाख्याने पचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे महाबाहु पार्थ ! तिससमय सो बालक गहनवन में तुम्हारे मित्र श्रीकृष्ण के स्मरणसे चाण्डालोंकरके नहीं मारागया १ चाहे बालक वा तरुण वा वृद्ध स्त्री अथवा पुरुषहो जो कोई रात्रि दिन देवकीसुत श्रीकृष्णका स्मरण करताहै सो असशय कष्ट से छूटजाता है २ कटीहुई छठी अँगुली बहते रुधिर को लगाये हरिणीगणों को मोह देताहुआ दुःखार्त्त रोदन करताभया कि ३ हे सर्वव्यापिन् ! हे लक्ष्मीकान्त ! हे दयानिधे ! हे कृष्णस्वामिन् ! हे देवदेवेश ! तुम्हारे नमस्कार हैं मुझको इस कष्टमेंछुड़ाय रक्षाकरो ४ तब वे हरिणिया आकर धीरे २ पैर को चाटतीभई कि हमारापति अपने स्वामी को छोड़ हमारी कामना से इस गह्वरवन में प्रवेश करताभया तिस वाहन से वर्जित आकाश से पृथ्वी में अश्रुबिन्दुओं करके आसुओं को छोड़ना मृग-

रूपसे ये चन्द्रमास्फुट पतितहुआ इसप्रकार प्रसन्नता करती बिजन बनमें पैरको चाटतीभई ५। ७ और सम्पूर्ण दुःखित पक्षी पक्षोंसे छाया करतेभये और उलूकों के वृन्द स्थित रहे अर्थात् दुःखसे न निकलते भये ८ फिर दुःखसे कठिन स्वरको कर शोकसे विह्वल कबूतर पाषाणों से उदरको पूर्ण करतेभये अर्थात् पत्थरहीचुग के उस स्थानमें रहते भये इसी अन्तर में तिस देशकी रक्षाके अर्थ गह्वरबनमें देशाध्यक्ष कुलिन्दक आया और हे राम ! हे गोविन्द ! हे रमापते ! ऐसे हरिनामों को लेता मुखमें आसूभरे तिस बालक को राजाने देखा ९। ११ हे करुणासिन्धो ! जैसे प्रथम देवकी की रक्षा की है तैसेही माता करके रहित मेरीभी रक्षाकरो मुझे क्यों छोड़ते हो हे स्वामिन् ! यदि मुझको छोड़तेहो तौ तुम्हीं को लज्जाहै और हे विभो ! मैंने सुनाहै कि तुम्हारे भक्त कष्टको नहीं पाते हैं १२। १३ सो बुद्धिमान् राजा कुलिन्दक विस्मितहो ऐसे वचनों को सुन शीघ्र घोड़े से उतर बालक को शान्त करतेहुये वचन बोलता भया कि हे बालक ! किसकारण इस निर्जन बनमें स्थित हो तुम्हारे माता पिता सुहृद्गण कहां हैं मुझसे कहो १४। १५ तब उसबालकने कहा कि हे राजन् ! मेरेमाता पिता कृष्ण हैं जिसने मुझे पालाहै तिनको न-

मिल घोड़ेपर सवारकराय आपभी चढकर अपनेपरि-
जनोंके समेत आनन्द से भुजाफरकती अपनी चन्दन-
पुरीनाम नगरी को जाताभया और जातेहुये मार्ग में
बोला कि मेरी अब पापद्धी पुण्य होतीभई १८। १६
ऐसे कहतेहुये पुत्रसमेत कुलिन्दक ने अपनी चन्दना-
वती नगरी में पहुँच अपने मन्दिरमें प्रवेशकिया और
अपनी मेधाविनी नाम रानी से पायेहुये पुत्रको बताया
सो हर्षितहो बोली कि मैं अब अशोच्य हुई और मेरे
सब मनोरथ पूर्णहुये और मैं पवित्र होगई इसमें कुछ
सन्देह नहीं इतनी कथासुनाय नारदजी बोले कि तद-
नन्तर मेधावी व कुलिन्द उत्साह को करताभया और
वेदके पढनेवाले ब्राह्मणों की पूजनकी २०। २२ तब
आनन्दितहो गणक बोले कि हे कुलिन्द! तुम्हारा यह
बालक बड़ा यशस्वी श्रीमान् विष्णु का भक्त होगा और
इसके रम्यशुद्ध मुखके हँसनेसे चन्द्रमा पतितहोगा २३
तिसकारण से यह चन्द्रहास नामराजा होगा तबसे हे
अर्जुन! कुलिन्दकी आशा बढ़ते के सहित चन्द्रवत
चन्द्रहास बाढताभया और बिना जोतने के पृथ्वी अन्नों
को पैदा करती भई व आनन्द से परिपूरित प्रजा व
गायोंके बहुतदूध होताभया और मनोरमदेश होगये
जब सातवर्षका चन्द्रहास हुआ तो अनेक अक्षरों का
निर्णय २४। २६ करके मनमे यही अच्छा विचारहरि ये
दो अक्षर जपताभया तिसकाल सो सुन अक्षरपाठक
क्रुद्धहो बोला २७ कि हे बालक! चन्द्रहासतू हरि ये दो

अक्षर रात्रि दिन कहताहै और अन्यवर्णोंको नहीं पढ़ता तब चन्द्रहासने कहा कि वर्णोंकासमप्रसिद्ध समाम्नाय में कहताहू क्याकरूँ मेरेमुखसे हरि ये अक्षरों के भिन्न और अक्षर नहीं निकलते और मैं सदैव आपका अनुचरहू तत्पश्चात् चन्द्रहासके गुरुने क्रोधकर हाथमें छड़ी ली और कहा कि हे शिष्य! क, क, ये कह जिसमें यही निकलें २८।३० तब डरताहुआ चन्द्रहास धीरे२वचन बोला कि मैं यह कभीभी न कहूँगा क्योंकि इनमें तो मेरी जिह्वाही नहीं लौटती ३१ और मैं तो हरिनामही का स्मरण करूंगा मुझे अन्य शास्त्रों से क्या प्रयोजनहै ३२ और हे स्वामिन्! जहां हरिनाम नहीं निकले वह शास्त्र तुच्छहै जिसशास्त्र पुराणमें हरिनाम न देखपड़े ३३ उस शास्त्रको यदि ब्रह्माभी अपनेमुखसे कहैं तोभी उसेसुनना योग्य नहीं है ३४ तब नारदजीने कहा कि हे महाबाहु पार्थ! वैष्णव बालक चन्द्रहासका सर्व पापोंके नाश करनेवाला अपर चरित्र सुनो उसी अन्तर में चन्द्रहास का गुरु क्रोध करके कुलिन्दके मन्दिर को गया और कुलिन्द से वचन बोला कि किसी महात्मा के संचारसे तुम्हरापुत्र रात्रिदिन हरिनामही कहा करताहै ३५।३६ और मैं शास्त्रोंको पढाताभी हूँ तथापि यह कुबुद्धी नहीं पढता और हे राजेन्द्र! जो मुझे आज्ञाहो तो ताड़नादूँ ३७ तब कुलिन्दने कहा कि मैंने बड़े भाग्यसे इस पुत्र को पाया सो इससमय कैसे ताडितकरू यद्यपि यह इस प्रकारका पिशाच मूर्खभी है तथापि मैं इसका पालन

निश्चय करूंगा ३८ और इसवालकका महान् चरित्र गुरुओंने नहीं सुनाहै एकादशी के दिन यह बालक अन्न दूध कुछ नहीं खाताहै ३९ इसके विना मैं नहीं खाऊंगा तिसकी यह स्थिती है तिससे हे विप्र! घरको जाउ यह चन्द्रहास यथासुख रहै आठवीं वर्ष में इसका यज्ञोपवीत करूंगा तब यह वेदाभ्यास करेगा ४०।४१ यह सुन ब्राह्मण जैसा आया तैसागया कुलिन्द मनोहर चन्द्रहास पुत्रका बड़ा मिलापकर आनन्दको प्राप्त होताभया ४२ और कहा कि इसी एक विष्णुकेभक्त निपुण पुत्रसे मेरे सब देश पवित्र होगये ४३ और बहुत पुत्रों से क्याहै देखो नागिनके बहुतपुत्र गरुड़के भक्षकही होते हैं यह हरिके चरणोमें लीनचित्त मेरापुत्रहै ४४ मैंनेपूर्वमें कौनसी तपस्या पचाग्निसे साधनकी है जिससे सर्व मनुष्यों के प्रिय वैष्णव पुत्रको पाया ४५ इतनी कथा सुनाय नारदजी बोले कि तदनन्तर आठवीं वर्षकी प्राप्ती में कुलिन्दक पुत्रकी मेखला बन्धन इत्यादि क्रिया करताभया ४६ इसकेउपरान्त वेदोंकी आहुती देकर सांगवेदको पढाया और चन्द्रहासभी हृदयमें हरिका ध्यान करता पढताभया ४७ सम्पूर्ण वेदोंको पढकर बोला कि मुझमे श्रीकृष्ण भगवान् प्रसन्नहों और सम्पूर्ण वेद पुराण स्मृतियोंमें मेरा स्वामी हरि गानमें प्राप्त है अर्थात् गायाजाताहै ४८ उस वस्तुको मैं नहीं देखताहूं जिसमें मेरा स्वामी हरि न स्थितहो इसप्रकार वेदार्थको देख इसके अनन्तर धनुर्वेदको पढा ४९ अर्थात् इन्द्रया-

ह्णमें कृष्णरूप निशाना बनाय सुन्दरी भक्तिरूप ध-न्षामें पुष्ट सतोगुणकी प्रत्यञ्चालगाय ५० दृढ़ संयुक्त करके चित्त का एकबाण बनाय छोड़नेलगा जिस को-मल बाणसे भी बालकने भगवान् रूप निशाना को पाया हे अर्जुन! इसप्रकारके निशाना को जो नहीं जान-तेहैं उन्हें वह निशाना पीड़ा देताहै ५१। ५२ नारदजी ने कहा कि तिस कुलिन्दपुत्रके शरीर तरकससे पांच बाणनिकले जो एकीभव जनार्दन में प्रवेशकरगये बड़े चित्रकी बात है अर्थात् पांचो विषय कृष्णही में लीन होते भये ५३ इसप्रकार धनुर्वेदको पढ़ फिर तिनगुरु-ओंके भी मनोरथ परिपूर्ण किये और घोड़ोंके समूह और शत्रुगणों को भी पाला और तिसदेश को जीतकर ५४ बढाया व घोड़ेपर सवार कुण्डल झूमते आकाशमें ली-नकहे बढेहुये राजाओं को भी नम्र किया और गुरुओं से बोला कि मुझको भ्रम नहीं है निदान भगवान् को पाय कैसे मूढ़ होवे ५५॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणि जैमिनीयेभाषायां चन्द्रहासविद्याभ्यास वर्णनमेकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

बावनवां अध्याय॥

अर्जुन बोले कि हे नारदजी! वे देश धन्य हैं जिन देशोंमें इसप्रकार का वैष्णव स्थित हो जो इसप्रकार के धनुर्वेद का अभ्यास करताभया १ और मेरे यह अ-पेक्षा रहाकरती है कि भगवान् के भक्त को कब देखूंगा

हमारी तुम्हारी शब्दसानिध्यहै औरोंमें नहींहै २ उत्तानपाद आकाश में स्थित है और पाताल देश में बलि स्थित है और विभीषण लङ्कामें है और स्वर्ग में हमारे पितामह स्थितहैं ३ व इधरउधर तुम घूमतेहौ तुम्हारे दर्शन मुझ को कहा से हों इस समय भाग्य के उदय से हमारा तुम्हारा समागम हुआ ४ इस समय तिस चन्द्रहासकोदेखकर महान् फलको पाऊगा इससमय मनोरम अमृतरूपी इस कथाको कहिये ५ और हे मुने! तारुण्य विषय को पाय राजों में श्रेष्ठ चद्रहास क्या करता भया सो मुझे तत्त्वसे कहो ६ यह सुन नारदजी बोले कि इस के अनतर पंद्रहवीं वर्ष में चद्रहास पिता से वचन बोला कि हे स्वामिन्! जो तुम मुझ को दिग्विजय के वास्ते आज्ञा देउ तो मैं जाऊं ७ और तिन सब शत्रुओंको तुम्हारे वलसे जीतकर राजाओं के समेत धन को लाऊं ८ तव कुलिंदने प्रत्युत्तर दिया कि तू अकेले कैसे जावेगा वे राजा महान् सेना से युक्त दुर्जय हैं ९ अथवा तिन वासुदेवका स्मरणकरके हठमे जावेगा तो हमारा स्वामी कौंतलपका मत्रीधृष्टबुद्धि है तिमने शतग्रामक यहदेश हमारे अर्पण कियाहै तिममे तिसीराजा के वैरी अतिशय वलिष्ठ हैं १० । ११ और वे हमारे देशों को पीड़ा देते हैं अव तुम को सुन चुप कर शात होगये हैं इसप्रकार पिताके वचनसुन चंद्रहास पाच रथियों के समेत वीरपूरित तिन देशों को जाता भया और तिन सब राजाओं को हँसताहीसा धनुर्द्धारी चंद्र-

ह्मणमें कृष्णरूप निशाना बनाय सुन्दरी भक्तिरूप धन्घामें पुष्ट सतोगुणकी प्रत्यञ्चालगाय ५० दृढ़ संयुक्त करके चित्त का एकबाण बनाय छोड़नेलगा जिस कोमल बाणसे भी बालकने भगवान् रूप निशाना को पाया हे अर्जुन। इसप्रकारके निशाना को जो नहीं जानतेहैं उन्हें वह निशाना पीड़ा देताहै ५१।५२ नारदजी ने कहा कि तिस कुलिन्दपुत्रके शरीर तरकससे पांच बाणनिकले जो एकीभव जनार्दन में प्रवेशकरगये बड़े चित्रकी बात है अर्थात् पांचो विषय कृष्णही में लीन होते भये ५३ इसप्रकार धनुर्वेदको पढ़ फिर तिनगुरुओंके भी मनोरथ परिपूर्ण किये और घोड़ोंके समूह और शत्रुगणों को भी पाला और तिसदेश को जीतकर ५४ बढाया व घोड़ेपर सवार कुण्डल झूमते आकाशमें लीनकहे बढ़ेहुये राजाओं को भी नम्र किया और गुरुओं से बोला कि मुझको श्रम नहीं है निदान भगवान् को पाय कैसे मूढ़ होवे ५५॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणि जैमिनीयेभाषाया चन्द्रहासविद्याभ्यासवर्णनन्नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

बावनवां अध्याय॥

अर्जुन बोले कि हे नारदजी! वे देश धन्य हैं जिन देशोंमें इसप्रकार का वैष्णव स्थित हो जो इसप्रकार के धनुर्वेद का अभ्यास करताभया १ और मेरे यह अपेक्षा रहाकरती है कि भगवान् के भक्त को कब देखूंगा

हमारी तुम्हारी शब्दसान्निध्यहै औरोंमें नहींहै २ उत्तानपाद आकाश में स्थित है और पाताल देश में बलि स्थित है और विभीषण लङ्कामें है और स्वर्ग में हमारे पितामह स्थितहैं ३ व इधरउधर तुम घूमतेहो तुम्हारे दर्शन मुझ को कहा से हों इस समय भाग्य के उदय से हमारा तुम्हारा समागम हुआ ४ इस समय तिस चन्द्रहासकोदेखकर महान् फलको पाऊंगा इससमय मनोरम अमृतरूपी इस कथाको कहिये ५ और हे मुने। तारुण्य विषय को पाय राजों में श्रेष्ठ चद्रहास क्या करता भया सो मुझे तत्वसे कहो ६ यह सुन नारदजी बोले कि इस के अनतर पंद्रहवीं वर्ष में चंद्रहास पिता से वचन बोला कि हे स्वामिन्। जो तुम मुझ को दिग्विजय के वास्ते आज्ञा देउ तो मैं जाऊं ७ और तिन सब शत्रुओंको तुम्हारे बलसे जीतकर राजाओं के समेत धन को लाऊं ८ तब कुलिंदने प्रत्युत्तर दिया कि तू अकेले कैसे जावेगा वे राजा महान् सेना से युक्त दुर्जय हैं ९ अथवा तिन वासुदेवका स्मरणकरके हठसे जावेगा तो हमारा स्वामी कौंतलपका मत्रीधृष्टबुद्धि है तिसने ग्रामक यहदेश हमारे अर्पण कियाहै तिसमें तिसीराजा के वैरी अतिशय बलिष्ट हैं १० । ११ और वे हमारे देशों को पीड़ा देते हैं अब तुम को सुन चुप कर शान्त होगये हैं इसप्रकार पिताके वचनसुन चंद्रहास पाच रथियों के समेत वीरपूरित तिन देशों को जाता भया और तिन सब राजाओं को हँसताहुआ धनुर्द्धारी चट-

यह शरीर कैसाहै जिसमें हाड़ थूनिया नसोंसे बँधामांस रुधिरसे लिप्त ३७ सौ छिद्र क्रोधादिक बैरीगण ग्रहोंसे व्याप्त इसप्रकार का यह शरीर विचारकर एकादशी के बराबर व्रतको तुम सब करने योग्य हो एकादशी के समान त्रिभुवन में कुछ नहीं है क्योंकि जिसके स्वामी श्री हरिहैं न मैंने सुनाहै न देखाहै इसप्रकार की आज्ञा पुरवासियों को दी सो आनन्दसे मानते भये ३८।४० चन्द्रहास तिस समय सुवर्ण रत्न वस्त्रों से पुरवासियों को तथा और दुर्बलों को व ब्राह्मणों को आभूषित करता भया ४१ और बिचित्र मन्दिर श्रेष्ठब्राह्मणों के अर्थ बनवाता भया और बावली कूप तड़ाग विष्णु के मन्दिर ४२ शिवालय सत्र बहुत योगीश्वरों के आश्रम बनवाये और अनेकप्रकार की पौशाला बैठारीं ४३ नारदजी बोले कि तिसकाल चन्दनावती पुरी में देश देश के ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र प्रजा आते भये ४४ तिनको आनन्दसे कुलिन्दक के पुत्रने सम्पूर्ण प्रजा धन धान्य से समन्वित स्थापितकी ४५ और अठारह आनन्दकारी प्रजाओं के समेत चन्द्रहास तिस पुरीमें हरिभक्ति को बढ़ाता भया जिस चन्दनावती में आकर अर्थी चन्द्रहास की दीहुई लक्ष्मी करके कुबेर को हँसताहै और कहता है कि परमेश्वर प्रसन्न हो ४६।४७ तिस चन्दनावती पुरी को पालन करते चन्द्रहास से कुलिन्दक बोला कि हे पुत्र! मुझे कुन्तलक राजाको दशहजार निष्क कहे अशरफ़ी देना है ४८ तिसका आधा

हमारे स्वामीको देना है तिस आधेका आधा तिसकी स्त्रीको देना चाहिये जिसमें मंत्रिश्रेष्ठ से रमप्रीति बढ़े ४६ हे पुत्र। यहांसे छः योजन कुन्तलपुर विद्यमान है जहांपर राजा कौन्तलक गालव पुरोहित समेत और धृष्टबुद्धि मन्त्रीकेसाथ राज्य करताहै चन्द्रहास पिताके ये वचन सुन आनन्दित हुआ ५० । ५१ जो मन्त्री राजा रानीके अर्थ द्रव्य भेजीजाती है सो सम्पूर्ण गालवके पास भेजी है ५२ वामी ऊट और गाड़ियों में लाद करके रेशमीवस्त्र सुवर्ण कस्तूरी कपूर ५३ हाथी मनोरम घोड़े तिस कौन्तलक और मंत्री धृष्टबुद्धि के अर्थ भेजे ५४ और सुन्दरी विज्ञापनायुक्त पत्रको भेजा तव चन्द्रहासके सेवकों ने सो पत्र व सबधन लेकर गमनकिया और कौन्तलपुरमें एकादशी के दिन सायंकाल प्राप्तहोकर ५५ । ५६ पुरके निकट सुजलनदीको देख वचन बोले कि स्नानकरके हरिकी पूजनकर प्रवेश करेंगे ५७ यह वार्त्ता योग्य है कि भगवान् के पूजन से हमारा सब कल्याणहोगा नारदजी ने कहा कि तिस समय स्नान किया नारायण का प्रणाम ध्यान जप किया ५८ तिन तुलसी देवीजी को शिरमें धारण किया इसप्रकार के नियममें टिककर तिस चन्द्रहास के सेवक धृष्टबुद्धि के मन्दिरमें प्रवेश करतेभये तिनको ओदे कपड़ोंसे देखकर धृष्टबुद्धि मनमें इसप्रकार तर्पण करता गया ५६ । ६० कि कुलिन्दमरा तिमी मे इसप्रकार के ये है तत्पश्चात् नमस्कार करते कुलिन्दके सेवकों से

इसप्रकार बोला कि किसकाल में देशरक्षक कुलिन्दक मृत्युको प्राप्तहुआ कितनेदिनहुये सो महा अनिष्टहुआ ६१। ६२ तब सेवकों ने कहा कि कुलिन्दके बैरियों का अनिष्ट हो कभी भी कुलिन्दका न हो कुलिन्द के सुन्दर पुत्र बुद्धिमान् चन्द्रहास ने दिग्विजय करके तुम्हारे अर्थ यह द्रव्य भेजीहै ये सुवर्णके कलशोंकरके व कपूर अगरु चन्दन वस्त्रोंकरके ६३। ६४ परिपूरित गाड़ियां तुम्हारे मन्दिरको आती हैं और इनके सप्तगुण कुन्तलाधिप के मन्दिर में प्राप्तहैं हर्षित विस्मित धृष्टबुद्धि तिसधन को ग्रहण करता भया और रसोईदारों से बोला कि इनके वास्ते सुन्दर देवान्न देना चाहिये ६५। ६६ व रसोई-दार तिनको बुलातेभी भये परन्तु वे न गये तिस समय धृष्टबुद्धि के रसोईदारो ने धृष्टबुद्धि से आदरपूर्वक कहा तब मन्त्रीने रक्तवर्ण नेत्रकरके कुलिन्दके सेवकों से कहा कि दियाहुआ अन्नभी जो नहीं भोजन करते ६७। ६८ तो मैं कुलिन्दको बेड़ियों से बाँध निर्दन करदूगा सो ये मंत्री के वचनसुन सेवकगण बोले कि हे स्वामिन्! हम कुछ अहङ्कार से युक्त नहीं हैं जो भोजन नहीं करते कृत-घ्नियोंका संसर्ग मार्गमें होगया और हरिके दिनमें हम अन्न भोजन नहीं करते और कृतघ्नियो के संसर्गसे और भी कुछ नहीं खाते अथानन्तर दूतोंके वचनसुन प्रसन्न हुआ और प्रातःकाल तिनको भोजन कराया ६९। ७१ और तत्पश्चात् आपभी भोजन किये और राजा के सम्मत से तिस चन्दनावती के देखने को गया ७२ और

राज काजमें निज पुत्रमदन को लगागया इसके अनन्तर विषया कन्या प्राप्तहो पिता से बोलती भई ७३ कि दिन २ मैंने रसालसींचा सो फलोद्गमी हुआ और उसमें फललगे तुमको राजकाजसे हमेशा व्यग्रता होती है ७४ इसप्रकार यह यौवनावस्था में प्रारम्भ कन्या शान्त होरही तिसको समुझाय बुझाय मन्त्री आनन्दित हो सेवकों समेत जाताभया ७५ और दो दिनके बीच चन्दनावती नगरी मे पहुँचा प्रथम यह महारण्य था आज यह महापुरी होरही है यह आश्चर्य की वार्त्ता है इसप्रकार विस्मयमे प्राप्त मन्त्रीके पास कुलिन्द पुत्रसमेत आया और नमस्कारकर घरको लेगया और विधिपूर्वक पूजनकर पुत्र समेत नम्रहो स्थित हुआ तो तिस कुलिन्दसे मन्त्रीने पूछा कि हे कुलिन्द ! यह पुत्र तुम्हारे कब हुआ ७६ । ७८ और आपने आगे कभी पुत्र का जन्म हमसे क्यों नहीं कहा तब कुलिन्द बोला कि मेरा यह जातीय पुत्र नहीं है किन्तु यह मनोरम स्वय प्राप्त हुआहै ७९ एक समय में शिकार में चित्तलगाकर गह्वर वनमे जोकि कौन्तलपुरसे दो योजनहै वहागया तहा मैंने इस छठी अँगुलीकटी पांचवर्ष के बालक को देखा जातीय पुत्रसे अधिक विष्णुभक्त चन्द्रहास इसमेरे पुत्रको जानो तब नारदजी बोले कि क्षणमात्र धृष्टबुद्धि योगियो के समान अन्तर्दृष्टि होताभया अर्थात् हृदयमें विचारता भया ८० । ८२ और धृष्टबुद्धि विष्णुके भक्त चन्द्रहास को नहीं जानता है परन्तु अन्त करण में जानगया व

जानकर छुपाया ८३ और मुझ को जान पड़ता है कि यह सोलह वर्षका वही बालकहै चाडालोंने मुझे अंगुली देखाकर ठगा ८४ जो मेरी सम्पदाओं का मालिक हुआ तो मेरे जो मदन अमल दो पुत्र विद्यमान हैं सो क्या करेंगे जो कार्य्य उल्लङ्घन होगया उसे पीछेको ज्ञानी बिचारता है फिर सो कार्य्य तिसको होता नहीं है और चिन्ता करनेवाला नाश होजाता है ८५।८६ इस से जो हुआ सो हुआ मुनीश्वरों के वचन झूठे करूगा ८७ यह बिचार कर बाहर आनन्दित व भीतर में मलिनता के चिह्न धारण किये जैसे मनुष्य की पाखण्डज बुद्धिहो बोला ८८ तुम्हारा जन्म आज सफल है जिस से तुमको यह सुन्दर पुत्र मिला और मुझे भी हृदयमें तुम्हारे पुत्रको देखकर बड़ा आनन्द हुआ ८९ सो तो कह नहीं सक्ता इसप्रकार गुप्तभाव वचन कहता भया जैसे तीक्ष्ण छूरा शहद से लपेटाहो व तृणों से छाया खन्दक हो व अन्न से आच्छादित बिषहो ९०।९१॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांधृष्टबुद्धेश्चन्दनावतीमति गमनभामर्दिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

तिरपनवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि कुबुद्धियों का सागर धृष्टबुद्धि फिर बिचारताभया कि मुनीश्वरों के वचन कैसे असत्य हों और यह कैसे मृत्यु को प्राप्तहोवे १ जो कुलिन्द के पुत्र शत्रुको प्रत्यक्षही मारताहू तो ये मुझको नानाप्रकार

के अस्त्रों करके मारेंगे इसमे सशयनहीं २ तब निश्चय करके मदन अमल दुखित होंगे अथवा महीं राजभटन करके मारों ३ इसप्रकार मुझकरके मेरा शत्रु मारनेयोग्य नहीं है शम्भुकरके जो कंठमें धारणकिया गयाहै तिसके दानते शत्रुको मारताहू ४ यह ध्यानकरके प्रसन्नहो चन्द्रहास प्रति वचन बोला कि हे चन्द्रहास! तुम विचित्र पत्र कहे उत्तम कागज क़लम स्याही को लेआवो जिससे एकपत्र लिखके तुम्हे पुरको पठाऊंगा तब चन्द्रहासका दियाहुआ पत्र लेकर एकान्तमें स्थित हुआ ५। ६ धृष्टबुद्धि यथाक्रम अक्षर लिखताभया कि हे मदन! तुम्हारा कल्याण हो कहनेका कारण इस प्रकारका है कि यह चन्द्रहास मेरा अतीव शत्रु जानबे योग्यहै व मेरी सम्पदाओंका स्वामी होनेवालाहै हे पुत्र! इसमें सन्देह नहीं है तुम्हारे यह कार्यकरबे योग्यहै ७। ८ विद्या, धन, पराक्रम, कुल, शील, अवस्था, रूप न देख्यो व विलम्ब न कियो निश्चय करके इस शत्रु का विलम्ब न करो इसप्रकार पार्वतीश का ध्यान करके शत्रुके अर्थ तुम करके विषदेना योग्यहै तब हम कृतार्थ होंगे ९। १० विशालाक्षने चन्द्रहाससे कहा कि मेरे वचन सुन कौन्तलपुरी में मदनके पास बड़ा काम विद्यमान है तुम जावो व हमारा मुद्रित किया पत्र न खोल्यो मेरे पुत्रको पत्र देनेमे तुम्हारा गुप्तकल्याण होगा ११। १२ और यदि तुम मेरी पत्री खोलोगे तो तुमको पातक होगा यथावत् दोनों कल्याणों के भेदसे तुमको प्राप्तहो १३

जल्दी घोड़ामें सवारहो चार सेवकों करके युक्त कौन्तल पुरीको जाय धर्मपुत्रको देखो १४ इतनी कथा सुनाय नारदजी बोले कि सो तिस पत्रको ले वेगमें स्थित हो मन्त्री व पिताको नमस्कार करके १५ कुलिन्दही के समान मेधाविनी के समीप पूछने व आज्ञालेनेको जाता भया तब माताने तिसको नीराजितकर आशीर्वादों करके अभिनन्दित किया १६ फिर सो माता दधिदूर्वा अक्षतों करके मिला तिलक करतीहुई बोली कि तुम्हारी मार्गें सर्वदा कल्याणकारी हों और मुखमें नारायण भुजों में जनार्दन व वक्षस्स्थल में हृषीकेश उदर में माधव नाभी में पद्मनाभ कोखियों में नृसिंह कटिमें कमलनाभ दोनों जङ्घाओं में मधुसूदन दोनों गांठियों में यज्ञभोक्ता दोनों गुल्फोंमे दामोदर दोनों पैरोंमें सहस्रपात् और तुम्हारी सहस्राक्षनेत्रों की रक्षाकरैं १७।२० और हे पुत्र! तुम्हारे सम्पूर्ण शरीरकी रक्षा त्रिविक्रमकरैं व हे पुत्र! अनुरूप पत्नीकरके शीघ्रही आवो २१ जैसे तुम राजा की गोदीमें सहज लक्ष्मीकरके प्राप्तहो इसके उपरान्त माता को नमस्कार प्रदक्षिणा करके २२ प्रिय हितमें रत दूतों करके सहित घोड़े में सवार होजाताभया तब ग्रामान्तर से आतीहुई हरिद्रा कुंकुमके रङ्गसे रँगे अङ्ग हैं जिस के ऐसी मनोरम श्रेष्ठ स्त्री को देखा इसके उपरान्त आगे खड़ी गृष्टी अर्थात् एकबार की व्याई गऊ नवीन बछवा जिसके तिसको देखताभया २३।२४ व तिनके अर्थ मार्ग विषे वनाध्यक्ष दाड़िमीफल देतेभये और कोई

मार्गमें तिनको चम्पाकी मालाओंकरके पूजाकरतेहैं २५ व कोई भालमें नानाप्रकारका पुष्पमयी मुकुट मनोहर बांधते भये सो सुन्दर चन्द्रहास नवीन वरके समान शोभित होताभया कौन्तलक देशके निकट प्राप्त होके क्रीड़ावनके समीप रमणीय तड़ाग है २६ जिसविषे हंसिनियों और २७ महान् कमलोदयों करके सहित धवल जो हंसहैं सो जहां विषे गृहस्थीको प्राप्त हैं निर्मलजल तड़ागके निकट आम्र तमाल वृक्षोंकरके नीलचन्द्रहास देखताभया तब साक्षात् वसन्तको मानों हँसरहा है ऐसे अद्भुत सा माना २८ फूले पलाश नवीन कुंकुमके समान दीप्ति तिनका मानो वनका मुखहै तिस वनकी अद्भुत है दीप्ति जिसकी तौन जोहैं पलाश तिसकी पत्रोंकी वल्लीहै मकरिका पत्र जिसमें वनकी लक्ष्मी करके जो मगम है सोई है कज्जलका चिह्न तिसकाल वसन्तऋतु में तेहि विषे द्रुमपल्लवित होतेभये तिसकाल आम्रोंविषे नवीन पत्ता व बौर शोभितहुये २९। ३० तिस पल्लवित वनमें कामियों के चित्तको खींचती सी दूतीके समान कोकिला बोलरही है ३१ पुन्नाग, बकुल, अशोक, चम्पा, मालती, जूही, जाती पुष्पित स्तनों के भारसे झुकी जाती शोभाको प्राप्त हैं और फूलोंकी सुगन्ध से युक्त लीन भ्रमररूपी लोचन जिसके ऐसी केतकी अपने पति वसन्तको पूजती हैं ३२। ३३ नारदजी बोले कि कुलिन्दका पुत्र वसन्त के उत्सवको देखकर के बड़े आनन्दको प्राप्तहुआ ३४ और हृदयमें परमेश्वरही के चरित्र

धारणकिया स्नानकर व वसन्त के उत्पन्न फूलोंकरके भगवान्का पूजन किया परमेश्वर के अर्पणकर मार्ग के भोजन किये ३५ रसाल वृक्षके नीचे सेवकों ने घोड़ेको बांधकर हरीदूब डालदी और इस के उपरान्त दोपहर शयनकरते भये ३६ इस के उपरान्त कौन्तल राजाकी एक चम्पक मालिनी नाम कन्या और दूसरी रतिको हँसतीहुई धृष्टबुद्धि मन्त्रीकी विषयानाम कन्या सौ कन्याओं से परिवारित दोनों कन्या बसन्तके आगम करके पुष्पोंके युक्त उत्तम बनको जातीभई ३७। ३८ युवावस्था के आगमन से चचल साढे तेरहवर्ष की है अवस्था जिनकी ते सम्पूर्ण फूल तोड़नेकी इच्छासी करती ३९ कौशुम्भवस्त्र धारण किये चमकती कञ्चुकी पहिरे नवीन बिल्वफलों के समान स्तनों करके आभूषित ४० रमणीय मोतियों के हारों करके मण्डित तालहीके शब्द के समान नूपुरो के शब्दकरती अर्थात् मार्गमें नाचतीहुई धीरे २ जातीभई ४१ गातीहुई व हँसती हुई व ताम्बूलकी पीक गिरती कोकिला के आलाप नाम शब्दमे पूरित ऐसे वनको गमन करतीभई ४२ कोई पुष्पोंका समूह देखनेकी इच्छा करके हथिनी के आगे खड़ी होती भई तो भयसे भयमीत एक वेल के समान स्तनोंवाली कन्या तिससे बोली ४३ कि तू अकेली पुष्पों की अभिलाषा करती हथिनियों के निकुञ्ज में न जा नहीं तो नृकेशरी स्तनरूपी कुम्भ मोतियों से युक्त तिनको विदारण करदेगा ४४ सो

कन्या परस्पर हँसती फूलो का सचय करतीं मालती जूही जाही मोगरादिक वृक्षो के ४५ फूलन की माला वनाय कठ मे पहिरती भई चम्पकमालिनी कन्या फूले अनार को देख वोली कि हे सुभगे, विषये। आगे यह अद्भुत देखो कि पहिले पुष्पों का आगम व पीछे को फलागम देख पड़ता है ४६। ४७ हे विल्वफलस्तनि! तुमविषे विपरीत कैसे हुआ तव विषया राजाकी कन्या से वोलती भई कि यह वृक्षों का धर्म है कि पहले फूल पीछे फल ४८ इसके अनन्तर फूलो के ताड़ने के स्वेदसे युक्त फूल लेके शिरमें धरिके निद्रित राजाकी कन्या से विषया वोली कि हे वरानने! तुम शिरमे फूल धरके न शयन करो वन के वीच में कोई भोगी कुण्डली अर्थात् भोगी पुरुप कुण्डल धारण किये अथवा भोगी कहे सर्प कुण्डली कहे गिडुली मारे हुये आवेगा ४९। ५० तव राजकन्याने कहा कि हे विषये! तुम्हारे मुखमें चन्द्रमा के जीतनेवाली शोभा विद्यमान है ते तुम्हारे वक्ष स्थल में स्तन विद्यमानहैं क्या रति करके सहित कामतो नहीं है ५१ तुम्हारे अन्त करणमे स्वप्न देके सो दोनो स्तन प्रकटहैं हेसखि! ये दोनो लिंगोकी पूजाके वास्ते किसी से प्रार्थनाकरो ५२ जो इनका सुगन्धित चन्दन केसरि विचित्र पत्रों की पक्ती करके इनके पूजनेके योग्यहो ५३ जो सायकाल प्रात काल आलस्यहीन निपुण हो तिस की इस समय प्रार्थना करो सो अपने प्राण भी देकरके तिस पूजक को वशमें करो ५४ तुम्हारा पाया नेत्र

फरकता है और आश्रममें बैठा काक शब्द करताहै तुम्हारे दोनों देवताओंका पूजक प्राप्त प्रियको कहताही सा है ५५ इस प्रकार चम्पकमालिनी के वचन सुनकरके सो मन्त्री की कन्या विषया हँसतीभई और लजाती सी रमणीय वचन बोली ५६ कि इससमय फूलोंके तोड़ने से सूर्य करके मैं संतप्तहूं तिस कारण से शीत जल कमलों का समूह है ऐसे तड़ाग में जाती हू ५७ तिसके ऐसे वचन सुनके कन्या वनमे निकलतीभई कोई कन्या डोली में सवार मधुरस्वर से गान करती वनसे निकलीं ५८ तिससमय परस्पर कुचमण्डलों का प्रहार करती टूटगये मोतिन के हार जिन के ऐसी कन्या डोली से उतरतीभई ५९ कोई कन्या फूल तोड़करके राजकन्या प्रति दौड़ती भई इस के अनन्तर आनन्द करके विषया के ऊपरभी फूलोंकी वर्षा करती भई ६० इसप्रकार से कमलिनियों के समूहों से मण्डित तिस तड़ाग प्रति प्राप्त होतीभई तब नूपरोंका शब्द सुनकर वनजलसे भयभीतहो हंस भागते हैं ६१ व कहतेहैं कि हमारेमन का उल्लास देनेवाला तड़ाग विशेषसे कलुषित होगा कामुकी कन्या पुष्पवती आतीहैं ६२ इतनी कथा सुनाय नारदजी बोले कि कन्याओंकरके छोरे रमणीय कपासके दुकूलपट तड़ागके किनारे मरमर बोलतेहैं ६३ यद्यपि वस्त्र सूक्ष्मभीहैं तदपि वायु तिनके उड़ानेको समर्थनहीं है तिनके गुणमयी फसरियोंसे बँधीवायु निश्चल होगई है ६४ चम्पकके वर्णवाली कन्या आनन्दितहो तिस

तड़ागमें प्रवेश करगई सो तड़ाग अगाध तो निर्मलरहा और गाध कलुषित कहे कैंदला होजाताभया ६५ सो कन्या तड़ागके चारोंओर हमेलें पहिरे तिस प्रकारकी कन्याओं करके अधिष्ठित परस्पर हास्य वचन करती भई ६६ क्रीड़ाकरके चपल हाथों से टूटे मोतियों की मालाओंसे तड़ागपूरित व मणिबंध कहे पहुँचीसे गिरत रम्य प्रवालमणिनसे चित्रित ६७ अनंत श्रीशोभा को धारणकरते तिनके मुखचंद्रों करके अलंकृत प्रकट रत्नाकर समुद्रकी भांति सो तड़ाग अत्यन्त शोभाको प्राप्त होताभया ६८ सो कन्या स्तनोंके कुंकुम कस्तूरी चंदन अगरुके सुगंधित जलकरके जलके बीच में परस्पर छींटा देतीभई ६९ उछलते जल बिंदुनके मिस से मोतियों से क्रीड़ाकरके शोभाको प्राप्त होतीहैं ७० चातक जेई पपीहा ते बिंदुओंकी वर्षा देखकरके मेघों की शंकासे मुख फैलाय के मेघोंकी पंक्ती देखते हैं ७१ इसप्रकार कुंकुम वर्ण जलका धारण किये जो तड़ाग है तिसमें स्नान करके दुकूलवस्त्रों के समूह धारण करतीभई और ताटंक कर्णाभरण मकरिका पत्र श्रेष्ठ मोतियों के मालाओंकि हार हमेलें व परिपूर्ण चंद्रमाके समान तिलकों करके आभूषण करतीभई ७२ धृष्टबुद्धि की कन्या विषया उत्तम जलकेलि छोंड़करके तट में स्थित सागरके तीर जैसे लक्ष्मी हरिको तैसेही चंद्र-हास को देखतीभई ७३ चंद्रहास कैसे हैं कि सोलह वर्षकी अवस्थामें दाढ़ी आतीहुई व निर्मल दीर्घमस्तक

व पट्टसे बँधा घोड़ा जिसका व सिंहकासा बच्चा तिसे योग्य मानती भई ७४ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां चन्द्रहासोपाख्याने त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

जैमिनिजीबोले कि जलक्रीड़ासे अरुणनयनी कन्या अपने घरोंको गई व चद्रहास के गुणों से अच्छादित विषया हे अर्जुन ! न जातीभई १ जैसे चलतेहुये मनुष्यों में कोई एक अग्रिम भाड़ाको देख निश्चलहोजावे तैसेही सो विषयाभी स्थित होगई २ तिस विषया के मदन बाणोंसे बनमें सुन्दर पुरुषप्रति जाऊं या न जाऊ इस विवेकको काटताभया ३ सो विषया दासीको बुलाय अपने नूपरादिये व पैरोंपै पैर देती शंकित ४ जैसे हंसी हंसके निकट जाती तैसेही गई तब हरेदूबों को चरते घोड़ाको देख नमस्कार किया व धीरा २ यह कहती कि मेरे प्राणप्यारे में सक्तहैं तिनको शब्द से वियुक्त न करे कुण्डल धारण कियेहुये जन प्रति प्राप्तहुई ५ । ६ वही कहतेहैं कि पतिके तुल्य दृष्टिको विषया ने तिसको देखा तिसके अनतर जामासे निकलाहुआ मनोहर पत्र देखा ७ तो शीघ्र हाथमेंले लिफाफा खोल पिताका पत्र जानकरके अतीवानदित हो वांचतीभई ८ कि हे मदन! तुम्हारा कल्याणहो कहनेका कारण इस प्रकार कि यह चन्द्रहास अतीव अहितशत्रु मेरी सम्पदाओंका मालिक जानने योग्य है इसमें सन्देह नहीं है तुम करके इसप्रकार

करनायोग्यहै इसशत्रु का रूप, अवस्था, कुल, शील, विद्या, वल नहीं देखना हे मदन! इसशत्रुके अर्थ तुमको पार्वतीशका ध्यान करके विष देना योग्य है जिससे हम कृतार्थहोवें सो विषयाने पीछेको ध्यानकिया व अभिप्राय को गुप्तकिया ९। १२ मेरी सम्पदाओं का स्वामी हित मदन सन्निभ मुझकरके पत्रमें रुचिर देखाजाता है १३ मेरा पिता मेरे अनुरूप श्रेष्ठवरको देख आनन्द से भरा इसको विषदेना यहां पर भूलगया १४ पिता का पत्र देखकर मदनभी निश्चय से मारेगा इसके अनन्तर अँगुनिया के नखसे १५ रसाल वृक्षका गोंदले विषकी जगह में विषया इसके वास्ते देना योग्यहै इस प्रकारके वर्ण लिख दिये १६ फिर रसालके गोंदसे वैसाही लिफाफा मुद्रितकरके उसीप्रकार जामामें रखकर घरको जाती भई १७ पीछेसे वारम्वार प्राणवल्लभ को देखती है तदनन्तर तिससमय गमनकरती विषयाको सखियोंने देखकर कहा कि १८ हे भद्रे! काहेको विलम्ब किया व तुम्हारे अतीव आनन्द काहेको है और पीछेको क्यों देखती हो क्या कोई नृसिंह देखा १९ यदि नृसिंह को देखा तो छोड़केमे दिया निश्चय से तुमने सोते हुये देखा है मैं जानती हू तिसका सर्वस्व चुराकर तुम छिपाती हो २० इसके अनन्तर हास्यरस में क्रीड़ाकरती सम्पूर्ण कन्या अपने घरको गई विषया प्रियके दर्शन से आनन्दित घरको आय २१ सतमञ्जिला मन्दिर में चढ़कर देखती भई तब सिंहविक्रम चन्द्रहास भी सायङ्काल जाग २२

मुखको शुद्धकर चारजामा कसेहुये घोड़े पर सवारहुआ चार अपने सेवकों करके सहित और जिस के प्रभाव की प्रतिमा नहीं है ऐसे चन्द्रहास ने तिस पुर में प्रवेश किया २३ जिस पुरमें धर्ममति सुन्दर मन्त्रीयुन ध्यान पदयोगी श्रेष्ठराजा रहै व गालवरूपी सूतियों के मुक्ताफलों को ग्रहणकरता रातदिन विचार करता है २४ चन्द्रहास शीघ्र धृष्टबुद्धिके मन्दिरको प्राप्तहुआ तिसघोड़े से उतर द्वारपालक से वचन बोला २५ कि हे द्वारस्थ! भीतर मदन से मेरे वचन बोल कि धृष्टबुद्धि के वपत सन्देश कथापत्र धारण किये चन्द्रहास वाहर प्राप्त है तिनको शीशनवाय सो द्वारपाल अपने स्वामी मदनके पासगया २६ । २७ हे पार्थ ! विस्मय सुन तिस चन्द्रहास के कहनेको सो द्वारपालजाय दूसरे से वचन बोला २८ कि चन्द्रहास प्राप्तहैं मदनसे जाकर जनाओ दूसरे ने यह सुन तीसरे से कहा २९ तीसरा चौथे के चौथा पाचवें के पाचवा छठयें के छठवा सातवें ३० विवेक नाम मदन के प्रिय द्वारपाल के निकट श्रद्धारूपी आसावल्लभ लिये गया और चन्द्रहास को बताया ३१ नारदजी बोले कि विवेक नाम द्वारपाल आसावल्लभ हाथ में लियेहुये मदन के अर्थ चन्द्रहास के बताने को जाता भया ३२ वहा जाय सिंहासन में विद्यमान शङ्करप्रिय मदनको देखा व तिसकी दाहिनी ओर वेदशास्त्र के वेत्ता जनोंको ३३ व सुन्दरी उक्तियों के कर्त्ताओंको व कृष्णचन्द्र के बहुत गुणानुवाद गायकों को व कृष्णवेष धारण किये

हुये नटों को व कृष्णगीत नृत्य प्रगायकों को ३४ और कृष्ण और उनके भक्तोंके गुण वर्णन करनेवाले वन्दीजनोंको व वाईओर कृष्णचन्द्रकी भक्ति परायण क्षत्रियोंको ३५ नानाप्रकार के शास्त्रविशारद अनेकप्रकार के आयेहुये दूतों को देखा व चमरा करके वीज्यमान धृष्टबुद्धिके पुत्रमदनको नमस्कारकर विवेकनाम द्वारपाल बोला ३६ कि केवल मैं तुम्हारा सेवकहूँ तुम्हारे पिताकोप्रिय नहींहूं अन्यकोधनाम द्वारपाल हिंसारूपी वल्लमलिये उनकेप्रियहै सो स्वामीकामक्तहै ३७ हे मदन! सो जबतक तुम्हारी सभाको नहीं आता तबतक हमारे वचन सभासदोंकरके युक्त सुनो ३८ हे महामते! जो मधुसूदन शात योगियों करके चिन्तवन कियेजाते हैं ति क भक्त चन्द्रहासद्वार में प्राप्त हैं ३९ हम तुम्हारे पितासे व क्रोधनाम सेवकसे डरे हैं कुछ कहनेको नहीं जाते व शात तुमसे भी नहीं कहते तुम्हारे पिताका दूत अथवा पिता हमको मारेगा इसप्रकार मनोरम शास्त्रसम्मित वचन ४० । ४१ सुनकर सभासदोंकरके सहित दुपट्टा फहराते व ओर कपड़ागिरतेहुते मदनउठा ४२ और क्षणहीमें विष्णु प्रिय चन्द्रहास के निकटजाय नमस्कारकर मिलापकरके रमणीय सभागृहको लाय ४३ श्रेष्ठासनमें बैठाय पूजनकर बोला कि कुलिन्द व कलिन्द की प्रिया कुशल से तो हैं ४४ और कहो तुम्हारे देश में ब्राह्मण वेदाभ्यास को करते हैं और क्षत्री वैश्य शूद्र धनोंसे उनकी पूजन करते हैं ४५ और प्रजादु खदायी

चुगुलों और करोंके देनेसे तो बाधा को प्राप्त नहीं होती तुम भी मनसे परमेश्वर का स्मरण करते कुशली प्राप्त हुये ४६ यहां के आगमन में जन के प्रिय कार्य कहो यह सुन चन्द्रहास बोला कि तुम्हारे समान महात्माओं के संग से विपत्ति नाशको प्राप्त होजाती हैं ४७ और कृष्णचन्द्र विषे मनुष्यों को मोक्ष देनेवाली दृढभक्ती उत्पन्नहोती है तुम्हारे पिताके सन्देश से प्राप्त हैं पत्रलेकर बाचो ४८ इस पत्र में एकान्त महान् गुप्त कार्य है तिसको हम नहीं जानते तब हाथ में पत्रले मदन विस्मित हो बोला ४९ कि सब जन पत्रको सुनो एकान्त में नहीं पत्रको सभाके मध्यमें बांचताहूं सब जने सुनो ५० सब मनुष्यों के सुनते मदन तिस पत्रको बाचताभया कि मदनका कल्याणहो शीघ्र इस के अर्थ विषया दीजावे ५१ रूप, कुल, शूरता, विद्या न देखो यह पत्रमें स्थित देख मदन आनन्दितहो बोला कि आज पिता करके मेरा वंश व भाई बंधु सम्पूर्ण पवित्र हुये जिसकार्य की मैं चिन्तना करता था सो आपही आप हुआ ५२। ५३ नारदजी बोले कि महलके सातवें खंड में विषया अवस्थाओं की सखियों के समेत प्राप्त चन्द्रहासको देखती भई ५४ व शंकरजी की प्रिया पार्वती देवीको मन से ध्यानकरती भई कि हे दाक्षायिनि देवि! तुम्हारे नमस्कार हैं मुझको पतिदेउ ५५ भाद्रपद की तीज के प्राप्तहोने पर रात्रिको तुम्हारी ५६ सुगन्धों पकाशों लड्डुओं और फूलोंकी मण्डपी बनाकर चित्र-

मयी सुन्दरीमूर्त्ति की पूजन करूंगी ५७ तिसी प्रकार रात्रिके जागरण से तुमको प्रसन्न करूंगी मदनके मुख से वेदके समान सत्यवाणी निकलै ५८ इस प्रकार चिन्तना करती हुई तिसमे कोई समान वयवाली सखी बोली कि क्या तेरा मनोरथहुआ क्या चिन्तना करती है ५९ तिस चम्पकमालिनी ने हँसते जो कहाथा कि वक्षस्स्थल को भेदनकर क्या तेरे रति और काम प्रकट हुये हैं ६० इनकी पूजाके अर्थ किसी तपस्वीकी प्रार्थना करो सो तपस्वी देखागया इस के वास्ते प्राण दो ६१ इसप्रकार सखियोके वचनों करके विषया नीचेको मुख कर आनन्दको प्राप्त भई व पैरके अगूठे से पति के श्रेष्ठ गुणैसी लिखती अत्यन्त नम्रहुई ६२ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां चन्द्रहासमदनसम्भाषण नामचतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

इतनी कथासुन अर्जुन बोले कि हे नारदजी! इसके उपरान्त क्याहुआ धृतबुद्धी का पुत्र मदन विषया चंद्रहासका विवाह किसप्रकार करतामया और हे नारद! चन्दनावती पुरीसे मंत्री अपने पुरको कैसे प्राप्तहुआ और मदनसे क्याकहा सो हमसे वर्णनकरो १।२ नारदजीने कहा कि इसके अनन्तर मदन ज्योतिषशास्त्र के विशारद ब्राह्मणों को बुलाय विषया चन्द्रहासकी लग्न पूछताभया ३ फिर हर्षितहो गणक मदनसे वचन बोले

कि शुक्र बृहस्पति अधिपति हैं सो तीसरे गेरहे हैं तुम्हारी भाग्यसे इनको शुभहै फिर गोधूलि देखपड़ती है ऊपरके हैं मुख जिनके ऐसी पूंछोंकरके पताकासा करती गौवें बछराकी इच्छा किये धावतीं त्रिगुणाई रस्सीकरके गोष्ठमें बाधा बछवा आतुर नहीं है ४।६ हेपुत्र! वैष्णव के समागम से भाग्यका उदय देखो सर्वदोष विवर्जित इससमय रुचिर लग्न है ७ मनुष्यों का गोधूलिक मुहूर्त्त वराह मिहिराचार्यों करके फलदायक कहागया है तिन के वचनसुन मदन आनन्द से परिपूर्ण ८ पातिव्रतकरके शोभित दासी तिनको आज्ञादेताभया कि इस समय विषया चन्द्रहास को अलग २।९ जलडोरा औ पल्लव इनके समेत कलशों से स्नान कराओ व वस्त्रों को पहिरायलाओ १० रक्तचन्दन के वर्णकरके युक्त मदनआया और कहा कि हे महामति चन्द्रहास! तुम्हारा कल्याण हो उठो उठो ११ और पतिव्रताओं के हाथमें लियेहुये वारुण कलशों में स्नानकरो तब नारदजी ने कहा कि स्नानकिये हुये तिस चन्द्रहासको रमणीय घरमें प्रवेश कराया १२ मदनने पुण्याह वाचन व मधुपर्क किया और वधूकरके समेतपादप्रक्षालन किया १३ सो मदन तिस रमणीय वेष चंद्रहासको रनिवास में लेगया इसके उप-रान्त अपनी भगिनी विषयाको ब्राह्मणों करके चुनरी धारण कराताभया १४ फिर मदन ने चन्द्रहासका गोत्र और फिर पिता पितामहका नामपूंछा सो चन्द्रहास भी अपना गोत्र कहताभया कि श्रीहरिही मेरे पिता हैं १५

पितामह प्रपितामह हैं मेरे हरिसे अन्य दूसरा सुहृद् नहीं है और मेरा गुरु कुलिंद व उसकी पत्नी आधार-शक्ती तिसको छोड़के १६ चन्द्रहासका अनन्य भाव वचन सुनके मदन ऊँचेस्वरसे वाणीबोला कि भगिनी-दानसे लक्ष्मीपति तृप्तहोवें १७ सो दोनों वधूवर हाथ जोड़े कुंकुम चर्चिताङ्ग शीघ्र वेदीपर प्राप्तहुये और घृत के समूहमेंलग्न अग्निकी परिक्रमा करते भये और सप्त-पदी चलतेभये १८ और ब्राह्मणों को नमस्कार कर आशीर्वाद को लेकर कान्तिको प्राप्तहो पतिव्रताओं के तिलक भालमें व फलपत्र हाथ में धारण करतेभये १९ तिस के उपरान्त आनन्दित मदन बहुत मण्डन कहे दायज देताभया और घटदोहिनी गौवें व क्षीरसिन्धुके समान भैंसी देताभया २० और मुक्ताफलरत्न स्वच्छ विविधप्रकारके वस्त्र अगरु कर्पूर चन्दन देकर ध्यान करताभया कि अंत्र में इनको क्यादेऊं मेरी यह बुद्धि होती है कि चन्द्रहास को आत्माभी अर्पण करदूं २१। २२ सम्पूर्ण लोकोंके देखते मदन वचन बोला कि जो इसका काल आवै तो तिसके अर्थ अपना शिर देदूं चाहे जब कालआवै तो तिसके हाथमें अपनाशिर देदूंगा चन्द्रहास मेरा यह बहनोई विषयामेंयुक्त २३। २४ पुत्र पौत्रोंसे युक्त बहुत काल इस पृथ्वी की राज्यकर इस के उपरान्त नानाप्रकार के बलात्कारों से गालवकी पूजनकर २५ अन्य याचक ब्राह्मणों से मदन बोला कि प्रातःकाल अत्यन्त पूज्य आप सम्पूर्ण लोगोंकरके मेरा

गृह सुशोभित करने योग्य है मैं जो किङ्करहूं सो यथाशक्ति पूजाकरूंगा पश्चात् सब द्विजों को बिसर्जनकर चन्द्रहास भोजनकरने को २६। २७ विषया सहित स्वजनोंके समेतजाय मनके अनुसार किये और मदन कुछ थोड़ीसी शयनकरके ब्राह्ममुहूर्त्तमें उठ २८ चिन्तनाकरके पीछे राजसेवकों को आज्ञादी कि मंडपरचो और एक चित्रवत् मन्दिर कोई चन्दन जलसे सींचो विपुलपताका ऊंचेदण्डोंकरके मण्डितकरो २९। ३० इतनी कथासुनाय नारदजी बोले कि हे बीभत्सो सेवक! सो सब आज्ञानुसार करतेभये इसके उपरान्त दिशाओं को निर्मलकरते विनतातनय विपात् कहे चरणहीन अरुण उदितहुये मानों कहतेही हैं कि लोकोंके स्वामी उदयहुये उठो और वैदिकक्रिया करो और उदयाचल पर्वत में सूर्यनारायण प्राप्तहुये तब चन्द्रहासने उज्ज्वल प्रकाशमान देखा ३१। ३३ व प्राणियों के चित्तका मोहरूपी अन्धकार रात्रिसे उत्पन्न नाशकिया तब विषया चन्द्रहास विमल जलसे स्नान करायेगये ३४ हरिद्राचम्पक के तेल मिला उबटन दासियोंने लगाय उत्तम वसन मुकुटों से अलकृतकरके स्त्रियोंने तिनदोनों स्त्री पुरुषोंको आगेकरके वेदी में ब्राह्मण स्वस्त्ययन पढ़ते वरासनमें बैठातेभये ३५। ३६ और वेद शास्त्रमें विशारद नर, अश्व, गजकी देहियों के रुजकी चिकित्सा को सब प्रकारके जाननेवाले पूजनीय ब्राह्मण प्राप्तहुये ३७ और मागध, नर्त्तकी, गीतशिक्षक, वंशबजानेवाले, मृदंग

बजानेवाले, वेश्या, शैलूषा, जलचित्रक कहे जलमें क्रीडाकरनेवाले मल्लाह ३८ और जेनर पृथ्वी मे ऊँचे वास में चढ़के क्रीड़ाकरते हैं अर्थात् नट, और मुखसे अग्नि की ज्वाला उत्पन्न करनेवाले ३९ और ढक्का डमरू के बजानेवाले और मधुरस्वर के गानेवाले किन्नर और सूत जे सदैव राजाओ के पुराणरूपी कुलोंकी कीर्त्ति उच्चारण करते ४० और मागध जे प्रेतलोक में प्राप्तकहे मरेहुये वीर राजाओं को वर्त्तमान संग्रामकारी राजा जिनको भी सब प्रकारसे वर्णन करते हैं ४१ व वन्दीजन जे राजाओं के प्रवन्ध वर्णन करते सोभी आये और नानाप्रकारके प्रवन्धोंके वर्णने में कुशल ब्रह्मचारी मल्ल लँगोटा धारे आये ४२ इस प्रकार नानाप्रकार के मनुष्यों करके वह मन्दिर सकीर्ण होताभया और हे पार्थ ! मदन की एक तृष्णा न प्राप्तहुई अर्थात् मत्र तो हुआ परन्तु पिताके विहीनही हुआ ४३ और जे सबजन लाभ और कौतुक देखने को आये थे तिनको भी रत्न वसन और बहुत काचन दिये ४४ और हे भारत ! मदन अनुक्रमसे सब सुहृद् सम्वन्धियों को विनय वचनामृत से तोषित करता भया ४५ और हे पार्थ ! विष्णुभक्त वैष्णव के आगमन का फलसुनु कि सो कौन्तलपुर तिस समय हृष्टपुष्ट जनो करके व्याप्त होजाताभया ४६ और हे पार्थ ! जे निष्पाप हृषीकेश का सदैव मनसे ध्यान करते हैं तिनका निर्बल विघ्नगण क्या करसक्ते हैं ४७ और देखो मन्त्रीने विष देनेके हेतु भेजाथा तिस चन्द्रहास को विषयानाम कन्या

प्राप्तहुई ४८ और पृथ्वीमें जो परवश प्राणी अभिमानी होकरके वृथाहठ करतेहैं तिन प्राणियों के कभीभी सिद्धी नहीं होती ४९ और हे जिष्णु! इसप्रकार विषया चन्द्र-हासका विवाह हुआ इसके उपरान्त जो भया सो निश्चलहो सुनो और पुरुषों के विस्मयकारक अभक्तिभक्ति का यह माहात्म्य है ५० ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणि जैमिनीयेभाषायां चन्द्रहासविवाहोनाम पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५५॥

छप्पनवां अध्याय ॥

नारद जी बोले कि तिस चन्दनावतीपुरी में धृष्टबुद्धि कुलिन्द को बेड़ियों करके बांधता भया व तिसकी प्रजाओं को ताड़ना देताभया १ कण्ठमें शिलाबांध जल में डाल द्रव्य मांगताभया द्रव्यप्राप्ति की इच्छा से ज्वलत् अग्नि के ऊपर उसकी प्रजा धारण करताभया २ पुरवासियों के मासको अस्त्रोंकरके पीड़ित करताभया और किसी की नासिका में छिद्र करके चूनका जल पिलाता भया इस प्रकार प्रजाओं को दण्ड देके बोला कि हे मूढ कुलिन्द ! तू मुझ कठोर को नहीं जानता चन्द्रहास के आश्रय के धनागम से तुम गर्वित हो और तिस करके सहित द्रव्य मेरेवास्ते तुमने क्यों नहीं भेजी ३।५ हे विमूढात्मन् ! तू न आया सेवकोंको भेजा तिन मतवारे अज्ञानियों ने भी मेरा दिया अन्न नहीं भोजन किया ६ इससमय धनके गर्वमे तू व्रतदान करताहै व्यय

के हेतुसे तूने हमारी द्रव्यनाश करदी बाल्यावस्थासे लगायके इसपुरीमें कभी मुझको शिवालय विष्णु आलय बावली कूप मठ पौशाला ब्राह्मणों के मन्दिर और यहांपर तिसीप्रकार पुराणकी पाठें नहींभई हैं इससमय तो तन्मयी पुरी होगई ७।९ मेरे निखिलद्रव्य करके तुझसे ये सम्पूर्ण बनाईगई और मन्दिरके वेत्ता कहां हैं और वे शिल्पी कहे कारीगर कहां हैं जिनदुष्टों ने मेरी द्रव्य खाईहै और वे ब्राह्मण पुरीके अधिकारी कहांगये जिन्होंने हमारी द्रव्य खाईहै १०। ११ तिससमय इस प्रकार कुलिन्दको धृष्टबुद्धि भयसे भीत करताभया और सचिवलोमको सेवकसे बुलाय वचन बोला कि तृष्णानाम स्त्रीकरके सहित चन्दनावती पुरीकी रक्षाकरो इसप्रकार तिसको आज्ञादेकर आप महा आनन्दसे युक्त बहुतधन लेकर पुत्रमदन और चन्द्रहास की चिन्तनाकर कौन्तलकपुरीको गया १२। १४ मेरा पुत्र मदन तिसको विष देगा आज चन्द्रहासको गये तीसरा दिनहै एकदिनमें नगरमें प्राप्त हुआ होगा और दूसरेदिन सायकाल सो मदन करेगा १५। १६ और मैं कार्य्य करचुका एक पहरमें पुरको जाऊंगा इसप्रकार चिन्तनाकर तीनसौ पुरुष महाबलिष्ठ मञ्जरियोंके खानेवाले कहार जिस पालकीमें लगे हैं तिसमें हे अर्जुन ! जाताहुआ धृष्टबुद्धि १७। १८ वामकी गाठियोंमे युक्त बड़ादण्ड लिये कहारों को मारताभया कि हे धीवरो, दुष्टो ! शीघ्रचलो १९ वे बोले कि हे राजन् ! हम शीघ्रही चलते हैं चलतेहुये हम

को दण्डसे ताड़ना न दो २० आप नहुषके कुलमें उ-
त्पन्न नहीं हैं न हम मुनीश्वरहैं जो तुमको क्रोधसे सर्पकर
देवें और सुन्दरीवायुके जहाजकेसमानसो कहार चलते
भये तिसके ऊपर कौवा उड़ते हैं २१। २२ इसको हठ
से चोंचोंसे पखनोंसे नखोंसे मारते हैं इसप्रकार पा-
पिष्ठी धृष्टबुद्धि को चेष्टित हुआ २३ तबतक आगे एक
विशालसर्प प्रकटहुआ फणोंसे आकाशको चाटता और
पूंछको पृथ्वीतलमें प्रवेशकिये बोला २४ कि तुम्हारे
सुवर्णके घड़ोंमें रक्षाकरतेहुये सदैव रहताहू मेरास्थान
तुम्हारे पुत्रने नाश करदिया अब मैं जाताहू तुम्हारा कल्या
णहो विषाद किंयेसे क्याहै इसप्रकार वचन कह वह सर्प
पातालमें प्रवेश करगया तब मंत्रीने सन्देह किया और
तिसके गूढवचन न जाने २५। २६ फिर दुष्ट धृष्टबुद्धि
धीवरोंको दण्डसे मारता उठकर दांतों से ओष्ठों को
चबाता व दांतोंको पीसता २७ मुझको नहीं जानते हो
तुम्हारे पैर वहां चलकर काटलूंगा इसप्रकार कहते एक
पहरमें कौन्तलकपुर में प्राप्तहो नगारेका शब्दसुना और
मनसे विचारा कि पुत्रने उस कार्य को किया २८। २९
नारदजी बोले कि तिस विमानसे उतकर मूढ अकेला
पैदरचला और आगे सूत मागध बन्दीजनोंको वस्त्रोंसे
अलङ्कार किये देखा तब बन्दीजन बोले कि हे धृष्टबुद्धे!
शीघ्रता न करो तुम्हारे पुत्रने सो सम्पूर्ण कार्य किया है
ब्रह्मायु चन्द्रहासकी व तिसीप्रकार तुम्हारे पुत्रकी हो
३०। ३१ तब धृष्टबुद्धि ने कहा कि हे पापी बन्दीजनो!

दूरजावो तुम्हें दण्डों से मारूंगा चन्द्रहास कौन है इस प्रकार कहकर धृष्टबुद्धिने चन्दनों से पूजित ब्राह्मणों को ३२ नानाप्रकार के रेशमी वस्त्रो से आभूषित हुये आये देखे तब ब्राह्मणो ने कहा कि हे धृष्टबुद्धे! तुम्हारा कल्याणहो यह चन्द्रहास तुमने कहापाया तुम्हारी रमणीय भाग्योदयहै जिससे तुम्हारी कीर्त्ति परिपूरित होतीहै ३३।३४ तिनके ये वचन सुनकर दुरात्मा धृष्टबुद्धि बड़वानल में जलता हुआ लाठी उठाय सन्मुख हो ब्राह्मणों से बोला कि कहा जावोगे ३५ तब ब्राह्मण वस्त्रों व मृगचर्मो को छोड़ दुपट्टा व यज्ञोपवीत मार्गमें गिरते श्वासलेते भागते भये ३६ तिसके उपरान्त आनन्दित गायक मन्त्री से बोले कि चन्द्रहास राज्यपर विद्यमान होवे सो मन्त्री ने तिन के कपाल फोड़डाले और डमरू, वीणा, मृदङ्ग, नगारा, कपडाल, वंशी इत्यादि सब तोड़ फोड़डाले इस प्रकार चलता द्वारको चित्र विचित्र रङ्गोसे देखते द्वार के भीतर धृष्टबुद्धि गया तो कुकुम को लगाये दीपकोंको लिये चम्पकवर्णी स्त्रिया नीराजन करनेको आई ३७।३८ तब धृष्टबुद्धि तिनसे बोला कि आज यह उत्साह क्यो की है क्या पुत्रने कुछपायाहै तब मृगनयनी स्त्रिया बोलती भई कि तुम्हारे कुलके हित चन्द्रहासको तुम्हारे पुत्रने पायाहै ३९ तब दुष्ट मूढ धृष्टबुद्धि बोला कि चन्द्रहास को क्या तिसने धन दियाहै तब स्त्रिया बोलीं कि ऐसा न कहो चन्द्रहासको तुम्हारे पुत्रने विषया कन्यादी है तिनके वचनरूपी बाणों से भिन्न क्रोधयुक्त लालनेत्र

धारण किये तिसके उपरान्त सातवें द्वारपरगया जहां विवेकनाम द्वारपालथा सो तिसको क्रोधयुक्त आतेदेख भगा ४० । ४२ तदनन्तर धृष्टबुद्धिने वेदीमें तिस चन्द्रहासको व विषया कन्याको गांठिजोड़े फूलोंके मुकुटको वांधे देखा ४३ और धृष्टबुद्धिके पसीनाचला व देह कांपनेलगी मुख सूखगया और क्रोधकर चिन्तवन करताभया कि मेरे पुत्रने यह क्या किया क्या मेरे गुप्त पत्रको नहीं देखा ४४ अथानन्तर जामाता चन्द्रहास स्त्रीके समेत उठकर श्वशुरको प्रणाम करताभया जैसे बालकको व्याघ्रदेखे तिसीप्रकार तिसको देख वाणीसे अभिनन्दनभी न किया ४५ इसके उपरान्त मदन आय दोनों पैरोंपर गिरा तिससे धृष्टबुद्धि बोला कि हे पुत्र! तूने क्या किया तुझसे मेरामन प्रसन्न न हुआ ४६ तिससे मदन बोला कि मैंने पत्रदेखकर इस वरके वास्ते गौ वस्त्र सुवर्ण और कोटिन महिषी दी हैं ४७ हे पिता! मुझको देख क्रोध क्यों करतेहौ देखो मैंने सब खजाना खाली करदियाहै नानाप्रकारके देशों के आयेहुये ब्राह्मणोंको व याचकोंको द्रव्यदी है ४८ नारदजी बोले कि कपाल पीटता हाथोंसे हाथ मलता पापी धृष्टबुद्धि बोला कि हे मदन! तू कृष्णाजिन धारणकर वनकोजा ४९ तब मदन ने कहा कि हे तात! यह आश्चर्य नहीं है क्या पिताके वचन से रामचन्द्रजी वनको नहीं गये तिसीप्रकार तुम्हारे वचनसे मैंभी जाऊंगा परन्तु मैंने ब्याहमें कम क्याकिया ५० क्याकरूं देशपाल कुलिन्द और उसकी

स्त्रीको नहीं बुलाया और तुमने पत्र लिखकर कुलिन्दके पुत्रको पठाया कि शीघ्रही मुहूर्त्त वल न देखो विवाह करदो ५१ क्या इससमय अकेलाजाय कुलिन्द को नमस्कार करूं विषया के विवाहमें और कुछ न्यून नहीं है सम्पूर्ण हाथी घोड़ा मैंने दिये और कृष्णके सेवक पूज्य वरके वास्ते मैंने भुजा शिर दिये हैं तब धृष्टबुद्धिने कहा कि यहासे दूरजा मुझको मुख न दिखा पत्रको लाय देख उसमें क्या है तब मदन पत्रलाया तो धृष्टबुद्धि ने देखा और देखकर ब्रह्माही की लिपिमानी ५२ । ५३ क्षणमात्र ध्यानकिया फिर पुत्रको शान्त किया और कहा कि तूने सत्य किया है मैंने तो इस चन्द्रहासको पठाय गूढ पत्र लिखाथा ५४ भाग्य से विषयाका विवाह होगया मैं और तुम तथा कोई करनेवाला नहीं है इस प्रकार पुत्रको समझाय दुरात्मा धृष्टबुद्धि ने तिस चन्द्रहासको भी कपटसे पूजा ५५ चौथेदिन कपटसे चतुर्थी कर्मकिया तिसके उपरान्त कँपताहुआ धृष्टबुद्धि विचारता भया कि अब इस शत्रुपक्ष में क्याकरूं मैंने एकवार दूसरे वार किया अब तीसरे कैसे करूं इस प्रकार कर्त्तव्य नौकामे रहित शोकसागर में मग्न अल्पबुद्धिरहा ५६ । ५७ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणि जैमिनीये भाषायां धृष्टबुद्धिसन्तापोनाम षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले धृष्टबुद्धि चिन्तना करतागया कि यह

उलटा कैसे भया मारनेके लायक शत्रुको बिषया कन्या भी दीगई १ इसके उपरान्त अब मैं क्या करूं किस भाई के पास जाऊं और यह मेरे पुत्र अमल और मदन मेरे वश नहीं हैं २ इन दोनों मेरे पुत्रोंने मेराकुल नाश किया चन्द्रहास विशेष से नाश करेगा ३ बिषया बिधवाहो परञ्च मुनीश्वरों के वचन झूठे करूंगा यह विचार चा ण्डालों को बुलाया ४ एकान्तमें पापिष्ठी स्थितहो धीरा धीरा सिखाने लगा कि पुरके बाहर उपवन में चण्डिका का मन्दिर है ५ तुम सब हाथ में तलवारले चुपजाय गुप्तहो दो कोनों में रहो ६ जो कोई अर्द्धरात्रिको आवै तिसको मारना कुछ बिचारना नहीं ७ जिसप्रकार प्रथम मुझको ठगाहै वैसा इस समय नहीं करना तुमको आधाधन मदनके हिस्सामें दूगा ८ तिसके वचनसुनै वे चाण्डाल चण्डी मन्दिरको छिपकर तीसरे पहर गये ९ धृष्टबुद्धि चन्द्रहास से नम्रहो बोला हे महाबुद्धिमन्! चन्द्रहास मेरा हित वचन सुनो १० हमारे कुल में चण्डिका देवी पूजी जाती हैं और जिन माताने बिवाह कियाहै तिनको नमस्कार करो ११ बिधिपूर्वक साय-सन्ध्या करके शीघ्र पुष्प चन्दन लेकर अकेले पुरके बाहर उनके मन्दिरमें जाय पूजनकर नमस्कारकरो यह कह धृष्टबुद्धि स्थित होगया तब चन्द्रहासने ॐ कह तिस के वाक्य किये १२। १३ सन्ध्यावन्दनकर महायशी चन्द्रहास अम्बिकाके मन्दिरको गया १४ इतनी कथा सुनाय नारदजी बोले कि हे पार्थ! इसके अनन्तर राजा

कौन्तलक का सुन्दर बुद्धिवाला मंत्री गालवको बुलाय जैसी देहकी चेष्टाथी बोला १५ कि हे स्वामिन् गालव! पृथ्वीलोकमें सुखपूर्वक मुझको राज्य करतेहुआ अब मैं तनुकी छाया व अपना शिर नहीं देखता इसमे संशय नहीं अब मेरा उत्क्रान्तिसमय अर्थात् मरणप्राया-वस्था प्राप्तहुई इससे आप अरिष्टाध्याय सुनाइये जिस के सुननेसे निर्वृत्ति शमन होतीहै १६। १७ यह सुन गालव ने कहा कि हे महाराज! अरिष्टों को सुनो जो अरिष्ट दत्तात्रेयजी ने महात्मा अलर्कनाम मुनि को सुनाये हैं १८ ऐसे अरिष्टों को देख योगीजन मृत्यु को जानते हैं कि देवमार्ग कहे आकाश में ध्रुव शुक्र चन्द्रमा अरुन्धती की छाया १९ और किरणों के रहित सूर्यको व अग्निको सूर्यको समान जो देखे सो प्राणी संवत्सर के उपरान्त न जीवे २० और जो आकाश को न देखे सो प्राणी दश महीना जीवे और जो सुवर्ण वर्णके वृक्ष देखै सो प्राणी नवमास जीवे २१ और जो मोटे को प-तला व पतले को मोटा अकस्मात् देखे व प्रकृति का भेद अर्थात् मति बदलजावे सो आठमहीना जीवे २२ और जिसके खण्ड पदकी एड़ी व लेगेहीं पैरके आगे कर्दम के मध्यमें धूलि न लगे सो प्राणी सात महीना जीवे २३ और कपोत गृध उलूक काक ये जो मस्तक में देखे तो वह प्राणी छ महीना जीवे २४ और जो पुरुष काकोंकी पक्तियों को ढेलियों से मारते स्तन फट-जावे और जिसका चर्म फटजाता उसकी पांच महीना

की मृत्यु जानना चाहिये २५ जो पुरुष अपनी छाया को नहीं देखता वह चार महीना जीवता है और जो पुरुष मेघसे रहित आकाश जिस में दक्षिण दिशा में बिजली व इन्द्रका धनुष व वज्र देखताहै वह प्राणी दो तीन मास जीवता है और जो पुरुष घृतमें और तैल में अथवा दर्पणमें शिर करके रहित अपना शरीर देखे २६। २७ तो वह पन्द्रह दिनभी नहीं जीता और जिस पुरुष के शरीर में हड्डी व मुर्दाके समान गन्धआतीहो हे नृप।वह पुरुष पन्द्रहदिन जीताहै जिस पुरुष को स्नान करतेहुये उसका हृदय सूखजाताहो अथवा जलके पीते हुये उसकी गन्ध और होजावे सो पुरुष दश दिन जीता है और जो पुरुष स्वप्न में ऋक्ष बानर तिनके मध्य में गातेहुये दक्षिण दिशामें देखता है २८। ३० तिस पुरुषकी उसी दिन मृत्यु होती है और स्वप्न में लाल काले वस्त्रको धारण किये हुये गाती हँसती हुई स्त्री दक्षिण दिशा को जिसपुरुषको प्राप्तकरै वहभी नहीं जीता और जो पुरुष स्वप्नमें नग्न हँसते हुये पुरुष व स्त्री व अपने को देखे ३१। ३२ उसकी शीघ्रही मृत्यु होती है और जो पुरुष स्वप्नमें अपने को व स्त्री अथवा अन्य पुरुषको मस्तकतक कीचमें गड़ेहुये देखे तो भी शीघ्रही उसकी मृत्यु होतीहै ३३ और जो पुरुष स्वप्नमें खजाना रथ शाला व अपना शिर जलातेहुये पुरुष को देखे ३४ उस पुरुषकी दशदिनमें मृत्युहोती है इसमें कुछ संशय नहीं और जो पुरुष स्वप्नमें बड़ेकराल विकट

अस्त्रको लिये काले २ पुरुषों से पत्थरो करके अपने को मारता देखे उसकी भी शीघ्रही मृत्युहोता है और जो पुरुष अपने को दूसरेके नेत्रमें नहीं देखता है सो पुरुष भी नहीं जीता ३५। ३६ और जो पुरुष कर्ण मूंद करके अपना शब्द नहीं सुनता व स्वभाव को विपरीत करता है सो भी नहीं जीता ३७ और जो पुरुष देवताओं व ब्राह्मणो व गुरुओं और वृद्धों की पूजा छोड़ निन्दा करता है व जो माता पिता दामादका अमत्कार कहे अप्रतिष्ठा करताहै ३८ और जो योगियों विद्वानों और अन्य महात्मोंकी निन्दा करताहै वह पुरुष क्षणमात्रभी नहीं जीसक्ता ३९ जो पुरुष योगियों करके शीघ्रही अरिष्टों को देखकरके अपने आसनमें स्थितहो परमोत्कृष्ट कहे बड़ाश्रेष्ठ जो भगवत् पदहै तिसका ध्यान करता है ४० और जो पुरुष कार्य को सिद्धि करनेवाला जो ज्ञान है तिसकी उपासना करताहै और तृष्णापूर्वक यह जानने योग्यहै यह जानने योग्य है यह जो आचरण करताहै ४१ उसपुरुषकी यदि कल्पसहस्र भी आयुर्दायहो तो भी ज्ञानको नहीं प्राप्तहोता है तात्पर्य यह कि उसका चित्त तो व्यग्रहै इससे ज्ञानको नहीं प्राप्तहोता है ४२ हे राजन्! सङ्गको छोड़ निराहारहो क्रोध और इन्द्रियों को जीत विषय वासनाओं को मनसे निवृत्तकर मन को ध्यान में लगावे इतनी कथा सुनाय नारदजी बोले कि मुनिश्रेष्ठ गालवजी से योगसार सुनिके इसके उपरान्त धृष्टबुद्धी राज्य त्याग करने की इच्छा करता

भया जैसे जीर्ण त्वचाकहे केचुलिको सर्प इच्छाकरता है और तहापर बैठेहुये मदनको बुलाय ये वचन बोला कि ४३ । ४४ कौन्तलप राजा के पुत्र निज जामाता को शीघ्रही लेआवो हम अपना हित करेंगे ४५ सो मदन जैसा तुम कहोगे वैसा हम करेंगे ऐसा कहके जामाता के पास प्रस्थान करताभया जहा जपाफूल के समान प्रकाश जिनका ऐसे सूर्यको अस्ताचल जाते हुये चन्द्रहास राजाको देखताभया ४६ और राजा चन्द्रहास कैसे हैं कि सन्ध्या विधिको कर पवित्र पुष्प कर्पूर चदन कस्तूरी वस्त्रको धारण किये ४७ व हरिद्रा कुंकुम केशरिको लगायेहुये गौर अग मुकुटसे युक्त अकेले रास्तामें आतेहुये देखकरके मदनबोला कि ४८ हे चंद्रहास! तुम शीघ्रही कहांजातेहो सो हमसे कहो तब चन्द्रहास ये वचन बोला कि मैं तुम्हारे पिता के भेजेहुये महिषासुर को नाश करनेवाली बाहरस्थित चण्डिकाके मन्दिरमें नमस्कार करनेवास्ते जाताहूं ४९ सो मदन राजाको निवारण करताभया और कहा कि हे राजन्! तुम राजमंदिर में जावो और चन्दन पुष्प हमको दे तुम शीघ्रही राजाके यहा जावो ५० इसप्रकार कहके पुष्पमाला युक्त पात्रको राजाके हाथसे लेकर सो मदन अकेले अपनाही वनमें चण्डिकाके स्थानको जाताभया और घोड़ासे उतर सेवकोंको

हास उसी घोड़ामें सवारहो ५३ उन्हीं सेवकों के साथ छत्र चामरो से वीज्यमान वेगसे कौंतलप राजाके पास प्राप्तहो आगे हाथ जोड़ खड़ा होजाता भया ५४ तव योगी कौंतलप चन्द्रहासको देख बोला कि हे स्वामिन्! गालव हम सम्पूर्ण परिवारको छोड़ वनको जावेंगे ५५ और सम्पूर्ण संगको त्यागकरके अव वैष्णवो में सम्मत करेंगे सो मुनि आज्ञा देतेभये कि जावो तुम्हारी स्वस्ति हो यह कह चम्पक माला पहिरादी ५६ और सम्पूर्ण राज्य चन्द्रहास को देदी व नीचे मुखकर वस्त्रों को छोड़ नग्नहो ऊपरको भुजाउठाये सम्पूर्ण संग छोड़नेके लिये वनको गया और वड़ी श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानलक्षण योग ऋद्धी को प्राप्त हुआ ५७। ५८ और सम्पूर्ण जगतको तुच्छ समझता हुआ देवता असुर मानुषोंको सतोगुण रजोगुण तमोगुणमयी पाशों से बँधेहुये और नित्यही बांधे जाते देखतामया ५९ और अपने शरीरसे उत्पन्न सुख दुःखादिकों करके खींचे हुये दुःखसे युक्त और भिन्न २ देखनेवाले पुत्र और अपना भाई व पौत्रादिकों को अज्ञानरूपी कीचका जो गड्ढा है तिसमें वर्त्तमान जानता भया और अपना को इस अज्ञानरूपी संसारसे उत्तीर्ण देखकरके ६०।६१ इसगाथाको गातामया कि यह वड़ा आश्चर्य्य है कि हमको पूर्वही राज्य करते हुये वड़ाकष्ट मिला पश्चात् योगज्ञानसे हमको वड़ासुखमिला इससे योगज्ञानसे और कोई सुख नहीं है ६२ नारदजी बोले कि हे पार्थ! इसप्रकार संसाररूपी वचन से कौंतलप

राजा छूट जाताभया और गालवऋषिने चंद्रहास नाम राजा को सिंहासन देकर अभिषेक्ति किया ६३ और गांधर्व विवाह से चम्पकमालिनी को चन्द्रहास विवाह करते भये उसीकालमें सूर्य्यनारायण अस्ताचलको गये ६४ नारदजी बोले कि मदन पुष्पोंको लियेहुये मार्ग में जाताहुआ आगे बड़ी आतुरतासे युद्धकरतेहुये दो बिल्लियों को देखता भया ६५ और मदनके हाथसे चदन वर पुष्पोंका पात्र भूमि में गिरपड़ा और नेत्रों व मुखसे रुधिर गिरनेलगा ६६ और बड़ा भयानक शब्द करता भया उलूक मदन के मस्तक में बैठ गया तिस पर भी मदन कुछ न गिनता भया व ये बचन बोला ६७ कि धीमान् वैष्णव पण्डित जामाता चन्द्रहास-के निरंतर स्वस्तिहो ६८ इसप्रकार चिंतवन करताहुआ मदन चंडिकाकेस्थानकोप्राप्तहुआ ६९ और नीचेको मुखकरता हुआ दोनों हाथों से दोनों कपाट खोलता भया धीमान् मदनका शब्द सुनके बड़े प्रमत्त पशुओं के नाशकरने वालों ने अस्त्रशस्त्रोंको यत्नसे लिये ७० द्विज के व धेनुके व शिशु के मारनेवाले एक२ कानमें अपना२ मुखलगाय के धीरे २ बोले कि यह प्राणी मरनेकी इच्छाकरके यहां प्राप्त हुआ है इस से अपने नाम का नाश नहीं करना अर्थात् हमारानाम द्विजघ्नशिशुघ्नहै मारनाअवश्य७१ यह कुलधर्मकी नीति उल्लंघनीय नहीं है तिसकारणसे इसको शस्त्रोंकरके तुमलोगमारो इसके अनन्तर स्थान में प्रवेश करताहुआ सुन्दर वेष धारणकिये बड़े दक्षपि

ताके वाक्यके करने वाले ७२ मदन को पशुओंके मार-
नेवाले तीक्ष्ण २ शूल खड्ग पट्टिश इनकरके मारतेभये
तत्पश्चात् धृष्टबुद्धिका पुत्र मदनबोला कि हे चण्डिके !
हे वैष्णवि ! हम मारने योग्य नहीं हैं हम शुम्भ निशुम्भ
रक्तबीज दैत्य नहीं हैं और तुम्हारे स्थानमें आये हैं सो
हे माता ! किसकारण से हमको मारती हौ ७३ यहां हम
अपनेजीने की प्रार्थना नहीं करते हैं हमारे वचनकी तुम
साक्षी हो और जो चंद्रहास के वास्ते भुजाओं व शिर
को धारण कियेहैं सो उस चंद्रहासके लिये अपना शिर
देंगे जिसमे हम ऋणसे रहित होजावें ७४ इसप्रकार
मंत्रीका पुत्रमदन वचन कहके माधव ऐसा नामोच्चारण
करताहुआ अपने प्राणोंको त्याग करता भया सो ऐसी
प्रस्फुरित वाक्य को सुन के डरते हुये चण्डाल वहां से
भाग गये और कहने लगे कि हम लोगों करके कौन
पुरुष मारागया ७५ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणि जैमिनीयेभाषायांचन्द्रहासस्यकौन्तलपुर
राज्यप्राप्तिर्नामसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि चन्द्रहास चम्पकमालिनी पत्नी
के समेत राज्यको प्राप्तहोके उमीरानी के समेत रात्रि में
सुन्दरहाथीके ऊपर सवारहो १ मृदंगध्वनि करके शोभित
धृष्टबुद्धि को नमस्कार करनेके लिये व श्वशुरके देखने
की इच्छाकरके मंत्रीकेपास पहुंचा २ तब वचनरे कहने

वाले मंत्री धृष्टबुद्धिसे वचनबोले कि हे मंत्रिन्! धृष्टबुद्धे आयेहुये नवीन राजाचंद्रहासको देखो ३ और हे विभो! कौंतलप राजाकापुत्र व तुम्हारा दामाद है उन सब के वचनोंको सुनके क्रोधसे मंत्री वचनबोला ४ कि तुम पापी लोगों की जिह्वा मूलसमेत हम काटडालेंगे कौंतलप से अन्य राजा इस पृथ्वीमण्डलमें कौन होसक्ताहै ५ तब वचोहरबोले कि हे स्वामिन्! तुम नेत्रोंको खोल दृष्टि से देखो तिसी में समय स्त्री के समेत चन्द्रहास आगे प्राप्त भया ६ तब धृष्टबुद्धिने अपने नेत्रखोल देखा और कहा कि यह यहांपर प्राप्त मेरापुत्र मदनहोगा ७ फिर आगे चंपकमालिनी कन्याको विद्यमानदेख उच्चप्रकारसे मंत्री बोला कि रेरेमदन तुमने यह क्या किया ८ ऐसा चिंतवन करताभया आगे खड़ाहुआ चंद्रहास हाथीसेउतर मंत्री के पाँयपरगिरपड़ा तब धृष्टबुद्धि ने चिबुकधरलिया और कहा कि गोत्रकेविनाश करनेवाले रमणीय चण्डिका के मन्दिर में तुम नहींगये ९। १० तब चन्द्रहास बोला कि हे स्वामिन्! जबतक हम पुष्पचन्दनका पात्रलियेहुये देवी के मन्दिर को जातेथे तबतक कौन्तलपदेशके राजाकी आज्ञाकरनेवाला मदन हमको निवारणकरके पीछेसे अपनाही देवीके मन्दिरमेंगया ऐसाहृदयको कष्टदेनेवाला बड़ा कठोर चंद्रहास का वचनसुन ११। १२ ऊपरको भुजा उठाये केश खुलेहुये मन्त्री बिलाप करतेहुये जाता भया और पराये अर्थ जो कपट करताहै सो उसमें अवश्य ही गिरताहै १३ तिसकारणसे सपूर्ण प्रयत्नकरके प्राणियों

का हितकरै सो बड़ी अन्धकारी घोरमार्गों में गिरता उठताहुआ धृष्टबुद्धि प्रेतस्थलीको देखताहुआ शीघ्रही गमन करताभया जिस प्रेतस्थली में चिता जलरहे हैं व वायुकरके भस्म उड़रही है १४। १५ और भूत वेताल रूप धृष्टबुद्धि को देख कंकाल वचनबोले कि हमसे भी अधिक कोई आताहै तुमलोग देखो १६ तिसके उपरात अपर प्रेत बोला कि हमसे अधिक होनेवाला कौनहै और हमकरके भेजेहुये तुम तीनों ब्राह्मणोंकोमारो १७विश्वास व धनको हरनेवाला पराई निन्दामें युक्त हमको सबकाल में भूत जन्तुओं को नाश करनेवाला व महात्माजनों को भय देनेवाला जानो १८ तिसीतरहसे ब्राह्मणों को नाश करनेवाले मेरेभाईको देखो पथिकजनोंका मारनेवाला मेरे पुत्रसे भी अधिक जानो १९ तिसीसमयमें एक ब्रह्मग्रहही प्रेत हँसताहुआ वचन बोला कि तुम्हारा सुतव भ्राता अधिक है तिनसे भी तुम ब्रह्मघातकी अधिक हो २० और यह हमारे तुम्हारे तुल्य नहीं है यह कोई अन्य आताहै तिसकारणसे तुम लोग यहांसे भाग जावो दर्शन भी न दो और इस पापीदुष्ट अत्यंत विरोधीका दर्शन न करो मित्रद्रोही कृतघ्न विश्वासघाती पापिष्ठ यह आता है इससे दूर भागचलो इसप्रकार विचारकरके धृष्टबुद्धि को देख भूत भैरव श्मशानसे भागगये २१। २३ और पुत्रशोकसे दुःखित धृष्टबुद्धि जलतेहुये चिताके काष्ठोंको धारणकरके चण्डिकाके मन्दिरमें चण्डिकाके आगे जाकर २४ खड्ग शूलसे बिदारित अपने पुत्र मदनको देखा

वाले मंत्री धृष्टबुद्धिसे बचनबोले कि हे मंत्रिन्! धृष्टबुद्धे आयेहुये नवीन राजाचद्रहासको देखो ३ और हे बिभो! कौंतल१ राजाकापुत्र व तुम्हारा दामाद है उन सब के बचनोंको सुनके कोधसे मंत्री बचनबोला ४ कि तुम पापी लोगों की जिह्वा मूलसमेत हम काटडालेंगे कौंतलप से अन्य राजा इस पृथ्वीमण्डलमें कौन होसक्ताहै ५ तब बचोहरबोले कि हे स्वामिन्! तुम नेत्रोंको खोल दृष्टि से देखो तिसी में समय स्त्री के समेत चन्द्रहास आगे प्राप्त भया ६ तब धृष्टबुद्धिने अपने नेत्रखोल देखा और कहा कि यह यहांपर प्राप्त मेरापुत्र मदनहोगा ७ फिर आगे चंपकमालिनी कन्याको विद्यमानदेख उच्चप्रकारसे मंत्री बोला कि रेरेमदन तुमने यह क्या किया ८ ऐसा चिंतवन करताभया आगे खड़ाहुआ चद्रहास हाथीसेउतर मंत्री के पाँयपरगिरपड़ा तब धृष्टबुद्धि ने चिबुकधरलिया और कहा कि गोत्रकेविनाश करनेवाले रमणीय चण्डिका के मन्दिर में तुम नहींगये ९। १० तब चन्द्रहास बोला कि हे स्वामिन्! जबतक हम पुष्पचन्दनका पात्रलियेहुये देवी के मन्दिर को जातेथे तबतक कौन्तलपदेशके राजाकी आज्ञाकरनेवाला मदन हमको निवारणकरके पीछेसे अपनाही देवीके मन्दिरमेंगया ऐसाहृदयको कष्टदेनेवाला बड़ा कठोर चंद्रहास का वचनसुन ११। १२ ऊपरको भुजा उठाये केश खुलेहुये मन्त्री बिलाप करतेहुये जाता भया और पराये अर्थ जो कपट करताहै सो उसमें अवश्य ही गिरताहै १३ तिसकारणसे सपूर्ण प्रयत्नकरके प्राणियों

का हितकरै सो बड़ी अन्धकारी घोरमार्गों में गिरता उठताहुआ धृष्टबुद्धि प्रेतस्थलीको देखताहुआ शीघ्रही गमन करतामया जिस प्रेतस्थली में चिता जलरहे हैं व वायुकरके भस्म उड़रही हैं १४। १५ और भूत वेताल रूप धृष्टबुद्धि को देख कंकाल वचनबोले कि हमसे भी अधिक कोई आताहै तुमलोग देखो १६ तिसके उपरात अपर प्रेत बोला कि हमसे अधिक होनेवाला कौनहै और हमकरके भेजेहुये तुम तीनों ब्राह्मणोंकोमारो १७विश्वास व धनको हरनेवाला पराई निन्दामें युक्त हमको सबकाल में भूत जन्तुओं को नाश करनेवाला व महात्माजनों को भय देनेवाला जानो १८ तिसीतरहसे ब्राह्मणों को नाश करनेवाले मेरेभाईको देखो पथिकजनोंका मारनेवाला मेरे पुत्रसे भी अधिक जानो १९ तिसीसमयमें एक ब्रह्मग्रहही प्रेत हँसताहुआ वचन बोला कि तुम्हारा सुतव भ्राता अधिक है तिनसे भी तुम ब्रह्मघातकी अधिक हो २० और यह हमारे तुम्हारे तुल्य नहीं है यह कोई अन्य आताहै तिसकारणसे तुम लोग यहासे भाग जावो दर्शन भी न दो और इस पापीदुष्ट अत्यंत विरोधीका दर्शन न करो मित्रद्रोही कृतघ्न विश्वासघाती पापिष्ठ यह आता है इससे दूर भागचलो इसप्रकार विचारकरके धृष्टबुद्धि को देख भूत भैरव श्मशानसे भागगये २१। २३ और पुत्रशोकसे दु खित धृष्टबुद्धि जलतेहुये चिताके काष्ठोंको धारणकरके चण्डिकाके मन्दिरमें चण्डिकाके आगे जाकर २४ खड्ग शूलसे विदारित अपने पुत्र मदनको देखा

और वह मन्दिर कैसा है कि वत्तिस गुणोंकरके युक्त सुन्दर २ चरित्र विद्यमानहैं व योगियोंके अम्बर तपरहे शोभितहोरहे हैं अर्थसमय जानागयाहै व शान्तहै और मन वचन कायका जिसमें दण्डहै २५।२६ और कलश जिस में भिन्न है और दिव्यहै और पृथ्वीमें प्रासादके तुल्य है और पाखण्डी जनोंकरके काश्मीर के तुल्य जिसका शरीर भिन्नहै २७ और मनोरथके नाशहोनेवाले धृष्टबुद्धिने अपने मदनपुत्रको देखकरके अपने वंशके मूलका नाश समझा २८ फिर बड़ाआतुर धृष्टबुद्धि पुत्रको देखताहुआ चिताकाष्ठको छोड़करके तिसीप्रकार हाथों से पुत्रको उठाय आलिंगनकिया २९ और बोला कि हेपुत्र २ उठो २ चन्द्रहासआये हैं चन्द्रहासकेलिये विषयाकन्या व बड़ाधनदो ३० और हमने तुमको बड़े२कठोर वचन कहे हैं उनसे तो प्रकोपित नहींहुये हो और हे पुत्र! इस-कालमें वैष्णवद्रोहका फल हमने पाया ३१ और वैष्ण-वद्रोहीका हृदय सत्यही बिदीर्ण होताहै तिसी कारण से हमारा हृदय इससमयमें बिदीर्णहुआ और यह मदन है जिस मदनकी सर्वत्र कृष्णमें रति स्थितहै और यह शिवजीका द्रोह करनेवाला व योगीजनों को सन्तापदेने वाला भी नहींहै ३२।३३ इसप्रकारसे धृष्टबुद्धिने महा विलापकरते धातुओं करके शोभित खगामें बारम्बार अपना शिर पटका ३४ सो धृष्टबुद्धिका फूटेहुये अण्डा के समान मस्तक भूमिमें गिरपड़ा सो हे पार्थ! धृष्टबुद्धि व उसकापुत्र दोनों मरगये ३५ प्रात कालके समय में

पुष्पजलको लियेहुये एक तपस्वीने देवीके स्नान पूजन करनेवास्ते चण्डिका के मन्दिर में प्रवेश किया और तिस तपस्वीने आगे मरेहुये धृष्टबुद्धि व शान्त मदनको दीपक समान देखा ३६। ३७ और कहा कि यह बड़ा आश्चर्य है और नये राज्यकाफल प्रकाशहुआ कौन्तलप राजाके प्रियमन्त्री व मदन दोनोंमरेपड़े हैं ३८ तिसी कालमें वह तपस्वी चन्द्रहास से कहने वास्तेगया और जाकर बोला कि हे राजन्! किसी पुरुष करके रात्रिमें बाहर चण्डिका के मन्दिर में धृष्टबुद्धि व मदन मारेगये सो शीघ्रही तुमजानो व धारणकरो उस तपस्वीकावचन सुन करके राजा पैदल देवीके मन्दिरको गया ३९।४० बड़े दु खसेयुक्त चन्द्रहासने देवीके स्थान में चण्डिका के आगे पिता पुत्र दोनों को मरेहुये देखा ४१ तब चन्द्रहास ने कहा कि हे माता! हे चण्डिके! जो हमारे ऊपर तुम क्रुद्धहो तो हमें मारडालो इन दोनों पिता पुत्रोंको तुमने वृथामारा ४२ यह देवीके आगे कहके मरे हुये पितापुत्रको देखके स्नानकर पवित्रहोके स्वस्ति कहके ४३ सुन्दर सुलक्षण रुचिर कुण्डको खनाय उसमें बलि दीप आगेधरके पावक स्थापित करके ४४ सुन्दर मन्त्रजपकर रमणीय घी तिल और शक्कर मिलीहुई पायस और अपनी देहके मासकाभी हवन करनेलगा ४५ पैर शिर इत्यादि सम्पूर्ण अंगोंका मास हवन करकेशिर में केवल हड्डीको धारणकरता हुआ जगदम्बिकासेबोला ४६ कि हे माता! तुम चराचर के गुरु विष्णु भगवान्

की चिच्छक्ति कही गईहो और हे माता! तुम सम्पूर्ण कर्मोंकी साक्षिणी पृथक् स्थितहो ४७ सो इस काल में हम खड्गसे अपना शिरकाटते हैं तिससे हे कालिके! हे अम्बिके! तुम्हारारूप जगत्पति श्रीहृषीकेश भगवान् प्रसन्नहोवें ४८ ऐसा कहते जबतक शिरमें खड्ग को धारण किया तब तक चण्डिका साक्षात् प्रकटहुई और राजासे बोलीं कि, ४९ हे राजन्! तुम आत्मबध मतकरो यह पापी अपने कुकर्म से पञ्चत्व को प्राप्तहुआ और तुम्हारे साले नेजो बहनके विवाहसमयमें पूर्वही कहाथा उस तुम्हारे तिसके ऋणको दिया ५० सो हे हरिभक्त चन्द्रहास! इससमय में हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहैं अपनी इच्छापूर्वक मानसदोवरमागो, तुम्हारा कल्याणहो ५१ तब, चन्द्रहास ने कहा कि हे माता! एकतो हमारीभक्ति जन्म २ में श्रीहरिमें होवे यह प्रथम वर हम मागते हैं और दूसरा ये जो मरेहुये दोनों पिता पुत्रहैं सो जीजावें ५२ हे जगत्पात्रनि! मैं तुमको नमस्कार करताहूं तब देवीजी बोलीं कि तुम्हारी सात्त्विकी भक्ति हरि में अचल होगी ५३ और तुम्हारा पुत्रभी बड़ा शूरहोगा जोकि हरिको सन्तुष्टकरेगा और हे चन्द्रहास! कलियुग में बाल्यावस्था से लेकर अन्ततक तुम्हारा चरित्र नर व नारी बड़े आदरसे निरन्तर सुनेंगे और जो पुरुष भगवान् को हृदयमें करके पढ़ेंगे तिनकी भक्ति श्रीभगवान् रमापति में सुदृढ़ होगी और हे महाप्राज्ञ चन्द्रहास! हमारे आगे तुम आवो और अपने नेत्र आधे मुहूर्त

वन्दकरके खड़े हो ५८। ५६ नारदजी बोले कि चन्द्र-हासने अपने नेत्र बन्दकिये तब खड्ग शक्ति गदा पद्म आयुधों करके युक्त वैष्णवीशक्ति उठी और राजाके मस्तकमें ज्ञानोपदेशक हाथको धरतीभई तिसके उपरान्त राजा धृष्टबुद्धि और मदनको देखे और वे दोनों कैसे हैं कि पूर्वहीमें जो जैसा रूप अवस्था वेषथा वे तैसाही रूप वेष धारणकिये हैं और मानो सोने से उठे हैं और अपनेको पूर्वहीके समान घावोंकरके रहित चन्दनकरके युक्त देहात्मा को देखा ५७। ६० और जगदम्बा हरि भगवान्की तनु देवीको नहीं देखा और देवताओं करके आकाशसे वर्षाईहुई पुष्पवृष्टि को देख धृष्टबुद्धि व मदन को चन्द्रहास ने नमस्कार किये और अंक से मिल व पूजनकरके श्वशुर से बचन बोले ६१। ६२ कि कौन जीताहै व कौन मराहै यह सब हरिभगवान् की मायाहै तिसकारण सम्पूर्ण प्रयत्नसे विष्णुभगवान्को हमलोग भजैंगे ६३ नारदजी बोले कि हे पार्थ! ऐसा वैष्णव राजा चन्द्रहास ऐसे २ दुःखोंकरके पीडित नहींहुआ और धृष्ट-बुद्धि व मदनके साथ अपने नगरमें प्रवेशकिया ६४ तब अर्जुनने कहा कि हे महामुने! चन्द्रहास तो दैवयोग से बड़ी राज्यको प्राप्तभया तिसपीछे दुःखित कुलिन्द ने क्याकिया ६५ नारदजी ने कहा कि हे महाबाहु पार्थ! कुलिन्दका कार्यव्यापार कहे जीवनचरित्र सुनो कि जब चन्द्रहास चलागया तो धृष्टबुद्धि करके कुलिन्द महा-पीड़ितहुआ सो कुलिन्द मन से नन्दिके छुड़ावनेवाले

श्रीभगवान्को मनमें बिचारकर जितना सम्पूर्ण धनथा सो सब ब्राह्मणों को देकर वड़े ज्ञानको प्राप्तहुआ ६६। ६७ और कहा कि हे हृषीकेश! तुम्हाराभक्त तुम करके दियाहुआ मेरापुत्र चन्द्रहास पापचेष्टित हमसे इसकी रक्षाकरो ६८ इस प्रकारसे कहके अपने घरमें सपत्नीक बाधवोंके समेत ध्यानमें तत्पर सम्पूर्ण वस्तुओं से विरक्त अग्निमें प्रवेशकरताभया ६९ इसके अनन्तर सम्पूर्ण जन धृष्टबुद्धि से निवेदन करतेभये कि हे स्वामिन्! सर्वदा तुम्हाराहित करनेवाला कुलिन्द राजा दुःखसे परिवार समेत अग्निमें प्रवेशकरताहै ऐसा सब लोगोंका बचन सुनके हरिसे प्रेरित जाताभया ७०। ७१ और मन में बिचार करताभया कि इसका पुत्र हमने मारा सो इस वृद्ध धन करके विवर्जित को किस लिये मारते हैं ७२ पुत्रहीन यह दैवकरके मरेही के समान है ऐसा मन में विचारकर शीघ्रही निवारण करता भया, ७३ कि हे कुलिन्द! तुम विषादमत करो यह धन हमारा नहीं है और फिर देश व बहुत प्रकारका धन तुमको देंगे ७४ ऐसे नानाप्रकारकी वाक्योंकरके कुलिन्दको धीर्य दिया और परमपुत्रकी आशा करके उठा और धृष्टबुद्धि को नमस्कार किया ७५ और धृष्टबुद्धि कुलिन्दको निवारण करके अपने मन्दिरको गया तब कुलिन्द ने चन्द्रहास की कृत्य सब सुनी ७६ सो सब सुनिके वड़े आनन्द के समेत धनोंसे ब्राह्मणोंका पूजन करताभया और सम्पूर्ण याचकों को मनमाना दानदेताभया ७७ और चन्द्रहास

नेभी राज्यकोपाय ब्राह्मणोंकी पूजाकिया और अपनेही बन्धु व मदन व द्विजातियोंके साथ पुत्रमें वत्सल माता पिताको लेआये तदनन्तर कौन्तलकदेश में तीनसौ वर्ष राज्य करताभया ७८। ७९ फिर चम्पकमालिनी विषयाने शूरवीर तेजस्वी मकरध्वज और पद्माक्षनामक पुत्रोंको उत्पन्नकिया८०हे महाबाहो, पार्थ! चन्द्रहासपुत्र के आगे शालग्राम शिलाके सङ्गसे भवरूपी ससारको उतरगया तिसकारणसे मनुष्य नित्यही शालग्राम शि-लाका पूजन करें और शालग्राम शिलाचक्र द्वारका से उत्पन्नहै और हे पार्थ! कलिकालमें भगवान् जनार्दन शालग्रामशिलाको कभी त्याग न करेंगे सम्पूर्णलोकों के उपकारके लिये यतीरूप करके भगवान् वर्त्तमान हैं८१। ८३ तिसकारणसे सम्पूर्ण प्रयत्नसे यतीरूप भगवान् सर्वदा पूजनीयहैं देवदेव भगवान् के चर अचर ये दो रूपहैं ८४ और चरसंन्यासी को कहते हैं और अचर चक्रचिह्नित अर्थात् वृक्षादिकोंको कहते हैं जो संसार सागरको पारहोनेकी इच्छाहो तो शालग्राम शिलाकी भक्तिपूर्वक पूजनकरो और हे महामते! शालग्रामशिला चक्रको जो विष्णुभक्त ब्राह्मणको दान करतेहैं तिनको हे महीपते! मुक्ति कुछ दुर्लभ नहींहै व शैलपति अर्चित पूजित ध्यायित सस्तुत पापियों के उपकारके भी लिये होतेहैं फिर धर्मशील पुरुषों की क्या बात है और नैमिषक्षेत्र प्रयाग गङ्गासागर व कुरुक्षेत्र के सङ्गम अर्थात् स्नानकरने से शालग्राम शिला का पूजन

शतगुण अधिकहै यदि कोटिन जन्मके उत्पन्न पातकों से भी युक्तहै तिसपरभी शालग्रामकी शिलाके पूजन से सम्पूर्ण पाप छूटजाताहै इसमेंकुछ संशय नहीं शालग्रामकी शिलासे छूटाहुआ चन्दन व कुंकुम ८९।९० देहमें जो लगाताहै सो नित्यही मुक्तहै इसमें संशय नहीं। और शालग्रामकरके छूटाहुआ निर्माल्य जो शिरमें लगाताहै उस पुरुषको हरिही मानना योग्यहै यह ब्रह्माजीने अपनेही मुखसे वर्णन किया है और शालग्रामकी चढ़ी नैवेद्य जो भक्षणकरता है ९१।९२ तिसको एक रकणिका में कपिला गौके दानके समान पुण्य होताहै और जो पुरुष प्रतिदिन शालग्राम शिलाका स्पर्श करतेहैं ९३ वह पुरुष राजा पितृदेवताओं की पूजनमानों करही चुके और जो पुरुष शालग्रामके समीप में नित्य नैमित्तिक श्राद्ध करतेहैं वह गयाश्राद्धके समान होताहै और शालग्राम के समीपमें जो भक्तिपूर्वक भारत व हरिवंश पुस्तक बांचताहै वह पुत्र व धनको प्राप्त होताहै व भुक्ति मुक्तिफलको देनेवाली पुण्य श्रीमद्भागवत इष्टमनकरके जो पुरुष सुनता है सो बहुतजनों को पवित्र करदेता है और शालग्राम शिला जिसके घरमें सदैव विद्यमान रहतीहै ९४।९७ तहां तिसके स्थानमें सम्पूर्ण तीर्थ व यज्ञ व देवता स्थित रहते हैं और अन्तकालमें जिस पुरुषके मुखमें शालग्राम शिला का जल डालाजाता है वह पुरुष चाहे पापी भी हो पर उससे छूट परमगति को पाता है नारायणके सिवाय इस संसार में कोई

बन्धु नहींहै न तिथियोंमें द्वादशीके समान कोई तिथि है १८।१९ और विष्णुके चरणामृतके समान तीनोंलोक में कोई तीर्थ नहीं है और नवीन पत्रवाली तुलसीके देखनेसे सम्पूर्ण पातक नाशहोते हैं क्योंकि उस तुलसी की बड़ी२ मञ्जरीमें नित्यही केशव भगवान् वासकरते हैं और हे अर्जुन! गिरेहुये भी तुलसीपत्र करके जो भगवान्को पूजन करताहै उसको यज्ञ कियेके समान पुण्य होताहै इसमें कुछ संशय नहीं है इतनी कथा सुनाय नारदजी बोले कि हमने शालग्राम शिलाकी सम्पूर्ण महिमा तुमसे वर्णनकी १००।१०२ और बहुत महिमाहै इस से हम वर्णन करनेको समर्थ नहीं हैं अब हम देवताओं के मन्दिरोंको जाते हैं इसप्रकार कह नारदजी चलेगये तब अर्जुनवड़े विस्मयको प्राप्तभये १०३ कि महात्माओं से सत्सङ्ग के विना लोकमें पुरुषको कुछ सुख नहीं मिलताहै इसप्रकार से कहतेहुये सब सजाओंकरके युक्त सव्यसाची अर्जुनने चन्द्रहास के कौन्तलक नाम नगर में बड़े आनन्दसे गमनकिया १०४ जैमिनिजी बोले कि यह इतिहास जो भक्तिपूर्वक पढ़ता अथवा सुनताहै सो नानाप्रकार के भोगोंको भोगकरके अन्तसमयमें विष्णुलोकमें पूजित होताहै १०५॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांचन्द्रहासोपाख्यानेशालग्रामशिलामहिमावर्णनोनामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

इतनी कथासुन जनमेजय बोले कि हे जैमिने! चन्द्र-

हासने उन दोनों घोड़ों को पकड़ा या नहीं यह सम्पूर्ण हम पूछतेहैं आप वर्णन कीजिये १ जैमिनिजी बोले कि प्रातःकाल में कौन्तलकपुर के बाहर स्थित घोड़ों को पद्माक्ष व मकरध्वजने देख २ बड़े विस्मय को प्राप्त दोनों घोड़ोंको पकड़कर पत्रोंका अभिप्राय देख पिताके पास दोनोंगये ३ तब चन्द्रहासभी दोनों घोड़ा आये देख हे पार्थ! बड़े आनन्दको प्राप्तहुआ और विचार किया कि इससे कृष्णका समागम होगा ४ बाल्यावस्था से लेके हमने जो हरिभगवान् का चिन्तवन किया है सो केशव भगवान् अर्जुनके साथ यहांपर निश्चयकरके आवेंगे ५ तब चन्द्रहास विषयापुत्र से सुन्दर बचन बोले कि हे पुत्र! इस समयमें साक्षात् धर्म के घोड़ा प्राप्त भये हैं ६ हमने सुना है कि वर्षपर्यन्त पार्थादिकों करके ये घोड़े रक्षित हैं और इन दोनों घोड़ों को जो वर्षपर्य्यन्त पकड़े रहोगे तो यज्ञ विफल हो जायगी ७ हे पुत्र! तुम इन दोनों घोड़ों की एक मास रक्षाकरो और इन दोनों को बाधके पीछे धर्मराजको देना ८ और हमारे सुकृतही करके युद्ध कर्त्तव्य है घोड़ोंका क्या प्रयोजन है और सुकृत वासुदेव के दर्शनसे होगा ९ और कहा कि हम अर्जुन से युद्ध करेंगे जिसकारण से हरिभगवान् सन्तुष्ट होवें इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि दोनों घोड़ोंको पालन करताहुआ विषया का पुत्र गया १० और चन्द्रहासभी सेनासमेत नगरके बाहर टिके उसी कालमें श्रीकृष्ण सारथी के समेत अर्जुन वहां प्राप्तहुये

तब अर्जुनने बड़ावैष्णव शंखचक्र करके अङ्कित शरीर व ऊर्ध्वपुण्ड्रको धारण किये व श्रीकृष्णचन्द्र के पादार-बिन्दोंकी तुलसी करके पवित्र मस्तक व अवस्था व तपस्या व ज्ञानमें वृद्ध व संग्राम में नवीन चन्द्रहासको देखा ११।१३ तब अर्जुनने कहा कि हमाराजन्म व कुल सफलहुआ कि बाल्यावस्था से लेकर वैष्णव चन्द्रहास को हमने देखा तिसके अनन्तर चतुर्भुज श्रीकृष्णचन्द्र रथकेआगे बैठे तब शङ्ख चक्र गदा पद्म इत्यादिक आयु-धोंकरके शोभित पुण्डरीकाक्ष भगवान् को चन्द्रहास ने देख शीघ्रही रथसे उतर अर्जुन के आगे कृष्णजी को नमस्कारकिया १४।१६ हे विशापते! तब चन्द्रहास को कृष्णभगवान् दोनों भुजाओं से मिले तब वासुदेव जी बोले कि हे पार्थ! ध्रुवके समान हमारा भक्त महाबाहु दृढ़ सद्धर्मके करनेवाला चन्द्रहास तिसको मिलो तब अर्जुन बोले कि अपनासे अनुष्ठित परधर्म से विगुणभी अपना धर्म कल्याणकारी है १७। १८ इसप्रकार आपसे भीष्म के समागम मे शिक्षितभये हैं सो हे देवकीनन्दन! इस समय तुम बिपरीत बचन कैसे कहतेहो १९ और अब इसमें युद्धकरना योग्य है और आप मिलापकरना अब कैसे कहतेहैं और इस राजाको वृद्धहोनेसे इसके दोनों चरणारबिन्दों को हम नमस्कार करते हैं २० तब इतना सुन श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि हमारा भक्त सदैव नमस्कार करने योग्यहै और मिलना तो विशेषही है और पुरुष को सौ कपिला गोदान करने से जो फल होता है सो

सम्पूर्णफल वैष्णवों के मिलनेसे होताहै और हमारेभक्तों से प्रीति होना है सो धर्म कहाता, है वैष्णव हमारे प्रिय चन्द्रहासको मिलो जैमिनिजी बोले कि तत्पश्चात् कृष्ण वाक्यसे सन्तुष्ट अर्जुन चन्द्रहास को मिलकर बैठे तद नन्तर चन्द्रहास ने कहा कि हे पाण्डुपुत्र! हमभी जिस वास्ते यहांपर स्थितहैं और तुम्हारा यज्ञ विध्वंसित हो इसलिये घोड़ेकी रक्षाकरने वास्ते अपने पुत्र भेजे हैं और हमलोगोंकी मित्रता भगवान् के वचनों से उत्पन्न हुई तिसकारण से हमलोग भगवान्के आश्रितहैं २१। २५ इसप्रकार से दोनों अपने में सम्भाषण करते थे उसीसमय में जिस जगह कृष्णार्जुन विद्यमान थे तहां पर दोनों घोड़ा आये और तिनके पीछे विषया पुत्र ने आकर कृष्णार्जुन व, अपने पिता को नमस्कार किया और प्रद्युम्नादिक यदुवंशियों करके अति सन्मान पूर्वक पूजित चन्द्रहास वचनों के विलासों करके श्रीकृष्णकीस्तुति करताहुआ २६। २७ खड़ाहुआ जैमिनिजी बोले कि बड़े उत्सवपूर्वक कृष्णार्जुन को नगर में प्रवेश कराय कृष्णकेसमेत पृथ्वीमें इन्द्रके समान चन्द्रहास बड़ी शोभाको प्राप्तहुआ २८ और चन्द्रहास के आश्रयसे कृष्णमें परायण सम्पूर्णजन व धृष्टबुद्धि भी मदनपुत्र समेत चन्द्रहासके आश्रयसे कृतार्थ हुये २९ और वैष्णवकी अनुग्रहसे वासुदेवके पदकोप्राप्त हुये तदनन्तर राजाने गालवको बुलाय श्रीहरिको पूजनकिया ३० तब आतेहुये योगिराज परमानन्द में मग्न गालव को

श्रीकृष्णने देख नमस्कार किया ३१ और गालवने भी अव्यय परमात्मा भगवान्को नमस्कार किया और मन से भगवान् के पद ध्यान करते हुये मुहूर्त्तमात्र भगवन्मयी कहे तन्मयी हुये ३२ और चन्द्रहास करके तोषित भगवान् पूजाको प्राप्त हुये और तीनरात्रि नगर में बासकर गालवकी आज्ञासे कमललोचन कृष्ण ने नगर से प्रस्थान किया और चन्द्रहासने भी अपना राज्य आनन्दपूर्वक भगवान् के हाथमे दिया ३३। ३४ और कृष्णने भी अर्जुनकी आज्ञासे सम्पूर्ण राज्य चन्द्रहास के पुत्रको दी और अर्जुन चन्द्रहास के दर्शन से बड़े आनन्दको प्राप्तहुये ३५ चन्द्रहासका यह समग्र चरित्र जो कोई सुनता है या भक्तिपूर्वक पढ़ता है सो पुरुष बल व आयुष और अच्छे आचारवाले विष्णु के भक्त दानी पुत्रोंको प्राप्तहोता है ३६ और अन्तकालमें बड़ी दृढ़ कृष्ण भगवान्में भक्तिहोती है और उसको वासुदेव भगवान् संसाररूपी समुद्र से उतारदेते हैं ३७॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायाचन्द्रहासोपाख्यान समाप्तिर्नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥

साठवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! राजा चन्द्रहास पुत्र को राज्य देकर यह बोला कि वृद्धावस्थामें अब हमको मोक्षके अर्थ वन जाना योग्य है और इस समय में सो मोक्ष सुलभ है और वह मोक्ष कृष्ण के दर्शनसे उत्पन्न

हुआहै तिससे मैं हरिभगवान्को न छोडूंगा १।२ इस प्रकार महातेजस्वी चन्द्रहास पुत्रको शिक्षा देकर अर्जुन के घोड़ोंकी रक्षा करतेहुये श्रीकृष्णके साथ जाता भया ३ और जिन २ देशोंमें वे घोड़ागये तिन २ देशों के अध्यक्ष नमस्कारकर भयभीतहो घोड़ोंको छोड़देते भये ४ और कोई श्रीकृष्ण करके सादर दोनों घोड़ों को पालित देख उन वाजियों को प्रदक्षिणाकर भक्तिसे पूजन करके नमस्कारकर आगे खड़े होते हैं ५ इसके उपरान्त हे विशापते! दोनों घोड़ा उत्तरदिशि सरितों का स्वामी समुद्र तिसके अगाध जलमें प्रवेश करते भये ६ तब दु खितहो पाचों योधाओं में मुख्य अर्जुन विष्णुभगवान् से बोले कि इस समयमें क्या करना चाहिये जिससे वे दोनों अश्व मिलजावें तब श्रीकृष्ण जी बोले ७ कि तुम पाचों जलमें बलवान्हो अर्थात् जल में चलसक्के हो तुम व सुन्दर, हंसध्वज और, सर्वजित् बभ्रुवाहन, और हमसे उत्पन्न प्रद्युम्न व मयूरकेतु ये पाचरथी सब जगहमें जानेवाले हैं इसप्रकार श्रीकृष्ण के कहते हुये सब समुद्र में प्रवेश करगये तो अर्जुन ने समुद्र के मध्य द्वीपमें स्थित मुनिवृद्धको देखते भये जो कि जलविषे हाथसे वटपत्रको धारण किये हैं ८।१० और वह पत्ता महाजीर्णहो सूखगयाहै और सैकरों उसमें छेदहैं और ऐसे फटे मन्दिर से शोभित है ऐसे वकदाल्भ्य महाभाग मुनिजी नेत्र मूदे बैठे देख सब लोगोंने रथसे उतर आनन्द से प्रणाम किया तब मुनि-

प धारण करके वटपत्र में सोते जिससमय
नब हमने कुछ प्रार्थना नहीं की २९।३०
लक्ष्मीको प्राप्तहोकर धर्म के पुत्र तुम हम
ण दर्शन नहीं देतेहो और हे जगन्निवास!
कर अपना धर्मपुर दिखाओ ३१ जैमिनि
इस प्रकार से कहके सो मुनि श्रीकृष्ण को
नन से बोले कि हमारे रहनेकेवास्ते यह घर
जिस घरमें स्त्री रहती है उस घरमें निश्चय
होती है मैं क्या करूं मेरे तो इस समय न
भी है हे पार्थ! इसप्रकारकी स्त्रीको इच्छा कर-
इतना समय सूखे पत्तोंकरके व्यतीत किया
में स्त्रियोंसे युक्तकर देखताहू ३२।३३ इस
सुते वकदाल्भ्य मुनिको सुन्दर वचनों से श्री-
बोधकरते भये कि तुम्हीं साक्षात् पुराण पुरुष
ह्माकी विंशीको देखा है ३४ इससे तुम हम
नीयहो और तुम्हीं यज्ञरूप उत्पन्नभये हो
धर्मके पुत्रहो तब हँसतेहुये मुनि बोलतेभये
। तुमने सम्पूर्ण भार हमारे ऊपर रखदिया
पूर्णभार हमको महागम्भीरहै जिनके नाभि
ऐसे तुमहो और तुम्हींसे वेदमूल ब्रह्मा
अर्थात् सर्व मूल [illegible] हो ३६ और
वेद [illegible] चालिसवर्ष
बुलाय [illegible] र्वके भारसे
७ [illegible] इस पत्ते

होगा और फिर हम पुत्रका मुख कब देखेंगे २२ इस प्रकार गृहस्थ स्त्री की पाशमें बँधा सदैव यही चिंतना करता किंतु धर्ममार्ग की कभी नहीं करताहै इसकारण हमने स्त्रीका संग्रह अर्थात् विवाह नहीं किया और अवस्था थोड़ी है इससे कोई पर्णशाला कहे कुटी नहीं बनाई २३ यह सुन पार्थ बोले कि तुम्हारी कितनी अवस्था व्यतीतहुई कि तुम मस्तक में सूखा पत्ता धारण कियेहो तब बकदाल्भ्य मुनि अर्जुनसे बोले कि यहां स्थितभये हमको बहुतकाल व्यतीतहुये २४ कि मार्कण्डेय लोमश इत्यादिक बहुत हुये हैं तिनकी गणना करनेको मैं समर्थ नहीं हूँ और हमारे सामनेही ब्रह्माकी विंशति समाप्तहोगई हैं तबसे हम यहां स्थित हैं २५ हे अर्जुन! तिससे मैं यहां वारम्वार नाशको प्राप्तहोताहूँ जब जब ब्रह्माका अंतहोता है तब तब सब जगत् जलमयी होजाताहै २६ एक गम्भीर पत्रवाला वट वृक्ष सैकरों शाखाओं से शोभायमान होताहै और वह आकाश व पृथ्वीको आच्छादित कियेहै तिसकी शाखामें हँसता व रोताहुआ गौरवर्ण सुन्दर नासिका मनोहर मुख बालक को २७ अपने पैरका अँगूठा मुखमें लगाये देख हमभी समुद्र में डूबगये उस बालक की समान इस समय में अन्य वार्त्ता नहीं २८ सोई बालक इस समय में कृष्णरूपकरके उत्पन्न हुआहै तुम पांचोंकिसाथ बासकरते हम को दर्शन दिये हैं बकदाल्भ्यजी बोले कि किसहेतु तुम हमको विहाय दूर २ जातेहो और जलमें तुम हमको

बालक को रूप धारण करके वटपत्र में सोते जिससमय दर्शन दियो तब हमने कुछ प्रार्थना नहीं की २९। ३० युवावस्था की लक्ष्मीको प्राप्तहोकर धर्म के पुत्र तुम हम को किस कारण दर्शन नहीं देतेहो और हे जगन्निवास! हमको मिलकर अपना धर्मपुर दिखाओ ३१ जैमिनि जी बोले कि इस प्रकार से कहके सो मुनि श्रीकृष्ण को मिलिकै अर्जुन से बोले कि हमारे रहनेकेवास्ते यह घर शोभायमानहै जिस घरमें स्त्री रहती है उस घरमें निश्चय से मुक्ति प्राप्तहोती है मैं क्या करू मेरे तो इस समय न घर और न स्त्री है हे पार्थ! इसप्रकारकी स्त्रीको इच्छा कर-ताहू जिससे इतना समय सूखे पत्तोंकरके व्यतीत किया है इस समय में स्त्रियोंसे युक्तकर देखताहू ३२। ३३ इस प्रकारसे कहते बकदाल्भ्य मुनिको सुन्दर वचनों से श्री-कृष्णजी प्रबोधकरते भये कि तुम्हीं साक्षात् पुराण पुरुष हो तुमने ब्रह्माकी विंशीको देखा है ३४ इससे तुम हम सबको पूजनीयहो और तुम्हीं यज्ञरूप उत्पन्नभये हो और तुम्हीं धर्मके पुत्रहो तब हँसतेहुये मुनि बोलतेभये कि हे विष्णो! तुमने सम्पूर्ण भार हमारे ऊपर रखदिया ३५ यह सम्पूर्णभार हमको महागम्भीरहै जिनके नाभि से कमलोत्पन्न ऐसे तुमहो और तुम्हींसे वेदमूल ब्रह्मा उत्पन्न भये हैं अर्थात् सर्ववेद मूल तुम्हीं हो ३६ और महाकल्प के विषे वेद सज्ञा जो ब्रह्माहैं सो चालिसवर्ष के उपरान्त हमको बुलाय वेदको पढ़तेहुये गर्वके भारसे ये वचन बोले कि ३७ तुमकोहो और किस हेतु इस पत्ते

को धारेहो तुमने बड़ीघोर तपस्या की तुम्हारी कामना को जानकरके हम प्रसन्नमये हैम ब्रह्मा हैं तुम विप्रहो अब अपने वांछितकी प्रार्थना करो ३८ सो सुनके हम अहङ्कार के भारसे बोले कि हे दुरात्मन् ब्रह्मन् तुम दूर जावो तुम्हारी समान विंशी वहुत देखी हैं तुम हमको क्यादोगे जावो ३९ इसप्रकार से हमको कहते बड़ी प्रचण्ड पृथ्वीको विदीर्ण करते हुये पवन उत्पन्नहुई और बड़े वेगसे वृक्षोंको भङ्ग करदिया तिस समय में आकाश व पृथ्वी दोनो कम्पितहुये ४० और जैसे कर्मकरके हीन जन्तु औदुम्वरी कहे गुलरी के फलमे अन्यफल में प्रवेश करते हैं तैसेही दूसरे फलरूपी विष्णुके ब्रह्माण्डों में हमारे समेत व चतुर्मुख ब्रह्मा दोनों जातेमये इससे रमणीय ब्रह्मलोक तिसमें प्राप्तहोकर मैं विस्मय को प्राप्त हुआ तब अष्टमुख ब्रह्मा बुलाय पूँछते हुये बोले ४१।४२ किस कारण तुम दोनों अपूर्वजन प्राप्त हुये हो और तुम्हारा क्या नाम है सो हमारे आगे कहो तब चतुर्मुख ब्रह्माने कहा कि हम सत्यलोकसे आये हैं ४३ और यह हमारा बकदाल्भ्यनाम शिष्य हमारीसेवाके अर्थआयाहै यह सुन अष्टमुख ब्रह्मा बहुत हँसे और कहा कि तुम ब्रह्माहो और ये तुम्हारा शिष्य है ४४ तबतक हम शौच करतेभये कि और उनके शौचके निमित्त हमदोनों स्वस्थचित्तहो यहा सुन्दरजल लातेभये ४५ इसप्रकार ब्रह्माके कहते बड़ी महान् वायु चलतीभई तब हमारे समेत ब्रह्मा तीसरे विष्णुलोक को प्राप्तभये ४६ जिसलोक में सुन्दर

पुरुष हम सबको देखकर हँसतेभये यह कहा कि तुम सब कौनहो कहांसे आयें तुम्हारा क्या नाम है सो सब लज्जा छोड़कहो ४७ तब अष्टमुख ब्रह्मा बोले कि हम ब्रह्माहैं और सुन्दर ब्रह्मलोकसे आये हैं तब सो विष्णुलोकके जन अष्टमुख ब्रह्मासे चतुर्मुख ब्रह्माके सुनतेहुये बोले ४८ कि आयकरके देखो विरंचि गर्वको त्यागिकै मौनहुये बैठेहैं तब चतुर्मुख ब्रह्मा व हम सब नमस्कार करके बड़ी भयको प्राप्त षोड़शमुख ब्रह्माको देखतेभये ४९ तब सोरहमुखवाले अष्टमुखको व अष्टमुखवाले चतुर्मुखको देखकर हँसे और कहतेभये कि हमसे ये बड़े सुन्दरहैं बड़े सुन्दर हैं इस प्रकार गर्वको प्राप्तहुये५०।५१ तब वहांभी बड़ी प्रचण्डवायु आई तिससे हमसब नीचेको मुख ऊपरको पैरकिये उड़तेहुये अन्य ब्रह्मलोक को गये ५२ जहां सुन्दर बत्तिसमुखवाले ब्रह्मा जिस रमणीय लोकमें रहते हैं तहां किसीसे कोई जन कुछ न पूछताभया न कहताभया ५३ तब हम सबको देखकर बत्तिसमुखवाले ब्रह्मा कृपापूर्वक बुलाकर पश्चात् नाम पूछतेहुये बत्तिसमुखवाले ब्रह्मा पहले बहुत हँसकर अत्यन्त गर्वसे सत्यबाणी कहतेभये कि हमारे सिवाय दूसरा कोई इसलोकमे नहीं है जहांतक खद्योत कहे जुगुनू व अलि भ्रमर और अन्धकार के नाशकरनेवाले सूर्य हैं ५४। ५५ बत्तिसमुख ब्रह्माके कहतेहुये फिर वही प्रचण्ड पवनचली तब उससे हम सब घूमते हुये चौंसठ मुखवाले ब्रह्माके ब्रह्मलोकको गये तिसलोकमें गर्वकेसहित चौंस-

ठमुखवाले ब्रह्माकी बत्तिसमुखवाले ब्रह्मा से अधिक वृद्धिदेखी ५६। ५७ तब सब सहस्रनयन सहस्रमुखवाले विष्णुभगवान् को सनकादिक मुनि व देवताओं करके स्तुतिकरतेहुये विराजते देखा ५८ तब हम सबको देख सहस्रवदनवाले भगवान् बोले कि तुम सब पूजनीय कहांसे आयेहो यहां अच्छेप्रकार से बैठो ५९ तब हम सब बोले कि तुम्हारे प्रसाद से अनुत्तमगतिको प्राप्तहुये यह कहकर बोलतेहुये पुराणपुरुषको नमस्कारकर पृथ्वीपर गिरपड़े ६० तब गर्वको छोड़ ब्रह्मा भगवान्की स्तुति करतेभये तब प्रसन्नहोकर भगवान्ने यथायोग्य स्थानों में सबको प्राप्तकिया ६१ तिन ब्रह्माओंको छोड़ हम इस अम्बुधि समुद्रमें प्राप्तहुये हैं तिससे सत्वार्त्ताके जाननेवाले पुरुषोंको गर्व न करनाचाहिये ६२ मुनिके ये वचन सुन कृष्णार्जुन दोनों हर्ष को प्राप्त हुये और घोड़ों को देख कथाको सुनकर समुद्रसे निकल श्रीकृष्ण मुनि की प्रार्थना कर पालकी में सवारहुये ६३। ६४॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांबकदाल्भ्यसंवादोपाख्यानोऽध्यायः ६०॥

इकसठवां अध्याय॥

तब वाजियोंको लेकर शीघ्र जयद्रथके पुरमें पहुँचते भये जहां पर बालक दो शलेय राजा हैं १ सचिव सब सेवन करतेहैं जिसकी ऐसाजो जयद्रथ राजाहै सो अर्जुन आये हैं यह सुनताभया कि जिन्होंने राजाओंको मारा है २ तब बड़े शब्दकरिके रोमोंको ठाढ़कर वपुको कँपाताहुआ सिंहासनमें बैठेहुये डरते प्राणोंको त्याग देताभया ३ तब

बिलापको करतीहुई अर्जुनके समीप दुःशला आतीभई और कृष्णको देखकर नमस्कारकर हमारी रक्षा करो यह बड़े शब्दसे बोली ४ अर्जुन ने हमारे स्वामीको मारडाला और सुतभी उसी के भयसे मरगया तिससे हे जगन्नाथ, कृष्ण! हम तुम्हारी शरणमें प्राप्तहैं ५ इसके उपरात अर्जुन रथसे उतरकर अनुजाको नमस्कारकर कहते भये हमने तुम्हारे पुत्रका कुछ अपराध नहीं किया है ६ तेहूपर सब हमारा अपराध जोहमने पहले कियाहै क्षमापन करो और सहस्र और लाखन मतवारे हाथीले ७ सब बैरियों को जीतकर उनकी सब राज्य तुमको देदेऊंगा ऐसे अर्जुनके वचन सुनके दुःशला अतिदु·खकोप्राप्त भई ८ कृष्णको नमस्कारकर फिर बोलती भई बड़े क्लेशकरके पीड़ित हेमहाराज!दु खके नाशनेवाले यहापर एक प्राणियोंके हृदय में बसे तुमहींहो ९ द्रौपदीने प्रथम तुमको स्मरण कियाथा तिसकेदु खको नाशकिया और बहुत जन्तुओं के स्मरण ही से दु·खनाश किया १० आज तुम्हारे दर्शनही से हम कृतार्थ होगई हे स्वामी! पार्थने हमारे पुत्र और पति दोनोंको मारडाला ११ तिस अर्जुनके लज्जा सम्बन्धों करके नहींभई इससमय में पुत्र और राज्य दोनों करके हीन करदीन्हींगई १२ सो तुम कैसे घोड़े और हाथी सैकरों देवेको कहतेहो इसप्रकार बहुत कहती हुई भगवान् के चरणों में गिरपड़ती भई १३ देवतों को दुर्लभ चरणकमलोंको नेत्रके जल करके ओद करदेतीभई इस प्रकार दुखिया के दुख नाशनमें परे जो नारायण हैं सो तिसको

देखकर १४ वहुत समझावतेभये भवमायाकरके पीड़ित जो दुःशलाहै ताहि उठो २ ऐसा कहकर तुम्हारा कल्याण होवे पुत्रके समीप जावो यह कहतेभये १५ इतना कहकर पार्थसहित पुरको जातेभये तहा महलमें सभाविषे सुन्दर तनयको देखतेभये १६ हे वत्स! हमारे समीप भय न करो उठो २ यह कहकर उस वालकको भगवान् हाथकरके छुवते भये सो उसीसमय उठकर भगवान्को, नमस्कार करताभया १७ तव आनन्दकरके युक्त सवजन पुरजाते भये तिसके वीचमें कृष्ण अर्जुन दोनों विराजतेहुये सब जन भेरी मृदङ्ग पटह और गीत नृत्य देखतेभये १८ तव सवजन भगवान्के सन्मुख वड़ेमगल करतेभये और अर्जुन पुत्रसहित दुःशलाको शांत करतेभये १९ आज से वर्ष पूरहोगया कि हस्तिनापुर जावें और पार्थती व कुन्ती के देखवेके लिये निमंत्रित तुमभी जावो २० हे राजन्! इसप्रकार तिसको कहते अर्जुन आनन्दको प्राप्त होते भये जैमिनिजी वोले हे राजन्! आनंद सहित दुःशला फिर भगवान् से बोली २१ इसी प्रकार तुम भक्तोंको आनन्द जीवन करतेहो अव तुम्हारे प्रसाद से हमको राज्य मिली हम धर्मराज के समीप को जाती हैं २२ इस प्रकार कहकर पुत्र सहित हस्तिनापुरको जातीभई तव अर्जुन पाडव यज्ञके लिये तौन सव लावतेभये २३॥

इत्यारवमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांमयद्रपपुरेदुश्शलासांत्वनं नामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

बासठवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हे राजन्! इसप्रकार एकवर्ष देवकी-सुत भगवान् अर्जुनके दूनों तुरङ्गमोंको अपनी लीला करके सुन्दर बनमें घूमतेहुये धरलिया १ तब भगवान् ने कहा कि हे अर्जुन! देखो बीर राजाओंकरके युक्त पृथिवी में घूमते घोड़े बड़ीभाग्यसे मिले हैं २ बहुत यमोंकरके बहुत काल धर्मराज दुःखको सहाहै अग्नि के समीप कर्मकरते हुये एक बरसगया ३ आज सब राजा धर्म-राज सुत धर्मराजा को देखने हेतु तुमकरके सहित आवेंगे ४ तब नाना प्रकारके बाजा बजावते और नृत्य करनेवाले बहुत तालों करके हाथ और कानों से घोड़ोंको आगेकर ५ प्रद्युम्न अनिरुद्ध महाबली वृषकेतु बभ्रुबाहन शैनेय वीरवर्मा शाल्वक ६ बर्हिकेतु हसकेतु नीलध्वज ताम्रध्वज महावीर प्रवीर महारथ ७ और यौवनाश्व चन्द्रहासादि बहुत राजा कटक अङ्गद इत्यादिक हारों करके शोभित ८ तुङ्गल चामर धूप वास पुष्पों करके शोभित और नानाप्रकार के कुसुमके मालों और श्रेष्ठ चम्पोंकरके शोभित सब राजा ९ रात्रि को पुरमें जातेभये तहां दीपोंकरके प्रकाशित व गंध तैल करके सुगंधित वंदीजन बहुत स्तुति करतेभये १० हमीं आगे धर्मराजके पुरको जायँगे यह कहते हे राजन्! इस प्रकार कहकर कृष्णजी हस्तिनापुर को जातेभये जहां महाऋषि सहित धर्मसुत बैठे हैं ११ गङ्गाकेतीर सु-

देखकर १४ बहुत समझावतेभये भवमायाकरके पीड़ित जो दुःशलाहै ताहि उठो२ ऐसा कहकर तुम्हारा कल्याण होवे पुत्रके समीप जावो यह कहतेभये १५ इतना कहकर पार्थसहित पुरको जातेभये तहां महलमें सभाविषे सुन्दर तनयको देखतेभये १६ हे वत्स! हमारे समीप भय न करो उठो २ यह कहकर उस बालकको भगवान् हाथकरके छुवते भये सो उसीसमय उठकर भगवान्‌को नमस्कार करताभया १७ तब आनन्दकरके युक्त सबजन पुरजाते भये तिसके बीचमें कृष्ण अर्जुन दोनों बिराजतेहुये सब जन भेरी मृदङ्ग पटह और गीत नृत्य देखतेभये १८ तब सबजन भगवान्‌के सन्मुख बड़ेमंगल करतेभये और अर्जुन पुत्रसहित दुःशलाको शांत करतेभये १९ आज से वर्ष पूरहोगया कि हस्तिनापुर जावें और पार्षती व कुन्ती के देखवेके लिये निमन्त्रित तुमभी जावो२० हे राजन्! इसप्रकार तिसको कहते अर्जुन आनन्दको प्राप्त होते भये जैमिनिजी बोले हे राजन्! आनंद सहित दुःशला फिर भगवान् से बोली २१ इसी प्रकार तुम भक्तोंको आनन्द जीवन करतेहो अब तुम्हारे प्रसाद से हमको राज्य मिली हम धर्मराज के समीप को जाती हैं २२ इस प्रकार कहकर पुत्र सहित हस्तिनापुरको जातीभई तब अर्जुन पाण्डव यज्ञके लिये तौन सब लावतेभये२३॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांजयद्रथपुरेदुःशलासांत्वनं नामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

बासठवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले हे राजन्! इसप्रकार एकवर्ष देवकी-सुत भगवान् अर्जुनके दुनों तुरङ्गमोंको अपनी लीला करके सुन्दर बनमें घूमतेहुये धरलिया १ तब भगवान् ने कहा कि हे अर्जुन! देखो बीर राजाओंकरके युक्त पृथिवी में घूमते घोड़े बड़ीभाग्यसे मिले हैं २ बहुत यमोंकरके बहुत काल धर्मराज दुःखको सहाहै अग्नि के समीप कर्मकरते हुये एक बरसगया ३ आज सब राजा धर्म-राज सुत धर्मराजा को देखने हेतु तुमकरके सहित आवेंगे ४ तब नाना प्रकारके बाजा बजावते और नृत्य करनेवाले बहुत तालों करके हाथ और कानों से घोड़ोंको आगेकर ५ प्रद्युम्न अनिरुद्ध महाबली वृषकेतु बभ्रुबाहन शैनेय बीरवर्मा शाल्वक ६ बर्हिकेतु हंसकेतु नीलध्वज ताम्रध्वज महावीर प्रवीर महारथ ७ और यौवनाश्व चन्द्रहासादि बहुत राजा कटक अङ्गद इत्यादिक हारों करके शोभित ८ तुङ्गल चामर धूप वास पुष्पों करके शोभित और नानाप्रकार के कुसुमके मालों और श्रेष्ठ चम्पोंकरके शोभित सब राजा ९ रात्रि को पुरमें जातेभये तहां दीपोंकरके प्रकाशित व गंध तैल करके सुगंधित बंदीजन बहुत स्तुति करतेभये १० हमीं आगे धर्मराजके पुरको जायँगे यह कहते हे राजन्! इस प्रकार कहकर कृष्णजी हस्तिनापुर को जातेभये, जहां महाऋषि, सहित धर्मसुत बैठे हैं ११ गङ्गाकेतीर सु-

न्दर क्षेत्र दिव्य मण्डपों करके मण्डित जहां देवकी मुख्य ऐसी नारी महा सुन्दरी शोभती हैं १२ धर्मराज के घरमें जाकर राजाओं को देखकर नमस्कार कर राजाकरके सन्मानित भगवान्‌जी आगे बैठते भये १३ तहांपर सबराजा अर्जुन को सराहतेभये कि अश्वमेध यज्ञमें ये परिरक्षक हुयेहैं राजाओं के समूह में नीलध्वज हंसकेतु और जे महाबली राजाहैं १४ और महाबली मयूरकेतु जिसने बहुतबार परीक्षादी है और हे धर्मराज! तुम्हारे भाईने तुम्हारीही पुण्यसे राजाओं को जीताहै १५ हे राजन्! इन्होंने सुधन्वाको संग्राममें बड़ा परिश्रमकर हरादिया और सुरथको सहितभयके हरा दिया १६ तब मणिपुरमें जायकर घोड़ेसहित सव्यसाचीको पुत्र बभ्रुवाहन तिससे अर्जुन निहत होते भये १७ उलूपी भामिनी मणिकरके अर्जुनको जियावती भई प्रथम सर्ववीरों को प्रसन्न करनेवाला जो कर्ण का पुत्रहै तिसको जियाया १८ तिसकालमें सो पतिव्रताने शीघ्र जियाया तब पुत्रसहित अर्जुन सारस्वतपुरको जातेभये १९ जहांपर बीरवर्मा अपनेही उत्पन्न भयाहै तिस पीछे हे राजन्! कौंतलक नामपुरको तुम्हारा घोड़ा प्राप्त होताभया २० जहांसुरासुरों करके अजीत चन्द्रहास राजा रहताथा फिर समुद्रके मध्यमें तुम्हारा घोड़ा जाताभया २१ जहां अच्छे व्रतके करनेवाले सूखेपत्तों को मस्तक में धरके बकदाल्भ्यमुनि महातेजवान् तपस्याकरतेको बहुत कालतक रहेथे २२ तहां पार्थ इत्या-

दिक पाचोंबीर देखकर हम सहित तिनमुनिको नमस्कार कर तिनको आगे करके तुम्हारे भाई अर्जुन हमको लावते भये २३ तहा बहुत धन और रत्नादिक बहुत प्रकार के लेतेभये हे प्रभो! पृथ्वी भरमें तुम्हारा प्रताप अधिक है २४ इस प्रकार से कहके अपने अपने घर को सब राजा जातेभये हे राजन्! जैसे तुम हमको देखते हो तैसेही सबको देखो २५ हे भीम,बलवान्! यहा आकर हमको मिलो तब भीमादिक सबबीर भगवान् को नमस्कार करतेभये २६ भगवान् कुन्ती और सब माताओं को नमस्कारकर जे आगेआई थीं तिनसों अपनी कुशल कहतेहुये सबकी बन्दना करतेभये २७ द्रौपदी व सुभद्रा जनार्दनको नमस्कार कर आनन्द सहित कृष्णके समीप बैठतीभई २८ फिर कृष्ण गाधारी व धृतराष्ट्र व सञ्जय सहित विदुर को सुखपूर्वक देखकर मिलते भये २९ तिसपीछे भीमसेन सहित अपने घरको जातेभये जहां सत्यभामा रुक्मिणी देवी और लक्ष्मणा बैठी हैं ३० तिसी प्रकार कृष्ण के देखबे को अत्यन्त है लालसा जिनके ऐसी सुन्दरी जाम्बवती वा और भी बहुत स्त्रियां सब भगवान् को देखतीभई ३१ तब सत्यभामा घर में आये नाथसे बोलतीभई हे नाथ! तुमने सहितबल घोड़े के पाण्डवों को पालन कियाहै ३२ और कोई कुब्जा या बौनी स्त्री आपको मिली या नहीं जिस प्रकार संग्राम में अर्जुनको प्रमीला प्राप्तभई ३३ जैमिनिजी बोले तिनके बचन सुनकर हँसके भगवानजी समीप बैठे भीमसेनसे

बोले ३४ हे भीमसेन! इसके टेढ़े वचन सुनो जोकि हमारे सन्मुख कहती है पौत्रों सहित बहुत पुत्र उत्पन्न किये हैं ३५ युधिष्ठिर के नगर में बहुत वृद्धोंकी सभामें हमने नारीके स्वीकार में बहुतकाल रक्षाकी है ३६ इसप्रकार नहीं जानती हैं सत्यकहबे के रक्षामें बाल अवस्था में और इससमय जो कुछ किया सो हमारे प्रिय नहीं है ३७ इसी समय में राजाका दूत आता भया तब कृष्ण व भीमसेन को देखकर विनीत की समान बोलता भया ३८ तब राजाके स्थानमें कृष्ण मुख्य सबजन उठतेभये सब सहित हे कृष्ण! सुन्दर यज्ञकरो ३९ जैमिनिजी बोले तब महाबल देव राजाके समीप जायकर बोला हे राजन्! इस यज्ञशाला में तुम रहो ४० और हम सब धृतराष्ट्र और सब वृद्धोंको लेकर ऋषियों व भाइयों सहित आगे जाते हैं ४१ जहां अर्जुन महाबल के साथ बकदाल्भ्य को सुन्दरमार्गमें देखता भयाहै ४२ सन्मुख आवती जो कुन्ती और हमारी जे योषिता हैं ते सब मुनियों की स्त्रियों सहित सबको समझावें ४३ और वेद पढते जे ब्राह्मणादिक वर्ण हैं और गजों मे चढ़ी कुमारिका लाई की वर्षाकरें ४४ और पताको करके विराजित नगर में नर नानाप्रकार की नृत्यकरें ४५ और पुष्पोंकीरेणु की वर्षा करके और चन्दन सहित शीतल जलको राजाके पुरुष अर्जुन के मिलने में ४६ इसप्रकार सब जन भगवान्की आज्ञापाय और वैसाही करते हुये भगवान् को आगेकर पुरसे सब पुरवासी निसरते भये ४७

बड़ी भाग्यसे पार्थ के घोड़े मिलगये यह कहतेभये सब पुरवासी और अपनी बधुओं के झुंडोसहित रुक्मिणी पालकीपर चढजाती भई ४८ और ऊषा सहस्रनारिन को आगेकर मार्ग में चलती भई तिसी प्रकार सत्या अपनी सखियों को लेकर चलती भई ४९ कुसुम की समान और पारिजात के बसनों को सपेदे हँसनेवाले कुसुमरगके और कपासकी समान सपेदेवस्त्रोंको पहिनकर ५० मोतियों की माला धारण किये सुन्दर युवा स्त्रियोंके संग जाम्बवतीदेवी निकलतीभई ५१ तमाल समान कचुक सुन्दर बसनों में लगेहुये अति आनन्द से मार्गमें सबनारी जातीभईं ५२ और आपस के मिलाव के चलने से गिरतीहुई कुकुमकी रेणु करके और टूटेहुये मोतियों के हारोंकरके धरणीको शोभित करातीभईं ५३ और करोंमें कपूरके दानकरके हाथीपर चढी जो देवकी देवी वा यशोदा रुक्मिणी ५४ और घूमतेहैं चामर जिसमें ऐसे छत्रकोलिये कुंतीजी मतवारेहाथी पर चढकर पाण्डवोंकेसमीप जातीभई ५५ तब सबनारी बड़ेआनन्द सहित देखबेके वास्ते वासुदेव की पठाईहुई धनंजय के समीपगईं ५६ इस प्रकार से महाजनों सहित मलको दूरकरनेवाला प्रातःकालका स्नान करके और कुसुमकी गन्धको धरेहुये सुन्दर स्थलमें रहतेभये ५७ तब भगवान् चन्द्रमाकी समान प्रकाशित सेनाको छोड़कर आगे ब्राह्मण वेदको पढतेहुये स्थितहोतेभये ५८ और ब्राह्मणों की स्त्री आगे दही दूब अक्षत को लिये जातीभईं और

क्षत्रिय सुवर्ण के पात्रों में कपूरके दीपक लिये स्थित होतेभये ५९ और वेश्या सुवर्ण के पात्रोंमें गोरोचन कुंकुम चन्दन धरकर कुसुमकी समान वस्त्र पहिरे मुकुट को धारण किये आगे ठाढ़ी होतीभई ६० और काम के बढ़ानेवाले नयनों करके जवानों के मनको हरतीहुई वेश्या मनोहर मोतियोंकेहार पहिने महाजनों के आगे नाचनेलगीं और नाचगायके श्रीभगवान् को प्रसन्न करतीभई तिनके मनोहर भावोंसे व तालोंसे सब मोहित होगये और वे कमलके समान सुन्दर मुखमें बैठेहुये भ्रमरों को दूरकरतीभई ६१।६२

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांअर्जुनागमोनाम द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजन्! कितनेक कालमें राजाओं करकेघेरे अर्जुन जहा महाजनों के समेत कृष्ण भगवान् जिसपन्थ में स्थितरहैं तहा प्राप्तहुये १ और अर्जुन ने अपनी सैन्यकी ऐसी रचनाकी कि राजाओं के समेत अपने रथसे उतर घोड़ोंको आगे करके २ व राजाओं को आगेकर व बकदाल्भ्यऋषि को पालकी में चढ़ाय और सब राजा अपने २ रथोंको छोड़ हरिके सम्मुख आवतेभये ३ व देखा कि पार्थकी सैन्य श्रीकृष्णकीदेह में लीन है अर्थात् मानो धर्मराज के अर्थ सैन्य रूप आपही हरिहोगये हैं ४ सबसुन्दररूप किये जहां आगे खड़े राजाओं ने देख परस्पर कहा कि ५ हमने पार्थके

घोड़े के साथ बहुत से देशोंके विभव देखे परन्तु इस युधिष्ठिर के पुरके ऐसे विभव कहींनहीं देखे जहा बिदुषों का मनभी सन्तुष्ट होजाताहै व जहां पुण्य, धन, सुख, धर्म्म देवताओंकी फुलवारी, कौतुक ६। ७ व जहांकी सम्पदा तीनों भुवनों को हँसती है व पुण्यमयी मनुष्य जिनकी स्त्रियां नानाप्रकार के मण्डनों करके भूषित ८ रतिरूपकामिनी व मन्मथ कहे कामरूप पुरुष हैं और सूर्य्य इन्द्र के वाहनों से माननीय रत्नों के अलकारों से भूषित ९ जहां हाथी देखपड़ते हैं मानो इन्द्र केऐरावतही करके उत्पन्न नानाप्रकार के रत्न मुकुट व जड़ाऊझूलों करके भूषित हैं १० व जहा पंचधार कहे पाचों गतियों करके युक्त घोड़ा वेग करके युक्त देवताओं के अश्वोंको हँसते हैं ११ निदान पाण्डवों का मनोहरपुर कैसे वर्णने योग्य है जहां सब में व्याप्य, अनन्त अपनेसे सबदिशों को भासित करते ऐसे कृष्ण स्थित हैं १२ और अर्जुन के आगम मे रत्नों से मिलेहुये मोतियों की माला कन्यकाओं के हाथों से छूटीं तिनसे भूभृत् कहे जहा के वृक्षभी हारों से सयुक्त होगये १३ इस प्रकार राजदूत चामर लिये बि-राजते हैं अर्थात् झलझलाते हैं मानो उदित चलित वीर सूर्य्यनारायण की किरणें प्रकाशित होती हैं १४ इस के उपरान्त ऊर्ध्वरेता ऋषियों के वृन्द आतेभये जहा याचित दीक्षित युधिष्ठिर असिपत्र व्रतमें स्थित हैं १५ और वहा श्रीकृष्ण के ऊपर पृथ्वी में बाधों के भयसे शंकित धूपके धूम करके आकाश मांसलइव कहे मोटाइ

गया अर्थात् पूर्णहुआ १६ व वहा बिरजा कहे निर्मल धीर सेना धर्म्मराज ने चलती देखी सो श्रीकृष्णही करके रक्षित है १७इस प्रकार श्रीहरि के संगत में सब राजाओं के कहते हुये तहा महाबुद्धि अर्ज्जुन ने कृष्णादि महाजनोंको १८ नमस्कार और आनन्दसे आलिङ्गन करके राजाओंकेदर्शन किये व गान्धारी, कुन्ती, देवकी व पितृव्य धृतराष्ट्र विदुरसे धनंजय बोले कि यह राजाओं में पूजित १९। २० विषया में रतबीर विष्णुभक्त चन्द्रहास आयाहुआ प्राप्त है देखो और हे धृतराष्ट्र महीपते! राजाओं में श्रेष्ठ नानाप्रकार के वीरों में आगे गणना के योग्य वीरवर्म्मा नाम राजा तुम्हारे आगे नमस्कार करता है २१। २२ और यह मयूरकेतु नाम राजा नमित है जो श्रीहरि के भी भेदन करने से भिन्न नहीं हुआ और अपने धर्म्म से वीरजनों को तृणके समान अपने बाणरूपी वायुसे उड़ादेता है २३ इसको यह बिभावय कहे देखो यह बभ्रुवाहन राजा सुन्दरबुद्धी तुम्हारे सेवनमेंरत सहसाभिपत्र जिसके प्रतापरूपीसूर्य्य से दिनमें शत्रुओं का कमलरूपीमुख बलसे गतहोकर सकुचिजाताहै २४ और जो शेषराजके भवन से मणिलाया व जिसनेनागों की देह में बिलसनेवाला बिष धारण किया व जिसने जाह्नवीजीके अग्निरूपी शाप से दग्धकरके फिर बाधवों संयुक्त हमको जिलाया २५ और हे राजा! हंसध्वज को देखो तुम्हारे चरणों को प्रणत है जिस हंसध्वज के महावीर पुत्रों ने पार्वतीपति शिवजी को २६ प्रभायुक्त

अपने शिर प्रसन्नहो दिये और हे जनाधिप! जिसने सब बीरोंको समरमें अपने प्रतापसे छुड़ाया २७ सो कर्णपुत्र वृषकेतु प्रणत है देखो और हे मारिष! वली नीलध्वज उठिके खड़ाहै देखो जिनके अर्थ अग्नि ने तिस सैन्यको भस्मकिया तब हमलोगोंको बड़ासशय हुआ इतनीकथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि तत्पश्चात् सब राजाओंकी राजा धृतराष्ट्रने पूजनकी फिर तब सब राजाओंने जाके महात्मा धर्मराजकी वंदनाकी २८।२९ तब महात्मा धर्मराज के मन्दिर को अर्जुन ने जाय धर्मराज से नमस्कार किया तब युधिष्ठिर आगे स्थित हो अङ्कमें मिले और भीमसेन व और वृद्धोंकी हर्षित हो अर्जुन ने वन्दनाकी ३० तब कुन्ती ने शर तोमरादिकों से विदारित पुत्रको प्राप्त देखकरके खड़ीहो अङ्क से लगाय बीरपर हर्ष से उत्पन्न जल छोड़नेलगी ३१ और प्रियबालक कर्णपुत्र को अङ्क से लगाय मस्तक सूँघकर बोलीं कि हे वृषकेतु! तुम्हींकरके सब सैन्य रक्षित हुई है ३२ इसके उपरान्त कुन्ती आनन्दितहो धर्मराज के मन्दिर में जाय स्थितहुई तब युधिष्ठिर ऋषियों के समेत कर्षितुं अर्थात् क्षेत्रयज्ञ करनेगये ३३ पुनि दीक्षायुक्त धर्मक्षेत्र में वृषभों को ग्रहणकर सुन्दर कटिवाली द्रौपदी और ओषधी और द्रव्यको सङ्गलिया और कृष्णादिक सब राजा पीठ पीछे से देखने लगे व कुन्ती देवकी वरवर्णिनी यशोदा चन्दन जल कर्पूर युधिष्ठिर पर सींचनेलगीं व ब्राह्मण सपत्नीक कहे स्त्रियों के

समेत मन्त्र पाठकरनेलगे ३४। ३६ तिसके उपरान्त क्षेत्रको कर्षण करके ईंटोंका एकस्थान करतेभये और चारसौ मन्त्रोंकरके उन ईंटोंका आचरण करतेभये ३७ और विधिपूर्वक चारों वेदों के जाननेवाले व्यासादिक ऋषियों से प्रेरित और जनोंकरके जो वन्दित बक दाल्भ्य मुनिहैं सो प्रथम एकसुवर्णकी चिती करते स्थान करतेभये ३८ तिसका सुवर्णाख्य और हसाख्य नाम होताभया और जो चारसौ ईंटें हैं तिनका उस सुवर्ण पक्षी का यज्ञ वेदियों करके दक्षिणपक्ष बनाया फिर एक सौ चवालीस ईंटोंकरके वामपक्ष बनाया ३९। ४० और मध्यमें एकसौकरके पुच्छबनाई और इकीसकरके उस का मुख बनाया और उसी पक्षी करके द्वितीय द्विगुण करके एक चितीकरतेभये और तीसरी ईंटोंको द्विगुण करके फिर चौथी और पांचवीं सुपर्णोंका पञ्चम प्राप्तभया और बहुत ईंटोंकरके आच्छादित होताभया और बड़े२ पण्डित अट्टहारोंकेयुक्त एक रमणीयमण्डप बनातेभये और याज्ञिकजनोंकरके सुन्दर जो कूप है तिसको सुन्द-

साठ रखतेभये और लोहित गोचर्म व सोमवल्ली व मुसल ४७ उसमंडप में ये सपूर्ण रखतेभये तिसीप्रकार से एकरमणीय उलूखल कहे ओखरी धरतेभये और बहुत प्रकार से पूजाकी सामग्री उसमंडपमें रखतेभये ४८ और उसमे बकदाल्भ्य व पितामह व्यास आचार्य्य किये जातेभये और बड़े २ तेजस्वी ४९ वामदेव, वसिष्ठ, गौतम, अत्रि, पराशर, भारद्वाज, जामदग्न्य, कहोल, भागुरि, रैभ्य, सुमन्तु, कौंडिन्य, जातूकर्ण्य, गालव, सौभरि, लोमशादिक ऋषि ऋत्विज कियेजातेभये ५० । ५१ और द्वारपाल राक्षसों के नाश करनेवाले मंत्रों से रक्षा करके धर्मराज के सहित उस सुन्दर यज्ञ मे स्थित होते भये ५२ और विश्वामित्र, पुलह, धौम्य, आरुणि, उपमन्यु, वायुभक्ष, मधुश्छन्द, अविमांडक ये सम्पूर्ण ऋषि उस अतिसुन्दर यज्ञ मे द्वारपाल कियेजाते भये ये सम्पूर्ण और इनके सिवाय अन्य २ ऋषि दीक्षित मृगचर्म धारण किये केशरिलगाये द्रौपदीके सहचारी धर्मराज करके पूजाकियेजातेभये ५३ । ५५ तिसके अनन्तर धर्मपुत्र युधिष्ठिर से व दिव्य २ सिंहासनों में बैठेहुये राजाओं से व्यासजी बोले कि चौंसठ स्त्रिया और पत्नी के समेत अत्रिऋषि और अरुन्धतीके युक्त वसिष्ठ, रुक्मिणी के समेत कृष्ण, सुभद्रा के सहित अर्जुन व मायावती के सहित प्रद्युम्न, शीघ्रही गङ्गाजल लेनेके अर्थ गगातट में जावें और गृहीतपाणी ऊषा के सहित अनिरुद्ध, हिडम्बा के सहित भीमसेन और

प्रभद्रा के समेत वृषकेतु और लीलावती के सहित मयूरकेतु और प्रभावती के सहित यौवनाश्व, सुनन्दा के सहित नीलकेतु, धमिल्लाके सहित अनुशाल्व मेरी आज्ञासे गङ्गाजल के सहित कलशों को राजाओं के अर्थ स्त्रियों के सहित लेआवें जैमिनिजी बोले कि इस प्रकार व्यासजीकी आज्ञाको पाय अपनी २ स्त्रियों के सहित आनन्दपूर्वक गङ्गाजल लेनेवास्ते सब राजा प्रस्थान करतेभये ५६। ६२ हे राजन्! जिस समय में सब राजा गङ्गाजलको लेनेवास्ते जातेभये उस समय में बड़े २ रमणीय बाजा बाजनेलगे ६३ और ब्राह्मणादिक जो जन हैं सो और हाथियोंपै सवार कुमारी शखशब्द को सुनतीहुई मुक्ताफलों को वर्षतीभई ६४ और तिसी समय में मुनिलोग वेदपाठ करनेलगे और गीतों में निपुण गायकजन गानेलगे और तिसी समय में नृत्य करनेमें निपुण नृत्यक नाचनेलगे ६५ और देवकी कुंती को आगेकरके नानाप्रकार के शृङ्गारों से युक्त भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जातेभये ६६ तिससमयमें कुंतीने कृष्णका वस्त्र पकड़के रुक्मिणी के वस्त्रमें बांधदिया ६७ उस कालमें उस महाआनन्दको देखकरके कृष्णचन्द्र का ममन सत्यभामा से कहने वास्ते मुनिसत्तम नारदजी सत्यभामाके घरमें ६८ जाय बोले कि हे सत्यभामे, कृष्णवल्लभे! मेरेवचन सुनो यज्ञके आरम्भ में नाना प्रकार के राजाओं के समागममें ६९ कृष्णकरके सयुक्त रुक्मिणी बहुतमानको प्राप्तहोकर जललेनेको जाती है ७० सहित,

धूपके चलती हैं चामर जिसके धारण कियागया है छत्र जिसके सो जाती है कृष्णके आश्रयसे राजसन्मान को वही पातीहै अन्य स्त्री नहीं पाती ७१ और हे सत्ये! जिसका समर्थपुत्रकाम और प्रपौत्र अनिरुद्धहै सो घर केविषयमें तुमकरके निश्चयसे कैसे शयनकियागया सो कहो ७२ भगवान् कृष्णचन्द्रजी मुखकी निपुणता से समीपहीमें तुमको देखके तुमको वहा क्योंनहीं लेगये७३ तब सत्यभामा बोली कि हे मुनिसत्तम! यहाविषे गोविन्द मेरेघरमें हैं उनकेसहित जल लेनेजातीहूँ तौन समागम तुम देखो जैमिनिजीबोले कि नारदमुनि सत्यभामाके मन्दिरमें गरुड़ध्वजको देखकेशवजीसे बोले कि तुम सभामें देखपड़ेहो ७४। ७५ और अब सत्याकेघरमें देखताहूँ सो यह मुझको विस्मयहोताहै व सम्मत देतेहुये युधिष्ठिर के आगेभी मुझको देख पड़ेहो ७६ सत्यभामा करके युक्त इसप्रकार जातेहो हे जगत्पते! जावो जावो तब माधवको निकले देख नारदभी तिसघरसे जातेभये ७७ फिर नारदमुनि अन्यत्र जाम्बवती के घरमेंगये जाम्बवतीसे यह कहतेहुये प्रवेश करके ७८ नारदजी बोले कि हे माता! घरमें क्या बैठीहो राजाके मन्दिरमें गङ्गाजी का जल लेने को नहीं गई हो जहा आपही ७९ माधव भगवान् सत्यभामा व रुक्मिणी को साथ लिये जाते हैं तब जाम्बवती ने कहा कि सो केशवकी सम्पूर्ण स्त्रिया तिनकरके युक्तही हैं ८० जिस स्त्रीको छोड़के ये कृष्णचन्द्र जायँगे सो मानिनी इस रमणीय समागम साधु-

श्रोंके मध्य में अपमानित न जीवेगी ८१ जैमिनिजी बोले कि तहा भी वद्धपल्लव माधवको देख मुनिसत्तम नारदजी अन्य गोपियों के मन्दिरों मे घूमते भये ८२ और यह मानते भये कि ये सम्पूर्ण मन्दिर सहित कृष्ण केहैं और देवर्षि नारदजी फिर पाण्डव के मण्डप में आय ऋत्विजों करके सहित सनातन कृष्णचन्द्र की स्तुति करते खडे़हुये सम्पूर्ण राजा वशिष्ठ के सहित ८३। ८४ गंगाजी के तटविषे जातेभये और महाबीरों से भलीभाति रक्षित आनन्द के युक्त कृष्णचन्द्र के सहित व्यास करके जल अभिमन्त्रित हुआ और जल देवता पूजेगये ८५ और हे नराधिप! तिसकाल में व्यासजी सहित पुष्पों के कलश भरके अनसूया के हाथ में देतेभये और फिर अरुन्धती एक सुवर्ण के परिपूर्ण कलशको तिन सिद्धात्मा मुनीश्वरों के आगे ग्रहण करती भई ८६। ८७ और रुक्मिणी अपने मस्तक में जल से पूर्ण स्नेह से अरुन्धती करके दियाहुआ कलश गंगाके किनारे आनन्द से शिर में लेतीभई ८८ इसके अनन्तर वशिष्ठ की प्रिया सती रुक्मिणी से बोली कि घरके विषे हे भद्रे! जो तुम्हारा शिर पुष्प भार करके कापता है सो ८९ तिस शिर में मैंने यह कलश धरा है तिस करके पीड़ित तो नहीं है अरुन्धती के वचन सुनकर सुभद्रा ने ये वचन कहे कि हे माता! यह भारको सहे है देखो जिन करके हाथ में गौओंके अर्थ सातदिन अपनी लीला करके गोवर्द्धन धरागया है तिनको यह रुक्मिणी रात दिन हृदय में धारण

करके कांपती नहीं पतिव्रताओं का धर्म केवल इसने किया है ९० । ९२ तब रुक्मिणी बोली कि मेरा व्रत देख करके सुभद्रा अर्जुनको सदैव हृदय में धारण करती नित्यही सुखकोप्राप्त होती हैं ९३ इतनी कथा सुनाय जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार कहतीं सोसम्पूर्ण अपनेपुष्प व मौक्तिकके माला धारण कियेहुये ऐसे शिरों में कलश लेकर पतियों के समेत ऐसी यज्ञवाटमें प्राप्तहुईं जहां मृदङ्ग शंख पटहों के समेत ९४ । ९५ विविधप्रकारके बीणा भेरी काहक बाजरहे हैं तहां पुण्यकारी जललेकर घोड़ा अन्हवायागया और द्रौपदी धर्मराजकरके अच्छेप्रकार पूजित यज्ञस्तम्भमें बांधागया ९६ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायां जलयात्रावर्णनन्नाम त्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि तदनन्तर युधिष्ठिरजीकी आज्ञासे यज्ञहोतेसन्ते यज्ञ विद्याविधानसे युधिष्ठिर मन्त्रित जलों से स्नानकराये जातेभये १ और भीम अर्जुनादिक श्रीकृष्णचन्द्र के सहित सम्पूर्ण उस यज्ञ में कर्मकर्त्ता थे सोई श्रीकृष्णचन्द्र आत्मज्ञानी मुनियों के पादप्रक्षालनकहे पैरधोय करके २ आपही कृष्णचन्द्र उनऋषियों को बैठातेभये सो ऋषिलोग बैठकर वस्त्र धारणकरके ३ जिन ऋषियोंकी देह चन्दन से सुगन्धित हैं और दिव्य अलङ्कारों करके भूषित हैं और मालाओं को प-

हिरे हैं और यज्ञमेंभी माला जिनको दियेगये हैं और कर्पूर बीटक इत्यादिक जिनको दियेगये हैं ४ और सुवर्ण के पीढ़ापर बैठे हैं और कृष्ण पाण्डवादिकोंकरके स्तुति को प्राप्तहैं हे राजन्! उससमय युधिष्ठिरके गृहमें अन्नदेव अन्नदेव ऐसा शब्द बड़े कोलाहलसे होताभया ५ और युधिष्ठिरजीकी यज्ञमें नानाप्रकार के ब्राह्मणोंकेसमागम में सुवर्ण, रत्न, रुचिर २ वस्त्र ६ गज, अश्व, रथ, हजारों गौ, स्यंदन, छत्र, चामर, दासीदासोंके गण, पृथ्वी ७ और मन्दिर व धन अर्थियोंको व इतर ब्राह्मणादिकों को दियाजाताभया और जिसको २ जो प्रियथा सोभी दियागया ८ स्नानकियेहुये यज्ञकर्ममें दीक्षित युधिष्ठिर सुवर्णासनपर बैठ करके घोड़ाको मँगाय ९ बोले कि पशुरूप अग्नि होतीभई और ये श्रुति उसके आगे पढते भये कि हे अपोघोटक! हे जलके पीनेवाले! तुम जलको पियो तुमको वैकुंठ होगा १० इसप्रकार युधिष्ठिर के वचन सुन घोड़ा अपनावदन फटकारनेलगा और कृष्णचन्द्र को आनन्दपूर्वक देखनेलगा ११ और देह फटकारने से अपना अभिप्राय नकुलसे कहताभया सो ऐसा घोड़ा का अभिप्राय जानकरके नकुल युधिष्ठिरसे बोले १२ कि हे राजेन्द्र! घोड़ा कहता है कि हम स्वर्गको न जावेंगे तब युधिष्ठिरजी नकुलसे कहते भये कि और २ यज्ञों में सब घोड़ा स्वर्गको गये हैं तो इसयज्ञमें घोड़ाके जानेमें क्या दोष है तब नकुलने कहा कि और २ यज्ञों में श्रीकृष्णचन्द्र कर्मकर्त्ता न थे व अनीश्वर यज्ञोंमें स्वर्ग परमफल

होता है १३। १४ और पृथ्वी के विषे इस यज्ञमें आप ही भगवान् कर्मकर्त्ता हैं सो हे यज्ञ करने वाले! हमारी देहमें भी श्रीकृष्ण भगवान् की स्थिति देखो १५ नकुल ने युधिष्ठिर से कहा कि हे धर्मराज! तुम्हारी यज्ञ में घोड़ा इसप्रकार कहता है इसके अनन्तर खम्भाके समीप में सुमन्त्रित जो घोड़ा है तिसको व भगवान् को राजालोग व स्त्रियों के समूह व मुनिलोग देखें नकुलके ऐसे वचन खम्भामें बँधे घोड़ा ने सुना १६। १७ और यूपमें बाधे हुये घोड़ा को कृष्ण के सहित ब्राह्मणादिक अभिमन्त्रण करते भये तब धौम्यजी बोले कि हे भीम! तुम क्षणमात्र निश्चल खड़ेरहो १८ जब तक हे महामते! इस घोड़ा की हम परीक्षा करें तिसके अनन्तर धौम्य घोड़ा का वामकर्ण कहे बायाकान दबाते भये १९ तो हे जनमेजय! तिसीसमय में उस के कानसे क्षीरकी धारा निकलती भई सो यह क्षीरकी धारा देखके सम्पूर्ण जन बड़े आश्चर्यको प्राप्तहुये कि घोड़े के कानसे दूध निकला किन्तु रुधिर कुछभी न देखपड़ा २० सो धौम्य भीमसेन से बोले कि हे भीमसेन! घोड़ाका शिरकाटो जिस घोड़े का शिर काटने से पुराण पुरुषोत्तम जगत्नाथ श्रीभगवान् सन्तुष्टहोवें २१ तिसकालमे बहुत प्रकार के बाजा बाजतेभये तब भीमसेन ने उस घोड़ेका शिर तलवार से काटडाला हे जनमेजय! वह शिर ऊपरको गया और नीचेको न गिरा उस कालमें बहुनिरूप सूर्य अस्ताचल को जातेभये भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र उस घोड़ाको शुद्धजानकरके उस

की छातीमें बेलके काटेसे मारते भये २२। २३ सो उस घोड़ाके शरीरसे क्षीरकी धारा निकलती भई सो उस क्षीर-धारा को देखकरके ऋषिलोग युधिष्ठिरसे बोले कि २४ हे राजन्! इस प्रकारसे किसीकी यज्ञमे घोड़ेकी देहसे दूध नहीं निकला भगवान् कृष्णचन्द्र शुद्ध जानकरके धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरसे बोले २५ किसीप्रकार से ऋषिलोग भी शुद्ध घोड़ाको देखकरके धर्मराजसे बोले कि हे युधिष्ठिर! तुम्हारायज्ञ आज सफलहुआ सो यह बड़ीभाग्यहै २६ इसप्रकार से श्रीकृष्णचन्द्र व ऋषियोंके कहतेहुये घोड़े के शरीर से बड़ाअद्भुत महान्तेज निकलताभया सो हे जनमेजय! वह तेज भगवान् के मुख में प्रवेश करगया २७ तत्पश्चात् वह गिराहुआ शरीर कर्पूरके तुल्यहोगया जैसे कि शिवजी की देहसे गिरीहुई विभूति शोभित हो तिसीप्रकार से उस घोड़े का कर्पूरतुल्य शरीर शोभित होताभया २८ उस कर्पूर को देखकरके मुनिलोगों को अतीव आश्चर्य्य हुआ उसीसमयमें वे मुनिलोग होम-कुण्डमें उस कर्पूरका हवन करतेभये २९ तिस यज्ञमें भगवान् के समेत सपत्नीक राजा बैठेथे उसीसमय में व्यास जी स्रुवामें कर्पूरको लेकर यह बोले कि ३० हे विभो! हे इन्द्र! घनसार के समान राजाकरके दीहुई कलियुग में महादुर्लभ आहुति को इस महायज्ञ मे तुम ग्रहणकरो और यहा आवो ३१ सो उसी समय में इन्द्र साक्षात् वहा आय कहते भये कि हमको जबतक अक्षयातृप्ति हो तबतक अग्निके मुख से आहुतिदो ३२ जिस आहुति

को देखकरके हम बड़ी तृप्तिको प्राप्तहुये हैं और इसको भोजन करेंगे तो बड़ा कल्याण होगा तदनन्तर व्यास जी बसन्तऋतुके चैत्रशुक्ल दशमी गुरुवार श्लेषा नक्षत्रमें (इन्द्रायस्वाहा) इसप्रकारसे विधिपूर्वक हवन करतेभये ३३ । ३४ तिसके अनन्तर चन्द्रादिक देवताओं को उन्हींके मन्त्रोंसे यथाक्रम हवनकरतेभये फिर दिग्देवताओं को उन्हीं के मन्त्रोंसे विधिपूर्वक आहुति देतेभये ३५ तिससमय में देवताओं के आगे घनसार अग्निमें हवनकरतेभये सो उसहवनसे सम्पूर्ण चराचर जगत् प्रसन्नहोताभया ३६ सो उस होमधूमकरके राजा युधिष्ठिर पवित्र होगये और प्रसन्न होकरके भीमसेन को मिलके बोलतेभये कि हे भीमसेन! हमारीयज्ञ आनंदपूर्वक समाप्तहुई सो यह बड़ीभाग्यहै ३७ सो अब हम यज्ञान्तमें अवभृथस्नान करेंगे इसमें कुछ संशय नहीं है जैमिनिजी बोले कि ऋषियों के सहित श्रीकृष्णचन्द्र ने राजा युधिष्ठिर को यज्ञान्त स्नान कराये ३८ स्त्री के सहित व भीमसेनादिक व राजाओं के युक्त युधिष्ठिरको सोमपान व यथाक्रम अन्नप्राशन करातेभये ३९ और सम्पूर्ण ऋषियों को खीर खवायकर जो बाकीरही सो अपनाखातेभये उससमयमें बाजाओंके शब्दसे बंदीजन जयशब्द करतेभये ४० और गायकलोग युधिष्ठिर के गुणगीतोंकरके धर्मराजकी स्तुति करतेभये फिर देवकी इत्यादिक स्त्रियोंने धर्मराजका नीराजनकिया ४१ और बन्धुओंके समेत कुन्ती बड़ेसुखको प्राप्तहुई फिर राजा

युधिष्ठिर पूर्णाहुति देकरके आसनपरबैठे ४२ तिससमय में कृष्णचन्द्रकरके राजा अलंकृत कहे भूषित कियेगये सो उससमयमें राजा युधिष्ठिर बड़ीशोभाको प्राप्तहोते भये जैसे स्वर्गमें देवताओंके युक्त इन्द्र शोभाको प्राप्त होतेहैं ४३ सो राजा युधिष्ठिर वस्त्र अलङ्कार चन्दनादिकों से पहले श्रीकृष्णकी पूजन करतेभये तिस पीछे व्यासजीको आनन्द से युक्त राजा सम्पूर्ण पृथ्वीदान करतेभये ४४ फिर व्यासजी सङ्कल्पसे विधिपूर्वक पृथ्वी देतेभये और वह द्रव्य व्यासजी दीन ब्राह्मणोंको दान देतेभये ४५।४६ रत्नादिकोंको शिखरबना तिसमें कनक वृषभ प्राप्तकर बकदाल्भ्य को दिया ४७ एक रथ एक हाथी श्रेष्ठ दशघोड़े एकभार सुवर्ण स्वर्णालंकृत गाइन को सैकरा श्रेष्ठमोतियोंकी एक प्रस्थ ४८ कार्योंमें दक्ष चार चार सेवक सब ऋत्विक् द्वारपालों को दिया पूर्ण मनोरथहुये युधिष्ठिरने तदर्द्धार्द्धक्रमसे अनेक इच्छादान दिये ४९।५० फिर राजाने राजाओंको भी प्रसन्नकिया हजार हजार घोड़े सौसौहाथी स्वर्णालङ्कार कोटिकोटि प्रत्येक राजाको दिये इसकी द्विगुणपूजा यादवोंकी की ५१।५२ रुक्मिणी इत्यादिक सम्पूर्ण अलङ्कारोंसेतुष्ट कीगई सैकरों अलङ्कारोंयुक्त श्रीकृष्णचन्द्रको आसनमें बैठाय यज्ञकी सम्पूर्णपुण्य श्रीकृष्णचन्द्रके हाथमें देदी बाजाबजे फूलोंकी वृष्टिहुई ५३ भीमादिक सबपाण्डव यज्ञ श्रीकृष्णचन्द्र ने कराई यह कहतेहुये आनन्द को प्राप्तहुये ५४ और यज्ञस्तम्भ में बांधेहुये पशु छोरदिये

गये सबोंने स्तुतिकरी कि यज्ञ श्रीकृष्ण ने कराई ५५ यज्ञको प्रकरण सुनकर मनुष्य सबपातकों से छूटजाते हैं और सबोंकरिकै पूजित धरातल में स्थित होते हैं ५६॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांयुधिष्ठिराभिषेकोनाम
चतुःषष्टितमोऽध्याय ६४॥

पैंसठवां अध्याय॥

जैमिनिजी बोले कि यज्ञान्त में भीमसेनने मुनीश्वर और राजाओंकी प्रार्थना कर विविधान्न से सहितकृष्ण के भोजन कराया १ जनमेजय बोले ब्राह्मण सकृष्ण राजा कैसे जिवाँयेगये और जिस रीतिसे स्त्री बालकोंको भी रसकारक भीमने भोजन कराया कितने रस बनाये सो कहो तुम्हारे मुखसे सुनते बड़ा आनन्द होता है २ जैमिनिजी बोले हे राजन्! सुनो जो भीमसेन ने किया नवीन रत्नों और सोने के जड़ाऊ मण्डप में चन्दन पीठाओं में कवल सरलस्थापित अनेक पुष्प प्रकारों से युक्त शोभित होरहे थे ३। ४ और चौंसठ कटोरा और दोदो रत्नों के दीपों से युक्त सुवर्णकी थाली एक २ विप्र के आगे धरी जातीभई ५ और फिर कैसी थाली हैं कि पुष्पों को तिरस्कार करनेवाली और प्रकाशकरके युक्त व शोभनीय हैं और कृष्ण गुग्गुलकी धूप तिस करके जो वासित अमल कहे निर्मल मण्डप में सुगन्धित जलसे पादप्रक्षालन कहे पैर पखारेगये और सुवर्ण के पात्र पात्र प्रतिरत्न कमण्डलु धरते भये ६। ७ तिसके

उपरान्त भीमसेन रसकरके युक्त दूधको डालते भये सो थाली में चन्द्रविम्बकी भांति उदित तिसको ब्राह्मणों ने देखा ८ और कुन्दपुष्प के समान प्रभावाला भात उर्दकी दालके युक्त देखते भये व पुष्प पत्र फल मूल व दारुवृक्षकी छालकरके व्यजन डुलाते भये और कटुतीक्ष्ण इत्यादिकों करके युक्त व्यञ्जन भीमसेन यत्नपूर्वक वनाते भये ९। १० उसीकाल में एक ब्राह्मण पुओं को देख करके अन्य ब्राह्मण से पूछता भया कि ये नवीन वस्तु जो हमने देखा सो क्या है हम से कहो ११ उस महा विप्रको पूँछते हुये अपना को उससे अधिक जानके क-हताभया कि यह चन्द्रमा का सौ प्रकार से खण्डित खंड तुम जानो १२ इसीप्रकार विप्र के कहते हुये तिसी समय फेनी प्राप्तहुई सो उनको अपनी थालीमें देखकर के बड़े विस्मयको प्राप्तहुआ १३ तव बड़े तपस्वी वायु-भक्ष बोले कि धर्मराजका सितपत्र करके युक्त छत्रउत्पन्न हुआ है १४ और दन्तोलूखलिमुनि लड्डुओं को देख करके वचन वोले कि हम इसको औदुम्बर कहे गूलर के फल जानते हैं १५ और कोई ब्राह्मण भातको कुटज के पुष्प कहताभया और कोई मुनिश्रेष्ठ करजिका व कोई कर्णिका मानताभया १६ और कोई ब्राह्मण सुवर्ण प्रकाश के तुल्य वरगद के फलको सूर्यका रथचक्र ह-मारे आगे गिरा कहता भया १७ और कोई प्राक्षारस को व कोई आम्रके रसको बड़े आनन्दसे पीतेभये और सभाके मध्यमें घृतके युक्त वेर गिरतेहैं १८ तिनको काट

करके मुनियों के शिष्य मुख में डारते भये अर्थात् खाते भये और कोई मुनि सिताज्य करके व मण्डप बाधकरके और मुनि मुख मध्यमें डालके बड़े सुख को प्राप्त होता भया सो और कोई खण्डलड्डू खाताहुआ मोक्ष सुखको तुच्छ मानता भया १९। २० इस प्रकार से ब्राह्मण व क्षत्रियादिकसम्पूर्णजन उस महायज्ञोत्सव में भीमसेन करके भोजन करायेगये २१ और दिव्य २ चन्दनोंकरके युक्त सब ब्राह्मण सन्तुष्ट कियेगये और चन्द्रवत् ताम्बूल देखकर के बड़े विस्मय को प्राप्त होतेभये २२ कि हम-लोग सूखे २ पत्ते वनमें काटकर के खातेरहे अब सोई पत्ते रस के जाननेवाले भीमसेन करके ताम्बूल कियेगये २३ जैमिनिजी बोले कि ब्राह्मणादिक व बड़े पराक्रमी क्षत्रियादिकों के व कृष्णके सहित यज्ञमण्डप में बैठे थे कि उसीसमय २४ विवाद करते हुये दोब्राह्मण सभामें युधिष्ठिरके पास आयकरके वचन बोले कि हे महामते, धर्मराज! तुम हमारा विवाद अच्छेप्रकार से छुड़ाओ तब राजाने कहा कि बकदाल्भ्य वशिष्ठ अत्रि इत्यादिक ऋषि बड़े मनस्वी जहांपर सभा में हैं तहांपर वादकथा क्या है सो हे विप्रेन्द्र! तुम अपना २ कारण अलग २ कहो २५। २७ तब एक ब्राह्मण ने कहा कि इन्होंने अपना खेत यथाक्रमसे हमारे हाथमें दिया और फिर हमसे लेलिया हे राजन्! उसखेतसे भांड़ा निकला २८ फिर उस खेतमें जो धान्य उत्पन्न होता है सो हमको ग्राह्य कहे लेना योग्य है व उसका भांड़ा हमको ग्राह्य नहीं उसको

हमन लग निश्चयकरके हमारा वह नहीं है २९ और हे राजन्! हमकरकेत्याज्य वह भाड़ा इनको ग्राह्यहै अर्थात् लेना योग्य है सो हमको ये भाड़ाकरके निर्लज्ज ब्राह्मण दुःखदेते हैं ३० तब युधिष्ठिर बोले कि हे महावृद्ध! तुम सत्यकहो इस ब्राह्मणको क्यों दुःख देतेहो जो पहले तुमने द्रव्य नहीं दीहै तो तुम उसको ग्रहणकरो ३१ तब द्वितीय ब्राह्मणने कहा कि हे धर्मनन्दन! हमने वह खेत दूसरे को समर्पण किया उसमें जो कुछ उत्पन्न होताहै सो सब उसी ब्राह्मणका है हमारा नहीं ऐसे वचनसुन बिहँसतेहुये श्री कृष्णचन्द्र बोले किहे विप्रेन्द्र! तुम तीन महीना ठहरो ३२ ३३ सो ब्राह्मण कृष्णवाक्य से सन्तुष्टहोकर सब धन राजा के मन्दिरमें धरकेउस दिनको विचारते हुये अपने २ घर को गये ३४ तब राजा युधिष्ठिर ने कहा कि हे कृष्णचन्द्र! सबके देखते हुये इस समय में आपने निर्णय क्यों नहीं किया हे विभो! यह हमको बड़ा विस्मय है ३५ तब श्रीकृष्णजीने कहा कि तुम्हारे समीपमें ऋषि और राजालोग बड़े आनन्द से बैठेहैं न यज्ञान्त में सम्पूर्णजन आनन्दको प्राप्त हैं इस मध्यमें न्याय कैसे होसक्ताहै ३६ हे राजन्! इसके तीसरे महीने में बड़ाघोर कलि आवेगा तब ये ब्राह्मण द्रव्यका विवाद करते हुये परस्पर ताड़ना करते घूंसोंसे मारते हुये बारबारों को पकड़े युद्ध करतेहुये और नखनखोंसे काटते हुये कलियुग से ताड़ित तुम्हारे समीप आवेंगे ३७। ३८ तब तुम उस धनको दो प्रकार करके आधा २ उन ब्राह्मणोंको देउगे औरकलियुग में ब्राह्मण

लोग आचारवेदसे वर्जितहोंगे ३९ और राजालोग धर्म से हीनहोंगे तब सम्पूर्ण प्रजाको दु खदेंगे और सबलोग अधर्म्मी धर्मके द्वेषी व क्रोधी होंगे ४० और जुवा व मद्य में लीनहोंगे और सम्पूर्ण व्यसनी होंगे और सदा देवता व पितरों के कार्यमें व साधु व स्त्रीके पोषणमें व ब्राह्मणार्थ धनमें स्वल्पकहे थोड़ादेंगे और हे राजन्! कलियुगमें सबलोग वेश्याके घरमें बड़ेहर्षसे रहेंगे ४१।४२ और जुवा इत्यादिक व्यसनों में बहुत धन ले जायँगे और फटाहुआ जीर्णवस्त्र तो अपनी माताको ४३ और वेश्या व पुंश्चली कहे परपतिमें रहनेवाली स्त्रीको पीताम्बर पहिरावेंगे और करवीर में उत्पन्न कंटकों के युक्त धतूरका फूल शिवजीके मन्दिर में लेजायँगे और बड़ा अच्छा कमलकी माला व कपूर चन्दन व कोकाबेली वेश्या व कुलटा स्त्रियोंके घरमें लेजायँगे और उस कलियुगमें माता पिताको बड़ा दु खदेंगे ४४।४६ और सब लोग स्त्रियोंके टहलुवाके समान सेवक होंगे इसप्रकारसे अपनी अपनी स्त्रियोंका लालनकरके माताओंको ताड़न करेंगे ४७ और सासु ससुर व बहिनको कलियुगमें जिस तरहसे बाण हृदयमें मारै वैसेही अत्यन्त अप्रिय वचन कहेंगे ४८ और देवताओं व ब्राह्मणों में विश्वास न करेंगे और कलियुग में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अपने २ कर्म से भ्रष्टहोंगे ४९ और अपने २ कर्म्मको त्यागकरके सब दूसरेके कर्म्ममें प्रवर्त्तक होंगे जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार भयको देनेवाले कलियुग के धर्म्म

कृष्णभगवान् कहतेभये तिसके अनन्तर यज्ञान्तमें कृष्ण पाण्डवादिक वीर कथा कहते भये ५० ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांकलिधर्मवर्णनोनाम पञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छाछठवां अध्याय ॥

जैमिनिजी बोले कि हे राजशार्दूल, जनमेजय! महायज्ञ अश्वमेधकी निवृत्तिमें जो बड़ा आश्चर्य होताभया सो सुनो १ कि जब ब्राह्मणों में श्रेष्ठ व ज्ञातिसम्बन्धी व दीन अन्ध कृपण तर्पितहुये २ उसी समय सम्पूर्ण दिशा मे बड़ाशब्द हुआ और महाराज युधिष्ठिर के मस्तक के ऊपर पुष्पोंकी वर्षाहुई ३ तिससमय में धर्मपुत्र युधिष्ठिर महागर्वको प्राप्तहुये तो तिसी कालमें रुक्मपार्श्व नाम नकुल कहे न्योरा बिलसे निकला ४ और हे राजन्! वज्रके समान शब्द किया व बारम्बार शब्दको करता भया सो सुन सम्पूर्ण ब्राह्मण व राजालोगों के हृदय में उस शब्दको सुनके बड़ात्रास हुआ ५ और वह बड़ाढीठ बिलमें शयनकरनेवाला बड़ा न्योरा मनुष्यके समान वचन बोला कि हे राजन्! यह तुम्हारा यज्ञ सत्तुओंके भी समान नहीं हुआ ६ और फिर तुम कैसेहो कि उञ्छवृत्ति कहे खेतकाटने के उपरान्त जो खेतमें बाकीअन्न है उसकी वृत्तिसे जीतेहो व कुरुक्षेत्र के रहनेवालेहो व वदान्यकहे दानसे अन्यहो सो हे जनमेजय! उस न्योराका वचन सुनके सब ब्राह्मणादिक बड़े विस्मयको प्राप्तहुये तिसके अनन्तर सम्पूर्ण ब्राह्मण नकुल के पास आकर

पूछतेभये ७।८ कि तुम इस यज्ञमें कहासे प्राप्तहुये और तुमको क्या वल है और तुम्हारा क्या सुना है व तुम्हारा स्थान कहा है ९ और जो तुम यज्ञकी निन्दा करते हो सो तुमको हम कैसे जानें और कैसी यज्ञहै कि शास्त्रा-नुसार बड़े २ याज्ञकों से कीगईहै व जिसप्रकारसे शास्त्र व न्यायमें लिखाहै उसी प्रकारसे कीगई है और विधि-पूर्वक शास्त्रवेत्ता पुरुषों करके पूजनीय महात्माओं की पूजा इस यज्ञ में कीगई है १०। ११ और मन्त्रपूर्व्वक अग्निहवन की गई है और अमत्सर अर्थात् क्रोध से वर्जित दान दियागया है और बहुत प्रकारो के दानों से पूजनीय ब्राह्मण सन्तुष्ट हुये हैं १२ और युद्ध करके क्ष-त्रिय संतुष्ट हुये हैं और इसकी श्राद्धकरके पितामह सं-तुष्ट हुये हैं और पालन पोषण करके वैश्यादिक सन्तुष्ट हुये हैं और कामों करके शूद्र व स्त्रिया सन्तुष्ट हुईहैं १३ और हास्यों व दानों तथा आशीर्वादों करके पृथक् २ जन व ज्ञातिसम्बन्धी सन्तुष्ट हुये हैं और राजा युधिष्ठिर की पवित्रता करके सबजन सन्तुष्ट हुये हैं १४ और हव्य करके देवता लोग सन्तुष्ट हुये हैं और रक्षा करके शर-णार्थी सन्तुष्ट हुये हैं जो इस ब्राह्मणों की सभा में न्यून हुआ हो सो कहो १५ और श्रद्धा करने योग्य वाक्य तुम्हारी हैं व बड़े पण्डित दिव्यरूपको धरनेवाले सम्पूर्ण सभामें प्राप्तजनों करके पूँछेगये तुम सत्य २ कहने के योग्य हो १६ इस प्रकार ब्राह्मणों करके जब पूछागया तो हँस करके वह न्योरा बोला कि हे ब्राह्मणो! हम गर्व करके

कुछ झूठ नहीं बोले हैं जो मैंने कहा सो तुमलोग सुनेहो कि यह यज्ञ,सत्तुओं के तुल्य भी नहीं है कि उछवृत्ति व वदान्य व कुरुक्षेत्र के बसनेवाले हम अव्यग्रमन से कहते हैं तुम सुनो कि, १७।१९ जो एक होगया महाअद्भुत चरित्र सो हमने देखाहै कि, धर्मक्षेत्र धर्मज्ञोंकरके युक्त कुरुक्षेत्र में एक उछवृत्ति ब्राह्मण कपोतीकी वृत्तिमें स्थित पुत्र, भार्या व पतोहू के समेत तपस्या में विद्यमानथा २०। २१ जिसके चौथीस्त्री ऐसा धर्मात्मा जितेन्द्रिय वृद्ध ब्राह्मण छठयेंकाल में ब्राह्मणों के साथ नित्यही भोजन करताथा और उस कपोतधर्मी ब्राह्मण को बड़ा दारुण दुर्भिक्ष पड़ा हे विप्रो! उसको अन्नका संचय न भया अर्थात् अन्न उसके न रहा २२। २३ और जब सब ओषधियों से क्षीण होताभया तब वह द्रव्य से हीन हुआ तो उसको सबकाल में भोजन न मिला २४ तो सम्पूर्ण कुटुम्बी क्षुधा करके युक्त वर्त्तमानहुये सो शुक्लपक्ष के मध्य में सूर्यनारायणके तपतेहुये तृषा क्षुधासे पीड़ित तपस्या में स्थित उस ब्राह्मण को परिजनों के समेत उछभी न प्राप्तहुआ २५। २६ सो ब्राह्मण विधिपूर्वक क्षुधा करके युक्त जलको पीकरके परिजनो के साथ अपना काल व्यतीत करताभया २७ तिसके उपरान्त छठयें कालमें सो ब्राह्मण यवको यत्न करताभया सो उसीयव करके वे तपस्वीलोग उसके सतुआ करतेभये २८ और सन्ध्या गायत्र्यादिक जपकरके यथाविधि अग्निमें हवन करके एक २ प्यालाभर अन्न सब तपस्वी विभाग

करते भये इसके उपरान्त उसी काल में उनके भोजन करते हुये एक अतिथि ब्राह्मण आया सो उस ब्राह्मण को बड़ी प्रीतिपूर्वक पूजन करके मनको प्रसन्न करनेवाला अति मधुर बचन बोले कि २९। ३० हम धन्य हैं आप के अनुग्रह पात्र हैं और आपकर के पवित्र किये गये जिस-कारण से इस अतिथिकाल में आप प्राप्तहुये हैं जिस प्रकारसे धर्म से युक्त पुरुषको मेघ प्राप्तहोवें ३१ और हे द्विज श्रेष्ठ! आपका आगमन बड़ा सुन्दरहुआ अब हम को सनाथ करिये व कृपापूर्वक इस पर्णशाला कहे कुटी में प्रवेश करिये ३२ और वे गृहस्थ धन्य हैं व गृही हैं जिन के गृहमें आपके समान पुरुष अपनेही घरके तुल्य विश्राम करते हैं और यह बड़ा आश्चर्य है कि धनके रहित गृहस्थ बड़े धन्यहैं जिनके गृहमे बड़े २ महात्मा अतिथि पूजनों करके गमन करते हैं ३३। ३४ तृण पृथ्वी जल व चौथे बड़े अच्छे २ बचन ये सब गृहमें रहतेसन्ते कभी भी वह त्याग नहीं करते और आर्त्तको शरणदे व मार्गके थकने वालेको आसनदे व तृषितको जलदे व क्षुधितको भोजनदे व मनलगाय सुदृष्टि से देखे व सुन्दर २ बचन बोले व अच्छेप्रकार से बैठालके कहींजावे व न्यायपूर्वक पूजनकरे ३५। ३७ इतनी कथासुनाय न्योरा ने कहा कि इसप्रकार से धर्मात्मा ब्राह्मणने कहिके यथा विधि से पूजनकर हर्षपूर्वक उस को अपना भागदिया तिसपर भी वह अतिथि ब्राह्मण सन्तुष्ट न हुआ तो उस के उप- रान्त महाक्षुधा से युक्त वृद्धा म्लानको प्राप्त तपस्विनी

केवल हाड़ोंके युक्त डरातीहुई उसकी स्त्री अपने पति से बोली ३८। ३९ कि हे स्वामिन्! हमारा भी भाग इस ब्राह्मण को दो इसमें कुछ विचार न करो अर्थियो के अन्न दानसे मैं भी निश्चय करके कृतार्थ होऊँ ४० तब ब्राह्मणने कहा कि हे शोभने! कीटपतंग व मृगादिकोंको भी स्त्री रक्षा व पोषणकरने योग्य है ताते तुम इस प्रकार के वचन कहने योग्य नहीं हो ४१ और धर्म काम अर्थ इनका कार्य व शुश्रूषा व कुलकी सन्तान व पितरों का व अपना स्वर्ग स्त्रीही के आधीन है ४२ तिस कारण से तुम अपना भाग सतुवा भोजनकरो तुम्हारा कोई अतिक्रम नहीं है सो हे भद्रे! हमारी आज्ञासे हमारा कहा हुआ वाक्य करो और जो पुरुष स्त्री के ऊपर दया व पोषण नहीं करता वह यशको प्राप्तनहीं होता और अन्त में नरकको जाता है ४३। ४४ तब ब्राह्मणी बोली कि हे ब्राह्मण! ब्रह्माजी ने धर्माधिकारी स्त्री पतिको एकही साथ सृष्टिकीहै तिस कारणसे तुम हमको धर्म में बाधा करने के योग्य नहीं हो ४५ पति और स्त्रीका यही परम धर्म है और स्त्रीको पतिही देवता श्रेष्ठबन्धु श्रेष्ठगति है और धर्म अर्थ काम स्वर्गकी गति पतिही के प्रसन्न होने पर प्राप्तहोती है इसमें कुछ संशय नहीं और कर्म मन वचन करके जो स्त्री पतिमें सुप्रास है वह महाभाग्यवाली स्त्री देवतों को भी पूजनीय है और जबतक तुम भोजन नहीं करतेहो तबतक हम कभी भी भोजन नहीं करती हैं सो हमारा ऐसा व्रतजान करके ये सत्तु तुम ब्राह्मणको देने

योग्यहो इतनी कथासुनाय वह न्योरा बोला कि वह ब्राह्मण ऐसे सुनके व सत्तुओंको लेकर अतिथि ब्राह्मण को देदिये ४६। ५० तो उस ब्राह्मणने उन सत्तुओंको खाया पर तिसपर भी सतुष्ट न हुआ तिसके उपरान्त उस ब्राह्मणका धर्म जाननेवाला पुत्र नम्रतापूर्वक पिता से बोला ५१ कि हे तात! इस ब्राह्मणकी तृप्तिके लिये हमारा भागभी दीजिये उस पुरुषके जीनेका फल क्या है जिसके यहा अतिथि आशाकरके प्राप्तहो और शून्य गृहके समान दीन निराशहोकर गमनकरे और जो पुरुष अतिथिको विष्णु तुल्य मानके अपने शरीर को कष्टदेकर अतिथियोंका सन्मान करतेहैं वे पुरुष विष्णु लोकमें देवताओं करके भी पूजनीय हैं और दुष्टचित्त-वाले जनोंका संचय किया धन सो क्या है ५२। ५४ जिसके यहांसे निराशहोकरके ब्राह्मण और घरको जाते हैं इसीकारण से हमाराभी भाग ब्राह्मणको देनेयोग्य है ५५ और जो पुरुष कुटुम्ब लोभ क्रोध छोंड़के ब्राह्मण को अन्नदेताहै सो परम उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै ५६ तब पिताने कहा कि तुम सौवर्षतकभी वालकही हो और वालकोंकी क्षुधाबड़ी बलवान्है तिसकारण से हे पुत्र! तुम भोजनकरो ५७ पुत्रकरके सम्पूर्ण लोक जीते जाते हैं और हे पुत्र! तुम्हारे जीते सब लोक हमको हितहैं तिस कारणसे जीतने की इच्छावाले तुम करके हमारालोक रक्षणीय है और जिस कारण से तुमहमारे पुत्रहो इसी कारण से हम मृत्यु से भी नहीं डरते हैं ५८। ५९ और

निश्चयकरके पापकारी पुरुष मृत्युसे डरतेरहते हैं और कृतकृत्य पुरुप प्रियमृत्युको अतिथिही के समान देखते हैं ६० तब पुत्रबोला कि यह श्रुतिका वाक्यहै कि पूर्व अवस्थामें पिता पुत्रका व अन्तावस्था में पुत्र पिताका पालन करता है ६१ तब न्योराने कहा कि पुत्र के ऐसे वचन सुनके सत्तू लेकर उस ब्राह्मणको दिया तब वहभी सबखाय करके वह सन्तुष्ट न हुआ ६२ तिसके अनन्तर प्रसन्नहोके नम्रतासे पतोहू श्वशुरसे बोली कि हे श्वशुर! हमारा भागभी इसब्राह्मण को दो ६३ यहसुन श्वशुरने कहा कि स्त्री और पतिव्रता व नियम व्रतकरके दुःखित कुल संतानकेहेतु पतोहू सदैव हमकरके रक्षणीयहै ६४ और हमारी सेवामें आसक्त व नियममें स्थित पतिव्रता मलीन वदन तुमको देखकरके हमारा मन बड़े संतापको प्राप्तहोताहै ६५ तब स्नुषाकहे पतोहू ने कहा कि हे श्वशुर! तुम हमारे स्वामीके स्वामी व देवता के देवता व गुरूके गुरू व श्रेष्ठहो तिससे तुम ऐसाकहने योग्य नहीं हो ६६ हे भगवन्! दयाकरके व दृढभक्ति को विचार हमाराभाग भी सत्तूका ब्राह्मणको दो और हमको ग्रहण करो६७इतनी कथासुनायन्योराने कहा कितत्पश्चात् वह भी सत्तूलेकर उसब्राह्मणको दिये सो उस ब्राह्मणने वह सम्पूर्ण भोजनकिया तिसपरभी उसका मनक्षोभकोन प्राप्तहुआ६८तब वह बड़ा तपस्वी ब्राह्मण अनुग्रहको मानताहुआ धर्ममार्गमें वर्त्तमान पर्वत के समान चलायमान न हुआ तब उस ब्राह्मणका शुद्धभाव जानके बड़ी प्रस

न्नतासे अर्थी बोला कि हम धर्म हैं और तुम्हारी परीक्षा लेनेअर्थ ब्राह्मणके रूपसे आये हैं ६९। ७० और दम तप, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, सत्य, क्षमा आर्जव, ज्ञान ये सम्पूर्ण हमारे पुत्र हैं ७१ तिस कारणसे जो नित्यही हमको व हमारे पुत्रों को भक्तिपूर्व्वक भजन करता है उस भक्तिमान् पुरुष को हम सन्तुष्ट होके इष्ट-गति को देते हैं ७२ जिस कारण से शुद्धभावपूर्व्वक उञ्छवृत्ति आपने सचय कियाहुआ सर्वस्व हमको भोजन कराया इस कारणसे ब्रह्मलोकको जावो ७३ और स्वर्ग में स्थित सब देवता व दिव्य २ ब्रह्मर्षि विस्मयपूर्वक इस दानकी स्तुतिकरें और सत्तुओंका त्याग श्रद्धापूर्वक तुमने किया तिसकारण से तुम्हारा यश पृथ्वीमें शीघ्रही विस्तारित होवे और आज इस दिन में तुम्हारी अग्नि यज्ञ तपस्या सफल होगई जिस कारणसे प्राणियोंमें दुर्लभ ऐसाभाव तुम को प्राप्तहुआ ७४।७६ और हे महाराज! ऐसे मुनिश्रेष्ठ के कहते हुये आकाश से उस ब्राह्मण के मस्तक के ऊपर फूलोंकी वर्षाहुई ७७ प्राणियों का तेज बल बुद्धि धैर्य ये सब क्षुधा नाश करदेती है और जो पुरुष दुर्जय क्षुधाको जीतताहै उस पुरुषने मानों स्वर्ग को जीता है ७८ और भार्या पुत्र पतिव्रता पतोहू और दु खों करके नहीं छोड़ने योग्य आत्मा ये सब तृणवत् धर्मार्थक तुम ने त्याग किया ७९ तिसप्रकार से बहुत तरह के धन देने से धर्म नहीं सन्तुष्ट होता है जिसप्रकारसे न्याय श्रद्धाकर के युक्त दिये हुये अन्नसे सन्तुष्ट होता है ८०

और अश्रद्धा बड़ा पातक है और श्रद्धा पातकों को नाश करनेवाली है व श्रद्धावान् पुरुष पातक को छोड़ देताहै जैसे सर्प जीर्णत्वचा कहे केंचुलि को छोड़ देता है ८१ और बहुतभी दानहो पर श्रद्धा से रहितहो तो बड़े बड़े पण्डित उसको तुच्छ मानते हैं और श्रद्धापूर्वक दिये हुये जलसेभी क्षयसे रहित सन्तुष्टहोते हैं ८२ और पूर्वही धर्मात्मा रन्तिदेव बड़ा दरिद्री था परन्तु धर्मात्मा श्रद्धाके युक्त इसीलोक से ब्रह्मलोक में प्राप्तहुआ ८३ व अपने मास के देने से सम्पूर्ण दु खको छोड़ शिवि औशीनर बहुत कालतक देवताओं के समान आनन्द को प्राप्तहुआ ८४ तिससे हे ब्राह्मण ! तुम देवताओं का प्राप्तहुआ विमान देखो और उस विमानमें चढ़के स्त्री पुत्र पतोहू के सहित स्वर्गको जावो ८५ तब न्योराने कहा कि इस प्रकार से सन्तुष्ट धर्म्म करके कहागया ब्राह्मण सकुटुम्ब दिव्य विमान में सवारहो स्वर्ग को गया ८६ तिसके अनन्तर जब ब्राह्मण स्वर्ग को गया तब हम शीघ्रही बिल से निकल दिव्य २ पुष्पों करके युक्त सत्तुओं के जल में लोटने लगे ८७ इसके उपरान्त धर्म की प्रसन्नता से व मुनिके तेजसे व दिव्य पुष्पों के स्पर्श से मेरो शरीर सुवर्ण का होगया ८८ तदनन्तर हमको देख दूसरे न्योरे ने विचार किया कि हमारी देह सुवर्ण की कैसे होवे सो वह न्योरा तपोवन व तीर्थ यज्ञों मे सब से गया ८९ तिसके अनन्तर हम धर्म्मराज की यज्ञको सुनके आशय पूर्वक यहां प्राप्त भया और वहांपर लोटा परन्तु उस की देह सुवर्ण

की न हुई ९० जैमिनिजी बोले कि इसप्रकार ब्राह्मणोंके आगे न्योरा कहके जिसतरह से आया उसी तरह ब्राह्मणों के देखतेहुये चलागया ९१ और हे राजन् ! जो तुमने पूँछा सो हमने वृत्तान्तपूर्वक सब कहा और जो अश्वमेध महायज्ञमें आश्चर्यहुआ सोभी तुमसे वर्णनकिया ९२ और हे राजन् ! जो इस यज्ञमें आश्चर्य हुआ तिसमें कुछ विस्मयकरना यज्ञके बिना मुनिलोग श्रद्धायुक्त स्वर्गमें गये ९३ और सम्पूर्ण प्राणियों में अद्रोह सन्तोष सत्य आर्जवता सम्पूर्ण इन्द्रियोंका जय शान्ति तप येई स्वर्ग के साधनहैं अर्थात् इन्हींसे स्वर्ग मिलताहै ९४ ॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायांनकुलोपाख्यानेधर्म्मानुग्रहेणब्राह्मण सकुटुम्बस्वर्गप्राप्तिर्नामषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

इतनी कथासुन राजा जनमेजय बोले कि यह नकुलरूपसे सुवर्ण के शिरसे मनुष्यके समान वचन बोला सो कौनथा यह हम पूँछते हैं आप कृपापूर्वक कहिये १ तब जैमिनिजी बोले कि हे राजन् ! जिसकारण से न्योराका वचन मनुष्यकाथा व जिसकारण से न्योरा हुआ यह पूर्व का वृत्तान्त है तुम एकाग्र मनलगाय के सुनो २ पूर्वही एक समय में जमदग्निऋषि ने श्राद्धकरने का सकल्प किया उसीकाल में हे अरिन्दम ! स्वर्गलोक से कामधेनु आतीभई ३ तिस गौका दूध नवीनहाँड़ी में जमदग्नि धरतेभये सो दूधको सर्प के स्वरूप से क्रोधपीने वास्ते

के सुनने से वे दोनों फल होतेहैं ६ और जो यौवनाश्व इत्यादिक राजाओं की सुन्दर२ कथा सुनावै व सुनै सो पुरुष कलिके दोषोमें लीन नहीं होताहै ७ और ब्राह्मण पढै तो विद्याको प्राप्तहो व धनार्थ जो पाठकरै अथवा सुनै उसको धन प्राप्तहोवै और जो क्षत्रिय सुनै वह बड़ा शूरहो और उसकी पराजय किसीसे न हो ८ व जिसके पुत्र न हो उसको पाठ करने से पुत्र प्राप्तहोवै और जो रोगी पाठकरै तो रोगसे छूटजावै औरजो फल अठारहो पुराणों के पाठ करने से होताहै ९ तिस सम्पूर्ण फलको भारत के श्रवण करने से पुरुष प्राप्त होताहै और जिस पुरुषने भक्तिपूर्वक आश्वमेधिक सम्पूर्ण पर्व सुना उस को समग्र भारत सुनासा होताहै और हे राजेन्द्र ! इस पर्वकी समाप्तिमें जो २ पूजन कहा है सो सुनो १०।११ ब्राह्मणों को भोजन करनेयोग्य वस्तुओं करके व वस्त्र भूषण इत्यादि अलङ्कारोंसे पूजनकरके सुवर्णके दशक- लश करके बनाया अश्व दानकरै १२ और प्रत्यक्ष वृष भ को दानकरै उसको बड़ा फल मिलताहै अथवा पर्व२ में कथित जो विधि है उसको यथाशक्तिकरै १३ और हे नृपश्रेष्ठ ! दानदेने से बड़ा फलग्राही होता है और हे विशांपते ! चौदह पर्व हमने तुमसे कहे इसके उपरा- न्त हे राजन् ! आश्रम वा सारूयपर्व सुनो १४।१५॥

इत्याश्वमेधिकेपर्वणिजैमिनीयेभाषायामश्वमेधपर्वणोपपन्न श्रुतिवर्णनोनामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

इति जैमिनिपुराणभाषा समाप्ता ॥